मधु कांकरिया का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श

गोवा विश्वविद्यालय, गोवा की पीएच. डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध

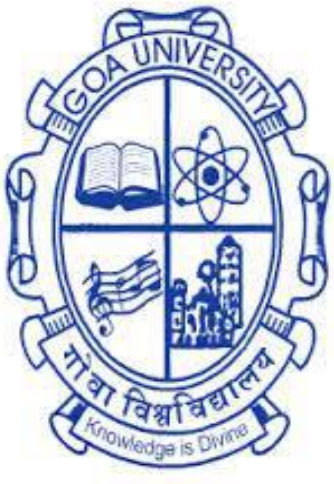

****

शोध -छात्रा

रंजिता रा. परब,

हिंदी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय

शोध निर्देशिका

डॉ. वृषाली सुभाष मांद्रेकर,

प्रोफेसर, (हिंदी विभाग)

****

गोवा विश्वविद्यालय, तालेगाँव- गोवा-४०३२०६

नवम्बर -२०१६

DECLARATION

I the undersigned herself declare that the thesis entitled **"मधु कांकरिया का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श"** "Madhu Kankriya Ka Katha Sahitya : Stree Vimarsh" has been written exclusively by me and that no part of this thesis has been submitted for the award of this University or any other University.

Dated :- / /2017

Place :- Taleigao - Goa

Ms. Ranjita R. Parab

Research Scholer

Dept. of Hindi

Goa University

CERTIFICATE

As per the Goa University Ordinance, I Certify that this thesis entitled **"मधु कांकरिया का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श"**

"Madhu Kankriya Ka Katha Sahitya : Stree Vimarsh" is a record of research work done by candidate herself during the period of study under my guidance and that it has not previously formed the basis for the award of any degree or diploma in the Goa University or elsewhere.

Research Guide

Dated :- / /2017

Place :- Taleigao - Goa

Dr. Vrushali Mandrekar
Professor, Dept. of Hindi
Goa University

मधु कांकरिया का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श

विषयानुक्रमणिका

अध्याय		शीर्षक	पृष्ठ संख्या
		पुरोवाक	१ – ९
प्रथम	**१**	**मधु कांकरिया का व्यक्तित्व एवं कृति संसार**	१० -८६
	१.१	**मधु कांकरिया का व्यक्तित्व**	
	१.१.१	बाल्यकाल	
	१.१.२.	लेखन की प्रेरणा	
	१.१.३.	पुरस्कार सन्मान	
	१. २.	**कृति संसार**	
	१.२.१.	कहानी साहित्य	
	१.२.२.	उपन्यास साहित्य	
द्वितीय	**२.**	**स्त्री विमर्श : परिभाषा, स्वरुप एवं विवेचन**	८७-१२५
	२.१.	**स्त्री विमर्श : अवधारणा एवं स्वरुप**	
	२.१.१.	नारीवाद पाश्चात्य देशों में	
	२.१.२.	भारतीय नारी मुक्ति संघर्ष	
	२.१.३.	स्त्री विमर्श की परिभाषा	
	२.२	**अन्य विमर्श और स्त्री विमर्श**	
	२.२.१.	दलित विमर्श	
	२.२.२.	आदिवासी विमर्श	
	२. ३	**समकालीन महिला लेखन में स्त्री विमर्श**	
	२.३.१.	प्रमुख लेखिकाओं का स्त्री विमर्श परक चिंतन	

तृतीय	**३**	**मधु कांकरिया का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श**	१२६ -१७०
	३.१.	**कहानी की परिभाषा एवं स्वरुप**	
	३.२.	**हिंदी कहानी लेखिकाओं के कहानी में स्त्री विमर्श**	
	३.३	**मधु कांकरिया के कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श**	
	३.३.१.	स्त्री शोषण का चित्रण	
	३.३.२.	पारिवारिक जीवन	
	३.३.३.	प्रेम के सन्दर्भ में दृष्टिकोण	
	३.३.४.	स्त्री अस्मिता एवं संघर्ष क्षमता	
चतुर्थ	**४**	**मधु कांकरिया का उपन्यास साहित्य:स्त्री विमर्श**	१७१ -२०७
	४.१	**उपन्यास की परिभाषा एवं स्वरुप**	
	४ .२	**मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श**	
	४.२.१.	स्त्री शोषण का चित्रण	
	४.२.२.	मनोवैज्ञानिक चित्रण	
	४.२.३.	स्त्री संघर्ष	
	४.२.४.	आर्थिक आत्मनिर्भरता	
	४.२.५.	स्त्री स्वातंत्र्य	
पंचम	**५**	**मधु कांकरिया का कथा साहित्य : भाषा- शैली**	२०८ -२६४
	५.१.	**भाषागत विशेषताएँ**	
	५.१.१.	स्वाभाविकता और सहजता	
	५.१.२.	प्रतीकात्मकता	
	५.१.३.	शीर्षक की सार्थकता	
	५.१.४.	अर्थ व्यंजकता	

५.१.५. बिम्बात्मकता

५.१.६. सांकेतिकता

५.१.७. अलंकारिकता

५.१.८. काव्यभाषा का प्रयोग

५.१.९. डॉट्स प्रयोग

५.१.१० हिंदी के अलावा अन्य भाषाओं का प्रयोग

५.१.११ मुहावरे, कहावते, लोकोक्तियाँ और लोककथाओं का प्रयोग

५.२. शैलीगत विशेषताएँ

५.२.१. वर्णनात्मक शैली

५.२.२. संवादात्मक शैली

५.२.३. पूर्वदीप्ति शैली

५.२.४. आत्मकथात्मक शैली

५.२.५. डायरी एवं पत्रात्मक शैली

उपसंहार २६५ -२७१

परिशिष्ट **मधु कांकरिया के साथ एक साक्षात्कार** २७२ -२८५

पुरोवाक्

हिंदी साहित्य में स्त्री के अनेक रूप पाए जाते हैं। कुछ रूपों में स्त्री सौंदर्य और भोग की वस्तु रही है, तो कुछ रूप में वह दासता की जंजीरों में जकड़ी पायी जाती हैं। परिवार में आज भी पुरुषों का निर्णय अंतिम माना जाता है। स्त्री-पुरुष समानता की बात आज भी बस कहने को है। समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री के प्रति साहित्यकारों का नज़रिया बदल रहा है। स्त्री का अस्तित्व मानने के लिए और उसको खुद की पहचान दिलाने के लिए हिंदी साहित्य में स्त्री के उद्धार की बात होने लगी है। स्वतंत्र भारत के संविधान में स्त्रियों को अधिकार मिलने के बाद समाज में स्त्री की स्थिति में बदलाव आने लगे हैं।

हिंदी कथा साहित्य में निश्चित ही स्त्री विमर्श यह एक चर्चा का और जरुरी विषय बन चुका है। उस पर बहुत कुछ लिखा और कहा जा चुका है, ' स्त्री विमर्श ' अन्य विमर्शों जैसा नहीं है, बल्कि इस दुनिया की आधी आबादी के संघर्षमय जीवन को समेटने की कोशिश है। स्त्री विमर्श इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसने हाशिये पर जिंदगी गुजार रही स्त्रियों के जीवन को केन्द्रीयता प्रदान की। स्त्री विमर्श पुरुष विरोधी विमर्श नहीं है बल्कि एक स्वस्थ मानवीय दृष्टिकोण है। इसीलिए स्त्री विमर्श इस बदलते समाज में ही नहीं बल्कि साहित्य में भी सर्वत्र दिखाई पड़ता हैं।

मधु कांकरिया का 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास मेरे पढने में आया, पढने के बाद ऐसा लगा कि उनका यह उपन्यास ' स्त्री विमर्श ' की व्यापकता और विस्तार को स्पष्ट रूप से स्थापित करनेवाला उपन्यास है, उनके इस उपन्यास ने मुझे काफी प्रभावित किया, इसलिए उनके उपलब्ध साहित्य का मैंने अध्ययन शुरू किया। मेरी शोध निर्देशिका वृषाली मान्द्रेकर जी ने भी मुझे मधु कांकरिया के कथा साहित्य पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार मधु कांकरिया के कथा साहित्य में "स्त्री विमर्श " इस विषय पर

सामान्यतः शोधकर्ताओं द्वारा उनके सम्पूर्ण कथासाहित्य के अध्ययन की पूर्ति नहीं हुई है। शायद यह पहला शोध प्रबंध होगा जिसमें मधु कांकरिया के अद्यतन कथा साहित्य का ' स्त्री विमर्श ' की दृष्टि से समग्र विवेचन और आकलन किया गया है।

मधु कांकरिया की रचनाएं समाज के अंतर्जगत और बाह्य जगत की सच्ची घटनाओं का लेखा जोखा है। उनकी रचनाओं से सच इस तरह प्रस्तुत होता है, कि वह जीवन के हर सरोकार से जुड़कर उसकी सच्चाई का पर्दाफाश करता है । अपनी रचनाओं से उन्होंने प्रगतिवादी और व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए रूढ़िग्रस्त परंपराओं पर प्रहार करती है। मधु कांकरिया ने अपने कथा साहित्य में अपने अनुभवों को बेबाक तरीके से अभिव्यक्त किया है। वेश्यावस्ती की सड़ती गलियों से महानगर के खोये हुए रिश्तों तक, नक्सलवादी आंदोलन के दहला देने वाले विवरण से धार्मिक आडम्बरों पर कटाक्ष करते हुए उनके कथा साहित्य में कुछ भी वर्जित नहीं है। उनका साहित्य परंपरागत मान्यताओं की पड़ताल करने के साथ-साथ, आधुनिकता के आवरण में लिपटे जीवन-मूल्यों की भी पड़ताल करता हैं। हमारे समाज में प्रचलित परम्पराओं और रुढियों के चलते स्त्री स्वतंत्रता पर सवाल किया जाता है।

मधु कांकरिया के कथा साहित्य में हमें परंपरागत मान्यताओं का ही नहीं बल्कि धार्मिक आडम्बरों का विरोध करती स्त्री का दर्शन होता है, तथा स्त्री शोषण से लेकर प्रेम संबंध, काम एवं पारिवारिक सन्दर्भों की ज्वलंत एवं जीवंत तस्वीर दिखाई देती हैं। उषा कीर्ति राणावत के अनुसार "मधु कांकरिया पर यह आरोप भी लगे हैं, कि वह स्त्री विमर्श की लेखिका के खिताब से बचना चाहती है, तथा कथा में आए प्रसंगों और घटनाओं के बीच उनके स्त्री पात्र अपनी जिजीविषा और लड़ाकूपण का प्रमाण नहीं देते हैं, लेकिन यह आरोप गलत हैं। उनके कथा साहित्य के सभी स्त्री पात्र अपनी सीमाओं और परिस्थितियों में रहकर अपने तरीके से संघर्ष करते नजर आते हैं।

मधु कांकरिया के अनुसार 'स्त्री विमर्श' का मतलब इस प्रकार है, स्त्री विमर्श का पहला और सीधा मतलब है, अपने अन्दर के आत्मविश्वास को पैदा करना। अपने भीतर के अंधविश्वास तथा कुसंस्कारों से मुक्ति पाना। स्त्री विमर्श का मतलब पुरुषों की नकल नहीं है, न ही पुरुषों जैसी स्वछंदता को अपनाना।

मधु कांकरिया की साहित्यिक पहचान पाठकों के कारण हैं, न कि पुरस्कारों से। लेखिका यथार्थ में विश्वास करती है, इसलिए उनके लेखन में अनुभवों की भूमिका महत्वपूर्ण रही हैं। मधु कांकरिया खुद एक स्त्री होने की वजह से स्त्रियों के दुःख दर्द को समझती है, उनके कथा साहित्य में स्त्री संबंधी जीवन दृष्टि और मूल्यबोध का परिचय मिलता है। स्त्री विमर्श पर उनकी रचनाएँ उनकी अंत:चेतना है। स्त्री विमर्श के सन्दर्भ लिखनेवाली समकालीन महिला लेखिकाओं में मधु कांकरिया का स्थान अनन्य है। इसीलिए मैंने "मधु कांकरिया का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श" इस शोध विषय का चयन किया। उनके कथा साहित्य में उपलब्ध स्त्री विमर्श के विविध आयामों का विश्लेषण करना इस शोध प्रबंध का मूल उद्देश्य है।

अध्ययन की दृष्टि से प्रस्तुत शोध प्रबंध को पुरोवाक् के अतिरिक्त पाँच अध्यायों में नियोजित किया हैं, तथा उपसंहार के साथ- साथ मधु कांकरिया के ध्वनिमुद्रित साक्षात्कार को लिखित रुप में प्रस्तुत किया है।

प्रथम अध्याय 'मधु कांकरिया का व्यक्तित्व एवं कृति संसार' के अंतर्गत मधु कांकरिया के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है, तथा कृतित्व में कहानी साहित्य एवं उपन्यास साहित्य आदि का संक्षिप्त परिचय दिया है। देखा जाए तो साहित्यकार का जीवन साधनामय रहता है। साहित्यकार समाज से ऊर्जा लेता है। वह समाज, संस्कृति, धर्म, राजनीति आदि से हमेशा जुड़ा रहता है। जब कोई भी, साहित्यकार की भूमिका निभाता है, तो उसके साहित्य में उसके व्यक्तित्व की झलक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रतिबिंबित अवश्य होती है।

साहित्यकार के साहित्य का सही मायने में मूल्यांकन करने हेतु उसके व्यक्तित्व को जानना और पहचानना अनिवार्य है। मधु कांकरिया के व्यक्तित्व की एक बात उल्लेखनीय है, कि उनके व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर सर्वाधिक प्रभाव परिलक्षित होता है। उनके लेखन का अपना एक अलग दायरा है। वह मानती है, कि उत्तम साहित्य सृजन मिथ्य की बजाय वास्तविकता पर ज्यादा टिका रहता है। इसलिए 'सलाम आखिरी' उपन्यास लिखते समय उन्होंने सोनागाछी के लाल बत्ती इलाके में जाकर वेश्याओं के जीवन को नजदीकी से देखा था। 'सुखते चिनार' उपन्यास लिखते समय वह खुद आर्मी कैंप में रही है। मधुजी के व्यक्तित्व में अपने अस्मिता तथा अस्तित्व को प्रस्थापित करने की जो ललक है, वही ललक उनके कथा साहित्य के अनेक पात्रों में दृष्टिगत होती हैं। उदाहरण के तौर पर 'खुले गगन के लाल सितारे' की नायिका 'मणि' को ही देखे तो उपन्यास में अनेक चित्रित घटनाओं में उसके भीतर लेखिका मूर्तिमान है। मधु कांकरिया के व्यक्तित्व के अंतर्गत जन्म एवं बाल्यकाल, जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ, पारिवारिक जीवन, लेखन की प्रेरणा, सन्मान एवं पुरस्कार तथा उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का निरूपण किया है।

कृतित्व के अंतर्गत उनके समग्र कथा साहित्य का परिचयात्मक अध्ययन किया है। उनके सात कहानी संग्रह : बीतते हुए (२००४), भरी दोपहरी के अँधेरे (२००७), और अंत में इशु (२००८), चिड़िया ऐसे मरती है (२०११), दस प्रतिनिधि कहानियाँ (२०१३), युद्ध और बुद्ध (२०१४), स्त्री मन की कहानियाँ (२०१५), पांच उपन्यास : खुले गगन के लाल सितारे (२०००), सलाम आखिरी (२००२), पत्ताखोर (२००५), सेज पर संस्कृत (२००८) और सूखते चिनार (२०१२) इन कृतियों का परिचय दिया है, और अंत में निष्कर्ष की प्रस्तुति की है।

द्वितीय अध्याय 'स्त्री विमर्श : परिभाषा, स्वरुप एवं विवेचन' शोध प्रबंध के सैद्धान्तिक पक्ष को प्रस्तुत करता है। इस अध्याय के अंतर्गत प्रथम अनुभाग में स्त्री विमर्श का अर्थ, परिभाषा तथा स्त्री विमर्श के प्रति रचनाकारों की क्या - क्या अवधारणाएँ है, यह स्पष्ट करते हुए ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर दृष्टिपात किया है। अध्याय के द्वितीय अनुभाग में स्त्री विमर्श का इतिहास, पाश्चात्य स्त्री मुक्ति आंदोलन, भारतीय स्त्री मुक्ति आंदोलन, समाज सुधारकों की भूमिका पर चर्चा की है। अध्याय के तृतीय अनुभाग में समकालीन लेखिकाएँ शिवानी, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, मृदुला गर्ग, मैत्रयी पुष्पा, मेहरुनिस्सा परवेज, सुनीता जैन आदि लेखिकाओं के लेखन का परामर्श लिया है, तथा प्रमुख स्त्री लेखिकाएँ मैत्रयी पुष्पा, मृणाल पांडे, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा तथा अनामिका की स्त्री विमर्श विषयक अवधारणाओं पर प्रकाश डाला है। ऊपर प्रस्तुत स्त्रीवादी लेखिकाएँ पितृसत्ताक व्यवस्था का विरोध कर स्त्री के लिए समाज में पुरुष के समान अधिकार, शोषण से मुक्ति तथा स्त्री के स्वतंत्र अतित्व की स्थापना पर जोर देती हैं, साथ-साथ उसका आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना जरुरी मानती है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष की प्रस्तुति की है।

तृतीय अध्याय, 'मधु कांकरिया का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श' यह है। मधु कांकरिया की बहुत सी कहानियाँ स्त्री को केंद्र में रखकर लिखी गयी हैं। उसके जीवन की विभिन्न समस्याओं का वास्तव चित्रण उन्होंने अपने कहानी साहित्य में किया हैं। अपनी सभी कहानियों में उन्होंने हर नए विषय को न्याय देने की कोशिश की है। उनकी कहानियों का स्त्री विमर्श की दृष्टि से मूल्यांकन करने के लिए स्त्री शोषण का चित्रण, पारिवारिक जीवन, प्रेम के सन्दर्भ में दृष्टिकोण, स्त्री अस्मिता एवं संघर्ष क्षमता इन अवधारणाओं का आधार लिया हैं। मधु कांकरिया की अनेक कहानियाँ सामाजिक समस्याओं का चित्रण करती हैं। उन्होंने स्त्री के सामने आनेवाली सामाजिक चुनौतियों को बड़ी सूक्ष्मता से समझा है, और उनकी

अभिव्यक्ति अपनी कहानियों में की है। इन अभिव्यक्तियों का चित्रण ऊपर प्रस्तुत अवधारणाओं के आधार पर इस अध्याय में किया है, तथा अंत में निष्कर्ष दिया है।

चतुर्थ अध्याय 'मधु कांकरिया का उपन्यास साहित्य : स्त्री विमर्श' यह है । मधु कांकरिया ने आसान शैली में स्त्री के रूप और उसमें आए परिवर्तनों का विस्तृत विवेचन अपने उपन्यास साहित्य में किया है। उनके औपन्यासिक साहित्य के समग्र लेखन में स्त्री विमर्श को समझने हेतु स्त्री विमर्श को अन्य अवधारणाओं के साथ समझना आवश्यक है, जो उनकी रचनाओं का मूलाधार है। इस अध्याय के अंतर्गत उनके उपन्यासों में स्त्री विमर्श को उदघाटित करने के लिए स्त्री शोषण, मनोवैज्ञानिक चित्रण, स्त्री संघर्ष, आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्त्री स्वातंत्र्य, जैसी अवधारणाओं के आधार पर अध्ययन एवं विवेचन किया हैं।

उपरोक्त विविध अवधारणाओं के आधार पर मधुजी के उपन्यासों का विवेचन एवं विश्लेषण व्यापक स्तर पर करने का प्रयत्न इस अध्याय में किया है। इसमें कुछ समकालीन स्त्री उपन्यासकारों के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों का समावेश हैं। अंत में निष्कर्ष की प्रस्तुति की है।

'मधु कांकरिया का कथा साहित्य: भाषा शैली' इस पंचम अध्याय से हम जान सकते हैं कि मधु कांकरिया के कथा साहित्य की भाषा काफी प्रभावशाली है। उनकी भाषा में अनुभूतियों को सक्षम अभिव्यक्ति देने की क्षमता मौजूद है। उनकी रचनाओं की भाषा उनके सृजन संसार में प्रमुख पहलू रहा है। इसलिए वह कहानी तथा उपन्यास इन दोनों विधाओं में भाषा- प्रयोग की दृष्टि से विशेष सतर्क लगती है। भाषा प्रयोग के वैविध्यपूर्ण स्तर उनके कथा साहित्य में दृष्टिगोचर होते हैं। उन्होंने अपने जीवन में आए हुए अनुभवों के आधार के अनुरूप अभिव्यक्ति की सार्थक भाषा एवं शैली का प्रयोग कर अपने साहित्य में स्त्री विमर्श को परिलक्षित किया है।

पंचम अध्याय में मधु कांकरिया की कहानियाँ एवं उपन्यासों की भाषागत विशेषताओं का समग्र विवेचन प्रतीकात्मकता, स्वाभाविकता और सहजता, अर्थ व्यंजकता, बिंबात्मकता, सांकेतिकता, अलंकारिकता, डॉट्स प्रयोग, अन्य भाषाओं का प्रयोग, मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग आदि दृष्टि से सोदाहरण प्रस्तुत किया है, तथा शैलीगत विशेषताओं का विवेचन वर्णनात्मक, संवादात्मक, पूर्वदीप्ति, आत्मकथात्मक, पत्रात्मक आदि मुद्दों के आधार पर किया हैं, अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्याय में लेखिका के कथासाहित्य की भाषागत विशेषताओं के साथ शैलीगत विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला है।

'उपसंहार' के अंतर्गत शोध निष्कर्षों को रखा गया है। मधु कांकरिया के कहानी एवं उपन्यासों के परिप्रेक्ष में व्यक्त स्त्री विमर्श के विविध आयामों का निष्कर्षात्मक आकलन, विश्लेषण की प्रस्तुति की है, तथा उनके कहानी एवं उपन्यासों में नारी विषयक विविध समस्याओं का सूक्ष्मांकन किया है। मधुजी के साहित्य में शोषण के खिलाफ स्त्री का संघर्ष तथा अस्मिता को जागृत करने की उनकी बौद्धिक ऊर्जा परिलक्षित होती है।

शोध प्रबंध में उपसंहार के उपरांत एक परिशिष्ट है, जिसके अंतर्गत मधु कांकरिया के साक्षात्कार को शब्दांकित किया है। मधुजी के जीवन में आये हुए अनुभवों का तथा उनके संवेदनशील एवं मानवतावादी रूप का प्रकटन उनके साक्षात्कार के माध्यम से करने का प्रयास किया है।

मैं आशा करती हूँ कि यह शोध प्रबंध स्त्री विमर्श के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण, मौलिक तथा समाजोपयोगी होगा, जो आनेवाले कल में शोधार्थियों को मधु कांकरिया का रचना संसार तथा मधु कांकरिया के कथा साहित्य में स्त्री विमर्श आदि विषयों के साथ- साथ ऊपर प्रस्तुत अन्य विषयों पर प्रकाश डालने और अनुसंधान करने हेतु महत्वपूर्ण साबित होगा।

कोई भी व्यक्ति स्वयंपूर्ण नहीं होता, उसके हर एक कार्य के पीछे किसी न किसी का योगदान और सहयोग हमेशा रहता है। जिनके सहयोग बिना यह शोध कार्य संपन्न नहीं हो सकता था उनका ऋणनिर्देश करना मैं अपना कर्त्तव्य समझती हूँ। मेरी मार्गदर्शिका प्रोफेसर वृषाली मान्द्रेकर, मुझे ही नहीं बल्कि सारे छात्राओं में आदरणीय और प्रिय है।उनके निर्देशन में अध्ययन करने का जो अवसर मुझे प्राप्त हुआ वह मेरा सौभाग्य है। उन्होंने मुझे रचनाकार्य की बारीकियों से अवगत कराया, साथ ही साथ वाक्यों का उचित प्रयोग कैसे करना है, उनका उचित क्रम कैसे होना चाहिए इन महत्वपूर्ण बातों से अवगत कराया। शोध प्रबंध के आवश्यक ग्रन्थ सामुग्री की बारे में भी वह समय- समय मुझे जानकारी देती रही। शोध प्रबंध को संशोधित एवं परिमार्जित करना उनके अमूल्य सुझावों के बिना असंभव था। इनके साथ-साथ श्री सुभाष मान्द्रेकर जो मेरे प्रिंसिपल रह चुके है उनका नाम मै यहाँ विशेष रूप से लेना चाहती हूँ। समय -समय पर मेरे शोध कार्य के बारे में वह परामर्श लेते रहे, प्रोत्साहित करते रहे उनकी मैं सदैव ऋणी रहूंगी।

शिक्षा के प्रति मुझे आत्मनिर्भर बनाने के लिए हमेशा सचेत रही मेरी माँ श्रीमती रसिका परब एवं पिता रामचंद्र परब के प्रति मैं सदैव नतमस्तक रहूंगी। मेरा परम सौभाग्य था कि मेरे पति श्री. आनंद जी का उत्साह एवं मार्गदर्शन मेरे साथ था। उनके सहयोग की हमेशा कामना करती हूँ। शोध कार्य की सतत प्रेरणा मुझे मेरी सास और ससुर श्रीमती आशालता और श्री. आत्माराम कोलंबकर जी से मिलती रही है। मेरे परिवार के सभी सदस्यों ने मेरा आत्मबल हमेशा बढ़ाया है। मेरे पुत्र आराध्य की मैं विशेष ऋणी रहूंगी क्योंकि शोध कार्य के दौरान मेरे व्यस्त समय में मैं उसे वक्त नहीं दे पायी, फिर भी एक समझदार की तरह वह मेरी माँ की देखभाल में रहता था। उसकी समझदारी ही मेरा हौसला हमेशा बढाती रही।

शोध कार्य के दौरान हिंदी विभाग के डॉ. इशरत खान, डॉ. रविन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. बिपिन तिवारी श्रीमती संजना तथा प्रोफेसर वासुदेव सावंत आदि का सतत प्रोत्साहन और सहयोग मिलता रहा, इसलिए मैं उनकी सदा आभारी रहूँगी । इसके अतिरिक्त गोवा विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल डॉ. गोपाकुमार सर तथा ग्रंथपाल सहयोगियों की मैं विशेष रूप से आभारी रहूँगी।

मधु कांकरिया से मेरी दो बार मुलाक़ात हुई। पहली मुलाकात शोध प्रबंध के प्रारम्भ में हुई थी। शोध प्रबंध के प्रारंभ में भी मैंने उनका साक्षात्कार लिया था लेकिन उसमें प्रगल्भता नहीं थी । अपने व्यस्त समय के बावजूद मेरी प्रार्थना के अनुरूप दूसरी बार भी उन्होंने साक्षात्कार लेने के लिए सहमति दी। उनके प्रति ऋणनिर्देश प्रकट करने की बजाय मैं अपने शत-शत हार्दिक प्रणाम निवेदित करती हूँ।

इसके अलावा जिन मित्रों एवं शुभ चितकों ने समय -समय पर प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से सहयोग एवं सुझाव देकर मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने में सहयोग दिया उन सभी के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

मै यह शोध प्रबंध सविनय प्रस्तुत कर रही हूँ। इसमें अगर कुछ गलतियाँ रहती है, तो उसके लिए मै क्षमाप्रार्थी हूँ।

दिनांक:- /११/२०१६ विनीत

(रंजीता परब)

प्रथम अध्याय

मधु कांकरिया का व्यक्तित्व एवं कृति संसार

प्रथम अध्याय

मधु कांकरिया का व्यक्तित्व एवं कृति संसार

भारतीय संस्कृति में स्त्री का स्थान महत्वपूर्ण है। संसार में यदि स्त्री नहीं होती, तो सभ्यता संस्कृति ही नहीं होती। अपने विविध रूपों में स्त्री ने पुरुष को संवर्धन, प्रोत्साहन और शक्ति दी हैं। वह समाज में पुरुष के लिए जन्मदात्री, पोषणकर्ती माता के रूप में आती हैं, तो कभी स्नेह की भाव धारा में प्रवाहित करने वाले रूप में लक्षित होती है। लेकिन स्त्री के जीवन में फिर भी मृगशिरा की तपिश कुछ ज्यादा ही है। मधु कांकरिया के जीवन में भी आद्रा की पल्लवितता कम है और मृगशिरा की तपिश ज्यादा।

देखा जाए तो रचनाकार की कृति में उसका व्यक्तित्व नजर आता है। उसके साहित्य सृजन को व्यक्तित्व से अलग करके मूल्यांकित नहीं किया जा सकता। रचनाकार के व्यक्तित्व का निर्माण उसके आसपास के परिवेश और संस्कारों से होता है। इसीलिए मधु कांकरिया की साहित्यिक रचनाओं में झांकने वाले निर्भिक व्यक्तित्व को जानने परखने के लिए उनका जीवन परिचय जानना आवश्यक है।

मधु कांकरिया के जीवन के पथ पर न जाने कितने सारे उतार चढ़ाव आये है। एक प्रथितयश साहित्यिक के रूप में अपने आप को स्थापित करने के लिए लेखिका को बहुत संघर्ष करना पड़ा हैं। जीवन में उन्हें आसानी से कुछ भी नहीं मिला है। जीवन में पल-पल उन्हें इम्तेहान का सामना करना पड़ा है। जैसे सोने को प्रखर अग्नि में तपना पड़ता है, उसी तरह से मधु कांकरिया भी जीवन की तपिश में सुलगकर सोने की तरह निखरी है। मधु कांकरिया यथार्थ की समर्थक है, शायद इसीलिए उनका कथा साहित्य मिथ्य पर आधारित नहीं है। अपने साहित्य में समाज के बदलते परिवेश, ज्वलंत समस्याओं, मानव की विकृतियों का वर्णन अपने मार्मिक अनुभवों के आधार पर किया हैं। उनके कहानियों के जो पात्र है, वह मधुजी के

संवेदनशील अंत:करण के नक्षत्र है। लेखिका के रचना में जीवन के मार्मिक अनुभव छिपे हैं। उनकी रचनाएँ जीवन को भीतर तक भेदती है, फिर भी लेखिका अपने आपको एक पूर्ण साहित्यकार के रूप में नहीं देखती। उनका मानना है कि आज तक उन्होंने ऐसी कोई रचना का आविष्कार नहीं किया है, जिससे उनके मन को शांति मिले। वह कहती है -"मैं एक बेचैन आत्मा हूँ। नहीं जानती की मेरी मुक्ति कहाँ है? प्राप्य क्या है? परिवार से निराश होकर साहित्य के तरफ दौड़ती हूँ। साहित्य की नाकामियों से क्षुब्ध होकर फिर परिवार और दफ्तर की दुनियाँ में लौट आती हूँ।[१]

१.१ मधु कांकरिया का व्यक्तित्व

जब कोई भी, साहित्यकार की भूमिका निभाता है, तो उसके साहित्य में उसके व्यक्तित्व की झलक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रतिबिंबित अवश्य होती है। साहित्यकार के साहित्य में उसके व्यक्तित्व की छाप उभर कर आती है, क्योंकि साहित्यकार जो साहित्य लिखता है, वह कुछ हद तक उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होता है। व्यक्तित्व में व्यक्ति के भाव, संवेदना, स्वभाव, अनुभव, संस्कार, आसपास का परिवेश, कोई अविस्मरणीय प्रसंग से उसके मन में उठने वाली क्रिया-प्रक्रियाएँ आदि समाहित रहती हैं। व्यक्तित्व साहित्यकार के साहित्य पर अपनी न मिटनेवाली छाप छोड़ जाता है। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व निर्माण में उसके पारिवारिक परिवेश, कुल, गोत्र, वंश, उसके शैक्षणिक एवं विचार धारा दर्शन का महत्व पूर्ण योगदान होता हैं। साहित्यकार के साहित्य का सही मायने में मूल्यांकन करने हेतु उसके व्यक्तित्व को जानना और पहचानना अनिवार्य है। "साहित्य का व्यक्तिसत्व जब तक मानव सत्य नहीं बनता तब तक उसका विशेष मूल्य भी नहीं होता। संतुलन और समन्वय की यह दृष्टि रचना मूल्यांकन की भी दृष्टी बनती है। आज के साहित्य पर एक सामाजिक दायित्व आ पड़ा है। उसका मूल्य तभी है जब वह अनास्था, घुटन, संत्रास, ऊब, और आज के

बिखरते हुए जीवन के बीच में से भी एक शक्ति दे, मानव को अनंत संभावनाओं का उद्घाटन करे" [२.]

मधु कांकरिया के व्यक्तित्व का खुला दर्शन उनके साहित्य में परिलक्षित होता है। वह ड्राइंग रूम में बैठकर लिखनेवालों में से नहीं हैं। वह उन गलियों में जरुर भटकती है जहाँ उनके पात्र है। वह फोर्मुला टाइप कहानी में विश्वास नहीं करती। जीवन जैसा है उसको वैसा ही साहित्य में उतारने की उनकी कोशिश रहती है। जीवन में जो स्त्री हार रही है, तो उसे वीरबाला या झाँसी की रानी बनाके वह नहीं दिखलाती, यही उनके लेखन की खासियत है।

१. १. १. बाल्यकाल

मधु कांकरिया का जन्म कलकत्ता में २३ मार्च १९५७ में एक निम्न मध्यवर्गीय जैन व्यापारी परिवार में हुआ। उनके परिवार में कुल तीन भाई बहन थे। परिवार में वह एकलौती बेटी होने के कारण पिताजी की लाडली थी। बातूनी स्वभाव के कारण वह हमेशा अपनी माँ से डांट फटकार खाती थी। अपने विद्रोही स्वभाव के कारण एक पित्रुसत्ताक परिवार में भी उन्होंने खुद का स्थान बना लिया था। बचपन से ही उन्होंने गलत बातों का विरोध किया और हमेशा सही का साथ दिया। रुढियों तथा अंधविश्वासों से टकराना, उनका विरोध करना आज भी उनके स्वभाव में है।

मधु कांकरिया बचपन से ही दिखने में सुन्दर नहीं थी। शादी के लायक होने पर उनको देखने के लिए लड़केवाले आते जरुर थे पर उन्हें नापसंद करते थे। इसी वजह से उनके मन में हिन् भावना पैदा हो गयी थी। वह शादी नहीं करना चाहती थी, लेकिन परिवार के दबाव में आकर उन्होंने शादी कर ली। मधु कांकरिया के पति डॉक्टर थे, वह मधु कांकरिया को अपने अहसानों तले दबाये रखना चाहते थे। मधु कांकरिया को हमेशा लगने लगा था कि उनके पति ने उनसे विवाह कर बहुत बड़ा एहसान किया है। उनका विवाह एक दुस्वप्न बन गया था। पति

के अकस्मात् घर छोड़े जाने पर उन्हें अपने पिता के घर लौटना पड़ा। वे माता- पिता पर भार नहीं बनना चाहती थी इसलिए उन्होंने नौकरी करना शुरू किया। स्वाभिमानी स्वभाव के कारण वह एक नौकरी में जादा दिन टिक नहीं पाती थी। जिंदगी के संघर्ष ने उन्हें इतना मजबूत बनाया कि उन्होंने पति से अलग होकर भी कभी समझौते नहीं किए। अपने मासूम बेटे का पालन उन्होंने ममता के एक-एक बूंद से किया। आज उनका बेटा इंजिनियर है, और एक प्रतिष्ठित कंपनी में काम करता है।

१. १. २. लेखन की प्रेरणा

मधुजी ने अपने जीवन के चार दशक सामान्य रूप में बिताने के बाद अभी डेढ़ दशक पहले ही अपना लेखन शुरू किया तथा देर से आते हुए भी वह महत्वपूर्ण लेखिका बन गयी। मधुजी पश्चिम बंगाल के क्षेत्र से हो जो राजनितिक सक्रियता, वैचारिक हस्तक्षेप, कॉमरेडों के जगह के लिए जाना जाता है। उन्होंने नक्सलवाद इस विषय को अपने प्रथम उपन्यास के लिए चुना जो इस क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या हैं। उनका पहला उपन्यास भले ही नक्सलवाद पर आधारित हो पर इसके भीतर प्रगाढ़ प्रेम कथा भी छुपी हुई है। शुरू में मधुजी छोटी कहानिया लिखती थी, लेकिन जिंदगी ने इस क़दर ठोकर मारी कि गुजारा करने के लिए नौकरी करनी पड़ी और कलम का साथ छूट गया, लेकिन समय के चलतेसाहित्य ही उनके लिए जीवन का साथी बन गया । शुरू में उन्होंने एक कहानी हंस पत्रिका में भेजी, लेकिन वह लौटा दी गयी, फिर भी वह निराश नहीं हुई। उन्होंने अपना पहला उपन्यास "खुले गगन के लाल सितारे" नक्सलवाद की पृष्ठभूमि पर लिखा। हिंदी साहित्य में नक्सलवाद पर लिखा यह पहला उपन्यास था। पहला उपन्यास लिखने के बाद मधुजी ने पीछे मुड़कर नहीं देखा, साहित्य के सभी विधाओं में उनकी कलम चली। " मधु कांकरिया के लेखन का वास्ता अपने समय के जीवित यथार्थ से है- मृत अतीत से नहीं। इसलिए लेखिका आज भी लेखन के साथ उन सामाजिक

संस्थाओं की तलाश में रहती है, जिनके लिए वह कुछ कर सके और इसी तलाश में उनको लेखन में हाशिये पर जीवन जीने वाले समाज के उपेक्षित किरदार मिलते है।

१. १. ३. पुरस्कार सन्मान

1. अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच रजत क्रांति समारोह द्वारा –साहित्यिक एवं अन्य सामाजिक कार्यों में योगदान हेतु "मारवाड़ी समाज गौरव पुरस्कार" (२००८)
2. 'कथा क्रम सन्मान' आनंद सागर स्मृति सन्मान (२००८)
3. "हेमचन्द्र आचार्य साहित्य सन्मान" विचार मंच द्वारा (२००९)
4. विजय वर्मा कथा सन्मान (२०१२)

१. २. कृति संसार

कहानी साहित्य हो या उपन्यास साहित्य, वह लिखते समय एक लेखक उसमें खुद जीता है और अपने उपन्यास के किरदारों को जिलाता हैं। साहित्य एवं समाज का अंत:संबंध है। दोनों की क्रिया प्रतिक्रया में लेखक एक प्रमुख भूमिका निभाता है। मधु कांकरिया ने भी यह कार्य किया। दोनों के घात प्रतिघात से उपजी साहित्य कृतियाँ उनके मानव मन की सहज अनुभूतियाँ हैं।

मधु कांकरिया का सृजन साहित्य विविध आयामी हैं। अब तक उनके सात कहानी संग्रह और पांच उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

१.२.१. कहानी साहित्य

हमारे समाज में प्रचलित रूढ़ मान्यताओं के बरक्स मानवीय स्वतंत्रता का सवाल सदा ही अनदेखा किया जाता रहा है। लेकिन मधु कांकरिया की कहानियाँ सिर्फ परम्परागत मान्यताओं की ही नहीं, आधुनिकता के आवरण में लिपटे जीवन-मूल्यों की भी पड़ताल

करती है और हमारे सामने कई सुलगते हुए सवाल खड़े कर हमारी सोच को रचनात्मक आयाम प्रदान करती है। चाहे नक्सलवादी आंदोलन पर लिखी 'लेकिन कामरेड' हो, दांपत्य जीवन में परस्पर विश्वास को रेखांकित करती 'चूहे को चूहा ही रहने दो' हो या बच्चे के स्कूल में दाखिले के लिए 'दाखिला' कहानी में दर्शायी एक स्त्री की व्यथा-कथा हो। मधु कांकरिया कही भी विचार और संवेदना के स्तर पर पाठकों को निराश नहीं करती, बल्कि कथा रस के प्रवाह में बहाए चली जाती है।

मधु कांकरिया का 'बीतते हुए' पहला कहानी संग्रह २००४ में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल अठारह कहानियाँ हैं। इन कहानियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार हैं।

बीतते हुए

१. नामर्द

बीतते हुए इस कहानी संग्रह की 'नामर्द' यह पहली कहानी मनोवैज्ञानिक कहानी है। राजस्थान के अजमेर शहर की यह कहानी है। सोनू के बचपन में तेज बुखार के चलते और सही समय पर इलाज न मिलने के कारण उसके बाएँ हाथ और पैर में लकवा मार गया था। बचपन में सोनू की टप्पे खाती गेंद जैसी अटपटी चाल और फुर्ती को देखकर उसके माँ और दादी का हिया फटने लगता आसपास के सभी लोग और उसके दोस्त ठहाका मारकर हँस पड़ते और वह स्वयं भी हँस पड़ता।

"लेकिन जब वह बड़ा होने लगा तो उसकी पोर- पोर में विकलांगता के के वाइरस घुलने लगे शाम होते ही जहाँ यार दोस्त मस्त हो जाते वह अस्त हो जाता। जिंदगी का जाम छलकाते दोस्त जब पतंग उड़ाते तो वह मन मसोसते निल गगन में उड़ती उनकी मुक्त पतंग को देखता रहता। संगी साथी कबड्डी खेलते, फ़ुटबाल खेलते, क्रिकेट खेलते तो वह एक कोने में खड़ा तरह टप-टप टपकते अपने आँसू के साथ अपने भीतर ही रोता रहता" [३]

उन्ही दिनों भारत सरकार ने उस वर्ष विकलांग वर्ष घोषित कर दिया और जिसके परिणामस्वरूप सोनू को सरकारी बैंक में क्लर्क की नौकरी मिल गयी। नौकरी मिलने से सोनू के जीवन का अर्थ, सम्बन्ध सभी कुछ बदल गया। लेकिन बैंक में भी उसे उसके विकलांगता पर व्यंग्य सुनने को मिलता। लेकिन सोनू इतना शॉक सहन करना सिख गया था। सोनू के पिता का यह मानना था कि जेब में अगर भरपूर मुद्रा तत्व हो तो फिर जीवन में नारी तत्व की कमी नहीं रहती। इसलिए वह सोनू के लिए बहू ढूंढ रहे थे।

जब पहली पगार उसने अपने पिता के हाथों में दे दी तब वह अपने ही पुरुषार्थ पर चहक उठा था। अपने बैंक के लाइब्रेरी से ढेर सारी पुस्तके पढने लगा और यह जानकर ख़ुशी से झूम उठा था कि इस संसार को खूबसूरती की दिशा में कदम-दर -कदम आगे बढ़ाने में विकलांगो का बहुत बड़ा योगदान हैं।

हेलन किलर, लार्ड बाइरन, सर वार्टर स्कॉट, सूरदास, मिल्टन, होमर, अलेक्जेंडर, लुइस ब्रेल, चार्ल्स स्टेनमेरी इनके बारे में सोनू पढने लगा और वही उसके आदर्श बन गये।

सोनू के पिता ने सोनू की शादी विकलांग लड़की से न करके सबसे बड़ी भूल कर दी। शादी के आठ दिन बाद ही दिपा सोनू को छोड़ कर अपने मायके चली गयी वहाँ से दिपा ने संदेशा भेजा की सोनू नामर्द है। सोनू नामर्द है, यह बात पूरे अजमेर में फैल गयी। सोनू के मन में आत्महत्या करने का ख़याल आया। अगर दिपा को सम्बन्ध विच्छेद ही करना था तो विकलांग होना यही कारण काफी था। क्या आवश्यकता पड़ गई इस प्रकार मिथ्या आरोपण कर उसे जुतियाने की। नारी मनोविज्ञान के बारे में वह सोचने लगता।

ऐसे क्षणों में भी उसने अपने आप को संभाला। उसने भारत और विश्व भर में प्रसिद्ध कुवाँरो की एक फ़ेहरिस्त बनायी जिन्होंने नारी संपर्क के बिना भी अपने जीवन को पूर्णता तक

पहुँचाया। रतन टाटा, आइज़क न्यूटन, जेम्स बाचाल, सूरदास, अटल बिहारी बाजपेयी और अभिनेता संजीव कुमार।

अपने पीड़ा को भूलकर सोनू आंदोलन से जुड़ने लगा जहाँ उसकी भेट एक युवा कुबड़ी युवती से हुई। वह वेश्याओं के मतदान पहचान पात्र दिलवाने एवं मतदाता सूचि बनवाने में लगी हुयी थी। दोनों एक दूसरे से मोहित हो परिणय सूत्र में बंधना चाहने लगे थे।

लेकिन सोनू के पिता को लगा की सोनू अगर अपने पुरुषार्थ परिक्षण करता तो ठीक रहेगा ताकि फिर से पहले जैसी नौबत ना आ जाए लेकिन पिता की बात सुनते ही सोनू का दिमागी संतुलन और आत्मविश्वास सभी गड़बड़ा जाता है। "कोई आँधी उसके भीतर उसके पोर-पोर में बहती उसके वजूद को झकझोरती एक ही रट बार बार लगाती रही थी.... नामर्द... नामर्द" [४]

कुबड़ी अब उसे अपनी प्रेमिका कम एक विशुद्ध मादा अधिक दिखाई देती। क्या कुबड़ी भी उसकी विकलांगता का यह मतलब निकाल सकती है? क्या उसके दिमाग में भी यह सब है? और इन्ही काले डगमगाते एवं दरकते आत्मविश्वास के क्षणों में वह कुबड़ी के साथ बलात्कार करता है जिससे कुबड़ी का मन सोनू से फिर जाता है और वह सोनू से अपने सारे सम्बन्ध तोड़ देती है।

'नामर्द' कहानी विकलांगों के जीवन समस्याओं को दर्शाती हैं। शारीरिक व्यंग्य के कारण विकलांगों को उपेक्षितता का जीवन जीना पड़ता है। इस समस्या का वर्णन लेखिका ने बड़े ही मार्मिक रूप से समाज के सामने रखा है।

२ लेकिन कॉमरेड.

यह कहानी नक्सलवादी आंदोलनवादियों के संघर्षों का चित्रण करती है। इस कहानी का अंश मधुजी के प्रथम उपन्यास 'खुले गगन के लाल सितारे' प्रस्तुत हुआ है।

‘लेकिन कॉमरेड’ एक नक्सलवादी आंदोलन था, इस आंदोलन के चलते भूमिहीन किसानों ने जमींदारों के भूमि पर कब्ज़ा कर उनके खिलाफ आंदोलन छेड़ा था। इस कहानी के मुख्य नायक गोपाली दा नक्सलवादी आंदोलन का विस्तृतता से वर्णन करते है।

इस कहानी की शुरुआत "मेरी टाइलर" ने जेल में रहते समय लिखे खत से होती है। यह खत मेरी ने सती को बड़े मर्मस्पर्शी शब्दों में लिखा था। सती ने मेरी को कामरेड शब्द का सही अर्थ सिखाया था। क्रूरता और अन्याय को ख़त्म करने के लिए व्यक्ति को अंतहीन यातना भुगतनी पड़ेगी इस तथ्य को मेरी ने सती से समझा था।

गोपाली दा नक्सलवादी आंदोलन की घटनाएं लेखक के सामने विस्तार से रखते है। नक्सलवादी आंदोलन में स्त्रियों को भी जेल में डाला गया, उन्हें पुरुषों की तरह यातनाएँ दी गयी।

लेकिन कॉमरेड एक नक्सलवादी कहानी है, जिसमे आत्मसन्मान, आत्मगौरव के लिए लड़नेवाले क्रांतिकारियों के पीड़ा का वर्णन लेखिका ने काफी सक्षमता से किया है।

३. लेडी बॉस

‘लेडी बॉस’ कहानी के माध्यम से लेखिका ने प्रतिभाशाली और महत्वाकांक्षी स्त्री का चित्रण किया है, जो जीवन के आखिर तक सुखी नहीं हो पाती, सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए चोट खाकर सामान्य जीवन जीने पर मजबूर हो जाती है। न्यू जनरेशन ऑफ़ सॉफ्टवेयर कंपनी की बॉस एक महिला थी -"न्यू जनरेशन ऑफ़ सॉफ्टवेयर" कंपनी के लेडी बॉस के स्नायुतंत्र हमेशा तने रहते है, वह हमेशा तीन चीजों के बारे में सोचती काम, मुनाफा और स्टाफ की ठोका-पिटी"।[५] लेडी बॉस ने बंगलोर में कंप्यूटर साइंस करने के बाद अमेरिका में मास्टर डिग्री हासिल की थी, ३०-३२ उम्र की मैडम बुद्धि से दिपदिपाती आँखोंवाली थी, उसकी मुस्कान ऐसी की मोनालिसा की मुस्कान फीकी लगे। जब इंटरव्यू लेनेवाली रिपोर्टर उसे सवाल

पूछती है, कि आपके कोई बच्चे है, तब वह कहती "माय कंपनी इज़ माय चाइल्ड" माँ को जिस प्रकार अपने बढ़ते बच्चे को देखकर ख़ुशी होती है, उसी प्रकार अपने कंपनी को बढ़ता देखकर उसे ख़ुशी मिलती है।

उसका यह कहना था कि "महिला बॉस" को लोग एक्सेप्ट नहीं कर पाते है। स्टाफ को कंट्रोल करने के लिए अतिरिक्त एनर्जी खपानी पड़ती है"।[६]

कंपनी को ग्लोबल बनाना मैडम का सपना था, इसी कारण वह मॉस्को में स्थित पति के कंसल्टेंसी का फायदा उठाकर, जापान, जर्मनी, और मॉस्को की प्रतिष्ठित कंपनियों के सॉफ्टवेयर आर्डर लेती है। कंपनी को ग्लोबल बनाने के चक्कर में वह अपने स्टाफ को जॉब असाइनमेंट में बहुत ज्यादा काम देती है जो नियत समय में होने वाले काम से अधिक रहता था और स्टाफ को ना चाहते हुए भी ऑफिस कार्य के लिए नियत समय से अधिक समय देना पड़ता। अगर काम अधूरे रह जाते तो स्टाफ के तनखा में कटौती करती तो कभी पद अवनती कर देती। कंपनी तो उन्नति के राह पर चल पड़ी थी लेकिन मैडम का जीवन सिकुड़ते सिकुड़ते नफे नुकसान तक ही सीमित रह गया था।

मैडम एक भौतिक तकनीक विकसित कर रही थी "इंटेलिजेंट कार्ड तकनीक" पोस्ट ऑफिस के अकाउंट सिस्टम को नियंत्रित करने वाला न्यूनतम लागत वाला प्रोग्राम था। इस शोध पर मैडम की सारी आकांक्षाएं टिकी थी क्योंकि उन्हें विश्वास था कि जल्द ही वह भारत के कंप्यूटर क्षेत्र का सार्वजनिक चेहरा बनेगी। रिज़र्व बैंक के गवर्नर के सामने प्रोग्राम का प्रदर्शन कर उसे स्वीकृत किया गया था।

मैडम का तकनिकी आविष्कार प्रदर्शित तो हो गया लेकिन उसका सारा श्रेय रिज़र्व बैंक के गवर्नर और संचार विभाग के मंत्री ले गए। तकनीक विकसित करने वाली मैडम का नाम सिर्फ एक अखबार को छोड़कर किसीने नहीं लिखा था। मीडिया के इस रवैये से मैडम

विक्षुब्ध थी और अपने खोज के कारण यशस्वी बनने का मौका भी गँवा चुकी थी। पहली बार उसे अपने प्रोफेशन के प्रति विरक्ति आने लगी। जब उसने पति का सहारा लेना चाहा तो उसे पता चला कि पति ने अपने से आधि उम्र की किसी रशियन महिला के साथ विवाह किया है और वह भारत में आकर बसने के लिए तैयार नहीं था। इस घटना के कारण कई दिनों तक मैडम को हिस्टीरिया के दौरे पड़ने लगे।

जिंदगी के पैंतालीसवे वर्ष में अकेलेपन के क्षणों से गुजरते रह रह कर उसे एक प्रश्न चिर देता है कि "जीवन का जो अंश- प्रति अंश स्वाहा कर दिया ... क्या रही उसकी कुल उपलब्धि ? उपलब्धि किसलिए ? किसी भिखारिन को सड़क पर अपनी गृहस्थी के साथ देखती तो ठिठककर वही खड़ी हो जाती..... मुज़से ज्यादा तो यह सुखी .....[७]

४. रहना नहीं देश बिराना है।

मधुजी के इस कहानी पर चंडीगढ़ दूरदर्शन टेलीफिल्म बना चुका है। इस कहानी का युवक दीप अपने देश में मिले बुरे अनुभवों के कारण देश को छोड़कर कैलिफ़ोर्निया में बसना चाहता है।

१९८८ के इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए हिन्दू सिख के दंगों में दीप के पिताजी मारे जाते है। उसके पिताजी एम. बी. बी. एस के बाद पोस्ट ग्रेजुएशन करने के लिए लंडन चले गए थे। वहाँ ऊँची पोस्ट पर थे सबकुछ था, लेकिन अपने पिताजी को किये वादे को पूरा करने के लिए भारत वापस आ गये थे। पिता के मृत्यु के बाद यही रहकर प्रैक्टिस करना चाहते थे, लेकिन उनकी पोस्ट- ग्रैजुएट डिग्री को यहाँ मान्यता नहीं मिली। बरेली जैसे छोटे शहर में प्रैक्टिस नहीं जमी तो दिल्ली आ गये तभी ये हादसा हुआ था।

दीप कोलकाता के मेडिकल कॉलेज में एडमिशन लेता है। गैर कलकत्तिया होने के वजह से उसे मेडिकल कॉलेज के होस्टल में बहुत तकलीफ़ का सामना करना पड़ता है। अपने

बुरे अनुभव एवं होस्टल में भोगे गए बुरे क्षणों के बावजूद दीप कॉलेज में गोल्ड मेडलिस्ट बन जाता है।

दीप कैलिफ़ोर्निया हमेशा के लिए जाने की तैयारी करता है। उसका मानना है कि "इस देश में अगर टिके रहना है तो प्रतिभा के साथ-साथ गॉडफादर चाहिए या शॉर्टकट के हथकंडे और तिकड़मबाजी। प्रतिभा और मेहनत यहां टके शेर बिकती है"।[८]

यहाँ अंग्रेजों से लेकर आज तक सियासतों की सारी ऊर्जा, कार्यपद्धति, चेष्टा एक फॉर्मूला से निकलती है और वह है " क्रिएट दी माइनॉरिटी, मेक इट मिलिटेंट, डिवाइड दी कंट्री एवं रूल द वर्ल्ड।

'रहना नहीं देश वीराना है' यह शीर्षक कहानी को सक्षम बनाता है। अपने कटु अनुभवों के कारण, देश में फैली विषमता के कारण एक गोल्ड मेडलिस्ट अपना करियर विदेश में करना चाहता है। यहां की भ्रष्ट अर्थव्यवस्था टैलेंट को नहीं पहचानती। हमारी देश के कटु स्थिति का वर्णन इस कहानी में नजर आता है।

५. लोड शेडिंग

यह कहानी मधु कांकरिया ने अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर लिखी है, बल्कि ये कहा जा सकता है कि यह उनकी अपनी कहानी है। जब वह नयी नयी लेखिका बनी थी तब उनकी कहानियों को पढ़कर गोविन्द मिश्रा उन्हें खत लिखा करते थे। लोड शेडिंग के कारण वे खत नहीं पढ़ पाती थी। एक दिन खत को पढने की व्यग्रता में उन्होंने अपने दफ़्तर में टोर्च जलाकर खत पढ़ा और पकड़ी गयी।

इस कहानी में कलकत्ता के एक बहुमंजिला इमारत में एक शेयर बाजार की फर्म है, जहाँ से करोड़ों रुपयों के शेयर रोज ख़रीदे और बेचे जाते हैं। इस फर्म के तीन मालिकों में से एक है योगेश, जो शेयर मार्केट में तेजी से पैसा कमाने के पीछे लगा है। वह अपना वैयक्तिक

जीवन भी भूल गया है। शेयर मार्केट बंद हो जाता है तो भी उसके भीतर का मार्केट चलता रहता है। अपने पत्नी और बच्ची की तरफ ध्यान देने के लिए उसके पास समय ही नहीं रहता है - "पत्नी का उबटन भरा श्रृंगार और हाथों की मेहंदी का भी उसे ध्यान नहीं रहता है। पत्नी के सिनेमा देखने की मासूम इच्छा, बेटी की मुस्कान भी अनदेखी रहती। उसकी जिंदगी ऐसे थी की खुदको कोई समझ न थी, कोई और समझा सके ऐसा सहृदय मित्र, नारी, साहित्य या कविता थी नहीं जिंदगी में। जिंदगी में था तो सिर्फ तेजी मंदी का खेल"।[९]

योगेश के ऑफ़िस में राजीव, शैवाल और शुभाशीष काम करते हैं। शैवाल इस शेयर मार्केट में तेजी से कमाते लोगों को देख अपनी छोटी सी पूँजी गवाँ चुका है। राजीव परम संतोषी और सभी प्रकार के हाय- हाय से दूर, हर पल जीने का मजा लेनेवाला था। शुभाशीष इसी ऑफ़िस में कंप्यूटर ऑपरेटर है। शादी के तुरंत बाद उसे छुट्टी न मिलने के कारण वापस काम पर आना पड़ता है। पत्नी राँची में और वह कलकत्ता में पत्नी वियोग की पीड़ा सहन करता हुआ। एक चीज जो कोसो दूर पत्नी की वियोग पीड़ा को सह्य बना रही थी, वह थी पत्नी की भावाकुल चिट्ठियाँ जो उसे पंद्रह दिनों में एक बार जरूर मिलती।

एक बार बीस दिन गुजरने के बाद पत्नी की चिट्ठी ना मिलने पर शुभाशीष व्याकुल हो उठता है। योगेश भी चिट्ठी के बारे में पूछे जाने पर ढंग से जबाब नहीं देता। शुभाशीष पता था, एक बार चिट्ठी अगर योगेश के ड्रावर में चली गयी तो फिर मिलेगी नहीं- "जिन्हे चौबीसो घंटे लंद -फंद और निजी हानि-लाभ के अलावा चाँद सूरज भी नजर न आते हो, वे क्या समझेंगे चिट्ठी पढने की किसी बेताबी को।" [१०]

योगेश ऑफिस से बाहर चला जाता है। देबाशीष उसकी बैचेनी से राह देखते रहता है। इसी बीच लोड शेडिंग के वक्त जनरेटर बंद हो जाता है। देबाशीष का बेताब बेलगाम मन मान नहीं रहा था। उसने योगेश के ड्रावर की चाबी चुराई और उसमे से अपनी चिट्ठी निकाली।

चिट्ठी पढने की बेताबी में वह ड्रावर बंद करना भूल जाता है। योगेश वापस लौटकर देखता है, कि ड्रावर खुला है। वह लाल-पिला हो जाता है। ड्रावर खोलने के अपराध में वह देबाशीष को नौकरी से निकालना चाहता है, लेकिन जब देबाशीष को बाथरूम से हटकर हाथ में टॉर्च लिए चिट्ठी पढ़ते देख वह सारा गुस्सा भूल जाता है -"जैसे चिट्ठी नहीं, उन परम क्षणों में सारे ब्रम्हांड की कोमल भावनाओं एवं दिव्य प्रेम की अनुभूति को अपने भीतर संजो रहा हो।"[११] शुभाशीष को चिट्ठी पढ़ते देख योगेश को अपने भीतर कुछ पिघलता सा लगा। उसके मन के भीतर का मन और आत्मा की आत्मा बोली, नहीं- नहीं प्रेम ने इस क़दर पगी आत्मा चोरी नहीं करती।

इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने जीवन में प्यार पाना एक अत्यंत सुखद, सुन्दर एहसास हैं, इसी का चित्रण किया है।

६. आर आसवो ना (और नहीं आऊंगा)

इस कहानी में पिता अपनी ग़लतियों की बजह से अपने पुत्र को खो चुके है। उनके मानसिक द्वंद्व को मनोविश्लेषणात्मक शैली में इस कहानी में चित्रित किया है ।

कुरूप मंदबुद्धि बालक गोपी के कारण गोपी के पिता को पिता होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। गोपी बेहद काला था। गोपी के जन्म के पांच साल बाद उसकी बहन प्रियंका का जन्म होता है। प्रियंका के आने से पिता अफ़सर बन जाते है। प्रियंका के जन्म से गोपी के नसीब का सारा लाड प्यार छीन जाता है।

प्रियंका को कान्वेंट स्कूल में भर्ती किया जाता है और गोपी को सरकारी स्कूल में। प्रियंका होशियार थी जबकि गोपी बेहद मंद। प्रियंका आत्मविश्वास से भरी तो गोपी घबराहट, संकोच से घिरा और इसी कारण माँ-बाप दोनों में भेदभाव रखते थे। दस वी की अर्धवार्षिक परीक्षा में गोपी साइंस में फ़ैल हो जाता है। तब उसे माता पिता द्वारा समझाया जाता है कि

तुम्हारा, धर्म, कर्तव्य सिर्फ पढ़ना और पढ़ना है। नहीं तो जिंदगी तुम्हारे हाथों से फिसल जाएगी।

गोपी को फुटबॉल खेलना और पेंटिंग्स का शौक था। एक दिन प्रियंका का धक्का लगने के कारण गोपी के चित्र पर सभी रंग बिखर जाते हैं। गोपी चित्र ख़राब होने की बजह से प्रियंका को मारता है। परिणाम स्वरूप पिता की मार गोपी पर बरस पड़ती हैं।

माँ-पिता के डर से गोपी पढ़ाई में अपने आप को झोंक देता है। दिन रात पढ़ाई करने की वजह से गोपी दुर्बल हो जाता है। कमज़ोरी के कारण परीक्षा हाल में ही उसे नींद लग जाती है। निरीक्षक के जगाने पर पेपर पूरा करने के लिए पास बैठे सहपाठी से मदद मांगता है। इस हरकत के कारण परीक्षा हाल से उसे बाहर निकल दिया जाता है। जाते वक्त गोपी टेबल पर लिख जाता है 'आर आसवों ना' (और नहीं आऊंगा) माता पिता की डर से खुद को वह गंगा में विसर्जित कर देता है।

पिता की अपेक्षाओं को पूर्ण न कर पाने के कारण गोपी आत्महत्या करता है। अपनी-अपनी क्षमताओं के आधार पर जीवन जिया जाता हैं, यह बात पिता को तब मालूम होती है, जब वह अपना बेटा खोते है।

७. **बीतते हुए**

यह एक असफल प्रेम कहानी है, मणिदीपा और इंद्रजीत की। पंद्रह वर्ष पहले मणिदीपा इंद्रजीत का प्यार ठुकरा देती है, लेकिन अब फिर से उसका प्यार वापस पाना चाहती है, लेकिन उसकी गयी जिंदगी वापस नहीं आती। आधा सच और आधी कल्पना संजोती हुई मधुजी के कॉलेज लाइफ की यह कहानी है। मणिदीपा और इंद्रजीत कॉलेज के सहपाठी थे। दोनों के विचारों में एकरूपता होने की बजह से वे एक दूसरे के करीब आ गये थे। इंद्रजीत जब मणि के सामने अपने प्यार का इज़हार करता है, तो मणि उसे कहती है-"मुझे क्षमा करना

इंद्रजीत, नारी झुके हुओं पर नहीं झुकती। उसे याचक नहीं चाहिए।"[१२] मणि के इन शब्दों से घायल इंद्रजीत जैसे तैसे एम. ए. पास होकर यूको बैंक में प्रोबेशनरी अफ़सर के लिए चुना जाता है।

कुछ समय बाद मणि की शादी हो जाती है। मणि के शादी में निमंत्रण होने पर भी इंद्रजीत नहीं जाता है- "मणि और उसका पति जैसे दो ध्रुव, सौंदर्य खोजती उसकी आत्मा यथार्थ को जानकर दुःखी हो जाती है। तब उसे याद आता है, किसी बेहतर की आशा में उसने इंद्रजीत को ठुकराया था, तो जीवन ने उसे ही ठुकरा दिया, काश, जीवन को वापस उसी बिंदु से वही पकड़ पाती जहाँ मूर्खतावश वह मेरे हाथों से छूट गया था। पर बहा हुआ पानी भी कभी लौटकर आया है।"[१३]

इसी विचार से पंद्रह वर्षों बाद जब मणि कलकत्ता आती है, तब इंद्रजीत से मिलना चाहती है। उसे बताना चाहती है, कि उसे खोने का क्या ग़म है। मिलने का दिन और वक्त तय होते हुए भी इंद्रजीत उसे मिलने नहीं आता तो उसके मन में विचार आता है, कभी मैंने तुम्हारा अपमान किया था, आज तुमने। एक समय मणि के लिए अपना सबकुछ छोड़ने के लिए तैयार इंद्रजीत के पास आज मणि के लिए आधा घंटा भी निकालना मुश्किल था। इंद्रजीत को न मिलने से मणि का मोहभंग हो जाता है। लेकिन दूसरे दिन जब मणि ऑफ़िस में पहुँचती है तब उसे पता चलता है, कि उसके जाने के बाद एक साहब उसे मिलने आए थे और अपना कार्ड देकर चले गए थे- "कार्ड देखते ही मणि के "मन-प्राण-आत्मा जैसे सब आँखों में सिमट आए.....। एक अलग किस्म की मुक्ति, तृप्त, एवं आत्मिक पवित्रता की अनुभूति अंग-अंग में दौड़ गयी। जैसे वह कार्ड नहीं कोई संजीवनी हो जिसने जीने के ख़्वाहिश को यकायक कई गुना बढ़ा दिया था।"[१४.]

बीतते हुए कहानी के माध्यम से मधु कांकरिया यहाँ स्पष्ट करना चाहती है, कि जिंदगी का नियम ही बहाव है। इस कहानी में मणिदीपा और इंद्रजीत ऐसे पात्र है, जिनके हाथों से प्यार के लम्हे छूट जाते हैं। मणि उन्हें फिर से पकड़ना चाहती है। बीते हुए दिनों की तरह इंद्रजीत ने मणि को अपना बिता हुआ अतीत नहीं समझा था, लेकिन मणि का "बीतते हुए" ही सारा जीवन बह जाता है।

८. **मर्द होते हुए।**

इस कहानी में नेपाली नौकर काँछे का चित्रण है। जिसका शोषण उसकी मारवाड़ी मालकिन करती रहती है। नेपाल की एक बेहद छोटी जगह नीलगंज से आया ईमानदार और मेहनती काँछा मारवाड़ी आंटी के यहाँ नौकर है। जिसने उसे अपने घर के काम करने के लिए बहुत ही कम कीमत में ख़रीदा था। पंद्रह वर्ष के नेपाली काँछा से मालकिन डटकर काम करवाती है, अपने अंतर्वस्त्रों को उससे धुलवाकर प्रेस भी कराती है। एक दिन आंटी कांछा को घर में लॉक कर सिनेमा देखने जाती है, तभी शार्टसर्किट से घर में आग लगती है। नीचे वाले घर में चाबी रखने के कारण वह बच जाता है।

कांछा को उसकी मालकिन बाहर सुलाती थी। एक रात बाहर सोने के वजह से कांछा बारिश में भीगता है। आंटी को जब लेखिका कांछा को अंदर सुलाने के लिए बोलती है, तो वह लेखिका पर ही भड़क उठती है, कहती है "तो सुला ले अपने साथ ... बना ले खसम ! अरे आज नहीं तो छः महीनों बाद जब पूरा मर्द बन जाएगा तब..... दाढ़ी, मुछ, और छाती पर बाल तो आने लगे है अभि से ही.....।[१५]

एक दिन कांछा के सामने ही आंटी कपडे बदल रही थी। यह कांछा को अपमान लगा और अपमान की उस तीव्र अनुभूति में वह आंटी पर पेपरवेट मार देता है और रंडी कहकर

भाग जाता है। मालकिन को पांच टाँके लगवाने पड़ते हैं, पुलिस कांछा को पकड़ भी नहीं पाती।

अमेरिका की औरते नीग्रो दासों के सामने निर्वस्त्र होती थी, क्योंकि वो उन्हें इंसान नहीं समझती थी। आंटी भी कांछा को इंसान नहीं समझती थी।

९. **बड़ा पोस्टर**

दिपु और शैलेन इन दो भाइयों की यह कहानी हैं। दिपु पहले से ही पढाई में कम है और बड़ा भाई शैलेन पढाई में होशियार। बुद्धि से साधारण दिपु अपने बड़े भाई के आदर्शों पर चलना चाहता है, इसीलिए वह अपनी ग्यारहवीं बोर्ड के इम्तिहान में पूरी मेहनत के साथ पढ़ाई करता है, लेकिन परीक्षा हाल में नकल करता बच्चा निरीक्षक के आने पर अपनी किताब दिपु के डेस्क में डाल देता है। दिपु के लाख बताने पर भी उसे सस्पेंड किया जाता है। इसी घटना से दिपु अंदर से पूरा टूट जाता है, दिपु सिज़ोफेलिया का मरीज़ बन जाता है। दिपु को ठीक करने की कोशिश में उसके माता-पिता चल बसते हैं। मरते समय पिता ने शैलेन से वादा लिया था कि वह अपने भाई दिपु का पूरा ध्यान रखेगा। शैलेन नौकर के भरोसे दिपु को नहीं रखना चाहता था, इसीलिए मालविका से शादी करता है।

अपनी पत्नी से वह यह उम्मीद रखता है, कि वह भाई का पूरा ध्यान रखेगी, उसके जीवन में नए रंग लाएगी। दिपु की सेवा में लगने की बजह से शैलेन अपनी पत्नी के लिए कम समय निकाल पाता है। मालविका अपने जीवन को अतृप्त और असंतृष्ट रहने का कारण दिपु को मानती है इसलिए वह उसे पागल खाने भेजना चाहती है।

शैलेन की बच्ची मलका से दिपु खेलना चाहता था, पर मालविका उसे छीनने की कोशिश करती है। दिपु गुस्से से मलका को नीचे फेकने की धमकी देता है। मालविका कन्या की सुरक्षा का सवाल शैलेन के सामने खड़ा कर देती है। मालविका ने - "उसके तमाम छोटे-

मोटे पोस्टरों, मृत्यु शैया पर माँ को दिया अंतिम वचन, भाई के प्रति कर्तव्य बोध, इंसानियत का तकाजा सब पर अपनी नव शिशुकन्या की सुरक्षा के सवाल का बड़ा पोस्टर चिपकाकर उसे वह पटखनी दी थी कि....." [१६]

अपने पागल भाई को बीबी के कहने पर शैलेन पागलों के अस्पताल में भर्ती कराता है, लेकिन पागल खाने में किये जाने वालों के इलाजों की वजह से उसकी मौत होती है।

यह कहानी जीवन के मार्मिक सत्य को सामने लाती है। आत्मसुख के आगे पारिवारिक संम्बधों में दरारें सामान्य होती जा रही है, इसका दर्शन इस कहानी में मिलता है।

१० दरअसल अम्मी

इस कहानी में मम्मी अपने बेटे की कैंसर की बीमारी से परेशान है, विव्हल है, और उसे बचाने की कोशिश छोड़ना नहीं चाहती है। और इस लिए वह अपने पति की हर बात मानकर उसकी खरी खोटी सुनकर भी हमेशा खुश रहने की कोशिश करती है। ताकि उसके पुत्र के इलाज के लिए कोई कमी ना पड़े।सात वर्ष का बंटी थैलीसीमिया से पीड़ित है। उसे खून चढ़वाने हर महीने ले जाना पड़ता है। शुरू-शुरू में बंटी के डैडी भी जाते थे, लेकिन बाद में उन्होंने भी जाना बंद कर दिया। बंटी के कारण मम्मी, डैडी से कुछ ज्यादा ही दबी रहती है। उसे डर रहता है कि कही बंटी के डैडी बंटी के बढते ख़र्चों की वजह से कटौती ना करे। इसीलिए जब उसकी बड़ी बेटी कुलदीप बुवा के जेठ के लड़के की गन्दी हरकतों के बारे में माँ को बताती है तब वह उसे कहती है -"लड़के के चलते यु ही दुखी हूँ ..... अपनी गृहस्थी भी चौपट कर दूँ..... उन्हें भी हाथ से निकल जाने दूँ। [१७]

इस कहानी में एक माँ के ह्रदय तथा सहनशील नारी का चित्रण देखने को मिलता है।

११. उड़ान

'उड़ान' कहानी की कथारेखा "उषा प्रियंवदा" की "वापसी" कहानी जैसी है। वापसी कहानी के "गजाधर बाबू" और इस कहानी के "समीर" दोनों के हाल एक जैसे है। अपने दो बेटे, बहु एवं पत्नी के साथ संयुक्त परिवार में रहते समीर को रिटायरमेंट के बाद अपने पत्नी से पल-पल अपमानित होना पड़ता है।रिटायर्ड होने के बाद समीर को उनकी पत्नी दो कौड़ी का समझने लगती है। जब तक कमाते रहे उनको घर में इज़्ज़त मिलती गयी और जब रिटायर्ड हुए तो घर में पुत्रों का वर्चस्व बढ़ा। टी.वी., अखबार से लेकर खाने की पसंद-नापसंद में बेटों को प्राथमिकता दी जाने लगती है। कई बार तो समीर की पत्नी समीर को बेटों और पुत्रवधु के सामने भी डाँट देती है। एक दिन अपने लिए अलग से अखबार ख़रीद लाने पर समीर की पत्नी जैसे चण्डिका बन गयी -"जैसे अलग अखबार नहीं, अलग दिवार खड़ी कर दी उन्होंने"[१८] यहाँ तक कि घर का नौकर भी उनकी नहीं सुनता था।

समीर के मित्र की जीवन संध्या भी कुछ इसी तरह गुजर रही थी। एक कटोरी दही माँगने पर उनकी बहु उनसे झूठ बोल गयी। इसी घटना से उनके मन में फपोले पड़ गए। अपने नाम बचा सारा रुपया इकट्ठा कर घर छोड़ वे आदिवासी कल्याण आश्रम से जुड़ गए। उसी मित्र ने समीर को चिट्ठी में लिखा था- "न अल्पे सुखम अस्ति (अल्प में सुख नहीं है) ..... यदि जीवन कभी निराश करे..... या अपनों से मोह भंग हो जाए तो मेरे पास चले आना, यहाँ आकर तुम भी शांति का अनुभव करो जिसे ईश्वर कहते है। "[१९] जीवन के भागते दिनों में समीर उस पत्र को भूल गए थे। एक दिन परिवार के मर्ज़ी के खिलाफ जब समीर ने मित्र की शादी में जाने की ठान ली तो पत्नी फिरसे बहु और बेटों के सामने उन्हें अपमानीत कर देती है, इस अपमान से समीर का मनका-मनका बिखर जाता है। समीर ने अपने आदिवासी संस्था से संलग्न मित्र के समान नई उड़ान भरने का फैसला लिया।

१२. आसमान कितनी दूर

यह कहानी मंदा नाम की युवती की है। शादी से पहले ही उसने सुहाग रात के सपने संजोए थे। शादी के बाद उसके सुहाग रात के सपनों में संजोए फूलों से और रेशमी चादर से सजे खूबसूरत पलंग की जगह एक कोठरीनुमा कमरे में ज़मीन पर मरियल से गद्दे और चिकने चीकट तकिए देख उसके सुनहरे सपने डह गए थे।

शादी के बाद मंदा अपने परिवार में व्यस्त रहती है। फिर भी पलंग पर सोने का सपना उसके मन से नहीं जाता। पलंग खरीदने के लिए वह पैसे भी जमा करती है, लेकिन उसके माँ की मौत, अपनी बेटियों की शादी, पुत्र की सगाई के ज़िम्मेदारियों में वह अपना सपना पूरा नहीं कर पाती। जीवन की भारी भरकम ज़िम्मेदारियों को निभाते-निभाते उसका जीवन गुज़र गया था । इन वर्षों में भूलकर भी खुद के लिए सोचने का मौका ही नहीं मिला था मंदा को कि अचानक उसकी जेष्ठ पुत्री मंगला उसका सपना पूरा करती है, एक खूबसूरत पलंग उपहार में देकर। पति भैरोसिंह उस पलंग को वापस भेज देते है, लेकिन मंगला भी उसे दुबारा भेज देती है। पुत्री के आग्रह की ख़ातिर भैरोसिंह ने पलंग को रख लेते है। वह भी जानते थे पलंग को लेकर मंदा की लालसा को। उनके मन में विचार भी आयाकि मंदा को पलंग दे दिया जाए, लेकिन तत्क्षण ही विचारों ने पलटा खाया और पलंग पुत्र के कमरे में रखा लिया।

पलंग पर एक बार लेटने की अदम्य इच्छा हुई मंदा के मन में। दरवाज़े की कुण्डी लगाकर वह कुछ पल पलंग पर निश्चिंत होकर लेट गयी- "अब वह किसी षोडशी की ही मानसिकता से पलंग पर औंधी सी पड़ी थी। किसी दूसरे ही आकाश में विचरण करती हुई। कितना अपूर्व लग रहा था, जमीन से तीन फ़ीट ऊँचा उठकर सोना। शरीर का अंग अंग जैसे इस अद्भुत अनुभूति के लिए अभिभूत था ।"[२०] इसी अनुभूति में उसकी आँख लग गयी। दरवाज़ा पीटने की आवाज़ से उसकी आँखें खुली। उसने जब दरवाज़ा खोला तो उसके सामने

पूरा घर और पुत्र के दो- तीन दोस्त भी थे। वह लज्जा से चूर-चूर हो गयी, पुत्र की सुहाग रात और वह सोयी है, सुहाग के शेज पर। उस दिन के बाद से फिर से कभी किशोर उम्र में देखे चलचित्र के उस दृश्य ने उसे हांट नहीं किया।

१३. दाखिला

यह कहानी लेखिका की स्वयं की कहानी है। इस कहानी की पात्र सुकीर्ति पति से विभक्त हुई है। अपने पुत्र विक्रम को अच्छे स्कूल में दाख़िला देना चाहती है। आत्मविश्वास से भरी सुकीर्ति को विश्वास था कि वह अपने साढे पाँच वर्षीय विक्रम को अच्छे स्कूल में दाख़िला दिला देगी। लेकिन विक्रम के साक्षात्कार के दौरान उनके पति साथ न होने से, तो कही किसी और वजह से दाख़िला नहीं मिल पाता।

आखिर लम्बी मानसिक खींचतान के पश्चात उसके विवेक ने घुटने टेक दिए और विक्रम के साक्षात्कार के दौरान अपने भाई को ही विक्रम के पिता के जगह ले जाती है। बस उससे एक भूल होती है कि वह विक्रम को इस बारे में नहीं बताती कि वह उसके मामा को ही पापा बना के ले जा रही है। जब विक्रम पापा की जगह मामा पुकारता है तब सुकीर्ति का झूठ पकड़ा जाता है, और विक्रम को दाखिला मिल नहीं पाता।

मैंने मधु कांकरिया का जो साक्षात्कार लिया उस समय उन्होंने ने एक घटना का जिक्र किया था। अपने परिवार की सच्ची घटनाओं का वर्णन इस कहानी में आया है। गृह क्लेश के दिनों में घर से चाकू ग़ायब हो रहे थे। एक बार घर के पिछवाड़े सफाई करते वक्त बहुत सारे चाक़ू मिल गए, सुकीर्ति ने विक्रम को पूछा तो नन्हे विक्रम ने जबाब दिया -"मैंने फेके है चाकू यहाँ, मुझे डर था की पापा गुस्से में ये चाक़ू ही तुम पर न फेक दे"। [२१]

गृह क्लेश के कारण नन्हा विक्रम अक्सर तनावग्रस्त रहता है। दूसरे स्कूल में इंटरव्यू के लिए जाते समय बेटा माँ से कहता है -"इस बार तुम गड़बड़ नहीं करना। इंटरव्यू रूम में घुसते ही

कह देना फादर को, पापा हमारे साथ नहीं रहते। नहीं तो तो पिछले इंटरव्यू की तरह इस बार भी मेरा एडमिशन नहीं हो पायेगा"।[२२]

इस कहानी में लेखिका ने आज की शिक्षा प्रणाली का बड़े मार्मिकता से चित्रण किया है। छोटे छोटे बच्चे भी मन भर का बैग लेकर स्कूल में जाते है। बच्चों को दाख़िला देने के लिए पचास- पचास हजार तक का डोनेशन भी देना पड़ता है। बच्चों को खेलने का समय भी नहीं मिलता है। स्कूल से सीधा कोचिंग, कोचिंग से घर, घर में होम वर्क और होम वर्क करते करते बेड टाइम इसी बजह से बच्चे भी अपना मानसिक संतुलन खो रहे हैं।

१४. **शून्य होते हुए**

'शून्य होते हुए' यह कहानी बढ़ते गर्भपात पर आधारित है। यह कहानी मधुजी ने पूर्ण अध्ययन के उपरांत लिखी है। गर्भपात करने के तरीके का जो वर्णन उन्होंने किया है, पढ़कर मन कांप उठता है। "मेडिकल टर्मिनेशन एक्ट ऑफ़ १९७७ के नए संशोधित नियम के अनुसार गर्भपात करने के लिए किसी का पूर्ण डॉक्टर होना भी जरूरी नहीं था। कोई भी आर. एम. पी. या डी. जी. ओ. (डिप्लोमा इन गायनीकोलॉजिस एंड एब्स्ट्रेटिक्स) भी जिसने कम से कम बीस गर्भपात के केस किसी डॉक्टर के अधीन किए हो वह भी कानूनी रूप से गर्भपात कर सकता था। इसके अतिरिक्त अब गर्भपात किसी भी डॉक्टर के प्राइवेट नर्सिंग होम में भी किया जा सकता था। उसका रजिस्टर्ड होना भी जरूरी नहीं था -"यानी कुल मिलकर आमंत्रण से देते डॉक्टरों के प्राइवेट चैम्बर "आइए चुइंगम चबाते हुए गर्भपात करिए।"[२३]

इस कहानी में डॉ विजय मजबूरी से पांच महीने के विकसित भ्रूण के गर्भपात के लिए विवश हो जाते है। डॉ. विजय राँची शहर से सौ किलोमीटर दूर लोहदरगा में सरकारी अस्पताल में कार्यरत थे। उन्हें प्रकृति से बड़ा ही लगाव था। आदिवासी और अरण्य संस्कृति से उनको आकर्षण था। इस कहानी में अरण्य संस्कृति का वर्णन विस्तार से आया है। डॉ.

विजय के अस्पताल में काम करने वाला आदिवासी "भैरो उराँव" अचानक अस्पताल से ग़ायब हो जाता है। जब लौटता है तब अपने साथ अपनी अठारह- उन्नीस बरस की बेटी शनचारिया को साथ ले आता है।

शनचरिया पांच महीने की गर्भवती होती है। आदिवासी से ईसाई फादर बना, फादर "जेवा" शनचरिया को फंसाकर उसे गर्भवती बनाता है। आदिवासियों में धोखा देनेवालों का सर धड़ से अलग किया जाता है। लेकिन इस कहानी में कही भी अत्याचार और शोषण के खिलाफ विरोध नहीं नजर आता। शनचरिया के उद्धार के लिए डॉ. विनय गर्भपात के लिए तय्यार हो जाते है। इस घटना से आहत डॉ विजय अपने आप को माफ़ नहीं कर पाते।

इस कहानी के माध्यम से मधु कांकरिया भ्रूणहत्या जैसे ज्वलंत विषय के जरिए हमें आगाह करना चाहती है।

१५. **फैसला फिर से**

यह कहानी पैसष्ठ वर्षीय महाश्वेता देवी के संघर्ष की कहानी है। जिस फ्लैट में वह तीस वर्षों से रह रही थी, उस फ्लैट को खाली करने के लिए फ्लैट के मालिक और प्रतिपक्षी हरिनारायण घोष ने न्यायालय में दावा ठोका है। हरिनारायण खुद बड़े मकान में रहता है। उसके दो पुत्रों का भी अलग मकान हैं। दरअसल वेस्ट बंगाल टेनेंसी एक्ट के अनुसार मकान मालिक बिना किसी वजह महाश्वेता देवी से जो पिछले तीस सालों से फ्लैट में रह रही थी उससे फ्लैट खाली नहीं करा सकता था। लेकिन कानून की विशेष धारा "निजी आवश्यकता" के आधार पर महाश्वेता देवी से फ्लैट खाली कराने के लिए उसने दावा ठोका था। मुकदमा जब कोर्ट में चल रहा था, तब मकान मालिक ने महाश्वेता देवी को डराया, धमकाया, उसके पीछे गुंडे लगवाए, उसे मार डालने तक की धमकी दे दी। आधी रात को बिजली काटने लगा यहाँ तक कि महाश्वेता देवी के यहाँ काम करने वाली बाई को भी डरा-धमका कर भगा दिया। महाश्वेता

देवी ने तब सोचा कि जब तक पराश्रित रहूंगी, लोग जीने नहीं देंगे। आखिर उसने अपनी शारीरिक शक्ति बढ़ाने के लिए सुबह-सुबह उठकर व्यायाम करना शुरू किया। बाई पर आश्रित न रहकर अपने सारे काम खुद निपटाने लगी।

महाश्वेता देवी के वकील तपन दा ज्ञान, अनुभव, एवं तर्क शक्ति से भरे होकर भी झूठ का सहारा न लेने की वजह से अपने से कम उम्र, अनुभवहीन प्रतिपक्षी वकील सपन चौधरी से परास्त होते है। वह झूठ को सच बोलने की कला का इस्तेमाल करके झूठे भाड़े के बिलों को दिखा कर यह साबित करता है, कि हरिनारायण के दोनों बेटों के पास रहने के लिए मकान नहीं है और वह भाड़े के घर में रहते हैं । इसी बात के आधार पर महाश्वेता देवी मुकदमा हार जाती है।

फिर भी प्रशंसकों की बधाईयाँ बटोरते वकील चौधरी को महाश्वेता देवी ने इस अंदाज में बधाई दी कि उसकी विवेक बुद्धि जाग उठी, उसने कहाँ -"शाबास पुत्र ! जिस तर्क एवं युक्ति के करिश्मे से तुमने कानून की धज्जियाँ उड़ाकर सच को झूठ कर दिखाया वह अदभुत था। मेरा भी एक पुत्र था जो कानून की पढ़ाई करते समय गुजर गया था। आज सोचती हूँ कि अच्छा ही हुआ कि वह मर गया, नहीं तो क्या पता उसकी आत्मा भी तुम्हारी आत्मा की तरह फीस के मोटी रकम पाकर बिक जाती और वह भी जाने कितने निःसहाय एवं विवश वृद्धाओं को कानून को ठेंगा दिखाकर घर से बेघर कर देता।"[२४]

इस कहानी का अंत जीते हुए वकील के हृदय परिवर्तन से होता है।

१६. एक रुकी हुई स्त्री

मेडिकल कॉलेज में पढ़ने वाली युवती मानसी, सरबजीत से प्रेम करती है और सालों अपने प्यार को पाने के इंतजार में गुजार देती हैं। मेडिकल की पढ़ाई करते समय मानसी और सरबजीत एक दूसरे से प्यार करने लगते है लेकिन दोनों का प्रेम अलग किस्म का था। मानसी

पढ़ाई परीक्षा छोड़कर केवल सरबजीत पर जान छिड़कती है, लेकिन सरबजीत बड़ा महत्वाकांक्षी है। वह कार्डिओ थैरेसिस थेरपिस्ट बनना चाहता है।

सरबजीत से शादी करने के लिए उतावली मानसी समझ नहीं पाती कि आत्मउन्नति के लिए मनुष्य कितना गिर सकता है। सरबजीत के लिए अपना पूरा करियर बर्बाद करनेवाली मानसी सत्रह साल बाद भी अपने प्यार की प्रतीक्षा में अपने प्रेमी की राह पर आँखे बिछाए रखती है।

सरबजीत के ठुकराए जाने के छ वर्ष बाद मानसी एम. बी. बी. एस. करती है। उसे गायनोकॉलोजिस्ट में चांस मिलने पर भी मन एकाग्र न करने के कारण उसे छोड़ देती है और अब सिर्फ साधारण एम. बी. बी. एस. की डिग्री लेकर किसी गार्डन प्रैक्टिस करने लगती है।

मानसी एक होनहार, होशियार और प्रतिभा संपन्न होने के बावजूद प्यार में ठेस पहुचने पर टूट जाती है और अपने जीवन को सही दिशा नहीं दे पाती। अपने प्यार सरबजीत को पाने के लिए वह सत्रह वर्ष तक रुकी हुई है, जिसे उसे भुलाने में पंद्रह मिनिट भी न लगे।

१७ चूहे को चूहा ही रहने दो

स्त्री के अधिकारों को नकारता पति और उससे प्रतिशोध लेती स्त्री का चित्रण इस कहानी में किया है।

कहानी में मधुजी ने नायिका के नाम का जिक्र नहीं किया है। इस कहानी में युवती अपने नौ वर्षीय पुत्र उमंग के साथ गंगटोक आई है। अचानक निकले काम से पति आ नहीं पाते लेकिन साथ में अपने ऑफ़िस का कर्मचारी भेजते है। लेकिन युवती उसे वापस भेजती है।

गंगटोक के इस यात्रा के दौरान युवती की एक युवक के साथ मुलाकात होती है। दोनों एक ही होटल में ठहरते है। गंगटोक की खूबसूरत वादियों में घूमते समय युवती उसके करीब

आना चाहती है। युवक सोच मे पड़ता है -"गांभीर्य, अभिजात और बौद्धिकता का लबादा ओढ़े यह कही निम्फोमैनिक तो नहीं, बदचलन तो नहीं।"[२५]

एक रात युवक को युवती से आमंत्रण मिलता है, आवेग, मादकता, उजास, उम्मीद, स्वप्न और योवन की उच्छृंखलता के सौ सौ सूर्य जगमगाने लगते है तल्लीनता और तन्मयता के खामोश क्षण स्वप्न और यथार्थ के समागम के क्षण जब युवक चरमोत्कर्ष की और अग्रसर होता है, तभी एक झटके से युवती स्वयं को उस ऐन्द्रिक जाल से मुक्त कर लेती है। अपमानित युवक से पूछे जाने पर युवती कहती है, कि इससे आगे बढ़ना उसके एजेंडा में नहीं था। आज की रात उसके प्रतिशोध की रात थी।

युवती का यह प्रतिशोध अपने पति के प्रति था। उसके पति ने उसके ऊपर पाबंदियाँ डाली थी। यहाँ तक कि छोटे भाई के मित्र के साथ हाथ मिलाने पर उसके हाथों को दीवार पर रगड़ दिया था। जिससे उसका स्पर्श मिट जाए। वह हम उम्र इंसान से बात करने तक के लिए तरस जाती थी। इसलिए स्वयं को एक सीमा तक किसी गैर मर्द के हवाले करके अपने अपमान का बदला लेना चाहती है।

युवक समझ जाता है, कि अब उसे चले जाना चाहिए क्योंकि युवती का उद्देश्य पूर्ण हो चुका था। जाते जाते उसने पूछा -"क्या तुम अपने पति को अपने प्रतिशोध के बारे में बताओगी ? युवती विद्रूपता से हँसकर कह देती है। शायद हा, शायद नहीं .. पर यदि नहीं बताया तो क्या हर्ज, लेट माउस बी अ माउस (चूहे को चूहा रहने दो)। [२६]

मुझे लगता है, कि पति के दबाव में जीती स्त्री, अपने पति से हुए अपमान का प्रतिशोध दूसरे मर्द के साथ हम बिस्तर होकर लेती है, यह अतिशयोक्ति लगती है। शायद ही कोई औरत ऐसा कदम उठा सकती है। प्रतिशोध के तो कई मार्ग हो सकते है, लेकिन अपनी नैतिकता को गिराकर पति से प्रतिशोध लेना हमारी संस्कृति में नहीं।

१८. अन्वेषण

यह कहानी मानवी मन, जो संसार, मोह, माया, जीवन से अनाकर्षित नहीं रह सकता इन बातों का सूक्ष्म अंकन करती है। इस कहानी के फ़ादर मैथ्यू जो एक प्रतिथयश स्कूल के वाइस प्रिसिंपल है। एक युवती के प्यार में अपना पादरी का सफेद चोंगा छोड़ कर सामान्य जीवन में लौट जाते है।

स्कूल में बच्चों के मनोविज्ञान के अनुसार चलने वाले फ़ादर मैथ्यू, किसी लड़के को दण्डित करना तो दूर टोका भी नहीं करते थे। इसीलिए स्कूल के सारे बच्चों में वे प्रिय थे।

फादर मैथ्यू ने बारह वर्ष के उम्र से ही अपने बाल मन में यह सपना अंखुआया था कि वे सफेद चोंगा पहनने वाले पादरी बनेंगे। केरल के साधारण किसान परिवार, तीन बहने और चार भाइयों के साथ वह रहते थे। तीन पीढ़ी पूर्व उनका ब्राह्मण परिवार ईसाई बना था। फ़ादर मैथ्यू के दादा और पिता भी पादरी बनना चाहते थे। पर सांसारिक ज़िम्मेदारियों के कारण नहीं बन पाए। इसलिए पिता के सन्मुख उन्होंने पादरी बनने की इच्छा रखी तो पिता ने नहीं रोका।

अनेक वर्षों के कठिन परीक्षण और कड़ी निगरानी में रहकर पादरी बनकर कैसॉक (चोंगा) पहनने का उनका सपना पूरा हो चुका था। लेकिन गुंजन नाम की युवती के प्रेमपत्र ने उन्हें हिलाकर रख दिया था। अशांति, अतृप्ति और प्यास के पहाड़ों पर उनके मन को लिटा दिया था। अब उन्हें प्रार्थनाएँ, मैडिटेशन, चर्च की धरती और आकाश, प्रेरणा, शांति, सुकून स्फूर्ति नहीं देते थे। और संसार के तरफ उनका आकर्षण बढ़ता जा रहा था।

ये सारी बातें वह फादर पॉल मंगलम को बता देते हैं। पॉल मंगलम उन्हें समझा देते है कि -"हमारे इस पादरी जीवन में इस प्रकार की भावनाओं का कोई स्थान नहीं है। प्रेम के इन लहरों को मानव-सेवा के विशाल समुद्र में डूबा दो। अपने इस चेतना और यातना को जन-जन से जोड़ दो..... यही मुक्ति दिलाएगी तुम्हें।" [२७]

फादर पॉल मंगलम के समझाने के बावजूद मैथ्यू अपना निर्णय नहीं बदलते। वह पादरी जीवन से त्यागपत्र देकर संसार में लौटना चाहते है।

भरी दोपहरी के अँधेरे

उनका दूसरा कहानी संग्रह है, 'भरी दोपहर के अँधेरे' इस कहानी संग्रह मे ग्यारह कहानियाँ हैं। इन ग्यारह कहानियों में से सात कहानियों का विवेचन "बीतते हुए" कहानी संग्रह में हो चूका है। बाकी चार कहानियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

१. फाइल

पुनर्वास की प्रक्रिया का अहम् अंग है, अतीत से छुटकारा, पुनर्वासित व्यक्ति के अतीत के काले धब्बे उसके वर्तमान जीवन को कलुषित कर देते हैं। फाइल इसी विषय पर आधारित एक कहानी है। आयरलैंड का एक निवासी धुल में रंगते रिसते, फूटपाथ पर रोते-कलपते बच्चो, नशे एवं कुटवों के शिकार किशोरों और लालबत्ती इलाकों की ज़ख्म खायी किशोरियों को देख विचलित हो उठा और उसने "सिनी आशा" की नीव डाली।

इस कहानी में मधुजी ने भारतीयों की धर्म आस्था पर कडा प्रहार किया हैI कलकत्ता की जितनी भी नशेड़ियों, फूटपाथियों और अनाथ बच्चों, दबे कुचले बच्चों या वासना की शिकार हुई युवतियों के लिए स्वयंसेवी संस्थाएँ है वह सब ईसाईयों द्वारा स्थापित है।

इसी "सिनी आशा" में नयी नयी आई श्यामली दी को फाइल तैयार करने का काम संस्था की सूत्रधार तृप्ति दी देती है। इसी संस्था में रहनेवालों में से सबसे खतरनाक है पिंकी। उसकी फाइल अभी तक आधी ही लिखी गयी है - "पिंकी की फाईल में स्पष्ट लिखा था ११ वर्ष से लेकर १४ वर्ष तक उसके साथ कई बलात्कार हुए और वह भी उसकी माँ के ग्राहकों के द्वारा।"[२८]

सबसे पहले जब पिंकी "आल बंगाल चिल्ड्रेन वेलफेयर होम" में थी तब वहा पर उसकी किसी सहेली ने पिंकी से पूछ डाला- "क्या तुम्हारी माँ वेश्या थी"। तब पिंकी ने गुस्से में उस लड़की का सर दिवार से पटक दिया था। इस घटना से उसे मेंटल हॉस्पिटल भेजा गया। वहा से किसी सहृदय सायकियाट्रिस्ट ने मेहरबानी से उसे "सिनी आशा" भेज दिया था।

पिंकी को नृत्य और संगीत से लगाव था। उसका सेवा भाव से भरा व्यवहार देख "सिनी आशा" के सभी लोग निहाल थे। लेकिन कोई भी उसके अतीत के बारे में पूछे तो वह उसे काटने दौड़ती थी। शामली दी जब फाइल बनाने के लिए पिंकी की केस हिस्ट्री जानना चाहती है तब वह कहती है -"अब कैसे समझाऊ आपको की जितना नुकसान मेरी माँ ने मेरा नहीं किया, उससे ज्यादा फाईलों के इन खुले जबड़ो ने किया है ।"[२९] जो पिंकी के साथ हुआ उसके लिए वह अपने आप को दोषी नहीं मानती थी। अपने अतीत को भुलाकर एक लड़के से प्रेम भी करने लगी थी। वह लड़का भी उसे प्यार करता था। एक दिन उस लड़के ने ऑफिस के क्लर्क को घुस देकर पिंकी की फाइल पढ़ी और उसके बाद उससे मिलना ही छोड़ दिया। पिंकी के पूछे जाने पर "रंडी की बेटी रंडी ही निकली" कहकर उसे अपने जिंदगी से निकाल दिया।

इस घटना से पिंकी का जीवन उध्वस्त हो जाता है। शामली दी सोचती है, ऐसी फाईल बनाके क्या फायदा जो किसी की सवाँरी जिंदगी ही नष्ट कर दे। शामली दी दूसरे दिन पिंकी के सामने अपने फाउंटन पेन की स्याही गिराकर पिंकी के फाईल की बैकग्राउंड हिस्ट्री पूरी तरह से मिटाती है। इस तरह शामली दी धरती के एक घिनौने धब्बे को साफ़ कर देती है और पिंकी का चेहरा सेमल फूल की तरह खिल जाता है।

यह कहानी पुनर्वास की प्रक्रिया और व्यवस्था पर आपत्ति दर्ज कराती है। पुनर्वास के लिए जरुरी है, अतीत से छुटकारा। फाईल में दर्ज अतीत के पल पुनर्वासित को वर्तमान में जीने

नहीं देते इसलिए पुनर्वासित की फाईल बनाने की जगह उसका जीवन सुधारने की, सुन्दर बनाने की, जीवन को सही दिशा, सही मार्ग देने की जरुरत हैं।

२. और अंत में ईशु

विश्वजीत नाम के नवयुवक की यह कहानी है। विश्वजीत अपने कॉलेज के दिनों में अपने साथियों के साथ नक्सलवादी आन्दोलन में सक्रीय था। १९६९-७० का वह महान इनकलाबी समय जब भारत ही नहीं यूरोप, अमेरिका और फ्रांस के छात्र एवं युवा वर्ग ने अन्याय, राज्य व्यवस्था एवं तानाशाही राजतन्त्र के खिलाफ आवाज उठाई थी।

अन्य नक्सलवादियों के साथ विश्वजीत को भी पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया जाता है। पाँच साल बाद जेल से छुटकर विश्वजीत जब वापस आता है, तब उसे पता चलता है कि क्रांति का सपना टूट गया है। वह हवा बदल गयी थी जहाँ क्रांति के स्वप्न खिलते थे। इस घटना से दु:खी विश्वजीत नशे के अधीन हो जाता है। नशा करने के लिए पैसे न मिलने पर अपनी किताबे तक बेचता है।

नशे की आदत की बजह से विश्वजीत चारों तरफ से ठुकराया जाता है। सबसे उपेक्षित हो जाने पर एक मोड़ पर धर्मांतरण के लिए तैयार हो जाता है। ड्रग्स की अँधेरी सुरंग से उसे इसाईयों ने बाहर खींचा था। अँधेरे तहखाने में घूमता उसका मन पहली बार स्थिर हुआ था। उन ईसाईयों का ऋण चुकाने के लिए विश्वजीत ने उन्हें अपना धर्म ही दे दिया।

लेखिका के पूछे जाने पर विश्वजीत कहता है- "ठीक आप जैसे लोग अपनी संस्कृति और धर्मान्तरण को लेकर बहुत चिंतित है। मिथक कथाओं, स्वप्न-बिम्बों और देवी देवताओं की यह उच्च संस्कृति ? बहुत गर्व है आपको इस पर। काश, आप त्रिशूल बाँटने की बजाए लोगों के दु:ख बाँट पाती। काश, आप यह समझ पाती कि जो संस्कृति गिरे हुए को उठा नहीं

सकती, उन्हें क्षमा नहीं कर सकती, पीड़ितों के खून, थूक एवं मवाद से अपना आँचल गंदा नहीं कर सकती वह धीरे-धीरे खोंखली हो जाती है।"[३०]

अपने धर्मान्तरण का असली कारण बताते हुए विश्वजीत कहता है कि जो संस्कृति गिरे हुओं को उठाती है, उन्हें क्षमा करना जानती है, वह चाहे जिस किसी भी कारण से ऐसा करे, वह उस संस्कृति का सन्मान करता है।

३. कीड़े

बावन वर्षीय अंग्रेजी के प्रोफेसर वर्मा (कहानी में दूसरी जगह हिंदी के प्रोफेसर बतलाया गया है) अपने जीवन के अंतिम क्षणों में जीवन का सत्य समझ जाते है। परिवार को रोशन करने के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन न्योछावर कर दिया, पिछले बीस-बाईस वर्षों में यार-दोस्त, बंधू-बांधव, गली-मोहल्ला और पैतृक गाँव के खेत खलिहान, चौपाल ..... सब से नाता छोड़ दिया था। बच्चों के उज्वल भविष्य के लिए रात रात तक प्राइवेट ट्यूशन लेते थे। अपनी पत्नी का व्यक्तित्व उभारने के लिए कभी सूरदास, कभी तुलसी, प्रेमचंद, विद्यापति आदि के दुनिया में उसे ले जाते थे। लेकिन आज उनके जीवन के अंतिम क्षणों में उन्हें अपने परिवार के बर्ताव पर अचरज हो रहा था। एक असाध्य बिमारी के बजह से उनका घर का वजूद ही ख़त्म हो गया था।

प्रोफेसर वर्मा के शरीर में घाँव हुए थे, और उन घावों में कीड़े हो गए थे। जिसके के कारण उनके सारे शरीर से बदबू आती थी। शरीर के घाँव, खून, मवाद, कीड़े और बदबू के वजह से उनका बड़ा बेटा मयंक उन्हें अस्पताल में एडमिट करवाता है। घर में बदबू आते पिताजी के घावों की बजह से वह अपने नौकरी पर पूरी तरह ध्यान नहीं दे पाता। छोटा बेटा मोहित भी अपने बड़े भाई के फैसले पर कोई विरोध नहीं करता। मयंक के इस फैसले से उनको सदमा पहुँचता है। एक वह थे जिन्होंने छः साल तक पिता की टट्टी- पिशाब उठाया पर चेहरे

पर कभी शिकंज तक आने नहीं दी। वह सोचते थे -"काश जितनी मेहनत उन्होंने मयंक को इंजिनियर बनाने में की थी, उसका शतांश भी उसे अच्छा इंसान बनाने में करते।"[३१]

इन घटनाओं से पीड़ित होकर उन्होंने मर्सी-किलिंग का चुनाव किया। अपना जीवन वह जहर का इंजेक्शन लेकर ख़त्म करने वाले थे, लेकिन जीवन के आखरी क्षणों में भी उनके साथ घर का कोई नहीं था। डॉ. सेन उन्हें जहरीला इंजेक्शन दे जाते है। घरवाले रातभर उस समाचार की राह देखते रहे कि कब उनकी मौत हो जाए। पर सुबह तक हॉस्पिटल से कोई खबर नहीं आती तो मोहित और मयंक चाय देने के बहाने अस्पताल जाते है लेकिन पिता को मरा न पाकर भौचक्का रह जाते हैं । जहर के इंजेक्शन से प्रोफेसर वर्मा के शरीर के सारे कीड़े मर गए थे और कीड़ों के मरने की बजह से उनके ज्यादातर घाँव सुख गए थे।

पिता के बचने पर दोनों बेटे उन्हें घर लेकर जाना चाहते है, लेकिन वह घर जाने से मना करते है । वह उन कीड़ों के प्रति कृतज्ञ भाव व्यक्त करते हैं, जिन्होंने उन्हें ब्रम्हांड की तरह मुत्यु और संबंधों के कई रूप दिखाए और अंततः आत्मा पर लगे अंध मोह और अज्ञान के कीड़ों को झाड दिया। इन्ही कीड़ों की बजह से उन्होंने महसूस किया की मानवता को लगे यह कीड़े अगर नष्ट नहीं किये तो शीघ्र ही सब कुछ नष्ट कर देंगे जो शिव है, सुन्दर है, पवित्र है और मानवीय है।

४. भरी दोपहरी के अँधेरे

इस कहानी का मूल मधुजी के यात्रा संस्मरण "पहाड़, पलामू और आग" में छुपा है। गिरिडीह जिले के मधुबन गाँव का चित्रण इस कहानी में है। जैन धर्मियों का मक्का-मदीना है शिखरजी, यह शिखरजी इसी मधुबन गाँव में बसा है। शिखरजी की पहाड़ियों के दर्शन के लिए जैन धर्मियों की यहाँ भीड़ लगी रहती हैं।

मधुजी भी इस गाँव में आयी है, लेकिन बाकी सैलानियों के साथ वह शिखरजी के दर्शन के लिए नहीं जाती। वह पहाड़ियों पर घुमने निकलती है। घुमते वक्त उन्हें मधुबन गाँव के लोगों के जीवन का सच समझ आता है। गाँव की नवयुवतियाँ पाँच रुपये के लिए सुबह आठ से लेकर शाम के पाँच तक बालू उठाने का काम करती हैं।

शिखरजी के दर्शन करने आये कई सैलानी डोली में जाते है। डोली ढोनेवाले यात्रियों को पहाड़ तक पहुंचाते है। २७ किलोमीटर के कठिन खतरनाक और दुर्गम पहाड़ पर सैलानियों को पहुचाने का सिर्फ ३५० रुपया इन्हें मिलते। डोली ले जाते समय दुर्घटना होने पर मंदिर से उन्हें कोई मुआवजा नहीं मिलता। पहाड़ पर चढ़ते समय फिसल जाने पर अपाहिज हुए व्यक्ति को भीख माँगने के अलावा और कोई चारा नहीं रहता।

एक ओर थोडेसे पैसों के लिए अपनी जान जोखिम में डालते गाँववाले तो दूसरी ओर सब कुछ त्यागकर सत्य की खोज में नंगे बदन इन्ही पहाड़ियों पर विचरण करते जैन मुनि। ऐसेही जैन मुनि के दर्शन मधुजी को पहाड़ पर घूमते समय होते है। मधुजी के प्रार्थना करने पर भी वह जैन मुनि घायल गाँववाले की मदत नहीं करते। मधुजी को जैन मुनि के आचरण से दुःख होता है। जैन धर्म करुण, दया, अहिंसा का धर्म है। लेकिन गरीब की दया करने का उनके पास कोई धर्म नहीं है।

इस कहानी में एक ओर तड़पता, बिलगता, सर्वहारा आदिवासी वर्ग तो दूसरी और मोक्ष प्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व त्यागकर इन पहाड़ियों में आकर बसनेवाले अनेक ऋषि मुनियोंका चित्रण किया हैं।

और अंत में ईशु

यह उनका तीसरा कहानी संग्रह हैं। इस कहानी संग्रह में दस कहानियाँ संकलित की गयी हैं। जिनमें से चार कहानियों का विवरण पूर्व कहानी संग्रहों में हो चूका हैं। बाकी छ: कहानियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया है।

१. महाबली का पतन

मधुजी के उपन्यास "खुले गगन के लाल सितारे" इस उपन्यास का पात्र आशीष चटर्जी के पतन की यह कहानी है। रिज़र्व बैंक के गवर्नर की बेटी "जया" आशिष दा के प्रेम में सब कुछ करने के लिए तैयार रहती है। नक्सलवादी आन्दोलन से जुड़े आशिष चटर्जी "काकू" को न तो करियर की चिंता, न जिंदगी की, पूरा फक्कड़ था वह, बस दिन-भर एक ही फितूर सर पर सवार था और वह था नक्सलवादी लाल सलाम।

छात्र राजनीति करने के लिए आशिष दा बी. एस. सी. करके एम्. एस. सी. करने की बजाय उसी कॉलेज में दूसरे विषय में फिर से बी. एस. सी. करने लगे थे।

जया के पिता अपनी पुत्री को लेकर काफी चिंतित थे। वह चाहते थे कि जया स्टेट्स के किसी लड़के से ब्याह कर ग्रीन कार्ड होल्डर बन जाए लेकिन समान उद्देश्य, समान ध्येय के साथ जीने के लिए जया, आशिष दा से शादी कर लेती है। शादी के बाद कामरेड बनकर शेल्टर हाउस चलाती है। पुलिस भी नक्सलवादियों के पीछे लगी होती हैं और ऐसे ही दिनों में आशिष दा को गिरफ्तार किया जाता है। आशिष दा के गिरफ्तार होने के बाद पुत्री "रचना" का जन्म होता है।

बीस वर्ष बाद लेखिका की मुलाकात रचना से होती है, तब वह उसे पूछती है कि क्या वह आशिष दा की बेटी है ? रचना जबाब देना टालती है और कहती है, कि वह जया की बेटी है।

लेखिका जब जया से मिलती है तब, देखती है कि जया के घर में आशिष दा का नामोनिशान नहीं है। वह जया से जानती है, आशिष दा ने अपने से आधी उम्र की लड़की के साथ दूसरी शादी की थी- "आखिर ऐसा हुआ कैसे? महाबली का पतन? और वह भी तूफानों के गुजर जाने के बाद? उम्र की ढलान पर।"[३२]

आशिष दा के पतन का कारण जया इस युग और वातावरण के प्रभाव को मानती है - "पहले तो फिजा में क्रान्ति थी, दुनियाँ को बदल डालने के नारे थे। पर आज फिजा में खुला बाज़ार है। क्षणों में जीते लोग हैं। मुनाफे का गणित है। विश्व सुन्दरियाँ हैं। औरत छाप विज्ञापन है। जीने और भोगने का बाज़ार है।"[३३]

आज के युग के परिवर्तन ने मनुष्य को पूरी तरह बदल दिया है। आज के युग का वातावरण ही ऐसा है जिसमें उत्कर्ष संपन्न व्यक्ति का अध:पतन भी हो सकता है।

२. फैलाव

इस कहानी की नायिका श्रुति के माध्यम से लेखिका ने स्त्री अस्मिता को दर्शाया है। श्रुति एम्.एस.सी. पास है। घर की बोरियतवाली जिंदगी से छुटकारा पाने के लिए वह अपने पति के ऑफिस में अकाउंट का काम संभालने लगती है। उसका पति क्षितिज भी खुश है क्योंकि बिना तनखा दिए उसे एक केशियर मिल गया है। छ-सात महीनों में घर और ऑफिस के काम सँभालते सँभालते श्रुति थकने लगती है। क्षितिज को जो शारीरिक सुख चाहिए वह नहीं दे पाती। एक रात दोनों में झगडा होता हैं। दूसरे दिन सुबह उसका मन किया क्षितिज को सॉरी कह दे - "कभी उसकी एक सखी ने कहा था, पति-पत्नी के बिच का झगडा कभी बासी नहीं पड़ना चाहिए। यदि झगडे के बाद भी पति-पत्नी को नींद आ जाती है तो समझ लो कि दोनों के प्यार की सुगंध उड़ गयी है।"[३४]

पत्नी के नकारने से क्षितिज के पुरुषार्थ को ठेस पहुँचती है। और वह ऑफिस में श्रुति की गलतियाँ गिनना शुरू करता है। हिसाब में दो लाख का तालमेल ना बैठने पर श्रुति से हिसाब माँगता है। श्रुति ने सही बात बताने पर भी उसे ऑफिस स्टाफ के सामने क्षितिज से कटुता भरी बाते सुननी पड़ती है। श्रुति समझ जाती है, कि क्षितिज कल रात का प्रतिशोध ले रहा है। वह सोचने लगती है कि, किस तरह बिस्तर की लड़ाई दफ्तर तक फ़ैल गयी।

ऑफिस के इस घटना से श्रुति के मन में वैराग के भाव आने लगे। उसे लगने लगता है, कि वह जिदगी से हार गयी है। पर फिर वह अपने आप को संभालती है। सोचती है कि -"उसने एक प्रयास किया था अपने जिंदगी की सीमित परिधि को फ़ैलाने का, पहले उसकी जिंदगी में सिर्फ बिस्तर था..... फिर आया दफ्तर और अब वह मुकाम कि बिस्तर और दफ्तर गड्डमड्ड हो गए है ।"[३५] अपने जिंदगी को विस्तृत फ़ैलाने के लिए उसके पास बहुत अवसर है। यह सोचकर सारे अवसाद और हताशा को झाड अपने जिंदगी को और विस्तृत बनाने के लिए श्रुति निकल पड़ती है।

३. मुहल्ले में

इस कहानी में लेखिका ने आत्मसन्मान से ग्रस्त डॉ. योगेश का चित्रण किया है। डॉ. योगेश गुप्ता गोल्ड मेडलिस्ट है, जो अपना निम्न-मध्यमवर्गीय लोगों का मोहल्ला छोड़ एक कॉलोनी में रहने आये है, जहाँ पर रईस लोग रहते हैं। पुराने मोहल्ले में डॉ. योगेश को वहा के लोगों से प्यार, अपनापन, आदरभाव मिलता था। वहाँ पे डॉ. योगेश अपने आप को कुछ ज्यादा ही ऊँचाई पर पाते। उन्हें विश्वास था कि नयी कॉलोनी में भी उन्हें सन्मान और प्रसिद्धि मिलेगी लेकिन ऐसा नहीं होता है।

कॉलोनी के वयोवृद्ध डॉक्टर एन. के. सेन की एकलौती बेटी के शादी का निमंत्रण डॉ. योगेश को मिलता है। कॉलोनी के चंद लोगों में से खुद को निमंत्रण मिला देख उन्हें लगा कि

अपनी विशिष्टता का सिक्का जमाने का पहला अवसर उनके हाथों में लगा हैं। शादी के पार्टी में डॉ. भुतौडिया, योगेश को पहचानने में असमर्थता दिखाते है, तब योगेश को अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व को नकारे जाने से असह्यता महसूस होती है। आत्मपीडा और बैचेनी में पूरी रात वे सो नहीं पाते। उनका घर से बाहर निकलने का भी मन नहीं करता। उन्हें अपना पुराना मोहल्ला याद आता है, जहा उन्हें अपनापन और आदरभाव मिलता था।

अनिच्छापूर्वक वे घर से बाहर निकलते है, लेकिन उनके घर के बहार लैटर बॉक्स के ऊपर लिखे "गोल्ड मेडलिस्ट" यह शब्द देखकर उनका आत्मसन्मान वापस आता है। वह सोचते है -"लोग जाए भाड़ में ..... मुझे किसी की परवाह नहीं। मै जो हु वही रहूँगा ..... गोल्ड मेडलिस्ट।"[३६]

४. कुल्ला

स्त्री विमर्श को दर्शाती हुई यह कहानी है। इस कहानी की नायिका - "प्रमिला, जो जिंदगी के निहायत कोमल और रेशमी ताने-बाने से बनी है। मर्द और प्रेम इन दोनों चीजों को उसने या तो किताबों से जाना या फिर राँझा, शीरी, फरहाद, जैसी कहानियों से या फिर सावन में उठान लेते झूलों पर गीत गाती सखियों से।" [३७]

प्रमिला की शादी हो जाती है। शादी के बाद प्रमिला ससुराल में अपने पति को अपना सारा प्यार देना चाहती है। उसका प्रेम मीराबाई और मधुमती के बीच के चीज जैसा ही कुछ था। वह एक चुस्त कमांडो की तरह पति की आवभगत करती रहती। एक सुबह उसने सोचा "क्यों न रसोई के साथ देह जोड़कर पति का दिल जीता जाए .... क्यों न ऐसा दिव्य- लजीज बनाया जाए कि घर एक साथ वृन्दावन और ताजमहल बन जाए। इन्ही विचारों में डूबी वह रसोई में अपने पति के लिए कुछ पका रही थी कि उसे लगा जैसे किसीने गरम पानी का बलून दे मारा हो। जब उसने पलटकर देखा कि पति ने टूथ पेस्ट के झाग का कुल्ला उसके पीठ पर

मारा है। झूठे कुल्ले से प्रमिला खौल उठती है -"म्यान से निकली नंगी तलवार की तरह वह लहराई। अपमान से थरथराई और अभी-अभी पकड़ी गयी मछली की तरह छटपटाइ "इश्य... ! किस कूड़ेदान की अर्चना करती रही वह भी। कहाँ कंचन सी उसकी काया और कहाँ यह झूठा कुल्ला।"[३८]

प्रमिला की साँस उसे समझाती है, यह झूठा कुल्ला फेकने की आदत उसके पति ने उसके बाप से ली है। वह भी इसी तरह झूठा कुल्ला फेका करता था। धीरे-धीरे उसे भी इस झूठे कुल्ले की आदत हो जाएगी। वह कहती है- "यहाँ जिंदगी के सारे सुख-सुविधाओं के साथ झूठा कुल्ला भी मिलता है।"[३९] लेकिन प्रमिला का ध्यान साँस के समझाने पे नहीं रहता है। वह कुल्ला उसे दुनिया के सारे पुरुषों की संवेदनहीनता और क्रूरता का प्रतीक दिखाई देता है। स्त्री की चेतना पर चौंच मारती पुरुषों को वह सबक सिखाना चाहती है क्योंकि वह जानती है कि जैसे जिंदगी का जबाब जिंदगी है, वैसे ही कुल्ले का जबाब कुल्ला है।

५. काली पेंट।

यह एक लघु कहानी है जो कॉलेज में पढने वाली युवतियों की शरारत भरी जिंदगी का वर्णन करती है। कॉलेज युवतियाँ रोहिणी, मणि, हररोज कॉलेज जाते समय अपने सहेलियों के साथ कॉलेज की सँकरी गली से आवाजाही करते मौज मस्ती करते निकलती थी। मानो वो उनके लिए गली नहीं थी एक मंच था, जहाँ वो दुनिया जहाँ की सारी बाते करते निकलती थी। लेकिन पिछले दो दिनों से एक काली पैंट और नीला शर्ट पहना एक व्यक्ति उनके आगे-आगे धीरे-धीरे चलने लगा था। लड़कियों को लगता है, कि उसे लड़कियों की बाते सुनने में दिलचस्पी है, इसीलिए वह उनके सामने धीरे-धीरे चलता है। दरअसल वह भूतपूर्व कर्नल रंजित मेहेरोत्रा थे, जिनका दायाँ पैर भारत-चीन युद्ध के दौरान जख्मी हो गया था और उसे कटवाना पड़ा था। वह लकड़ी के पैर के आधार पर चलते थे, इसीलिए उनकी चाल धीमी थी।

यह बात लड़कियों को पता न थी। योवन के उन्माद में वह उन्हें डांटती है, तब वह अपनी काली पैंट को ऊपर खीचकर अपना दायाँ पैर दिखाते है। उनको दायाँ पैर नहीं था, काली पैंट के नीचे से लकड़ी का पैर झाँक रहा था।

पच्छाताप से हडबडाती लडकियाँ पीछे की और भागती है। सत्य जानने के पश्चात उसका सामना कर उनसे माफी माँगने का साहस भी नहीं बटोर पाती।

६. महानगर की माँ

एक माँ के ममतामयी स्वभाव का दर्शन इस कहानी में होता है। मीना अपने दो पुत्र संदीप और समीर के भविष्य के प्रति चिंतित है। संदीप हायर सेकेंडरी का इम्तिहान देने जा रहा था। वह शांत, सौम्य, एवं अध्ययन प्रिय था। इम्तिहान के लिए वह जितनी मेहनत कर रहा था उस हिसाब से उसकी तैयारियाँ नहीं हो पा रही थी, क्योंकि पाच सदस्यों की उस परिवार में एक ही कमरा था। वही कमरा इस परिवार का बेडरूम, ड्राइंगरूम, स्टडीरूम सब कुछ था।

शुरू शुरू में तो "मिना" ने संदीप के पढाई करने के लिए भाड़े का कमरा लेने की सोची पर आर्थिक तंगी के कारण यह विचार भी उसने छोड़ दिया। संदीप के विपरीत स्वभाव समीर का था। किसी पहाड़ी झरने सा मस्त, आजादी-पसंद, बातूनी एवं टी. वी. देखने के शौक़ीन समीर पर टी. वी. न चलने की, बातचीत न करने की, घर पर यार दोस्तों के साथ बाते करने की पाबंदिया लगी थी। जिस कारण कई बार वह अपने माँ पर गुस्सा करता रहता, कहता - "तुम्हारा बस चले तो मुझे क्या, सड़क पर चीखती ट्राम बस तक को चुप करा दो अपने लाडले के लिए।"[४०]

एक दिन समीर क्रिकेट का टेस्ट मैच देखने की जिद करता है, लेकिन उसे मीना के डांट के साथ साथ मार भी पड़ती है। गुस्से में आकर मीना उसे घर के बाहर निकाल देती है। समीर को घर से हकाल देने के बाद मीना को रह रहकर अपने गरीबी, असमर्थता, जगह की

कमी जैसे अभावों के दंश डसने लगते हैं। अभावों से भरी उसकी जिंदगी का एकमात्र प्रकाश पुंज था, उसका पुत्र संदीप, जिस पर वह किसी भी प्रकार के अभाव कि आँच तक नहीं आने देना चाहती थी।

संदीप के चिंतन में डूबी मीना भूल जाती है, कि समीर पिछले दो घंटों से गायब है। जब उसे समीर की याद आती है, तब उसके मन में अनेक आशंकाएँ उत्पन्न हो जाती है। कही समीर घर छोड़कर तो नहीं चला गया। कई उसने आत्महत्या तो नहीं कर ली। वह अपने आप को कोसने लगी। देवी देवताओं की प्रार्थना करने लगी। उसे याद आता है, अमीर दोस्तों के बीच रहते हुए भी समीर कभी फिजूल खर्ची नहीं करता था। कभी मौजमस्ती नहीं करता था। हमेशा अपने घर की आर्थिक स्थिति के अनुसार ही चलता था।

अनेक विचारों से उद्विग्न माँ का हृदय समीर के रांह में आँखें बिछा देता है। पुत्र को ढूंढते वह घर से सड़क पर कब आती है, उसेही पता नहीं चला। दूर से समीर को आते देंखकर उसके जान में जान आती है। गुस्से के बजाय समीर के प्रति अपरिमित प्यार उमड़ आता है।

चिड़िया ऐसे मरती है

उनके चौथे कहानी संग्रह 'चिड़िया ऐसे मरती है' में बारह कहानियाँ हैं। जिनमें से आठ कहानियों का विवरण पूर्व कहानी संग्रह में हो चूका हैं। बाकी चार कहानियों का संक्षिप्त परिचय निचे दिया हैं।

१. चिड़िया ऐसे मरती है

विजय एक मारवाड़ी परिवार से है, जिसने हिंदी में एम्. ए. किया था। नौकरी न मिलने के कारण अपने जिंदगी को बेकार समझने लगा था। उसके सभी दोस्त काम धंधे को लग गए थे। उसके बेकारी के चलते घरवालों ने भी उससे बात करना छोड़ दिया था। उसे लगने लगा था

कि वह इस सृष्टि की सबसे निकृष्ट और अधूरी रचना है। वह एक कीड़ा है, धीरे धीरे रेंगने वाला। पराश्रित, पराजीवी।

विजय की मुलाकात कोलकाता के नेशनल लाइब्रेरी में रेशमा नाम की बंगाली लड़की से होती है। दोनों किताबों के प्रेमी। एक हिंदी तो दूसरी बंगाली। दोनों किताब प्रेमी एक दूसरे के नज़दीक आने लगे। बेकार निराश युवक विजय को रेशमा अपने भतीजों को पढ़ाने का काम देती हैं। उसकी हताशा को वह पीछे धकेलती है। मिल्टन की कविता -"दे आल्सो सर्व हु वेट एंड स्टैंड (वे भी सर्व करते है जो सिर्फ खड़े होकर प्रतीक्षा कर रहे होते है [४१] सुनाकर उसका हौसला बढ़ाती है।

विजय रेशमा को प्यार करते -करते उसके विचार, उसकी संस्कृति यहाँ तक कि उसके रीति -रिवाज़ों और कवियों तथा लेखकों से प्यार करने लगा था।

जब सब कुछ भव्य दिव्य सा आगे बढ़ रहा था, तब एक शाम रेशमा ने उसे आग्रह किया कि उसे भगाकर ले जाए, क्योंकि मामला अब प्राइवेट से पब्लिक हो गया था। उनकी प्रेम की खुशबु रेशमा के पिता तक पहुँची थी और वह चाहते थे कि रेशमा किसी बंगाली लड़के के साथ ब्याह करे।

विजय ११० वर्गफीट के सिलन भरे घर में रेशमा को ले जाना नहीं चाहता था। रेशमा तो उसके साथ भाग जाने के लिए तैयार थी, लेकिन विजय उससे छ महीने का समय मांगता हैं।

रेशमा के घरवालों ने उसका रिश्ता तय किया। रेशमा की शादी का निमंत्रण पाकर विनय रेशमा के घर उससे मिलने गया, उसे अपने आगोश में ले लिया लेकिन रेशमा की माँ ने उन दोनों को अलग कर दिया -"दो बंधे हाथ छूटे और दो विपरीत दिशा की ओर अग्रसर हो गए।"[४२]

विजय की माँ उसे लाख समझाती है पर वह शादी के लिए राजी नहीं होता वह माँ से कहता है -"माँ! उसकी आवाज, मुझे भगाकर ले चल मेरे भीतर इस कदर कुंडली मारकर बैठ गयी है कि अब कोई दूसरी आवाज मेरे भीतर घुस नहीं सकती। मेरे जीवन में जो कुछ सुन्दर था, उसी के साथ था।"[४३]

समय गुजरता रहा, एक दिन रेशमा विनय को मेट्रो सिनेमा के हॉल के बस स्टॉप पर मिली। विजय को लगा की उसके मन में वही प्रेम, वही जादू है, लेकिन वह गलत था। रेशमा उससे बात करते करते बच्चों के रेडीमेड कपड़ों की दुकान में घुसी जहाँ कपड़ों पर भारी डिस्काउंट था। विजय को लगा जैसे कहानी के जादूगरनी ने एकाएक रूप बदल दिया है। विजय तड़प उठा जैसे कोई तेज धार का चाकू उसके छाती में धस गया हो। रेशमा तल्लीन थी बाबासुटों को देखने में और साथ ही साथ पूरी तरह निरपेक्ष थी विजय के उपस्थिति से - "न अतीत की कोई चाँदनी छिटकी हुई थी उसके चेहरे पर और न ही बरसों बाद हुए मिलन की कोई उत्तेजना, न लगन और रोमांच ही था। शायद हर सत्य अपने विरोधी सत्य में ही दम तोड़ता है।"[४४]

विजय को दुःख है, कि उसने रेशमा को खो दिया पर उससे ज्यादा दुःख उसे इस बात का था कि रेशमा ने भी अपने आप को खो दिया।

२. **युद्ध और बुद्ध**

इस पूरी कहानी पर आधारित मधुजी का उपन्यास 'सूखते चिनार' टिका है। उपन्यास का मुख्य पात्र मेजर संदीप है, तो इस कहानी का मुख्य पात्र मेजर विशाल राणावत है।

कहानी मेजर विशाल राणावत के फौजी जीवन की है। बचपन से उनका सपना था फ़ौज में भरती होना। पिता मारवाड़ी थे। हर वक्त नफे नुकसान के बारे में ही सोचते थे। वित्त सत्य ही उनका जीवन सत्य था और वे उसी के प्रति समर्पित थे।

यह कहानी उन दिनों की है, जब मेजर विशाल राणावत की पोस्टिंग राष्ट्रीय रायफ़ल्स २४ में भारत के सबसे संवेदनशील इलाके गुंड गाँव में हुई थी। २००२ का वह समय था जब दिल्ली में लाल क़िले से शान्ति के प्रतीक कबूतरों को उड़ाया जा रहा था तब कश्मीर में गोले बरस रहे थे- "मिलिट्री और मिलिटेंट ये दोनों शब्द ऐसे थे जो उन दिनों धुप और हवा की तरह कश्मीर की फिजा में रच-बस गए थे। हर नुक्कड़ पर फ़ौजी। हर फ़ौजी के आँख में एक सपना और हर सपने में मिलिटेंट का सफ़ाया।"[४५]

गुंड गाँव में खुले आम "हिंदुस्तानी कुत्ते वापस जाओ" या "कश्मीर की मंडी रावलपिंडी" जैसे उत्तेजक नारे लगते थे। आतंकवादियों ने कैप्टन अनुज को बड़ी दरिंदगी से मारा था। उनकी आँखें निकाल दी थी और सलाद की तरह काट डाला था उन्हें। ऐसी स्थिति में मेजर विशाल राणावत का काम था, मिलीटंन्सी का सफ़ाया करना और वहाँ के लोगों के बीच भारतीय फ़ौज और भारत सरकार के प्रति सदभावना फैलाना।

इन्ही दिनों मेजर विशाल को खबर लगी थी कि गुंड गाँव के एक परिवार का बड़ा बेटा जमील मिलिटेंट बन गया है। विशाल राणावत उसके घरवालों से पूछताछ करते है। घरवालों से कुछ हासिल नहीं हुआ तो मिलिट्री ने पुलिस वालों के साथ मिलकर उनका टार्चर शुरू किया। विशाल राणावत को लगा कि वह पुलिस के साथ मिलकर उस परिवार पर कुछ जादा ही ज़ुल्म ढा रहे है। उन्होंने कर्नल अभिषेक पांडे को इस बारे में बता दिया तब उन्होंने विशाल राणावत को समझा दिया कि उन्हें उस गाँव में एक मिसाल कायम करनी है। इतना डर उस धरती पर बो देना है कि आने वाले सालों में वहाँ इंसान तो क्या परिंदा भी मिलिटेंट बनने की ना सोचे। अगर उन्हें कामयाब फ़ौजी अफ़सर बनना है तो एक बात याद रखनी चाहिए कि "युद्ध और बुद्ध एक साथ नहीं चल सकते"

आखिर कार अपने बाकी बच्चों को बचाने के लिए जमील की माँ जमील के मिलने आने की खबर देती है। जमील को घेरकर मारा गया। सारी यूनिट जश्न मना रही थी तब मेजर विशाल राणावत के मन में बुद्ध बसा हुआ था। जमीर को मारने के बाद उनका मन आशंकित हो उठता है वह सोचते है कि कही सारी चिड़िया मर न जाए, जल्दी ही कुछ करना होगा।

३. नंदीग्राम के चूहे

२००७ के दौरान टाटा कंपनी अपना नानो कार का प्रोजेक्ट कोलकाता के नंदीग्राम गाँव में डालना चाहती थी। किसानों की खेती की जमीन जबरन अधिग्रहित करने के विरोध में अभिजित और उसके सहयोगियों को "कृषि रक्षा समिति" के बैनर तले आन्दोलन करते धरा १४४ को तोड़ने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया था और उन्हें राजनैतिक कैदी की हैसियत से अलीपुर सेंट्रल जेल में ठूस दिया गया।

कहानी में पश्चिम बंगाल के तत्कालीन मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य पर व्यंगात्मक टिपण्णी की है। कहानी में एक वाक्य अर्थ व्यंजकता दर्शाता है - "पहले हमारे बुद्धदेव को स्वप्न में सर्वहारा दीखते थे, अब तेज रफ़्तार में भागती दौड़ती बिल्ली दिखती है। अब इस बिल्ली दौड़ में कुछेक हजार चूहे मर भी जाए तो क्या हर्ज है।" [४६] यहाँ बिल्ली का अर्थ है कार और चूहे मतलब, नंदीग्राम के लोग जो इस प्रोजेक्ट को विरोध दर्शा रहे है।

कहानी के मुख्य नायक को बाकी साथियों के साथ अलीपुर सेंट्रल जेल भेजा जाता है, तब वहाँ उसकी मुलाकात शिबू नाम के कैदी से होती है। उसकी काव्यात्मक बाते सुन वह उसकी तरफ आकर्षित होता है।

शिबू पर हत्या का आरोप था। भूमंडलीकरण के चलते हाई ग्रोथ की बीमारी ने कॉटन मिल के मालिक को भी जकड लिया था। वह मिल की जगह शानदार शॉपिंग मॉल बनाने के बारे में सोचने लगा। उसके सामने विरोध केवल कॉटन मिल के मज़दूरों का था जो किसी भी

कीमत पर मिल को बंद नहीं होने देना चाहते थे। इसी लिए मिल मालिक ने यूनियन के नेता मोहन दा को खरीदने की कोशिश की। लेकिन मोहन दा नहीं माने तो उसकी हत्या करवा दी। मोहन दा का क़रीबी दोस्त शिबू, मोहन दा की हत्या बर्दाश्त नहीं कर सका और उसने मिल मालिक की हत्या कर दी। शिबू और मिल मालिक की लड़ाई भी बिल्ली चूहे की निकली।

शिबू ने तो बिल्ली की टाँग तोड़ी लेकिन "कृषि ज़मीन रक्षा समिति के आंदोलक केवल शालीन गिरफ्तारियाँ देकर ही रह गए।

४. बस दो चम्मच औरत

कहानी में देवर अपने फ़ौजी भाई के मृत्यु के बाद परिवार की ज़िम्मेदारी अपने कंधो पर लेता है। वह भाई के शहीद होने के बाद शपथ लेता है कि भाई के बेटे नितिन को जब तक उसके पिता जैसा मेजर नहीं बनाता चैन से सोयेगा नहीं, नहीं किसी औरत को पास आने देगा। जिंदगी के आखिरी क्षणों में उसकी डायरी उसके भौजि के हाथ लगती है। जिस औरत को देवर ने उम्र भर दूर रखा, जिंदगी के अंतिम क्षणों में वही औरत आज लहकती लपक बन उसे लील रही थी - "मुझे भोगो, मुझे जानो हे ब्रम्हचारी। उफ़ अब यह फीकी चाय उससे पी नहीं जाती, उसे मिठास चाहिए बस दो चम्मच।

देवर की डायरी के पन्नों को पढने के बाद भौजी की बीमार देवर के प्रति राय बदलती है। उसके मेजर पति ने अपनी पोस्टिंग राष्ट्रिय राइफल्स में मांगी थी। शादी के तुरंत बाद वह चला गया। कश्मीर में आतंकवादियों के साथ हुए मुठभेड़ के दौरान उसके पति अपने साथियों के साथ मारे जाते है। इस मुठभेड़ का विस्तृत वर्णन उपन्यास ‘सूखते चिनार’ में आया है।
देवर की मेडिकल रिपोर्ट बता रही थी कि वह कुछ दिनों का मेहमान है। देवर ने अपनी सारी सेविंग सर्टिफ़िकेट और एफ. डी. भौजी को थमाए। वह सिसक पड़ी, मरने के बाद का इंतज़ाम

भी कर दिया था देवर ने। देवर की डायरी पढने के बाद नायिका को लगा कि शहीद उसके पति नहीं बल्कि शहीद तो उसका देवर हुआ है।

दूसरे दिन देवर को स्पंज करने आए किशन से स्पंज लेकर देवर को खुद स्पंज करने लगी। उसे यह अहसास हुआ कि देवर शांति से मर नहीं पायेंगे, क्योंकि अतृप्त कामनाओं के साथ मृत्यु मुक्ति नहीं देती, सिर्फ देह का अंत करती है। उसने निश्चय किया कि देवर शान्ति से मृत्यु को प्राप्त होने में वह उसे सहायता करेगी । उसने खुद को दर्पण में देखा -"पिछले छब्बीस सालों में शायद पहली बार देखा था खुद को इतने गौर से। उसके चेहरे पर उदास हँसी बिखर गयी, वह अभी भी कामचलाऊ थी। जवान थी... [४७]

दस प्रतिनिधि कहानियाँ

यह उनका पाँचवा कहानी संग्रह हैं। इसमे उन दस कहानियों को प्रकाशित किया हैं, जिन पर लेखिका को पाठकों की सबसे ज्यादा प्रतिक्रियाएँ मिली हैं। इसमे से छ कहानियों का विवरण पूर्व कहानी संग्रह में हो चूका हैं। बाकी चार कहानियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया हैं।

१. अठारह साल का लड़का

राहुल, सुनयना और अविनाश का एकलौता बेटा भारत देश में कोई भी भविष्य नजर न आने के कारण अमेरिका पढने चला गया। आखों का ब्लड प्रेशर बढ़ने से अविनाश की आँखे चली गयी थी। राहुल अपने अंधे पिता पर दया दिखाने के लिए भी देश में नहीं रुकना चाहता। सुनयना उसे रोकने की बहुत कोशिश करती है। उसे यही रहकर धरती के ऋण को चुकाने के लिए कहती है, लेकिन राहुल का मानना है -“खुद यह देश कर्ज में लिपटा हुआ, इसका हर नागरिक कर्ज में डूबा हुआ। खुद कर्जदार ..... किसीका ऋण क्या चुकाएगा वह।"[४८]

सुनयना उसे उस्ताद बिस्मिल्ला खान का भी उदहारण देती है। अमेरिका के किसी कंपनी ने उन्हें ऑफर दे दी थी कि वे अमेरिका आकर बस जाए। उन्हें यह भी कहा गया था कि उनके लिए अमेरिका में बनारस जैसा माहोल खड़ा कर देंगे। बिस्मिल्ला खान ने जो जबाब दिया उसी जबाब ने इस देश को ऋणी बना दिया उनका। उन्होंने कहा था ´अमेरिका में आप बनारस तो बसा देंगे, पर वहाँ गंगा कहासे लायेंगे।

सुनयना के लाख मनाने के बाद राहुल अमेरिका चला जाता है। राहुल की तरह मोहल्ले के टॉबी, अजय, रवि, विवेक सब उड़ जाते है पेप्सी-कोला के देश में। टॉबी के पिता मलयदा, टॉबी के जाने के बाद सिजोफ्रेनिक पेशंट बन जाते है। लेकिन टॉबी के लिए आई. बी. एम्. एक ड्रीम कंपनी थी।

अपने माँ पिता को पाच साल बाद वापस आने का वादा कर गया टॉबी पंद्रह साल होने के बाद भी वापस नहीं आता। पिता के मृत्यु पर वापस आता है। पिता के मरने के गम में बहुत रोता है मगर बारा दिन बाद वापस अमेरिका लौट जाता है। यह जानते हुए भी कि कोई स्वप्न नहीं दिखाता वह बडा देश।

सुनयना भी राहुल के चले जाने के बाद उसी के यादों में खोई रहती है। बीमार पति की तरफ ध्यान देना भी भूलती है। लेकिन जब उसे राहुल बताता है, कि वहाँ उसे घर की बिलकुल याद नहीं आती, काम ही इतना रहता है कि घर और पापा के लिए सोचने का समय ही नहीं मिलता। तब सुनयना ठान लेती है, जो उन्हें रुलाकर चला गया उसके लिए क्या रोना। वह राहुल को भुलाकर अविनाश की आँखे, स्वास्थ और स्वप्न वापस देने का वादा करती है।

प्रस्तुत कहानी आधुनिक जीवन शैली को दर्शाती है, जहाँ प्रेम अपनापन सब कुछ टूंट गया है।

२. काला चश्मा

यह कहानी कश्मीर के आतंकवाद की पृष्ठभूमि पर लिखी है और 'सूखते चिनार' इस उपन्यास का एक हिस्सा है। कहानी में लिखित घटना उपन्यास का ही भाग है फर्क सिर्फ इतना है, कि कहानी में घटना को मेजर संदीप अंजाम देते नजर आते है, तो उपन्यास में उसी घटना को मेजर भूपेश सिंह अंजाम देते है।

मेजर संदीप की पोस्टिंग कश्मीर में राष्ट्रिय राइफल्स में हुई थी। उन दिनों कश्मीर में मानवता और समाज इन दोनों शब्दों को देशनिकाला मिल गया था। आर्मी में जहाँ "वीरता और विवेक" यह मोटो रहता है, वही राष्ट्रिय राइफल्स में वह वीरता और दृढ़ता रहता है। मेजर संदीप अलग मानसिकता के रहते राष्ट्रिय राइफल्स के साथ दिल से हाथ नहीं मिला पा रहे थे। बस खुद को किसी प्रकार घसीट रहे थे। जबसे उनकी पोस्टिंग राजौरी हुई थी, तबसे एक नयी बिमारी ने उन्हें जखड लिया था। जब वे कामयाबी के शिखर पर होते है, तभी वे खुद को दुःख के पाताल में धसते हुए पाते थे। सारी यूनिट जब कामयाबी के उल्हास में जल्लोष मनाती है तो उनका मन आत्महत्या करने को चाहता है।

इस मानसिकता से बाहर निकलने के लिए उनके कमांडिंग ऑफिसर कर्नल महेश राठौर उन्हें काला चस्मा पहनने की सलाह देते है -"यह काला चश्मा तुम्हारी सारी संवेदनाओं और इमोशंस को चटनी की तरह चाटकर तुम्हारी आंतरिक आवाज़ के प्रति बहरा बना देगी। जिससे की तुम एक कठोर फौजी बन बेलगाम आतंकवाद को किसी आज्ञाकारी घोड़े की तरह काबू कर सको।"[४९]

काला चश्मा पहनना शुरू करने के बाद मेजर संदीप का व्यक्तित्व दो टुकड़ों में बंट जाता है। जब चश्मा चढ़ा रहता उनका मन कठोर रहता, तब उन्हें जेहादी भटके नौजवान या इंसान नहीं लगते और उनके ऊपर बन्दुक का घोड़ा दबाने में कोई परेशानी नहीं होती। पर

ढलती शाम जब वे चश्मा उतारते तो उनकी अंतरात्मा चीखने लगती। काला चश्मा पहने, मेजर संदीप ने कई ऑपरेशंस को सफल अंजाम दिए। वे राष्ट्रिय राइफल्स के कामयाब मेजर बन गए थे।

एक घटना से उनका मनोबल फिर से टूंट जाता है। उन्होंने धोखे से हसन राकी नाम के एक आतंकवादी को उसके ही दोस्त के हाथों मरवा दिया। जब उन्होंने उसका शव देखा तो वो चौक गए। वह आतंकवादी कॉलेज जाता कोई लड़का था जिसकी मूंछे भी अभीतक फूँटी न थी। उन्हें निरर्थक लगने लगा उनका पराक्रम, शौर्य और वीरता। उनका मन कसमसाया उन्होंने उस काले चश्मे को दूर फेकते हुए खुद को किसी अनंत के हाथो सौप दिया।

३. पोलिथिन में पृथ्वी

परमानंद मेंटल हॉस्पिटल, फीमेल वार्ड नंबर १०२ में एक युवती, पत्थर जैसी अडोल, अबोल। अजीब मानसिक बिमारी, जो भी चीज जमीन पर गिरे.... माटी.... छु ले उसे ही धोने लगे। एक दिन उसने अपनी चुप्पी तोड़ी। डॉ. सौमित्र को उसने सारा सत्य बता दिया उसने चुप्पी का राज तीन महीने उन्नीस दिन बाद।

युवती का पति आश्विन, व्यापार के बाद जो समय बचता उसमे नए-नए मैजिक आइटम तैयार करता। वह मेजिशियन भी था, कोलकाता और मित्र मंडली के बीच उसकी हैसियत स्थानीय पी. सी. सरकार जैसी थी। उसे घरों के फंक्शन, क्लब, होटलों एवं सार्वजानिक संस्थानों आदि के अलावा अच्छी- अच्छी कंपनिया भी मैजिक शो करने के लिए बुलाती थी।

स्टेज पर कार्यक्रम के दौरान वह अपनी पत्नी याने युवती की मदत लेता था। भोपाल में एक शो आयोजित करने का आमंत्रण उन्हें मिला था। मैजिक शो में स्पेशल आइटम करने के

लिए आश्विन ने एक खुबसूरत कबूतरों का जोड़ा लाया था। उन दोनों का नाम युवती ने मोहन और मोहिनी रख दिया था क्योंकि उन दोनों के चलते उसके भीतर की सुन्दरता उगने लगी थी।

भोपाल का कामयाब शो ख़तम होने के बाद युवती आश्विन को उन कबूतरों को आजाद करने के लिए कहती है, लेकिन आश्विन मना करता है। शो ख़तम कर वापस लौटते समय युवती देखती है कि मोहन, मोहिनी के पंखों में कीड़े है और वह कसमसा रहे हैं। आश्विन के कहने पर वह उन दोनों को डीटॉल के पानी से नहला देती है लेकिन दोनों मर जाते हैं।

उन्ही दिनों में युवती फिर से गर्भवती रहती है। आश्विन नहीं चाहता था, कि कोई संतान पैदा हो। लेकिन युवती के जिद पर उसने कहाँ, लड़का होगा तो रख लेंगे नहीं तो गिरा देंगे। सोनोग्राफी में पता चला कि स्त्री भ्रूण है। युवती के न चाहते हुए भी आश्विन ने उसे गर्भपात के लिए बाध्य किया। पाँच महीने की बच्ची का गर्भपात उस युवती को तोड़ गया। वह मानसिक रोग का शिकार हो गयी। कभी उसे कबूतर-कबूतरी दीखते कभी अपनी बच्ची।

युवती की कहानी सुनते ही डॉ. सौमित्र के संवेदना के तार अनायस ही युवती की संवेदना के तारों से जुड़ गए। भ्रूण रक्षा उनके जीवन का एक मात्र मिशन बन गया। वे घर-घर, क्लिनिक-क्लिनिक जाकर भ्रूण हत्या के विरुद्ध प्रचार करने लगे। युवती इन कामों में उनकी मदत करने लगी।

लेकिन एक दिन उनके मिशन का यथार्थ गड़बड़ा गया। उनकी पुत्रवधू जो ताजा विवाहित और ताजा गर्भवती थी उसने दो महीने के गर्भ को गिरा दिया क्योंकि उसके यूरोप भ्रमण में बाधक था वह बच्चा। यद्यपि इस घटना को डॉक्टर सौमित्र ने स्पोर्टिंग स्पिरिट से लिया। उन्होंने मन को समझा दिया कि कुछ स्वप्न मर जाने से वसंत नहीं मरा करते। लेकिन लोगों को कैसे समझाए -"औरत हो या धरती जब भी उसकी कोख से छेड़खानी की जाएगी तो परिणाम भयंकर होंगे।"[५०]

४. चिड़िया ऐसे जीती है

अखिलेश और आकांक्षा शादी के कई साल बाद भी निस्संतान है। वे यह सोचकर खुदको तसल्ली देते रहते है कि जिंदगी में सबको सब कुछ नहीं मिलता।

दोनों नेपाल घुमने जाते है। उनके होटल में कमरा नंबर ११० में ठहरा हुआ रामश्रेष्ठ, मुहासों से भरा चेहरा लिए आकांक्षा को घूरता रहता है। जहाँ आकांक्षा जाती है, उसके पीछे अपनी कामुकता भरी नजरे गडाए रहता है। आकांक्षा जब विमान से हिमालय के सौंदर्य का मजा ले रही थी तब उसके सामने बैठा रामश्रेष्ठ शिखरों की चांदी न देख आकांक्षा को दीदे फाड़कर ताके जा रहा था।

हिमालय के सौन्दर्य का दर्शन कर जब वे दोनों पशुपतिनाथ मंदिर और बुद्ध देवा पार्क होते हुए वापस होटल में लौट जाते हैं तो अखिलेश की तबियत एकाएक खराब हो जाती है और उसे खून की उलटी हो जाती है आकांक्षा घबरा जाती है। होटल का मेनेजर घर जा चुका था। आस-पास कोई डॉक्टर भी नहीं था। आकांक्षा और कोई पर्याय न पाकर वह रामश्रेष्ठ से मदत मांगती है। अपनी वासना की इच्छापूर्ती के चलते वह उसे मदत करने के लिए राजी हो जाता है।

अखिलेश को ब्रेन हेमरेज हुआ था। उसे "ड्रीमलैंड नर्सिंग होम" में लाया गया। वहाँ के न्यूरोलोजिस्ट डॉ. प्रदीप घिमानी ने बताया, यदि थोड़ी देर हो जाती तो केस खराब हो सकता था।

डॉक्टर के कहने पर आकांक्षा और रामश्रेष्ठ वापस होटल लौट आते हैं। रास्ते में रामश्रेष्ठ ने आकांक्षा के करीब आने की भरखसक कोशिश की। होटल पहुचते ही रामश्रेष्ठ की वासना जाग गयी, नसे खिंचने लगी। उसे लगने लगा जो कुछ भी करना है उसे आज ही करना है। हिम्मंत बटोरने के लिए वह पेग बनाने लगा इतने में उसके कमरे की बेल बजी। दरवाजा

खोला तो अपने मुराद को साकार होता देख ख़ुशी से पागल होने लगा। रामश्रेष्ठ ने जब आकांक्षा को आने का कारण पूछा तो आकांक्षा ने कहा कि वह जानती है कि वह उससे क्या चाहता है। अपने सौभाग्य को बचाने के लिए वह स्वयं को उसके सामने प्रस्तुत करने के लिए तैयार होती है - "मै नहीं जानती पाप-पुण्य, नैतिकता- अनैतिकता, धर्म- अधर्म इन सभी सवालों को मैंने अफीम पिलाकर सुला दिया है। इसे तुम क्षणों का आवेग भी मत समझना और नहीं मेरे सतीत्व की चिंता करना, क्योंकि जो तुम तक जाएगा वह मेरा सिर्फ मेरा सरप्लस रहेगा, मेरा मै मेरे पास सुरक्षित रहेगा।"[५१]

आकांक्षा की बाते सुनकर रामश्रेष्ठ महालाज्जित हुआ। उसकी वासना निढाल हो गयी। वह आकांक्षा से आँखे मिलाये बिना वहाँ से तेजी से बाहर निकल गया।

युद्ध और बुद्ध

यह उनका छठा कहानी संग्रह है। इसमें बारह कहानियाँ हैं। जिनमे से आठ कहानियों का विवरण इसी अध्याय में दिया गया हैं। बाकी चार कहानियों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया हैं।

१. घाटा

यह कहानी आधुनिक युग में गिरते हुए जीवन मूल्यों का उदाहरण हैं। दोनों बहुएं शेअर मार्केट की चकाचौंध में इतनी मशगूल है, कि उनके पास अपने माँ समान साँस की तरफ ध्यान देने के लिए भी समय ही नहीं रहता। उनके बीच प्रेम और स्नेह ग़ायब हो चुका है।

दोनों बहुएँ प्रीति और दीप्ति शुरू में शेयर मार्केट में मिली सफलता के बाद दिल खोल के शेयर खरीदने और बेचने का धंधा शुरू करती है। शेअर मार्केट में सौदेबाजी से फाटकेबाजी तक की सीढ़ी वे चढती हैं।

एक समय था जब दोनों बहुएँ सांस के आगे पीछे घुमती थी। दिन भर उनकी सेवा करने से नहीं थकती थी, लेकिन आज उसी साँस ने कुछ माँगा तो काटने को दौड़ती है। घर में सब कुछ होते हुए भी उनको पेट भर खाना भी नहीं मिल पाता।

कहानी में साँस के मन में उठी घुटन महसूस होती है, वह कहती है -"आज हम कहाँ जा रहे है, असली घाटा तो यह हुआ है कि आज हम साथ नहीं है।"[५२] इस कहानी में आधुकनिकता के साथ उसकी चकाचौंध में परिवर्तित नारी का चित्रण है।

२. मिसफिट

यह कहानी जीवन के गिरे हुए मानवी मूल्यों को दर्शाती है। इस कहानी की नायिका "अपूर्वा" अमेरिका में रहती है। पिताजी बुढापे की बजह से बिस्तर पर पड़े रहते है। उनके मन में जीवन जीने की कोई बजह नहीं रहती है। अपूर्वा यहाँ की जिंदगी की तुलना अमेरिका की जिंदगी से करती है। अमेरिका में लोग बूढ़े हो जाते है, हाथ पैर काँपते है फिर भी जीने की योजना बनाते हैं । अमेरिका वाली सोच लिए वह चाहती है कि उसके बीमार पिताजी भी वैसेही जिए जैसे अमेरिका के बूढ़े लोग जीते है। इसलिए वह उनका पल पल अपमान करती रहती है। वह अपनी पिता के आत्मा को लहुलूहान करने की कोई कसर नहीं छोडती, यह सोचकर कि अपमान बोध से ही वह अपनी बिमारी भूल जाए।

कठोर व्यक्तित्व वाली अपूर्वा वापस अमेरिका चली जाती है, तो वह अपने पिता को भुला नहीं पाती, उसका किसी भी काम में मन नहीं लगता। इस कहानी में मानवी मन का एक अनोखा चित्रण अपूर्वा के अन्दर दिखाई देता है - "जब वह भारत में रहती है तो अमेरिका को तलाशती है। अमेरिकी आँखों से परिवार को देखती है। सबको अदम्य वेग के साथ बहते देखना चाहती है, और जब वह अमेरिका में रहती है तो भारत की आत्मीयता को तलाशती है।

उसी परिवार के लिए रोटी-कलपती है जो यहाँ उसे छु भी नहीं पाता है। दोनों ही जगह वह मिसफिट रहती है।"[५३]

३. विरासत

यह एक दीपा नाम की युवती की कहानी है जिसने देखे हुए स्वप्न पुरे होने से पहले ही टूट जाते हैं। बढती उम्र में उसके जीवन में अनचाहे प्यार ने दस्तक दी थी। वह इस प्रेम का इनकार न कर पायी थी। कुलभूषण जो शादी शुदा था और दो बेटियों का बाप था उसी के साथ नए जीवन के सपने संजोने लगी थी। दीपा के लिए प्रेम जीवन था। जीवन में प्रेम को सबसे ऊपर मानती थी। ऐसे ही एक रात दोनों के मन में सागर की खौलती हुयी लहरे उठी। उस प्रेम की पहली छुहन ने उसकी जिंदगी बदल दी थी। वह एकाएक युवती से स्वप्निल औरत बन गयी थी। उसे लगने लगा था प्रेम जीवन का सबसे ऊपरी मुकाम है, जो आज उसने हासिल कर लिया था। प्रेम उसके लिए ऑक्सीजन बन गया था, पर प्रेम धीरे-धीरे उसकी हाथों से रेत की तरह फिसलने लगा। दीपा ने बहुत कोशिश की अपने प्यार कुलभूषण से न बिछड़ने की पर वह उसी तालाब में लौट गया जहाँ उसकी पत्नी और पुत्रियाँ थी। दीपा की जिंदगी मानो बंजर रेगिस्तान बन गयी जहा पर दूर दूर तक कोई नहीं था। इस घटना से उसकी मानसिक स्थिति बिघड गयी। उसका भाई सुशिल समझ गया उसके बिमारी का राज और उसका निदान। उसने अपार प्रेम के साथ अपनी पाँच महीने की पुत्री नन्ही को दीपा के गोद में रख दिया।

उस बच्ची ने दीपा का जीवन ही बदल दिया। देखते ही देखते उसका जीवन फिर से मुस्कुराने लगा। अब वह कभी घोड़ा बनती तो कभी हाथी। उसका नाम दीपा ने आभा रख लिया। जैसे जैसे आभा बड़ी होती गयी दीपा ने उसे टी.वी. सिनेमा से दूर रखा ताकि प्यार का एहसास उसके मन को छुए ना। दीपा कभी नहीं चाहती थी कि उसकी विरासत उसकी बेटी को

मिले लेकिन इतिहास फिर से लिखा गया। आभा एक शादीशुदा पुरुष से प्रेम करने लगी। आज उसकी बेटी इतिहास के उसी बिंदु पर खड़ी थी जहाँ कभी दीपा खड़ी थी।

४. काली चिल

यह कहानी चेखव की 'एक क्लर्क की मौत' कहानी से शुरू होती है। अपनी नौकरी जाने के भय से उसकी मौत होती है। यह कहानी १९८६-८७ के समय की घटना को बयान करती है। वह दूर संचार क्रांति का दौर था। कंप्यूटर अब ऑफ़िस कामों की जरुरत बनना शुरू हो गए थे। रातोरात कंप्यूटर हवा और पानी की तरह अनिवार्य बन गए थे। जिसे कंप्यूटर चलाना आता था उसका महत्व बढ़ने लगा था, लेकिन पुरानी पीढ़ी जिन्हें कंप्यूटर चलाना नहीं आता था वह कंप्यूटर के बारे में सोचकर अपना रक्तचाप बढाने लगे थे।

लेखिका उन दिनों में कोलकाता के प्रसिद्ध चाय एक्सपोर्ट हाउस में नयी-नयी कंप्यूटर प्रोग्रामर बनी थी। उसका काम था उस एक्सपोर्ट हाउस को कंप्यूटराइज बनाना, जिससे कंपनी के काम से संबधित एवं जरुरी रिपोर्ट कंप्यूटर से ही निकले। अब तक तो यह काम एक्सपोर्ट हाउस के टाइपिस्ट और बाबु लोगों का था, लेकिन लेखिका के आने से अधिक टाइपिस्ट को पीवनगिरी में लगा दिया था। जो आधे बचे थे उनको डर था, कि उनके ऊपर बेकारी और अपमान की कुल्हाड़ी गिर न जाए- "कंप्यूटर उनके लिए ऐसा खलनायक था जो न केवल उनकी पतंग कांट रहा था, वरन उनके स्वप्न और सन्मान को देश निकाला दे रहा था।"[५४]

कभी कंप्यूटर से निकली रिपोर्ट में गलती निकल आती तो उनके चेहरे पर खुशियाँ झलकती, लेकिन उनके होठों पर इन दिनों नौकरी जाने की चिंता थी, जिसके लिए वह हँसना भी भूल गए थे। तेजी से सिस्टम को कंप्यूटराइज करने की जल्दबाजी में लेखिका के कंप्यूटर की हार्ड डिस्क क्रेश हो जाती है। अगले दिन एक्सपोर्ट हाउस को अपना रेट रूस, जर्मनी, और

जापान आदि देशों के प्रतिनिधियों को भेजना था और उसके लिए अगले सुबह तक रिपोर्ट तैयार करने का आदेश आया था।

रिपोर्ट तैयार करने का काम "फोनी बाबु" देखते थे। एक्सपोर्ट डिपार्टमेंट की सारी रिपोर्ट का दायित्व उनका था। लेकिन कंप्यूटर खराब हो जाने से उनको डर लगा कि अगर अगले सुबह तक रिपोर्ट तैयार नहीं हुयी तो साहब उन्हें नौकरी से निकालेंगे। इसी दर से फोनी बाबू पूरी रात रिपोर्ट टाइप करते रहे। उनके मन में नौकरी जाने का भय ऐसा बसा था कि वह घर जाने के लिए तैयार नहीं थे। उनके लिए उनकी नौकरी ही महत्वपूर्ण थी और रिपोर्ट के वह २३० पन्ने।

स्त्री मन की कहनियाँ

यह उनका सातवा कहानी संग्रह है । इसमें उन ग्यारह कहानियों को संकलित किया है जो स्त्री मुक्ति की कामना करती है । इस कहानीसंग्रह कि सभी कहानियाँ उनके पूर्वप्रकाशित कहानीसंग्रह में से हैं जिनका का विवरण इसी अध्याय में आ चुका हैं ।

इस प्रकार मधु कांकरिया की कहानियों में नारी चित्रण, अस्तित्व बोध, पारिवारिक सम्बन्ध, सामाजिक समस्याएं नजर आती हैं। नारी चित्रण के साथ-साथ अपने अस्तित्व बोध को स्थापित करते अनेक पात्र उनकी कहानियों में नजर आते हैं। अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते-लड़ते अथवा आत्मसन्मान वापस पाते यह पात्र सामान्य जन को नयी प्रेरणा देने का काम करते हैं।

१.२.२. मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य का संक्षिप्त परिचय

मधु कांकरिया के अब तक पाँच उपन्यास प्रकाशित हो चुके है – 'खुले गगन के लाल सितारे' (२०००) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 'सलाम आखिरी' (२००२), 'राजकमल' प्रकाशन, दिल्ली,'पत्ताखोर'(२००५) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,'सेज पर संस्कृत' (२००८) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली और 'सूखते चिनार' (२०१२) भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

खुले गगन के लाल सितारे

यह मधु कांकरिया लिखित प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास में नक्सलवादी आंदोलन तथा क्रांतिकारियों का दर्दनाक जीवन उन्होंने अंकित किया हैं। नक्सलवाद का प्रमुख उद्देश था शोषण विहीन समतावादी समाज और मानवीय गरिमा से जीवन जीने का योग्य वातावरण निर्माण करना। इसी की चाह में युवाओं के बीच में जो आग भड़क उठी थी वह आज इतिहास का एक अध्याय बन चुकी है। प्रस्तुत उपन्यास इसी के आधार पर बनी एक मर्मस्पर्शी कहानी है।

'खुले गगन के लाल सितारे' कि मुख्य पात्र मणि एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की है, जो अपने पारिवारिक संघर्ष के बावजूद अपनी अलग पहचान स्थापित कर इस दुनिया से संघर्ष करती नजर आती है। कम्युनिस्ट आंदोलन से जुडी मणि को अनेक विरोधियों का सामना करना पड़ता हैं। फिर भी आखिर तक अपना पहला प्यार इंद्र जो नक्सलवादी आंदोलन में गायब हो चूका है उसकी खोज में रहती है। परिवारवालों के दवाब के बावजूद शादी नहीं करती।

१९७२ तक नक्सलवादी आन्दोलन का तूफ़ान थम चुका होता है। १९७२ तक के नक्सलवादी आन्दोलन में शामिल लाल सितारों का पूरा ब्योरा लेखिका ने पाठकों के सामने रखा है। उपन्यास के अंत में वर्तमान समय दिखाया गया है, जहाँ उम्र के पैंतालिसवें अध्याय में मणि स्कूल की प्रिसिंपल है। आज की आधुनिक पीढ़ी और नक्सलवादी आन्दोलन में शामिल पुरातन युवा पीढ़ी के अंतर के बारे में वह सोचती है।- "एक वे टॉपर्स थे, इंद्र और उसके साथियों की पीढ़ी थी, जिन्होंने देश के लिए अपने कैरियर को झोंक दिया था और ये आज के टॉपर्स है जिन्हें देश देश नहीं बेकार का भूसा नजर आता है।[५५]

इस उपन्यास में मणि की छोटी बहन 'पारसी' मांगलिक होने के कारण उसका ब्याह नहीं होता। बहुत कठिनाइयों के बाद उसका ब्याह तय होता है, लेकिन एक हादसे में जल जाने के बाद उसका ब्याह टूट जाता है। इस घटना से उसके मन में विरक्ति के भाव निर्माण होते हैं। इसी विरक्ति के कारण वह साध्वी जीवन अपनाने का निर्णय ले लेती है। मणि उसको समझाती है -"धर्म के इस शुष्क, कर्महीन और भावनाशून्य रास्ते पर यदि तुम सिर्फ इसी कारण जा रही हो कि तुम्हारी शादी संभव नहीं तो याद रखो, शादी ही जीवन की अंतिम उपलब्धि नहीं और "विष पीकर विष ही दिया तो क्या दिया। कड़वाहट पीकर भी जीते जाना ही जीवन है, बाकी सब पलायन है। फल देनेवाला पेड़ न सही छाँह देनेवाला पेड़ तो तुम बन सकती हो। जाना है तो सेवा के मार्ग पर जाओ।"[५६] लेकिन मणि के लाख समझने के बावजूद पारसी दीक्षा लेती है।

उपन्यास में मणि की सबसे बड़ी बहन मुन्नी का ब्याह अधेड़ उम्र और अर्धविक्षिप्त चांदमल से होता है। अपने पारिवारिक जीवन में उसे अपने पति से कोई संतृष्टि प्राप्त नहीं होती है। पति के काम संबंध के ठंडेपन की बजह से उसकी वासनाये दमित रहती है। इन्ही दमित वासनाओं के चलते अपने देह के संतुष्टि के लिए अपने जेठ के साथ संबंध बनाती है।

इस उपन्यास में मणि एक सामान्य स्त्री होकर भी अपना एक अलग वजूद स्थापित करती नजर आती है। जीवन की समस्याओं से घिरी होते हुए भी वह हार नहीं मानती।

सलाम आख़िरी

मधु कांकरिया ने 'सलाम आख़िरी' उपन्यास में वेश्याओं के जीवन के बारे में लिखा हैं। उपन्यास में जो पात्र है, उनके वेश्या बनने के कई कारण सामने आते हैं, जो एक सामान्य स्त्री को वेश्या बनने के लिए मजबूर करते हैं।

सलाम आख़िरी उपन्यास मधु कांकरिया जी का एक प्रयत्न है समाज की दमित औरतों के दुःख भरे माहोल का वर्णन, जो हिंदी में किसी लेखिका ने पहली बार दुनिया के सामने रखा है। मधुजी ने इस उपन्यास में कोलकोता के सोनागाछी इलाके के गलियों में बसने वाले जीवन की कुरूपता और भयानकता का चित्रण किया है।

सोनागाछी मतलब सोने का पेड़, अपने नाम से विपरीतता दिखाने वाली यह जगह भारत का नहीं बल्कि एशिया का सबसे पुराना लालबत्ती इलाका है। 'सलाम आख़िरी' उपन्यास में वेश्याओं के जीवन का जीता जागता अनुभव मधुजी ने उस गन्दगी में बीच जाकर प्रत्यक्ष देखा है। उपन्यास में वेश्याओं के असहज और प्रत्यक्षदृष्टा की तरह उठाये गए विषय की रचना के दौरान आये हुए चुनौती के बारे में उपन्यास के आत्मकथ्य में लेखिका कहती है -"पिछले उपन्यास मे मुझे आत्मकथ्य देने की जरुरत ही नहीं पड़ी क्योंकि वहाँ कोई द्वन्द न था, लेखनी में कही कोई अटकाव न था कोई उलझन न थी, उपन्यास के दौरान लेखनी जैसे हाथों से छूट-छूट जाती थी। यहाँ पग-पग पर चुनौतियां थी, प्रश्नों की नुकीली नोकें थी, श्लीलता - अश्लीलता की चाबुकें थी संस्कार और संस्कृति के कठघरे थे। भाषा की अनावृति का सवाल था।"[५७]

वेश्यावृत्ति हमारे समाज को अभिशाप है। वेश्यावृत्ति का जन्म भूख, बेरोजगारी, फरेब और अनियंत्रित आकांक्षा के गर्भ से हुआ है, सोचने की बात यह है, कि पुरुष की शारीरिक भूख मिटाने के लिए भारतीय समाज और विशेष रूप में हिन्दू समाज ने वेश्यावृत्ति को जायज माना है। आज-कल वेश्याओं को एक सामान्य कर्मचारी का दर्जा दिलाए जाने की कवायद भी शुरू है। वेश्या-जीवन को स्वीकृति देकर उसे उद्योग का दर्जा एवं वेश्याओं को सेक्सवर्कर का दर्जा देने सोच आगे आ रही है। इसका मतलब यह है, कि वेश्याओं का निर्मूलन असंभव बात है। इस स्थिति को बदला नहीं जा सकता।

देहव्यापार पर केन्द्रित वेश्याओं के जीवन पर आधारित कई उपन्यास आए हैं। विविध विमर्शों में, खासकर स्त्री-चेतना एवंएवं दलित-चेतना संपन्न लेखकों को यह विषय हमेशा आकर्षित करता रहा है।

मधु कांकरिया का 'सलाम आखिरी', उपन्यास वेश्या-जीवन के तमाम कटु पहलुओं को बड़ी गंभीरता से विमर्श का विषय बनाता हैं। यह उपन्यास वेश्याओं और वेश्यावृत्ति को उजागर करता हैं।

मधुजी का 'सलाम आख़िरी' उपन्यास वेश्याओं के जीवन के कड़वे सच हमारे सामने लाता हैं। इसमें जो पात्र चित्रित हुए है उनके वेश्या बनने के कई कारण सामने आते हैं, जो एक सामान्य स्त्री को वेश्या बनने के लिए मजबूर करते हैं। यह उपन्यास वेश्याओं और वेश्यावृत्ति के पूरे परिदृश्य को देखते हुए हमारे भीतर उन असहाय स्त्रियों के प्रति करुणा का उद्रेक करने की कोशिश करता है, जो किसी भी कारण इस बदनाम और नरकीय व्यवसाय में आ फँसी हैं। कलकत्ता के सोनागाछी रेड लाइट एरिया की अँधेरी गलियों का सीधा साक्षात्कार कराते हुए लेखिका सभ्य समाज की संवेदनहीनता और कठोरता को भी साथ-साथ झिंझोड़ती चलती है

'सलाम आखिरी' की कहानी तीन स्वतंत्र कथाएँ है, हालांकि तीनों कथाएं एक-दूसरे के साथ अनिवार्य रूप से जुड़ी हुई हैं। एक ओर वेश्याओं के जीवन को लेकर नायिका सुकीर्ति और मेघेन तथा विजय की बौद्धिक बहसें हैं, दूसरी ओर समानांतर चलते दो शेयर मार्केट हैं – एक मन्नालाल जी का शेयर बाजार और दूसरा कोठेवालियों का सड़ता-गंधाता शेयर बाजार, जो कभी चढ़ता नहीं लुढ़कता ही है। उपन्यास २८ उप शीर्षकों में बटा हैं जो भारतीय समाज में सदियों से पनपते रहे देह-व्यापार की एक समानांतर सृष्टि की पुनर्रचना करता हैं।

'सलाम आखिरी' उपन्यास स्त्री जीवन का क्रूर, भयावह और बीभत्स सच, कुरूपता और विद्रूपता के साथ उजागर करता है। वेश्या जीवन के संघर्ष की हकीकत से जुड़े प्रसंग

झकझोर देते है। सभी उम्र के पुरुषों की यौनेच्छा को संतृष्ट करने के खातिर वेश्याएं रोज अपने देह की विडम्बना करवाती है। देह की ऐवज में न तो उनके साथ सहानुभूति रखी जाती है, न ही साधारण इंसान जैसा सलूक किया जाता है। महज पेट भरने के लिए चंद रुपयों के अलावा कुछ नहीं मिलता।

इस उपन्यास में स्त्री के वेश्या बनने के कई प्रसंग सामने आते हैं। जीवन की यंत्रणाओं और पेट की मारी इन स्त्रियों के कई किस्से उपन्यास में दिल दहलाते हैं।

वेश्या व्यवसाय छोड़ चुकी मीना के चकले की वेश्याएं नूरी, कृष्णा, रमा, नलिनी, जुली और चंपा इन छः वेश्याओं के वेश्या बनने की कहानी उपन्यास में सामने आती है। रमा अपने माँ-बाप, भाई- बहनों को रुपये भेजती है लेकिन उनसे झूठ बोलती है, कि वह किसी कारखाने में काम करती है। वह कहती है, अगर उसके घरवालों को पता चल जाये तो वे उसका मुँह तक नहीं देखेंगे।

जुली इस धंदे में नयी होने के कारण अपने अहम् को बचाये है। अपने ग्राहक की विकल वासना उसके मनचाहे तरीके से पूरी न करने पर उसे चूहे की-सी शक्ल वाले मिनमिनाते एक ग्राहक से मार खाना पड़ता है । नूरी नाम की वेश्या भूक से बेहाल परिवार को पैसे भेजती है। लेकिन घरवालों को छिपाकर ये धंदा करती है।

चकले की मालकिन मीना की कहानी भी दर्दनाक है। वह दस ग्यारह साल की उम्र में एक पांच- छः साल की बच्ची की देखभाल करने के लिए कलकत्ता भेज दी जाती है। एक दिन उसके मालिक द्वारा ही उसके ऊपर बलात्कार होता है। उसकी बर्बादी हर रात होती रहती है और वह कुछ नहीं कर पाती। एक दिन वह घर से भागने में कामयाब होती है, लेकिन फिरसे वह वासना का शिकार बन जाती है। एक रेलवे कर्मचारी उसे पुरे छः महीने भोगने के बाद

अँधेरी गलियों में बेच देता है। इन सभी वेश्यावों के बारे में जानकर हम यह सोचने पर मजबूर हो जाते हैं, कि इनमें से कौन थी जिसने वेश्या जीवन चाहा था?

ग्यारह वर्ष की मासूम नाबालिक लड़की जिसे चकले के भाषा में छुकरी कहते है, उसे अप्राकृतिक ढंग से औरत बनाने का काम करने वाली माया की चौदह वर्षीय पुत्री विशाखा को उसके अनुपस्थिति में वेश्या बनाया जाता है। रेशमी एच. आई. वी. पॉजिटिव है, परन्तु अपना इलाज नहीं करना चाहती है, बल्कि विनाश की इस सौगात को उस व्यक्ति के लिए संभलकर रखना चाहती है जिसने उसे तेरह वर्ष की उम्र में वेश्या बनाया। जब तक वह नहीं मिलता सम्पूर्ण पुरुष जाती से वह बदला लेना चाहती है।

उपन्यास में इन्द्राणी वेश्याओं की नाबालिक लड़कियों के लिए शेल्टर हाउस चलाती है, जहाँ उन लड़कियों को शिक्षा एवं चटाई, बुनाई, साड़ी छपाई, खिलौने, जुट बैग बनाना सिखाया जाता हैं। इससे उसका एकमात्र उद्देश होता है, कि वेश्याओं की लड़कियाँ वेश्या न बने। गायत्री नाम की एक वेश्या जो अपने पति के कारण इस वेश्या व्यवसाय में फंस चुकी है वह मासूम लड़कियों को इस व्यवसाय में फंसने से बचाने का कार्य करती है। इन लड़कियों के बारे में इन्द्राणी को जानकारी देकर उन्हें बचाने की कोशिश करती है।

मधुजी ने वेश्याओं के जीवन को खुद बहुत ही करीब से देखा है। वेश्या जीवन की सुक्ष्मतम घटनाएँ पाठकों के सामने लाने के लिए उन्होंने सुकीर्ति नामक पात्र उपन्यास में डाला है। सुकीर्ति सोनागाछी के गलियों में रहकर वेश्याओं ले लिए काम करती है। वेश्याओं के लिए काम करने का उसका प्रमुख उद्देश है, उसके यहाँ काम करने वाली बाई की सुनंदा नाम की तेरह वर्ष लड़की को सोनागाछी के लाल बत्ती इलाके में ढूंढना है।

सुकीर्ति, अपने पत्रकार मित्र विजय के साथ मिलकर वेश्याओं के लिए काम करती है। विजय के लिए सुकीर्ति के मन में प्यार भाव जग उठे थे। फिर भी वह विजय के साथ अपनी

गृहस्थी बसाना नहीं चाहती क्योंकि वह मानती है कि तृप्ति आदमी की भीतरी चिंगारी को मशाल बनाने नहीं देती, उसकी उड़ान और उठान को वापस लौटा देती है। इसी कारण तृप्त जीवन की उपलब्धि को छोड़ अपनी जीवन की खोज जारी रखनेवाली सुकीर्ति स्त्री विमर्श का ज्वलंत उदहारण है।

उपन्यास के माध्यम से मधु कांकरिया ने न केवल वेश्याओं की स्थितियों का वर्णन किया है, बल्कि उनके सच्चे जीवन को प्रस्तुत कर उन्हें सन्मान देने का प्रयत्न किया है। उनका कहना है कि अनेक नारी संगठन इन महिलाओं को श्रमिक का दर्जा देने के बात करते हैं जो गलत है। श्रमिक के दर्जे के बजाय अगर वेश्या उन्मूलन हो जाए तो अच्छा है। उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाकर एक आम आदमी जैसे सभी मानवाधिकार तथा सन्मान मिलना चाहिए।

प्यार और संरक्षण से वर्जित इन अशिक्षित और अर्धविकसित महिलाओं का हर रात देह का ही नहीं आत्मा का भी चीरहरण होता रहता है। सोनागाछी के लालबत्ती इलाकों को लेखिका ने काफी गहराई से टटोला और फिर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

सेज पर संस्कृत

जैन धर्म के अंदर धार्मिक प्रथा के नाम पर चल रही कई प्रथाओं को तार्किक आधार पर मधुजी ने साहसपूर्ण तरीके से 'सेज पर संस्कृत' इस उपन्यास के माध्यम से पाठकों के सामने रखा है। हमारी दुनिया दिखती अलग है और उसकी असलियत अलग होती है। ऐसे कई धर्मों में धार्मिक रूढ़ियाँ चली आ रही है, जो स्त्रियों पर अत्याचार करने के लिए बनायी है, हमारा समाज उन अत्याचारों को समझ नहीं पाता। हमारा समाज जिसे नहीं देख पाता ऐसी घटनाओं का चित्रण मधुजी ने अपने इस उपन्यास के माध्यम से किया है। हालांकि यह उपन्यास नारी जीवन पर केंद्रित है, पर इसका प्रमुख उद्देश धर्म में व्याप्त आडम्बरों पर कड़ा

प्रहार करना है। जैन सम्प्रदाय के परिवार को केंद्र में रखकर लिखा गया यह उपन्यास पाठकों को अनेक दृष्टियों से विचार करने पर मजबूर करता है।

'स्त्री विमर्श' पर आधारित इस उपन्यास में नारी अस्मिता की खोज मिलती है। साध्वियों के जीवन की स्थिति दर्शाते हुये इस उपन्यास में नारी शोषण तथा विषमता को जितना विस्तारा गया है, उतना ही अन्याय और शोषण के खिलाफ जूझती नारी का चित्रण भी किया है। इस उपन्यास में एक ऐसे परिवार का चित्रण है, जिस परिवार के मुखिया और पुत्र की मृत्यु के बाद माँ पर सारे परिवार की जिम्मेदारी आ पड़ती है। घर में पुरुष न होने के कारण लोगों की बुरी नजर उस परिवार पर पड़ती है। लोगों के हवस भरी नज़रों से बचने के लिए माँ, साध्वी बनने का फैसला लेती ही। साथ में अपनी दोनों बेटियाँ संघमित्रा और छुटकी को भी दीक्षा दिलवाना चाहती है। संघमित्रा इस बात का विरोध करती है, लेकिन संघमित्रा के विरोध के बावजूद माँ छोटी बेटी छुटकी को जैन धर्म की दीक्षा देती है। छुटकी इतने कम उम्र की है कि उसे दीक्षा के नाम पर होनेवाले अत्याचारों के बारे में समझ नहीं हैं। वह दीक्षा के समय होने वाले समारोह को लेकर उत्साहित रहती है। दीक्षा के समय होने वाले "केश- लुंचन" का बड़ा मार्मिक चित्रण लेखिका ने किया है।

दीक्षा के दिन सजी-धजी छुटकी को अपार जन-समूह के सामने साध्वी घोषित कर दिया जाता है। उसका नामकरण 'साध्वी दिव्यप्रभा' के रूप में होता है और दुल्हन बनी छुटकी का रूपांतरण साध्वी में किया जाता हैं। मुँह पर श्वेत पट्टी, नंगे पैर, केश लुंचन ..... धर्म के नाम पर एक मासूम बच्ची के भावनाओं पर अत्याचार किये जाते है और इन्ही अत्याचारों को सामूहिक आनंद का अवसर बना दिया जाता है।

जैन धर्म की दीक्षा लेने के बाद साधु और साध्वियों को आजीवन ब्रम्हचर्य, आजीवन साधुत्व का जीवन जीना पड़ता है। हर दिन बेहद कठोर दिनचर्या में बंधना पड़ता है, जहाँ नहाना तथा रात का खाना भी वर्जित होता है, क्योंकि उसमें भी जीव हत्या का पाप होता है।

दीक्षा लेने के बाद छुटकी का जीवन नर्क हो जाता है। धर्म और मर्यादा के बंधनो में जखडे होते हुए भी साधु-साध्वियां अपने मन से दैहिक आकर्षण के भाव से मुक्त नहीं हो पाती। लेखिकाने संघ के अन्दर मुनियों के कुंठित यौनकांक्षाओं का वर्णन किया है, और इन्ही यौनकांक्षाओं के चलते अभयमुनि साध्वी दिव्यप्रभा पर बलात्कार कर देते है। इसी बलात्कार के परिणाम स्वरूप साध्वी दिव्यप्रभा माँ बनती है। धर्म की पवित्रता के नाम पर वही धर्मगुरु दिव्यप्रभा को संघ से निष्कासित करते है, जिन्होंने समारोहपूर्वक उसे दीक्षित किया था। छुटकी की इस हालत में उसे सहारा देना तो दूर की बात माँ उसे मिलने से भी इंकार कर देती है। अपनी जिम्मेदारियों से हटने के लिए "संथारा" पचख लेती है।

संघ से निष्कासित होने के बाद हालात दिव्यप्रभा को वेश्या बनने के लिए मजबूर करते हैं। वह अपनी बेटी ऋषिकन्या के लिए जीती है। वेश्याओं की बदनाम बस्ती में रहते हुए भी अपनी पुत्री ऋषिकन्या की पवित्रता को संभाल कर रखती है, तथा जीते जी अपनी जीजी संघमित्रा को नहीं मिलना चाहती है। जीजी का नाम, उसकी इज्जत के चलते वह उसे बदनाम नहीं करना चाहती लेकिन मरने से पहले ऋषिकन्या को अपनी जीजी के हाथ में सौपना चाहती है।

दूसरी ओर पिता, भाई के मृत्यु के बाद और अम्मा, छुटकी की दीक्षा के बाद संघमित्रा अकेलेपन से त्रस्त होती है। जीवन को नए सिरे से जीने की कोशिश करते समय समाज में उसे कुछ ऐसे अनुभव मिलते हैं, जिससे वह औरत की हालात पर झल्ला उठती है और वह अपने साथ साथ समाज के उपेक्षित स्त्रियों के लिये स्वाभिमान और व्यक्तित्व की

लड़ाई लड़ती है। संघमित्रा अपने पूर्वजों के द्वारा हड़प किए गए घर को चाचा के नाम पर करती है। कलकत्ता आकर पार्ट टाइम नौकरी करते हुए वह "नारी शक्ति संघ" की स्थापना करती है। छ फीट की कोठरी और तीन महिलाओं से शुरू किया गया "नारी शक्ति संघ" कुछ ही सालों में दस हजार महिलाओं का संघ बन जाता हैं। इस उपन्यास में संघमित्रा स्त्री विमर्श का जीता जागता उदाहरण है।

उपन्यास में संघमित्रा अपनी साथी मालविका के साथ मिलके संघर्ष करती नजर आती है, लेकिन अपने संघर्ष में पुरुष साथी का सहयोग नहीं लेती। कभी अपनी जिंदगी जीने के बारे में सोचती नहीं। कही माँ के लिए लड़ती नजर आती है, कही अपने बहन छुटकी के लिए, तो कही नारी समुदाय के लिए लड़ती हैं । उसने परिस्थितियों से हारकर पुरुष का सहारा नहीं लिया। दीक्षा न लेते हुए भी जैन मुनियों से ज्यादा सात्विक एवं संघर्षशील जीवन जीते हुए नैतिकता के मार्ग पर चलती है और साबित करती है कि स्त्री, पुरुष के बिना अधूरी नहीं है।

अठारह वर्षो के बाद छुटकी (साध्वी दिव्यप्रभा) और संघमित्रा दोनों बहने फिरसे मिलती है। अपनी बहन की दुर्दशा देखकर अभयमुनि की हत्या करने का क्रूर निर्णय संघमित्रा लेती है। अभय मुनि में भरी वासना का सहारा लेकर उसे "गोचिरी" को आमंत्रित करती है और उत्तेजित अभयमुनि की हत्या कर आत्मसमर्पण कर देती है। उसे आजीवन कारावास होता, लेकिन उसे इस बात से संतोष होता है कि उसने समाज के और धर्म के ठेकेदारों का सच दुनिया के सामने रखा।

देखा जाए तो किसी भी धर्म की उम्र ५००० वर्षों से अधिक नहीं है, जब कि मानव जाती का इतिहास लाखो वर्ष पुराना है। धर्म तो अभी अभी बने है। सभी धर्म एकमात्र उद्देश से बने, समाज की कुरीतियाँ, अन्याय एवं शोषण के खिलाफ एक व्यापक मार्ग समाज को दिखाया जाए। सभी धर्मों की शिक्षा का स्वरुप जीवन को सुन्दर बनाना और नैतिक मूल्य को

बढ़ावा देना होता है, लेकिन जिस प्रकार सरिता अपने उद्गम में निर्मल, पवित्र एवं पारदर्शी होती है, पर धीरे- धीरे वह प्रदूषित होती है, वैसे ही कालांतर में सारे धर्म उन्ही बुराइयों के शिकार हुए जिनके उन्मूलन के लिए उनका जन्म हुआ था।

जैन साधु-साध्वी के जीवन को हम आज तक उच्च नजरिये से देख रहे थे। लेकिन 'सेज पर संस्कृत' यह उपन्यास यह उजागर करता है कि सुसंस्कृत भी अनैतिकता पर उतर आते हैं। इस उपन्यास के माध्यम से मधु कांकरिया ने धार्मिक कर्मकांडो पर कड़ा प्रहार करते हुए, स्त्री विमर्श को पूर्णतः मानवीय गरिमा के साथ प्रस्तुत किया है।

पत्ताखोर

आज हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या है, युवाओं में बढ़ते नशे की। जिस पीढ़ी के हाथ में हमारे देश की कमान है, वही पीढ़ी नशाखोरी के आदत से खोखली बन रही है। आज की इक्कीसवीं सदी ने जहाँ चकाचौंध, सुनहरी जिंदगी दी वही दूसरी ओर अनेक समस्याएँ, तनाव, कुंठा ने मनुष्य के जीवन को अपने कब्जे में ले लिया हैं। जिस पीढ़ी को देश की उन्नति के लिए अपनी ऊर्जा लगानी चाहिए वाही पीढ़ी आज अपनी अनमोल शारीरिक और मानसिक ऊर्जा सामाजिक कुरीतियों को बढाने में लगा रहे हैं।

"पत्ताखोर" उपन्यास में इसी नशाखोरी की समस्या में फसे एक युवक की जिंदगी का आदि से अंत तक सफ़र अंकित किया है। "पत्ता" मतलब एक पुडिया हेरोइन या ब्राउन शुगर और उसका सेवन करने वाले को "पत्ताखोर" कहा जाता है। उपन्यास का कथानक मुख्य पात्र आदित्य के इर्द- गिर्द घूमता रहता है। आदित्य के संवेदशीलता के बारे उसके पिता हेमंत बाबू जानते थे, लेकिन उसकी माँ वनश्री का इससे कोई लेन देन नहीं था। आदित्य को बचपन से संगीत से लगाव था। वह संगीत के माध्यम से जिंदगी के आनंद की खोज करता रहता है क्योंकि माँ और पिता दोनों के पास उस पर ध्यान देने के लिए समय न था। परिणामस्वरूप

स्कूल में उसके पढ़ाई का आलेख गिरता चला गया। केवल सोलह वर्ष की उम्र में धुम्रपान करते पकडे आदित्य को उसके पिता उपदेश देकर छोड़ देते है। बारहवीं के परीक्षा में असफल होने के कारण वह घर से भाग जाता है और पूरी के एक होटल में नौकरी करने लगता है। वही उसे हेरोइन का नशा करने की आदत लग जाती है। वापस घर लौटने पर माँ और पिता के झगडे से आदित्य पर फिर से असर होने लगता है और अपनी हताशा, निराशा, जिंदगी की बोरियत और भविष्यहीनता से लड़ने के लिए फिर से नशे का सहारा लेता है।

आदित्य को जिंदगी का सही अर्थ मोहनबाग लेन के झुग्गियों में मिलता हैं। यहाँ के लोग अभावों के भयंकर दुष्चक्र के बावजूद जीवन से हार नहीं मानते। हाथ रिक्शा चलाने वाले लोग, हाड़तोड़ मेहनत करके भी अभाव से ग्रस्त इस मोहल्ले के लोगों की जीवन में संतोषी रहने की वृत्ति, सभी प्राणियों को समान भाव से देखने की इनकी सौन्दर्य दृष्टि देख आदित्य अपने नशे पर काबू पाता है। इन्ही बस्तियों के लोगों के जीवन में आदित्य व्यस्त होता है और अपने नशे की आदत को भूल जाता है, और बस्ती वालों को संगठित करके "श्रमिक एवं रिक्शाचालक विकास संघ" की स्थापना करता है। मोहनबाग लेन की बस्ती में रहकर वहाँ के लोगों की समस्या हल करने का का काम करता है। बस्ती वालों के लिए काम करने से उसे सुकून मिलने लगा। उसे जीवन की एक सच्चाई पता चलती है कि जीवन का सच्चा सुख लोगों की सेवा करने से मिलता है। अपनी दृढ़ निष्ठा के कारण आदित्य "श्रमिक एवं रिक्शाचालक विकास संघ" का काम कई शाखाओं में फैलाता है। एक दिन आदित्य के माता पिता हेमंत बाबू और वनश्री बस्ती में पहुँचते है। अपने साथ ले जाने की उनकी जिद को टालते हुए आदित्य उनसे कहता है -" इन गन्दी झोपड़ियों के टुकडो-टुकड़ों में बिखरी खंडित जिंदगियों ने ही मुझे एक अखंडित जीवन दर्शन दिया है, किसी भी हालात में जिंदगी से हार मानना ठीक नहीं है। जो सबको अपना ले वाही शिव है, बाकी सब शव है।"[५८]

उपन्यास के अंत में आदित्य को पता चलता है, कि उसकी प्रेमिका राशि आज भी अविवाहित है और उसका इंतज़ार कर रही है। परन्तु आदित्य, माता- पिता का स्नेह और राशी का प्यार इन सबसे ऊपर बस्ती के लोगों को अहमता देता है।

सूखते चिनार

उपन्यास 'सूखते चिनार' फौजी जीवन पर आधारित है। चर्चित एवं प्रमुख उपन्यासकार 'मृदुला गर्ग' के पाँच पसंदीदा किताबों में से एक है 'सूखते चिनार' मधु कांकरिया का यह उपन्यास मूल रूप से कश्मीर के आतंकवाद पर आधारित है। यह उपन्यास अपने कथानक में कश्मीर के आंतकवादी परिवार के तमाम हालात के साथ फौजी जीवन को उपस्थित कर देता है। इस उपन्यास में आतंकवाद तथा फौजियों की अनेक समस्याओं का वर्णन दृष्टिगोचर होता हैं। फौजी सिपाहियों का जीवन सामान्य नागरिक के जीवन से भिन्न है। वहा का जीवन कड़े अनुशासन से बंधा होता है। फ़ौज में जाना याने शहीद होना यह धारणा आम लोगों के मन में रहती है, इसीलिए उनके मन में अपने बच्चों को फ़ौज में भेजने को लेकर एक डर सा बना रहता है। प्रस्तुत उपन्यास घरवालों की इसी मानसिकता से शुरू होता है। एक और सेना में जाने का निश्चय बनाये रखा पुत्र है, तो दूसरी ओर मन में भय लिए परिवार उसे रोकने की कोशिश करता हैं। इस कथा के नायक संदीप ने टाइम्स ऑफ़ इंडिया में "नेशन नीड्स यू" का भाउक विज्ञापन पढ़ा और उसने इस बात की कसम खाली "सोल्जर इ ऍम बोर्न, सोल्जर इ शाल डाई"।

संदीप मारवाड़ी परिवार से है, जिसके पुरखों के हाथों में सदा तराजू हुआ करता था। इसीलिए सेना में नौकरी करने के उसने फैसले को उसका परिवार सहज स्वीकार नहीं पाता। उनके हिसाब से सेना में जाना मतलब मौत को गले लगाना, परिवार के मन में बसे इस खौफ का वर्णन लेखिकाने ने बड़े मनोयोग से चित्रित किया है।

प्रस्तुत उपन्यास एक ऐसे युवक की कहानी है, जो आदर्शवादी जूनून में दुनिया को बदलने का हौसला रखता है। उसके सेना में बिताये हुए बीस सालों के अनुभवों की संक्षिप्त कथा इस उपन्यास में है। जिसमें सेना में जाने के उसके निर्णय का विरोध, कठोर सैनिक प्रशिक्षण और प्रशिक्षण के दौरान की मानसिक तथा शारीरिक चुनौतिया, अनुशासन के नाम पर वरिष्ठ अधिकारियों की मनमानियाँ और अंत में कश्मीर में तैनाती के वक्त आतंकवादी के परिवार के लिए उसकी हमदर्दी का दर्शन हैं। सेना को अपना सर्वस्व माननेवाला संदीप इसके कठोर अनुशासन से परेशान भी है। अपने कमांडिंग ऑफिसर से बगावत करके अपने जूनियर की छुट्टी पास करता है। लेकिन दूसरी तरफ उसे लगता है, कि सेना का कठोर अनुशासन उसका व्यक्तिमत्व फौलादी बना रहा है। सेना अपने इस कठोर रवैये से एक आम आदमी को फौलादी इंसान बना देती है। जिससे देश के लिए सब कुछ सहन करने की शक्ति उसमें पैदा होती है। उपन्यास में कश्मीर की वर्त्तमान परिस्थितियों का वर्णन है, आतंकियों, घुसपैठियों से कश्मीर की वादियाँ झुलस रही हैं। आतंकवादी और उसके परिवारजनों के साथ आर्मी का रवैया बड़ा ही सख्त रहता हैं। संदीप के मन में हमेशा यह विचार आता है- "क्या क्रूर के साथ क्रूर होकर शांति स्थापित की जा सकती है, किसने बनाया आर्मी का यह सामंती चरित्र? अगर इतना बोसिजम नहीं होता तो आदर्श संस्था होती भारतीय फ़ौज।"[५९]

उपन्यास में खतरनाक जिम्मेदारियाँ निभानेवाले भारतीय सैनिकों को मिलने वाले कम वेतन, राजनितिक नेताओं के गलत नीतियों के बजह से अपनी जान जोखिम में डालने वाले जाबांज सिपाहियों के प्रश्नों के साथ-साथ संदीप के भाई की कंपनी मुनाफा कमाने के लिए जो पैतरे इस्तमाल करती है, उसपर भी सवाल उठाये गए हैं। मनुष्य की भोग और विलासी वृत्ति का फायदा उठाकर यह बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ मुनाफा कमाती हैं। नैतिक मूल्यों के साथ जीने वाले संदीप का इस समाज की व्यवस्था से मोहभंग होता है।

आंतकवादियों से निपटने के लिए उसे अमानवीय तरीके अपनाने पड़ते है। और जब वह अपने अफसरों से मानवीयता और संवेदना का सवाल उठता है, तब उसे काला चश्मा पहनने की सलाह दी जाती है।

उपन्यास पढ़ते समय इस बात का पता लग जाता है की मधुजी ने कश्मीर के हालातो का बारीकी से अवलोकन किया हैं। कश्मीर के लोगों के दिल में हिन्दुस्तानियों को लेकर, हिन्दुस्तानी आर्मी को लेकर इतना जहर भर दिया गया है कि वे हिन्दुस्तान को अपना देश नहीं मानते " वहा पे कश्मीर की मंडी रावलपिंडी", "हिन्दुस्तानी कुत्ते वापस जाओ" ऐसे नारे लगते थे। यहाँ तक कि वहाँ के लोग खुले आम कहते थे कि कश्मीर में पाकिस्तानी करेंसी लगनी चाहिए।

मेजर संदीप के हाथों आतंकवादी जमील मारा जाता है। आतंकवादी जमील की बहन रुबीना को संदीप अपनाना चाहते थे लेकिन रुबीना को लगता था की कश्मीर की और उसके परिवार की तबाही के लिए हिन्दुस्तानी फ़ौज जिम्मेदार है, इसलिए वह संदीप का प्रस्ताव ठुकरा देती है। लेकिन रुबीना को असली बात तब समझ आती है जब उसके ऊपर आतंकवादियों द्वारा ही बलात्कार किया जाता है। वह मेजर संदीप को लिखे पत्र में कहती है - " संदीप, आज जब जिंदगी हाथ से निकल गयी है तो समझ पायी हूँ कि मैंने जिंदगी को समझने की कितनी भूल की है। जिस समय जिंदगी तुम्हारे रूप में बाँह फैलाये मुझे अपने आगोश में बाँधने को तत्पर थी, मैंने तुम्हे ठुकराया क्योंकि मुझे लगता था, कि हमारी तबाही के लिए हिन्दुस्तानी सरकार और हिन्दुस्तानी फ़ौज जिम्मेदार है, पर मेरे साथ जो कुछ हुआ वह किसी फ़ौज या हिन्दुस्तानी ने नहीं किया वरन् हमारे अपनों ने किया। खुद जेहादियों ने किया। कितना समझाया था तुमने मुझे कि कश्मीर को समझने के लिए मुझे १९४७ से आज तक की राजनीति के लम्बे, छिपे खेल और षड्यंत्र को समझना होगा। [६०]

उपन्यास में नकारात्मक तरीके से कई विषयों को उठाया है, लेकिन उसका अंत सकारात्मक तरीके से होता है। आतंकवादी की बहन रुबीना और उसके बच्चे को अपना कर संदीप अपने मन में बसे नैतिक मूल्यों का जतन करता हैं।

निष्कर्ष

मधु कांकरिया के कृतित्व में उनके व्यक्तित्व के अनेकानेक प्रसंगों का यथार्थांकन हुआ है। एक मारवाड़ी परिवार में जन्मी मधु कांकरिया की पारिवारिक पृष्ठभूमि साहित्यिक की नहीं थी, फिर भी गहन अध्ययन, मनन और चिंतन से उन्होंने महत्वपूर्ण रचनाओं का निर्माण किया है। उन्होंने अपनी सृजन यात्रा कहानी से आरम्भ की लेकिन तत्पश्चात उन्हें यह अनुभव हुआ कि वे अपने भाव, विचारों को उपन्यास के माध्यम से अधिक सक्षमता से व्यक्त कर सकती है। इसीलिए उनके उपन्यास पढने पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके उपन्यास मिथक नहीं सार्थक लगते हैं।

मधु कांकरिया के उपन्यास हो या कहानी, हर बार नए विषय को लेकर कुछ अलग लिखना उनकी पहचान बन गयी है। उनका लेखन किसी एक दायरे में सिमटकर न रहकर हर नए अनछुए विषय को पाठकों के सामने रख देता है। कभी वह जैन साध्वी जीवन की कडवी सच्चाई पाठकों के सामने लाते हुए धार्मिक आडम्बरों पर कडा प्रहार करती हैं, तो कभी नक्सलवादी आन्दोलन से जुड़े युवाओं की मानसिकता दर्शाती है, तो कभी फौजी जीवन में भी बुद्ध के तलाश करती है तो कभी आज की मूल्यहीन युवापीढ़ी में बढ़ते नशे और उनके हालात के बारे में पाठकों को रु ब रु कराती हैं।

मधु कांकरिया का कथा साहित्य समाज की वास्तविकता के प्रति पाठकों को जागरूक करने में सफल रहा हैं। संक्षेप में, मधु कांकरिया का व्यक्तित्व एवं कृतिसंसार यह सिद्ध करता है, कि उनका साहित्य सृजन उनके व्यक्तित्व के अनुरूप है।

प्रथम अध्याय - संदर्भ सूची

१.	ओम निश्चल	संस्मरण — मधु कांकरिया छोटी सी निज जिंदगी में- वागर्थ	अप्रैल,२००४
२.	डॉ नीहार गीते	स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विविध रूप	प्रस्तावना से
3.	मधु कांकरिया	नामर्द - बीतते हुए	१२
४.	वही	वही	१९
५	मधु कांकरिया	लेडी बॉस- बीतते हुए	३८
६	वही	वही	४३
७.	वही	वही	४३
८.	मधु कांकरिया	रहना नहीं देश विराना है- बीतते हुए	५४
९.	मधु कांकरिया	लोड शेडिंग- बीतते हुए	६९
१०.	वही	वही	६२
११.	वही	वही	६५
१२.	मधु कांकरिया	बीतते हुए- बीतते हुए	७४
१३.	वही	वही	७५
१४.	वही	वही	७७
१५.	मधु कांकरिया	मर्द होते हुए बीतते हुए- बीतते हुए	९७
१६.	मधु कांकरिया	बड़ा पोस्टर - बीतते हुए	११६
१७.	मधु कांकरिया	दरअसल अम्मी- बीतते हुए	१२१
१८.	मधु कांकरिया	उड़ान - बीतते हुए	१२७
१९.	वही	वही	१२९

२०.	मधु कांकरिया	आसमान कितनी दूर- बीतते हुए	१४०
२१.	मधु कांकरिया	दाखिला- बीतते हुए	१४५
२२.	वही	वही	१४७
२३.	मधु कांकरिया	शुन्य होते हुए- बीतते हुए	१५५
२४.	मधु कांकरिया	फैसला फिर से- बीतते हुए	१६२
२५.	मधु कांकरिया	चूहे को चूहा ही रहने दो- बीतते हुए	१८५
२६.	वही	वही	१८७
२७.	मधु कांकरिया	अन्वेषण- बीतते हुए	२०२
२८.	मधु कांकरिया	फाइल- भरी दोपहरी के अँधेरे	५५
२९.	वही	वही	६१
३०.	मधु कांकरिया	और अंत में इशु -भरी दोपहरी के अँधेरे	१४०
३१.	मधु कांकरिया	कीड़े-भरी दोपहरी के अँधेरे	१५
३२.	मधु कांकरिया	महाबली का पतन -और अंत में इशु	५६
३३.	वही	वही	५७
३४.	मधु कांकरिया	फैलाव- और अंत में इशु	७४
३५.	वही	वही	८४
३६.	मधु कांकरिया	मोहल्ले में-और अंत में इशु	९५
३७.	मधु कांकरिया	कुल्ला - और अंत में इशु	९५
३८.	वही	वही	९६
३९.	वही	वही	९९
४०.	मधु कांकरिया	महानगर की माँ- और अंत में इशु	१०६
४१.	मधु कांकरिया	चिड़िया ऐसे मरती है- चिड़िया ऐसे मरती है	१०

४२.	वही	वही	१४
४३.	वही	वही	१५
४४.	वही	वही	१७
४५.	मधु कांकरिया	युद्ध और बुद्ध - चिड़िया ऐसे मरती है	१९
४६.	मधु कांकरिया	नंदीग्राम के चूहे - चिड़िया ऐसे मरती है	३४
४७.	मधु कांकरिया	बस दो चम्मच औरत- चिड़िया ऐसे मरती है	५८
४८.	मधु कांकरिया	अठारह साल का लड़का –दस प्रतिनिधि कहानियां	९८
४९.	मधु कांकरिया	काला चश्मा – दस प्रतिनिधि कहानियाँ-	१०९
५०.	मधु कांकरिया	पोलीथिन में पृथ्वी -दस प्रतिनिधि कहानियाँ	१४५
५१.	मधु कांकरिया	चिड़िया ऐसे जीती है - दस प्रतिनिधि कहानियाँ	१३०
५२.	मधु कांकरिया	घाटा - युद्ध और बुद्ध	१११
५३.	मधु कांकरिया	मिसफिट - युद्ध और बुद्ध	१३२
५४.	मधु कांकरिया	युद्ध और बुध - युद्ध और बुद्ध	१३४
५५.	मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	१३५
५६	वही	वही	१६४
५७.	मधु कांकरिया	आत्मकथ्य- सलाम आखिरी	VIII
५८ .	मधु कांकरिया	पत्ताखोर	२०४
५९.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	४९
६०	वही	वही	१३३

द्वितीय अध्याय

स्त्री विमर्श : परिभाषा, स्वरुप एवं विवेचन

द्वितीय अध्याय

स्त्री विमर्श : परिभाषा, स्वरुप एवं विवेचन

समानता, स्वातंत्र्य और लोकशाही यह तीन संकल्पनाओं का प्रमुख उद्देश्य यह है कि हर एक मानव जाति को अपना जीवन सृजनशीलता से जीना। अगर हमें पुरानी मूल्यावस्था से परे हटना है तो हमारी अन्यायदायी परम्पराओं का निषेध सबसे ज़रुरी है। वर्ग, वर्ण, जाती, वंश इनके साथ साथ लिंगभेद, पुरुष जाति का वर्चस्व हमारी पुरानी परम्पराओं का सबसे अहम भाग था। इसी का फायदा लेकर स्त्री का शोषण चलता रहा और पुरुष जाति का विकास होता रहा, संपत्ति, शिक्षण, राजकारण, धर्मकारण, यह सब चीजे पुरुषों के हाथ में रही और कर्तव्य, त्याग, मातृत्व, प्रेम इनके तले स्त्री अपना दुय्यम स्थान स्वीकारती चली गयी, उसी में अपनी सार्थकता मानती चली गयी।

आदिकाल में भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री का स्थान और दर्जा ऊँचा रहा है । वैदिक काल में स्त्री को पुरुषों से उच्च दर्जे का स्थान था । उस समय स्त्री के विकास में बाधा डालने वाली कुप्रथाओं की शुरुआत नहीं हुआ थी । वैदिक समय में स्त्री को पुरुषों के बराबर या उससे ज्यादा अधिकार दिए जाते थे। कला, संस्कृति और विद्या जैसे हर क्षेत्र में उसे पुरुषों के समान अधिकार थे । परन्तु उत्तरवैदिक काल से स्त्री की स्थिति में गिरावट होती रही । स्त्रियों के पद में ह्रास होने लगा । स्त्री के संबंध में वैदिक काल में जितनी उदात्त व्यवस्था थी उतनी पुराण काल में नहीं थी । पुराण काल में पितृसत्ताक समाज का महत्त्व बढ़ने लगा । स्त्री का जीवन संकुचित परिधि में ही रह गया । पुराण साहित्य में स्त्री का जीवन दयनीय दर्शाया गया है । विधवाओं के प्रति उपेक्षित भाव, सती प्रथा को प्रोत्साहन से स्त्री की स्थिति और भी दयनीय होने लगी । महाभारत काल के बाद स्त्री के स्थिति में धीरे-धीरे उतार आता चला गया। स्त्री

शिक्षा की सुविधाएँ काम होती चली गयी, उसकी सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की सुविधाएँ कम होती चली गयी तथा उसके शोषण की शुरुवात होने लगी।

हमारे प्राचीन धर्मशास्त्रों में स्त्री स्थिति का सम्पूर्ण चित्र उपलब्ध होता है। मनुस्मृति धर्मशास्त्रों में प्रमाणिक ग्रन्थ माना गया है । मनुस्मृति में मानवीय समाज की एक आदर्श कल्पना विद्यमान है। मनुस्मृति में एक जगह कहा है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:

यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रिया:

तो दूसरे जगह उससे विपरीत कहा है।

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने।

रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वतन्त्रमहर्ति

मनुस्मृति में एक जगह स्त्री को देवी माना है और उसका पूजन करने कि बात कही है, तो दूसरी जगह स्त्री को किसी तरह का स्वातंत्र्य न देने का प्रस्ताव किया है। एक जगह कहा है, जहाँ नारी को पूज्य माना जाता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। तो दूसरी जगह कहाँ गया है, 'नारी को स्वतंत्रता नहीं देनी चाहिए। स्त्री को कुमारी अवस्था में पिता के सरक्षण में, युवा काल में पति और वार्धक्य में संतान के संरक्षण में रहना चाहिए।

१९ वीं सदी और २० वीं सदी भारतीय समाज जीवन के दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। १९ वी सदी के शुरुआत में भारतीय समाज जीवन में एक नए पर्व की शुरुआत हुई। और २० वीं सदी में स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद आए हुए परिवर्तन ने इस पर्व को पूर्णत्वता प्राप्त हुई। १९ वीं सदी में भारत में वैचारिक प्रबोधन प्रस्थापित होकर हमारा देश आधुनिकता की ओर अग्रसर होने लगा। २० वीं सदी के बाद आए हुए परिवर्तन से भारतीय सांस्कृतिक जीवन में

भी बहुत परिवर्तन आ गया। इस परिवर्तन के प्रमुख उदाहरण स्वरुप हम स्त्री जीवन की ओर अंगुलिनिर्देश कर सकते हैं।

इस कालखण्ड में भारतीय स्त्री जीवन में बहुत से महत्वपूर्ण बदलाव आए। दीर्घकालीन अंधेरे मध्यमवर्गीय जीवन का अंत होकर एक नए जीवन की शुरुआत होने लगी। इसी काल में स्त्री के सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक अस्तित्व को महत्व प्राप्त होने लगा। समाज का उसकी और देखने का नज़रिया भी बदल गया। प्रमुखता इस बात को देनी होगी, कि इसी काल में स्त्री को आत्मसन्मान की पहचान हो गयी। और इसी जागे हुए आत्मसन्मान की बजह से, उसका अपने आप को और अन्य पारिवारिक संबंधों को देखने के नजरिये में बदलाव आ गए। उसे अपनी क्षमताओं से, अनुभूतियों से पहचान हो गयी। अपने स्व सामर्थ्य से परिचित स्त्री ने विविध क्षेत्रों में आत्मविश्वासपूर्ण कदम रखे। साहित्य, संगीत, समाजकारण, शिक्षण, राजकारण, प्रशासन जैसे क्षेत्रो में अपनी पहचान बनायी। स्त्री के लिए ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं वर्जित रहा जिसमें उसने अपनी खुद की पहचान बनायी। इस तरह से एक विविक्षित प्रक्रिया से उत्तरोत्तर उत्क्रांत हो कर स्त्री में परिवर्तन आ गया। हिंदी साहित्य क्षेत्र की बात करे तो हिंदी साहित्य क्षेत्र के निर्माण में भी स्त्री का सहयोग व्यक्ति और समाज दोनो के लिये उपयुक्त साबित हुआ।

२ . १ स्त्री विमर्श अवधारणा एवं स्वरुप

स्त्री-विमर्श पर चर्चा करने से पहले यह बात जानना जरुरी है कि स्त्री साहित्य का मुख्य उद्देश्य क्या होना चाहिए । स्त्री विमर्श को दर्शाता स्त्री लेखन या स्त्री के लिए साहित्य लेखन। यदि स्त्री की हालात को गंभीर चिंता का विषय मानकर उससे उत्पन्न होने वाले साहित्य को स्त्री लेखन का नाम दिया जाए तो यह केवल साहित्य के एकांगी पक्ष को ही प्रतिफलित करेगा। अगर हम साहित्य में नारी उत्थान एवं मुक्ति जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों की बात करें तो हमारा वांग्मय

स्त्री-लेखन से भरा हुआ है। उपनिषद, कथा सरित सागर, पंचतंत्र से लेकर रामायण, महाभारत में स्त्री जाति के शोषण के साथ- साथ उसकेउत्थान को प्रेरित करने वाले साहित्य से भरा हुआ है। भारतीय समाज में स्त्री की स्त्री की स्थिति का अति गंभीरता से चिंतन हुआ है।

स्त्री विमर्श के बारे में लिखने से पहले स्त्री के इतिहास के बारे में जानना ज़रुरी है। उसके सुख दुःख उसकी संवेदना, त्याग इन सबके बारे में जानना आवश्यक है। धर्म, जाती, समाज, पुरुष प्रधान व्यवस्था, कुरुतियाँ, परम्पराए इनमे बंधा स्त्री जीवन कैसे और कब खुली हवा में सांस लेने लगा. स्त्री को सही तरीके से आज़ाद करने में जो परिश्रम किये गए, जो आंदोलन हुए, स्त्री विमर्श का अर्थ सही मायने में जानने के लिए यह सब चीजे जानना बहुत जरुरी है।

भारत में स्वातंत्र्योत्तर समय के स्त्री चिंतन पर मुख्यतः पाश्चात्य नारीवाद का प्रभाव है। हिंदी के नारीवादी उपन्यास लेखिकाओं में भी पाश्चात्य नारीवाद का प्रभाव दिखाई देता है। इसको समझने के लिए पाश्चात्य नारीवाद के स्वरुप और इतिहास का सामान्य परिचय आवश्यक है।

२. १.१ नारीवाद पाश्चात्य देशो में

पश्चिमी देशों में स्त्री कि स्थिति प्राचीन काल में उतनी सुदृढ़ नहीं थी। स्त्री को समानता एवं स्वतंत्रता से वंचित थी तथा वहा के सामाजिक नियम स्त्रियों को अधिकार प्रदान करनेवाले नहीं थे। उनको मतदान के हक़ से भी वंचित रखा था। अपनी अधिकार के प्रति जागृत हुई स्त्री ने पश्चिम में स्त्री मुक्ति आंदोलन कि नीव अठारहवी शताब्दी रखी।

स्त्री मुक्ति की तरफ पहला कदम १८४९ उठाया गया, न्यूयॉर्क में "सिनेका फॉल्स" नामक प्रस्ताव रखा गया जिसमे ग्रिम बहनों की रहनुमाई में आयोजित तीन सौ स्त्री-पुरूषों की

सभा, जिसने स्त्री दासत्व तथा शोषण की लम्बी श्रृंखला को चुनौती देते हुए स्त्री मुक्ति आन्दोलन शुरुआत की गयी।

सन् १८६९ में प्रसिद्ध अंग्रेज चिंतक जान स्टुअर्ट मिल द्वारा ब्रिटिश पार्लियामेंट में स्त्री के मताधिकार के लिए प्रस्ताव रखा गया, जिसने स्त्री-पुरुष के बीच स्वीकार की जाने वाली अनिवार्य क़ानूनी और संवेधानिक समानता की माँग पर बल दिया गया।

इन आंदोलनों के चलते भी स्त्री मुक्ति के लिए कोई ठोस कदम उठाए नहीं गए। स्त्री को पहली बार वोट देने का अधिकार १८९३ में न्यूजीलैंड में दिया गया। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में स्त्रियों को मताधिकार १९२० में दिया गया, जबकि ब्रिटिश सांसद ने नारी को यह अधिकार १९२८ में दिया। १९७५ में अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया और पुरे दुनिया में स्त्री स्वतंत्रता की हवाएं बहने लगी। "मेरी वाल स्टोन क्राफ्ट " ने इंग्लेंड में नारी अधिकारों के लिए आवाज़ उठाई थी। विपरीत परिस्थितियों में अदम्य साहस दिखाने के कारण आज भी उसे स्त्री मुक्ति आंदोलन कि सूत्रधार कहा जाता है।

पाश्चात देशो में स्त्री मुक्ति आंदोलन को प्रेरणा देने का काम कुछ चर्चित पुस्तकों ने किया जैसे सिमोन द बोआर कि 'द सेकंड सेक्स', बेट्टी फ्राईउन कि द फेमिनिन मिस्टेक। बेट्टी फ्राईउन कि इस पुस्तक ने साहित्य क्षेत्र में नारी मुक्ति आंदोलन को जन्म दिया।

समाज में नारी अधिकारों के लिए घटित हो रही इन घटनाओं ने साहित्य के क्षेत्र में विमर्श का रूप लिया और यही से नारी विमर्श की अवधारणा अवतरण में आ गयी।

२. १. २ भारतीय नारी -मुक्ति संघर्ष

पश्चिमी मुक्ति आंदोलन कि तुलना में भारतीय नारी -मुक्ति संघर्ष का स्वरुप भिन्न है भारत में नारी मुक्ति आंदोलन के प्रारम्भ का समय निर्धारण कठिन है क्योंकि इसका कोई निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहीं है। फिर भी १९ वीं शताब्दी में नारी समाज पर हो रहे अत्याचारों

के विरोध के लिए भारतीय समाज में भी संघर्ष के बीज पनपे इसका प्रमाण मिलता है। भारत में १९ वीं शताब्दी में इस दिशा में आंदोलन ने जोर पकड़ा। नारी विषयक मुद्दो पर पुरुष आंदोलकों के साथ-साथ स्त्रियों की भागीदारी भी प्रभावपूर्ण रही। महान और क्रन्तिकारी व्यक्तित्वों ने भारत में हो रही कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष किया। कुछेक महान हस्तियों का संक्षिप्त उल्लेख यहाँ अनिवार्य है।

राजा राम मोहन रॉय को स्त्री मुक्ति का जनक माना जा सकता है। राजा राम मोहन राय के जीवन का सबसे बड़ा कार्य था, सती प्रथा का निवारण। उन्होंने ही अपने अथक प्रयासों से सरकार द्वारा इस कुप्रथा को ग़ैर-क़ानूनी और दंण्डनीय घोषित करवाया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा इस अमानवीय प्रथा के विरुद्ध निरन्तर आन्दोलन चलाया। स्त्री के पक्ष में अपने कार्य को आगे बढाते हुए उन्होंने १८१५ में आत्मीय सभा कि स्थापना कि जिसका मुख्य उद्देश स्त्री शिक्षा था। दहेज प्रथा और बाल विवाह का विरोध, महिलाओं की शिक्षा और आत्मनिर्भरता की जरूरत पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया।

हिंदु विधवाओं को पुनर्विवाह का अधिकार देने का प्रयत्न ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने किया। उन्होंने बालविवाह जैसी कुरीतियों के खिलाफ सख्त विरोध दर्शाया। स्त्री शिक्षा महत्त्व उन्होंने जाना था इसलिए उसके प्रसार में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। वे नारी शिक्षा के समर्थक थे। उनके अथक प्रयास से ही भारत में कई स्थानों में स्त्री विद्दालयों की स्थापना हुई। उस समय भारतीय समाज में विधवाओं की स्थिति बहुत ही दुःखदायक थी। उन्होनें विधवा पुनर्विवाह के लिए जनमत तैयार किया। उन्हीं के प्रयासों से १८५६ साल में विधवा-पुनर्विवाह कानून पारित हुआ। उन्होंने अपने इकलौते पुत्र का विवाह एक विधवा से ही किया था।

रमाबाई रानडे पर्दा प्रथा, बालविवाह, सती प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाने वाली पहली भारतीय महिला होगी । वह अपने भाषणों के लिए प्रसिद्ध थी । उन्होंने स्त्रियों के सुधार हेतु "आर्य महिला समाज" कि स्थापना की । महाराष्ट्र में इन्होने पहला विधवा गृह "शारदा-सदन" खोला

स्वर्णकुमारी देवी, रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुत्री थी। भारत के प्रारंभिक महिला उपन्यास लेखिकाओं में इनका प्रमुख स्थान था । स्वर्णकुमारी देवी एक कवयित्री व् लेखिका होने के साथ समाज सुधारिका थी। इन्होने महिला सुधार के उद्देश से महिला ब्रम्हवाद समिति (Theosophicall society) कि स्थापना कि। सन १८८६ में इन्होने "साखी समिति" शुरू की जिसका उद्देश अनाथों, विधवाओं की सहायता करना व् स्त्री शिक्षा का प्रसार करना था।

सावित्री बाई फुले और ज्योतिबा फुले पति-पत्नी ने नारी की निकृष्ट दशा सुधारने के लिए बहुत प्रयास किये। ज्योतिबा फुले ने स्त्री समानता को बढ़ावा देनेवाली नयी विवाह विधि बनायीं थी। उन्होंने बाल विवाह का विरोध किया। वे चाहते थे कि विवाह विधि में पुरुषसत्ताक संस्कृति का समर्थन करनेवाले और स्त्री की गुलामगिरी सिद्ध करनेवाले मंत्रो को विवाहविधि से निकाल दिया जाए, इसलिए उन्होंने ऐसे मराठी मंत्रो की रचना की थी जो सबको समजने में आसान हो -"जोतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले की शादी वास्तव में समाज सेवा के महान कार्य के लिए आजीवन समर्पित, संघर्षरत दो महान शक्तियों का मिलना था। इसमे दो राय नहीं की इन दोनों ने अपने और अपने परिवार के सुख-दुःख की चिंता न करते हुए देश के सदियों से शोषित, पीड़ित और वंचित तबकों, अतिशूद्रों के उत्थान की दिशा में एक अभूतपूर्व और क्रांतिकारी आंदोलन को नई दिशा देने का महत्वपूर्ण कार्य किया जो समाज सुधार की दिशा में मील का पत्थर माना जाता है"। [१]

स्त्री-पुरुष समान अधिकारों की समर्थक एनी बेसेंट १८९३ में भारत आई। वे विधवा विवाह को धर्म मानती थीं। उनकी धारणा थी कि प्रौढ़ विधवाओं को छोड़कर किशोर एवं युवावस्था की विधवाओं को सामाजिक बुराई रोकने के लिए विवाह करना आवश्यक है। वे अन्तर्जातीय विवाहों को भी धर्म सम्मत मानती थीं। बहु विवाह को वे नारी गौरव का अपमान एवं समाज का अभिशाप मानती थीं।

२. १. ३ स्त्री विमर्श की परिभाषा

हिंदी में स्त्री विमर्श पर बहुत कुछ लिखा और कहा जा चूका है। निश्चित ही यह एक चर्चा का और जरुरी विषय बन चूका है। स्त्री विमर्श, स्त्री मुक्ति, नारीवाद ये सभी शब्द एक दूसरे से समानता रखते हैं। स्त्री विमर्श इस बदलते समाज में ही नहीं बल्कि साहित्य में भी सर्वत्र दिखाई पड़ता है- "स्त्री विमर्श एक मानवीय अस्तित्व के रूप में स्त्री की पहचान और सन्मान, बराबरी और अधिकार के सवालों से जूझता है, और इस आवाज़ में अगर आज किसी को आपत्ति होती है तो उसे वाल्मीकि, तुलसी, मैथिलि शरण गुप्त समेत तमाम उन रचनाकारों से असहमत होना पड़ेगा जो, "सखी वह मुझसे कहकर जाते" (यशोधरा) कि एक गुहार में मन की तमाम पीड़ा को उड़ेल देते हैं। फिर तो हमें मीरा को भी नकारना होगा जो तमाम राजसी आदेशों की मुखालफत के साथ अपने प्रेम और अपने अस्तित्व की मांग को लेकर अड़ी रही। क्या हममे इतना साहस है कि अपनी साहित्यिक विरासतों में पैठि स्त्री अस्मिता की तड़प को नकार पाये जो आज के नए पारिभाषिक स्त्री विमर्श नींव है।" [२]

स्त्री विमर्श इस शब्द को सही ढंग से समझने के लिए स्त्री और विमर्श इन दोनों शब्दों का अर्थ जानना जरुरी है।

स्त्री - अर्थ

हर एक शब्द का इतिहास होता है। नारी या स्त्री यह शब्द नारी स्वरुप का सही मतलब सामने लाता है। भारतीय इतिहास में नारी के अनेक पर्यायी शब्द मिलते है। उसके विविध रूपों को जताते है। नारी को मेना, योषा, प्रमदा, कामिनी, रमणी, जननी, जाया, भामा, महिला आदि नाम से पुकारा जाता है।- "मुंशीराम शर्मा स्त्री इस शब्द का अर्थ समझाते हुए कहते है,

१. निरुक्त में कहा है: मानयन्ति एन: पुरुषाः। पुरुष उसका सन्मान करते है अतः उसे "मेना" कहा गया है।

२. नारी, नर की सहयोगिनी है. अतः उसे "योषा" कहते है।

३. वह सौंदर्य को बुनती या बिखेरती है। वयति सौन्दर्यम। अतः उसे "वामा" कहा गया है।

४. नारी पुरुष के मन को आल्हादित कराती है, अतः वह "प्रमदा है"

५. वह काम्या होने से "कामिनी", रम्या होने से "रमणी", संतति उत्पन्न करने के कारण "जननी", "जाया" और तेजस्विनी होने के कारण भामा कहलाती है।

६. माता पत्नी भगिनी पुत्री आदि सभी रूपों में पूजनीय होने से उसे "महिला" कहा गया है।

७. पति द्वारा उसका भरण - पोषण होता है, अतः वह भार्या कहलाती है। [3]

विमर्श: अर्थ

समकालीन सिद्धांतिकियों के पारिभाषिक पदों में विमर्श भी एक पद है, जिसका सामान्य अर्थ है बातचीत करना, सोच विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना, गुण दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना उसे जाँचना परखना।

विमर्श इस शब्द को विशिष्ट रूप में उत्तर-आधुनिकता के सन्दर्भ में अंग्रेजी "डिस्कोर्स" (discourse) के समानार्थी शब्द के रूप में प्रचलित किया गया था।

Oxford dictionary के अनुसार डिस्कोर्स का मतलब है, speak or write authoritatively about a topic.

Cambridge dictionary के अनुसार डिस्कोर्स शब्द का अर्थ है " a speech or piece of writing about a particular, usually a serious subject विमर्श का सामान्य रूप से अर्थ यह है कि एक सामान्य विचारधारा को भाषा में प्रकट करना, एक सामाजिक दायरे में रहकर किसी एक विषय पर संरचना निर्माण करना है।

डॉ. रोहिणी अगरवाल के अनुसार- "विमर्श का अर्थ है, जिवंत बहस। किसी भी समस्या या स्थिति को एक कोष से न देखकर भिन्न मानसिकताओं, दृष्टियों, संस्कारों और वैचारिक प्रतिबद्धताओं का समाहार करते हुए उलट-पुलट कर देखना, उसे समग्रता से समझने की कोशिश करना और फिर मानवीय संदर्भो में निष्कर्ष-प्राप्ति की चेष्टा करना"। [४]

विमर्श किसी भी विषय के सभी पक्षों को उजागर करने का कार्य करता है - "विमर्श तो चिन्तन का ही एक रूप है, जिसके अंतर्गत किसी भी विषय की गहन पड़ताल करके उसकी अच्छाई और बुराई दोनों पक्ष उजागर किये जाते है। जिससे विचारों को सही रूप में ग्रहण करने की सुविधा हो सके"। [५]

जिस समाज के लोगों की सोच, विचार, शक्ति व् दृष्टिकोण एक जैसा होगा अगर वे उस सोच विचार को बांटने तथा आदान प्रदान करना चाहेंगे तो वहाँ विमर्श की सम्भावना रहती है। एक तरह से विमर्श, वक्त से आगे जाने वाले लिखित, मौखिक, अभिलिखित सोच-विचारों का समग्र रूप है। अगर दलित समाज को केंद्रीभूत रखकर उसे विमर्श से जोड़ेंगे तो वह दलित विमर्श कहलाएगा, अगर स्त्री को केंद्र में रखकर उसे विमर्श से जोड़ेंगे तो वह स्त्री विमर्श को आख्यायित करेगा। विमर्श से हम किसी भी विषय की गहराई से सोच विचार कर उसके

नकारार्थी और सकारार्थी दोनों पक्ष सामने लाते हैं। विमर्श जब स्त्री विषयक प्रश्नोंसे जुड़ जाता है तो वह " स्त्री विमर्श" कहलाता है।

कभी कभी ऐसा होता है, कि कोई विमर्श अचानक उठ खड़ा होता है तथा बहुत ज्यादा लोकप्रिय भी हो जाता है। स्त्री विमर्श उन्ही विमर्श में से एक है। कुल मिलाकर देखा जाये तो विमर्श एक ऐसा शब्द है जिसका प्रयोग समाज के हर एक क्षेत्र में होता है।

स्त्री- विमर्श इस विषय पर समग्रता से देखे तो हम जान सकते है कि हिंदी साहित्य में अनेक लेखकों ने बाल विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, स्त्री- शिक्षा, स्त्री की अवस्था, स्त्री के विकास की प्रक्रिया, सतीप्रथा, संविधान में स्त्री के लिए प्रावधान, स्त्री रोजगार, स्त्री आन्दोलन आदि विषयों पर लिखा- "हिंदी लेखिकाओं में एक वर्ग ऐसी लेखिकाओं का भी है जो स्वतंत्र "महिला लेखन" या "स्त्री दृष्टि " नाम के वर्गीकरण को स्वीकार नहीं करते। पुरुषसत्ताक नजरिये का यही प्रभाव है कि स्त्री अपने को स्वतंत्र रूप में देखने असमर्थ है। स्त्री के चेतना या दृष्टी पुरुष से स्वतंत्र ही नहीं भिन्न भी होती है यहाँ तक कि स्त्री दृष्टी से कोई सामंजस्य नहीं अपितु विरोधभाव है , सामाजिक जीवन में दोनों के हितों एवं लक्ष्यों में सीधा एवं तीखा अंतर्विरोध है। दोनों मानव समाज के अंश है किन्तु दोनों को सामान रूप से जीने, बड़े होने, संस्कार हासिल करने निजी इच्छा एवं आकांक्षाओं को पूरा करने की सैकड़ो वर्षो से समाज ने कभी अवसर ही नहीं दिया। [६]

रमणिका गुप्ता कहती है - "मेरी मान्यता है की आज स्त्रियां सहित्य के हर क्षेत्र सक्षम रूप से हस्तक्षेप कर रही है। वे अपने भोगे हुए सच की ही नहीं, जिसे वे अधिक विश्वसनीयता से अभिव्यक्त करती है बल्कि दूसरे विषयों पर भी उसी विश्वसनीयता से लिखती है। जब औरत भोगा हुवा सच लिखती है तो उसमे अनुभूति की प्रमाणिकता है, उसी विषय पर जब एक पुरुष

लिखता है तो वह हमदर्दी का लेखन होकर रह जाता है। वह कल्पना का सहारा लेता है पर अनुभूति की ईमानदारी और सच्चाई भोगे हुए सच में हमे होती है"। [७]

स्त्री विमर्श एक गंभीर विषय है। इसे लेकर पिछले तीन दशकों से अलग दृष्टिकोण बन रहा है। स्त्री अपने जीवनकाल में विविध भूमिकाये निभाती है, जैसे बेटी, बहन, पत्नी, माँ आदि। इन सब भूमिकाओं को निभाते वह भूल जाती है, कि वह भी एक मानव है। पुरुष का वर्चस्व उसने इस तरह से मान लिया है कि वह उसके सामने एक दासी की भांति काम करती रहती है। अपने स्व अस्तित्व को दबा देती है। हम सोचते है कि स्त्री कमजोर होती है, लेकिन यह सच नहीं है। असल बात यह है कि स्त्री खुद को कमजोर मानती है। पुरुष से ज्यादा काम करने की क्षमता, बीमारिंयों से लड़ने की रोगप्रतिकारक शक्ति प्रकृति ने स्त्रियों को दी है। स्त्रीयोको प्रसूति के समय होनेवाली प्रसव पीड़ा से थोड़ी अधिक पीड़ा मनुष्य को मौत के मुँह में ले जाने वाली होती है लेकिन स्त्री यह प्रसव पीड़ा भी आसानी से सह लेती है। स्त्री विमर्श का मुख्य उद्देश नारी को एक मानव के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहता है। स्त्री विमर्श सदियों से जुड़े हुए कुरीतियों के पिंजड़े में बंद नारी को मुक्ति प्रदान करने का कार्य करता है -" स्त्री विमर्श" का मूल उद्देश रचना करने की या श्रेष्ठ चरित्रों को गढ़ने की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता। इसका मूल उद्देश स्त्री-मुक्ति का आख्यान रचना है। यह मुक्ति उसकी वैयक्तिक भी है और सामाजिक भी, शारीरिक भी और यौनिक भी। मुक्ति की कामना से लिखा जाने वाला साहित्य स्त्री के अनुभव से सिद्ध होकर ही परिपक्व होता है।" [८]

स्त्री- विमर्श पुरुषों के खिलाफ बगावत या विद्रोह नहीं करता। स्त्री का विद्रोह, बगावत पुरुष के स्त्री को गुलाम माननेवाली मानसिकता से है। स्त्री का विद्रोह पुरुष के उस मानसिकता के खिलाफ है, समाज में चली आ रही उस कुरीतियों के के खिलाफ है, जो नारी को अस्तित्वहीन, व्यक्तित्वहीन समझती है और उसे कनिष्ठता का दर्जा प्रदान करती है -"स्त्री

विमर्श पुरुष विरोधी नहीं है लेकिन यदि एक प्रकार की मानसिकता बनाये रखने में पुरुष मानसिकता सहयोग कर रही है तो वहाँ खिलाफत तो हमें करनी होगी। स्त्री विमर्श उस अहं, उस विषमता के विरुद्ध है जो स्त्री- पुरुष की भिन्नता के नाम पर समाज में बनायी जा रही है।"[९]

स्त्री विमर्श नारी समस्याएं, नारी मुक्ति, नारी सुरक्षा, उसका सामाजिक शोषण, नारी अस्मिता इन जैसी और कई चीजों को समेटने की कोशिश करता है। पिछले कई वर्षो से स्त्री का आत्मसन्मान उसकी पहचान पूरी तरह से नष्ट हो चुकी थी स्त्री विमर्श उसी आत्मसन्मान उसी पहचान को पाने के लिए पुरे सामाजिक व्यवस्था को झकझोर रहा है।

स्त्री स्वतंत्र होने से समाज का संतुलन बिगड़ जायेगा या उसका स्थैर्य नष्ट हो जायेगा यह भय पुरुषों के मन में सदा ही रहता है, लेकिन यह भय व्यर्थ है। अगर देखा जाए तो आज इस समाज का आधा हिस्सा जो एक स्त्री है, कमजोर होने से समाज में संतुलन नहीं, समतोल नहीं है। स्त्री स्वतंत्रता का अर्थ इस बिग़डे हुए समतोल, संतुलन को नए सिरे से प्रस्थापित करना है। तराजू का तोल आज एक बाजु से ऊपर है उसे निचे लाना यह अतिरेकी संकल्पना स्त्री विमर्शके पीछे नहीं है। तराजू का तोल किसी भी बाजू से झुका तो हानि तो हमारे समाज में रहनेवाले सभी की ही होगी। इसीलिए संतुलन का महत्व समाज में रहनेवाले हर एक व्यक्ति ने पहचानना जरुरी है। इसका मतलब यह भी नहीं हो सकता कि एक ही पल में पुरे समाज में आदर्श संतुलन बन जाए। फिर भी स्त्री विमर्श एक कोशिश है यह संतुलन बनाये रखने कि। स्त्री की प्रतिभा जीतनी खिलेगी उनकी अंत:शक्ति जीतनी जागृत हो जाएगी उतना ही कल्याण मानवजाति का होगा क्योंकि इस दुनिया में ही आधे से भी ज्यादा स्त्रियाए है। उनकी कार्यक्षमता सृजनशीलता दबाये रखने का अर्थ है समाज का नुकसान।

आज स्त्री शिक्षित एवं स्वावलंबी बन रही है, समाज में अपनी अस्मिता की पहचान बना रही है। वह हर क्षेत्र में अपना एक स्थान कायम कर रही है। वैयक्तिक, सामाजिक,

आर्थिक, राजनैतिक आदि स्तरों पर होने वाले शोषण, अत्याचार के विरोध में संघर्ष की तैयारी कराना ही स्त्री विमर्श का मुख्य लक्ष्य है। मृणाल पांडे अनुसार -"नारीवाद पुरुषों का नहीं उनकी मानवीयता घटाने वाले उस मुखौटे का प्रतिकार करता रहा है जो मर्दानगी के नाम पर गढ़ा गया है, और जिसके पीछे झूठी अहमान्यता और उत्पीड़क प्रवृत्ति के अलावा कुछ नहीं है"। [१०] स्त्री विमर्श एक तरह से अपने अधिकारों अपने हक़ के प्रति पैरवी करता है। आज स्त्री विमर्श के बजह से स्त्री की हालात में कुछ सुधार भी आया है।

स्त्री- विमर्श को परिभाषित करते हुए भसीन खान ने कहा है- "An awareness of women's oppression and exploitation in society, at work and within the family and concious action by women and men to change the situation."[११]

डॉ. आदित्य प्रचण्डिया स्त्री- विमर्श पर बात करते हुए कहते है – "स्त्री- विमर्श के सन्दर्भ में समग्रता से विचार करने पर अनेक समस्याएं सामने आती है जैसे- बाल विवाह, विधवा विवाह, अनमेल विवाह, स्त्री शिक्षा, लड़कियों का पालन पोषण, तलाक, संपत्ति में स्त्री का अधिकार, साज-श्रृंगार , साहस पूर्ण कारनामे, स्त्री के विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया, स्त्री पुरुष के बीच मौजूद असमानता, पर्दा प्रथा- वैध-अवैध वैवाहिक रिश्ते, श्लील और अश्लील, परिवार, संयुक्त और एकल, सती प्रथा, बलात्कार, दहेज़, स्त्री स्वास्थ, स्त्री रोजगार, स्त्री आंदोलन, संविधान में स्त्री और उसकी मुक्ति- इन सभी विषयों का स्त्री विमर्श में समावेश है"।[१२]

स्त्री विमर्श स्त्री के खिलाफ समाज में बसी तमाम परतंत्रताओं का विरोध करता है - "स्त्री विमर्श का सम्बन्ध है स्त्री से जुडी समस्याओं पर चिंतन से । नारी- स्वतंत्रता, नारी अस्मिता, नारी- मुक्ति, नारी की सुरक्षा का प्रश्नाना जाने नारी विषयक कितने पहलुँओं को स्त्री विमर्श अपने घेरे में लेता है । स्त्री विमर्श ने नारी समस्या को ऐतिहासिक और सामाजिक

परिप्रेक्ष में उठाया है। उसने समाज -रचना के वर्ग तथा वर्ण की विसंगतियों, शोषक- शाशक एवं पुरुष मात्र के उद्दाम, भोग- विलास, नारियों के संत्रास, अमानवीय शोषण और सभी वर्ण-वर्गों में नारी- पराधीनता का बड़ा तीखा और मार्मिक चित्रण किया है। पुरुषसत्ताक पद्धति पर आधारित, विषमतामूलक वर्णाश्रम धर्म और वंश -शुद्धि पर जोर देनेवाली अन्यायी-अत्याचारी वशिष्ठी परंपरा में स्त्री सवर्था पराधीन विषयवस्तु व् दासी ही रही है। नारी विमर्श स्त्री की इसी हकीकत का जीवंत दस्तावेज है"। [१३]

मैत्रयी पुष्पा के एक साक्षात्कार में स्त्री विमर्श के बारे में उन्होंने बताया था- "आजकल स्त्री विमर्श को लेकर कुछ लोग झुनझुना बजाते हैं तो कुछ लोग स्त्री का मामला बताकर उनके सवालों को टालने की कोशिश करते हैं। आज स्त्री विमर्श की जरूरत है। मुझसे लोग कहते हैं कि तुम्हारे लेखन में वैसा स्त्री विमर्श कहां है जैसा प्रेमचंद के गोदान में धनिया की भूमिका में है। लेकिन मैं इससे सहमत नहीं हूं। मेरी राय में धनिया की भूमिका में स्त्री विमर्श की परतें नहीं खुलती हैं। मै मानती हूं कि गोदान की धनिया बहुत बेबाकी से बोलती है, लड़ती है, लेकिन वह यह सब किसके लिए करती है अपने पति के लिए करती है, बेटे के हक के लिए करती है। अपने लिए या अपनी बेटी सोना की हक के लिए नहीं करती है। धनिया सोना को बिकने देती है। आज अगर कल को लिखी 'गोदान' को लें या 'चित्रलेखा', 'आधा गांव' और 'त्यागपत्र' को लें तो इनमें भी स्त्री-विमर्श नहीं है। स्त्री विमर्श का मतलब है स्त्री स्वय अपने बार में सोचें"। [१४]

२. २ अन्य विमर्श और स्त्री विमर्श

हिन्दी में तीन मूल अस्मिता-विमर्श चलते हैं, दलित, स्त्री और आदिवासी विमर्श, हमारे देश में इस समय ये जो तीन विमर्श चल रहे हैं। इनमें सबसे जो कारगर और प्रभावशाली विमर्श है, वह है दलित विमर्श है।

२. २. १ दलित विमर्श

अगर देखा जाए तो दलित विमर्श स्त्री विमर्श जितना ही चर्चा का विषय है। आज के आधुनिक युग में भी दलित को उसकी जाति की उलाहना देकर नीचा दिखाया जाता है। इसी जाति-व्यवस्था की कोख एवं अस्पृश्यता की वेदना से दलित चेतना की उत्पत्ति हुई है। दलित चेतना सदियों से चलने वाले, अन्याय सहन करने वाले दलित लोगों की अभिव्यक्ति है - "वस्तुतः, दमित, पीड़ित और अत्याचारित समाज अर्थात पिछड़े हुए लोगों पर किया गया सोच-विचार, चिंतन, विवेचन, विश्लेषण, समीक्षण, परिक्षण, निरिक्षण और गहन गंभीर अध्ययन ही मूलतः दलित विमर्श है। [१५]

दलित विमर्श को जानने से पहले दलित शब्द का अर्थ जानना जरुरी है। मानक शब्दकोष के अनुसार दलित वर्ग की परिभाषा इस प्रकार है - दलित वर्ग समाज का वह निम्नतम वर्ग है जो उच्च वर्ग के लोगों के उत्पीड़न के कारण आर्थिक दृष्टी से बहुत हिनावस्था में हो। जैसे दास प्रथा वाले देशों में दास, सामंतशाही व्यवस्था में कृषक या पूंजीपति व्यवस्था में मज़दूर दलित वर्ग में आते है। [१६]

"दलित" यह शब्द साहित्य के साथ जुड़कर उनके साथ हो रही विसंगति, अपमान, शोषित स्थिति और तिरस्कृत जीवन के बारे में सोचने को बाध्य करता है। और उसी साहित्य को हम दलित विमर्श कह सकते है। आज दलित समाज अपने अधिकार के प्रति सचेत है। उसके ऊपर कई सदियों से हो रहे अन्याय का, कुरीतियों का विरोध करने की क्षमता उसमे आ गयी है। औद्योगीकरण, शिक्षा के प्रसार के कारण दलित समाज को स्वयं मुख्यधारा ने लाने का अवसर प्राप्त हुआ है। और इसी बदलते परिवेश के कारण दलित विमर्श इस संकल्पना को बल मिलता चला गया है।

दलितों की स्थिति सुधारने के लिए भारतीय समाज सुधारकों और दलित आंदोलन के प्रवर्तकों ने जातीयता, अस्पृश्यता, शोषण इत्यादि विषयों पर काफी लेखन किया और दलितों को उचित न्याय दिलाने का प्रयत्न साहित्य के माध्यम से किया।

हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं में दलित आलोचना ग्रंथ, दलित शोध ग्रंथ, समीक्षात्मक ग्रंथ भी लिखे गए हैं। यदि देखा जाए तो दलित चेतना को इस जीवंत स्तर तक पहुंचाने के लिये महात्मा ज्योति राव फुले (सन् 1827-1890) एवं सावित्री बाई फुले (1831) जैसे समर्पित दंपत्ति का योगदान विस्मृत नहीं किया जा सकता।

दलित विमर्श सचमुच एक ऐसा विमर्श है, जिसकी एक अपना महत्त्व है। इस विमर्श ने हमारे देश में, समाज में एक ऐसे सवाल को खड़ा किया जिस सवाल को लेकर बड़े-बड़े महात्मा कुछ नहीं कर सके। जाति का सवाल जिसको राम मनोहर लोहिया जी कहते थे, कि कोढ़ है इस समाज का, एक ऐसी निराधार अवधारणा है, जिसका कोई आधार नहीं है, कोई विवेक सम्मत तर्क नहीं है जिसके पीछे एक अहंकारपूर्ण मिथ्या चेतना है, लेकिन उस चेतना से प्रेरित होकर करोड़ों लोग अपना जीवन जीते हैं, उसमें आस्था रखते हुए। और उस आस्था से प्रेरित होकर दूसरों की जान ले लेते हैं, हत्या करते हैं, हिंसा करते हैं। ऐसी निराधार विवेकहीन अहंकारपूर्ण मान्यता पर पहली बार कारगर ढंग से इस देश में सवाल खड़ा किया दलित विमर्श ने, जिसका श्रेय है बाबा साहब डॉक्टर अंबेडकर को और ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई को।

दलित समाज शोषण और उपेक्षा का शिकार रहा है, जिसके अनेक कारणों में मुख्य कारण है उसका अशिक्षित होना। वास्तव में प्राचीन भारतीय इतिहास पलटने पर दलित वर्ग की ऐतिहासिकता पर प्रकाश पड़ता है। प्राचीन भारत की जानकारी सामान्यतया ईस्वी पूर्व 1599 से मिलती है। जैसा कि हम इतिहास से जानते हैं कि वर्तमान भारतीय सभ्यता के

निर्माता वैदिक जन थे, उनका दर्शन ब्राह्मणवाद रहा, इसे हिन्दू दर्शन अथवा भारतीय दर्शन भी कहा जा सकता है। दलित वर्ग सदैव से संघर्षशील समाज का अविभाज्य अंग रहा है। आदिकाल से आज तक दलित दशा पर यदि विचार करें तो, अनेक परिवर्तनों के बावजूद उसका मूल संघर्ष आज भी यथावत है। दलित मसीहा डॉ अंबेडकर ने किसी नेता का वेश धारण नहीं किया, उनका पाखंड में विश्वास नहीं था, लेकिन जननेता के रूप में बाबू जगजीवन राम ने भारतीय राजनीति के शीर्ष पर रह कर दलितों को सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष का एहसास कराया। जगजीवन राम ज्यादा ही विश्वसनीय दलित नेता के रूप में राजनीतिक क्षितिज पर चमके। वह राष्ट्रीय नेता थे। दलित समाज के साथ ही उन्होंने समूची भारतीयता को प्रभावित किया।

दलित विमर्श अब साहित्यिक संदर्भ में भी अपने यौवन पर है। संघर्षशील जीवन में भोगा गया यथार्थ, गरीबी का दंश, तिरस्कार आदि वेदना को अनेक दलित लेखक लेखिकाओं ने अपने आत्मकथा लेखन से उद्घाटित किया है।

२. २. २ आदिवासी विमर्श

स्त्री-वादी साहित्य और दलित साहित्य के बाद आदिवासी चेतना से भरे साहित्य, साहित्य के दुनिया में अपना अस्तित्व दिखा रहे हैं । आज आदिवासी समाज चारो तरफ से चुनौतियों से घिरा है। आदिवासी अपने अस्तित्व, अपनी अस्मिता टिकाये रखने के लिए नक्सलवादी बनने की तरफ चल पड़े है। जब सवाल अस्तित्व का हो अपने धरती से बिछड़ने का हो प्रतिरोध तो स्वाभाविक है। जब- जब आदिवासी जीवन में हस्तक्षेप किया गया, चाहे वो उनकी जमीन छीनने के स्वरुप में हो, जंगल तोड़ने के स्वरुप में हो, आदिवासियों ने उसका प्रतिरोध किया हमारी पिछली दो सदियाँ आदिवासियों के विद्रोह उनके विरोध की गवाह रही है। इन विद्रोहों को रचित रूप में हमारे सामने लाने की कोशिश

हुई है। लेकिन वह राष्ट्रीय रुप में प्रतिष्ठा प्राप्त न कर सकी क्योंकि संचार माध्यमों की अनास्था। चेतन भगत के "Half Girlfriens ", " Two States " जैसे पुस्तकों के प्रसिद्धि के लिए संचार माध्यम जी जान लगाते है। लेकिन आदिवासी जीवन की प्रस्तुति जिस रचना के माध्यम से होती है वह राष्ट्रीय रूप धारण नहीं कर सकती।

आदिवासी साहित्य में स्त्री-वादी साहित्य या दलित साहित्य जैसा आत्मकथात्मक लेखन नहीं नजर आता, क्योंकि आदिवासी समाज आत्म से अधिक समूह में विश्वास करता है। अधिकतर आदिवासी समुदायों में अभी भी निजी जीवन नजर नहीं आता। परंपरा, संस्कृति, इतिहास से लेकर शोषण के खिलाफ किया हुवा प्रतिरोध, अपने अस्तित्व की लड़ाई सब कुछ सामूहिक है।

आजादी से पहले आदिवासियों की मूल समस्याएं थी, वन-सम्पत्ति का भोग लेने से प्रतिबन्ध, तरह तरह के लगान, पुलिस के जुल्म जबकि आज़ादी के बाद सरकार के विकास मॉडल जो चंद पैसेवालों के लिए बने है, उस विकास मॉडल को पूरा करने के लिए आदिवासिन्यो के जल, जंगल और जमीन छीन कर उन्हें बेदखल कर दिया जा रहा है। उनको अपनी मूल जगह से विस्थापित कर दिया जा रहा है।

विस्थापन आदिवासियों के जीवन की मुख्य समस्या बन चुकी है। विस्थापित होने से उनकी सांस्कृतिक पहचान भी छूट रही है। अगर वे अपनी संस्कृति बचाना चाहते है तो उनके अस्तित्व पर संकट खड़ा होता है। अगर अस्तित्व बचाना चाहते हैं तो उनकी सांस्कृतिक पहचान नष्ट होती है । इसलिए आज का आदिवासी विमर्श अस्तित्व और अस्मिता का विमर्श है।

मेरे हिसाब से आदिवासी साहित्य विमर्श बाकी साहित्य उसी तरह से भिन्न है जैसे, शेष समाज से आदिवासी समाज। हम सब गैर आदिवासी, आदिवासी साहित्य को अपने

मानकों से परखते है, जो की गैर है। मेरा तो यहाँ मानना है कि गैर आदिवासी रचनाकारों ने आदिवासी जीवन पर कही सुनी बातों के आधार पर किया गया लेखन एक रीसर्च हो सकता है, लेकिन आदिवासी साहित्य नहीं। एक आदिवासी ही अपने पीड़ा को साहित्य के माध्यम से सही ढंग से बयान कर सकता है।

आदिवासी विमर्श को लिखते समय एक ऐसी घटना का कथन करना अत्यावश्यक है , जो शायद किसी ने सुनी हो। "सोनी सोरी " यह नाम शायद किसी ने सुना हो। सोनी आदिवासी इलाकों में शिक्षिका थी। वह आदिवासी यों के लिए उनके साथ अपने अस्तित्व की लड़ाई लढ रही थी, अपनी जंगल संपत्ति को ठेकेदारों से बचने के लिए, वन्य सम्पदा, जल बचाने के लिए, आदिवासी जमीन पर सरकारी कब्ज़ा होने से मना करने के लिए, अपने आदिवासी भाई बहनों के साथ। बस इसी कारण के लिए पुलिस ने उसके ऊपर झूठा आरोप लगाया की उसके नक्सलवादियों साथ ताल्लुक है। उसे बंदी बनाया गया। उसके साथ घिनौने अत्याचार हुए। यह घटना क्या दर्शाती है ? देश को आज़ादी प्राप्त हुए ६५ साल हो गए लेकिन आज भी आदिवासी लोगों पर अत्त्याचार हो रहे है। आदिवासी लोग समाज के मुख्य प्रवाह से दूर है।

लेकिन आज के समय में शिक्षा की बजह से आदिवासियों की नयी पीढ़ी जागरूक बनती जा रही है । अपने शोषणका विरोध उनके साहित्य में नजर आता है - "वस्तुतः आदिवासी समाज के बारे में किया गया जहां विचार-चिंतन ही आदिवासी विमर्श है। यह वह विमर्श है, जिसमे आदिम जान जातियों के जीवन व्यवहार पर गंभीरता से सोच विचार करता है। आदिवासियों की जीवन-प्रणाली सामाजिक स्थिति और प्रश्न पीड़ित जिंदगी का विवेचन- विश्लेषण कर उसकी और हमारे सभ्य समाज का ध्यान आकर्षित करना तथा उसके विकास की पहल करना आदिवासी विमर्श का प्रधान प्रयोजन है। [१७]

२. ३ . समकालीन महिला लेखन में स्त्री विमर्श

दरअसल देखा जाए तो साहित्य में स्त्री विमर्श के अंतर्गत लिखा गया साहित्य और स्त्री के विषय में लिखा गया साहित्य "साहित्यिक स्त्री विमर्श" माना जाता है । स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में यह विवाद का विषय रहा है, कि यह स्त्री के लिए सुरक्षित क्षेत्र है, या लेखक होने के नाते पुरुष की भागीदारी भी उसमे है। सत्य यही है को पुरुष के लिए नारीत्व अनुमान है और नारी के लिए अनुभव। इसीलिए स्त्री अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र हमें दे सकती है, वैसा पुरुष बहुत कोशिश के बाद ही शायद दे सके। स्त्री होने के नाते स्त्री ही स्व अनुभव पर आधारित प्रामाणिक व् विश्वसनीय साहित्य की रचना कर सकती है। पुरुष लेखक संवेदना के स्तर पर, समानुभूति के आधार पर स्त्री पीड़ा को व्यक्त करने में सक्षम रहे तो है, लेकिन स्त्री पीड़ा का यथार्थ चित्रण उतनी स्पष्टता से नहीं कर सके। महादेवी वर्मा के शब्दों में – "पुरुष के द्वारा नारी का चरित्र अधिक आकर्षक बन सकता है परन्तु अधिक सत्य नहीं, विकृति के निकट पहुंच सकता है परन्तु यथार्थ के अधिक समीप नहीं, पुरुष के लिए नारीत्व कल्पना है। परन्तु नारी के लिए अनुभव। अपने जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमें दे सकेगी वैसा पुरुष बहुत साधना के उपरांत भी शायद ही दे सके"। [१८]

समकालीनता का अर्थ मेरे विचार में स्वतंत्रता के बाद का जो काल है, इसी काल को समकालीन काल माना जा सकता है। क्योंकि अगर सामान्य रुप से देखा जाए तो वर्तमान समय में होनेवाली घटनाएँ तथा स्थितियाँ समकालीन कही जा सकती है, लेकिन समकालीन स्थितियों और समस्याओं का चित्रण ऐतिहासिक परप्रेक्ष के आधार पर उनका मूल स्त्रोत संके आधार पर किया जाये तो वह तात्कालिक बन जाती है -"समकालीन महिला लेखन के बारे में देखा जाए तो एक बात स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है की वर्तमान महिला लेखन अपने आस-पास के परिवेश के प्रति जागरूक होता हुआ लेखन है। वर्तमान महिला लेखन न केवल

वर्तमान परिस्थितियाँ, समस्यावों तथा परिवेश के महत्वपूर्ण बिन्दुओ को उसकी ऐतिहासिकता में परखने का प्रयत्न कर रहा है। अपितु बदलते परिदृश्य में स्वयं को व्यवस्थित करके इस बदलाव के भीतर जटिलता की पड़ताल करने की दशा की ओर भी अग्रसर है"। [१९]

हिंदी कथा साहित्य में स्त्री समस्याओं को केंद्र में रखकर भारतेंदु युग से अनेक उपन्यास तथा कहानियों का लेखन हुआ हैं। १९६० के पश्चात् कथा साहित्य में प्रगति हुई। समकालीन हिंदी कथा साहित्य में अनेक लेखिकाओं ने स्त्री के प्रति समाज का दृष्टिकोण बदलने का प्रयास किया हैं। अनेक लेखिकाओं ने अपने वैयक्तिक अनुभवों को साहित्य के माध्यम से सामाजिक भूमि पर लाकर खड़ा किया हैं। इनमें मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया, मृणाल पांडे, आदि नाम प्रमुख हैं। जीवन की हर परिस्थिति से गुजरने के बाद उन परिस्थितियों से मिले अनुभवों को स्मृति में संजोकर उन्हें अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त करने में ये लेखिकाएं बहुत हद तक सफल हुई हैं। सामाजिक विसंगतियों, कुरीतियों और आधुनिकता के मोहपाश में पड़े मानव की रुग्ण मानसिकताओं का जीवंत चित्रण इनके साहित्य में मिलता हैं, तथा वर्तमान युग में पनपी नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की गिरावट के चित्रण से प्रचलित व्यवस्था का उजागरण करने में भी यह लेखिकाएँ प्रयत्नशील हैं।

समकालीन साहित्य लेखन में समाज की बदलती परिस्थिति के अनुरूप ही परिवर्तन होता चला गया है । जागतिकीकरण तथा आधुनिकता के चलते आज का परिवेश बहुत ही जटिल बन चुका है । इस बदलते परिवेश का महिला लेखन पर भी पर्याप्त प्रभाव पडा है । साठवे दशक के बाद कई स्त्री लेखिकाओं द्वारा स्त्री जीवन की सच्चाई को उभारने की कोशिश की जा रही है। इन लेखिकाओं का मकसद सिर्फ हंगामा खड़ा करना नहीं है, स्त्री को समाज में उसकी जगह प्रदान करना तथा पुरुष के समकक्ष अधिकार दिलाना है। इन महिला

लेखिकाओं ने नारी को विषय- केंद्र में रखकर उसके स्वरुप, उसकी समस्याओं का चित्रण किया है। उन्होंने नारी के अकेलेपन, उसकी आतंरिक पीड़ा उसके मन की अतृप्ति और उस अतृप्ति से उत्पन्न कुंठाओं का सफलता के साथ विश्लेषण किया है। इसी कारण से महिला लेखिकाओं के द्वारा किया हुआ नारी चित्रण भाव-भूमि पर खरा उतरता है।

स्वातंत्र्योत्तर महिला लेखन में शिवानी, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, प्रभा खेतान, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मैत्रयी पुष्पा, मेहरुनिस्सा परवेज, सुनीता जैन रजनी पानीकर जैसे लेखिकाओं ने समकालीन यथार्थ से रु-ब-रु- हो रही विचारोत्तेजक और प्रयोगधर्मी रचनाये की है- "इलेक्ट्रॉनिक मिडिया के इस युग में टी वी सीरियल्स की चुनौतियों का सामना करते हुए भी महिला उपन्यासकारों के उपन्यास अपनी अद्वितीय पठनीयता के कारण पाठकीय संचेतना को चुम्बकीय शक्ति -सा आकर्षित कर रहे है। तर्क और तथ्य के आधार पर यह साहित्य पुरुष और स्त्री के समान प्रतिभागिता के लिए है"। [20] ऐसे ही कुछ समकालीन महिला लेखिकाओं तथा उनके साहित्य पर प्रकाश डालना उचित रहेगा

शिवानी

शिवानी इनका वास्तविक नाम गौरा पन्त था किन्तु ये शिवानी नाम से लेखन करती थीं। इनका जन्म १७ अक्टूबर १९२३ को गुजरात मे हुआ था। इनकी शिक्षा शन्तिनिकेतन में हुई! साठ और सत्तर के दशक में, इनकी लिखी कहानियां और उपन्यास हिन्दी पाठकों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हुए शिवानी का निधन 2003 ई० मे हुआ। उनकी लिखी कृतियों मे कृष्णकली, भैरवी, मायापुरी, विषकन्या, चौदह फेरे, एक थी रामराठी, यात्रिक आदि उनके प्रमुख उपन्यास है।

कहानी को केंद्रीय विधा के रूप में विकसित करने का श्रेय शिवानी को जाता है। वह कुछ इस तरह लिखती थीं कि लोगों की उसे पढने को लेकर जिज्ञासा पैदा होती थी। उनकी

कृतियों से यह झलकता है कि उन्होंने अपने समय के यथार्थ को बदलने की कोशिश नहीं की। शिवानी की कृतियों में चरित्र चित्रण में एक तरह का आवेग दिखाई देता है। शिवानी की क़रीबी रहीं वरिष्ठ साहित्यकार पद्मा सचदेव के अनुसार "जब शिवानी का उपन्यास 'कृष्णकली' धर्मयुग में प्रकाशित हो रहा था तो हर जगह इसकी चर्चा होती थी। मैंने उनके जैसी भाषा शैली और किसी की लेखनी में नहीं देखी। उनके उपन्यास ऐसे हैं जिन्हें पढकर यह एहसास होता था कि वे खत्म ही न हों। उपन्यास का कोई भी अंश उसकी कहानी में पूरी तरह डुबो देता था। उन्होंने कहा, शिवानी भारतवर्ष के हिंदी साहित्य के इतिहास का बहुत प्यारा पन्ना थीं। अपने समकालीन साहित्यकारों की तुलना में वह काफ़ी सहज और सादगी से भरी थीं। उनका साहित्य के क्षेत्र में योगदान बड़ा है पर फिर भी हिंदी जगत ने उन्हें पूरा सम्मान नहीं दिया जिसकी वह हकदार रहीं"। (21)

शिवानी की वर्णन क्षमता अद्वितीय थी । उनके उपन्यास तथा कहानियों की भाषा लालित्यमय होने की वजह से पाठक को आकर्षित करती थी । शिवानी का साहित्य में स्त्री जीवन के विविध पहलू नजर आते है । समाज में रहनेवाली वेश्या वृत्ति, कुंठाग्रस्त जीवन का चित्रण उनके साहित्य में मिलता है ।

मन्नू भंडारी

मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल १९३१ को हुआ। मध्यप्रदेश के भानपुरा गाँव में जन्मी मन्नू का बचपन का नाम महेंद्र कुमारी था। लेखन के लिए उन्होंने मन्नू नाम का चुनाव किया। उन्होंने एम ए तक शिक्षा पाई और वर्षों तक दिल्ली के मीरांडा हाउस में अध्यापिका रहीं। मन्नू भंडारी ने कहानियां और उपन्यास दोनों लिखे हैं। `एक प्लेट सैलाब' `मैं हार गई' `तीन निगाहों की एक तस्वीर', `यही सच है' `त्रिशंकु' और `आंखों देखा झूठ' उनके महत्त्वपूर्ण कहानी संग्रह हैं। लेखक राजेंद्र यादव के साथ लिखा गया उनका उपन्यास `एक इंच मुस्कान' पढ़े लिखे

आधुनिक लोगों की एक दुखांत प्रेमकथा है उन्होंने `बिना दीवारों का घर' शीर्षक से एक नाटक भी लिखा है। मन्नू भंडारी हिन्दी की लोकप्रिय कथाकारों में से हैं। नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार के बीच आम आदमी की पीड़ा और दर्द की गहराई को उद्घाटित करने वाले उनके उपन्यास `महाभोज' (१९७९) पर आधारित नाटक अत्यधिक लोकप्रिय हुआ था। इसी प्रकार 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' नामक फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हुई थी और उसको १९७४ की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

मन्नू भंडारी की कहानियां पाठकों से अपनापन बनाती नजर आती हैं। दरअसल ये पात्रों के क्रियाकलापों और उनके अंदरूनी हालात को इस तरह कागज पर उकेर देती हैं कि लगता है कि हम खुद घटनास्थल पर मौजूद हैं। मन्नू मंझी हुई कहानीकार हैं इसलिए उनकी कहानियों की भाषा एकदम सरल, सहज और सामयिक है। कहानियां पढ़ने वालों को न सिर्फ बांधकर रखती हैं बल्कि दिलोदिमाग पर भी छा जाती हैं। पात्र हमारे आसपास के ही मालूम पड़ते हैं। किताब में शामिल अकेली, मजबूरी, कील और कसक ही नहीं, बाकी कहानियां भी ऐसी हैं जिन्हें बार-बार पढ़ने का मन करेगा।

'आपका बंटी' मन्नू भंडारी के उन बेजोड़ उपन्यासों में है जिनके बिना न बीसवीं शताब्दी के हिन्दी उपन्यास की बात की सकती है, न स्त्री-विमर्श को सही धरातल पर समझा जा सकता है। लगभग चालीस वर्ष पहले लिखा गया यह उपन्यास हिन्दी के लोकप्रिय पुस्तकों की पहली पंक्ति में है। बच्चे की निगाहों और घायल होती संवेदना की निगाहों से देखी गई परिवार की यह दुनिया एक भयावह दुःस्वप्न बन जाती है। कहना मुश्किल है कि यह कहानी बालक बंटी की है, या माँ शकुन की। सभी तो एक-दूसरे में ऐसे उलझे हैं, कि त्रासदी सभी की यातना बन जाती है। शकुन के जीवन का सत्य है कि स्त्री की जायज महत्वाकांक्षा और आत्मनिर्भरता पुरुष के लिए चुनौती है नतीजे में दाम्पत्य तनाव से उसे अलगाव तक ला

छोड़ता है। यह शकुन का नहीं, समाज में निरन्तर अपनी जगह बनाती, फैलाती और अपना कद बढ़ाती 'नई स्त्री' का सत्य है। मन्नू भंडारी ने बच्चे की चेतना में बड़ों के इस संसार का बड़ा कुशल वर्णन किया है। मन्नू भंडारी के कहानियों में कथ्य के दो प्रमुख बिंदु है। - " प्रथम नारी मन की पूर्ण अभिव्यक्ति तथा बिना किसी दुराव -छिपाव के हृदय गत भावों को बेबाक प्रस्तुत करना और दूसरा आधुनिकता और पुरातनता के भँवर में फँसी हुई नारी जो घर और बाहर से बुरी तरह टूटती हुई विवशता की जिंदगी जीती है। दोनों ही धरातलों पर उन्होंने हिंदी कहानी को एक नई पहल दी है"। [२२]

उषा प्रियंवदा

उषा प्रियंवदा का जन्म २४ दिसंबर १९३० को कानपुर में हुआ। उषा जी ने उच्च शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हासिल की। अंग्रेजी की अध्येता होकर भी उषा जी की लेखनी से हिंदी साहित्य हमेशा समृद्ध होता रहा। उषा प्रियंवदा की गणना उन कथाकारों में होती है, जिन्होंने आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की स्थिति को पहचाना और व्यक्त किया है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में एक ओर आधुनिकता का प्रबल स्वर मिलता है तो दूसरी ओर उसमें विचित्र प्रसंगों तथा संवेदनाओं के साथ हर वर्ग का पाठक तादात्म्य का अनुभव करता है।

१९५० के आस-पास आधुनिक भावबोध से युक्त, अपने युग की प्रामाणिक अभिव्यक्ति करनेवाली, गंभीर एवं अर्थपूर्ण कहानियाँ लेकर उषा प्रियंवदा का नई कहानी के क्षेत्र में आगमन हुआ। पाश्चात्य आधुनिकतावादी दर्शन के प्रभाव से भारतीय महानगरीय जीवन में व्युत्पन्न आधुनिक प्रभाव और तत्कालीन युगबोध को उषा जी ने अपनी कहानियों का केन्द्र बिंदु बनाया।

उनकी 'मोहबंध' का पात्र अचला, आधुनिक नगरीय परिवेश में जीवन व्यतित कर रहे देवेन्द्र और नीलु जैसे चरित्रों से मिली निराशा के परिणाम स्वरूप उत्पन्न घुटन और कुंठा की शिकार है जो शादी कर लेने के बाद भी, अकेलेपन और अजनबीपन की समस्याग्रस्त जिंदगी जी रही है। नगरीय समाज में संबंधों की औपचारिकता के परिणाम स्वरूप उत्पन्न उदासी और अकेलापन का यथार्थ चित्रण 'छुट्टि का एक दिन' की माया के माध्यम से उषा जी ने किया है। 'चाँद चलता रहा' की रोहिणी जीवन का अधिकांश समय महफिलों-पार्टियों में बीताने के बाद भी अपने जीवन में मरुस्थल-सा खालीपन महसूस करती है।

उषा जी की कहानी "वापसी" बड़ी चर्चित रही है। इस कहानी के लिए उन्हें सन १९६९ का सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार मिला था। इस कहानी में जिंदगी भर परिवार से दूर रहकर परिवार का निर्वाह करने के लिए रेल्वे की नौकरी करनेवाले गजाधर बाबू निवृत्त होकर वापस घर लौटते हैं, स्वयं को अपने ही घर में अकेला और अव्यवस्थित पाते है। शहर में पढ़ी-लिखी उनकी संताने इस सीमा तक स्वतंत्र हो गई है कि अपनी पूर्व पीढ़ी को अवज्ञा और उपेक्षा के भाव से देखती हैं और अंततः गजाधर बाबू वापस दूसरी नौकरी करने केलिए खुदके घर को छोड़ते है। यह समस्या केवल गजाधर बाबू की ही नहीं है किंतु आधुनिक महानगरों में जी रहे प्रायः अधिकांश परिवारों की समस्या है।

उषा प्रियंवदा की कहानियों के नारी पात्र सवेदनशील तो है लेकिन जीवन के यथार्थ को स्वीकार करनेवाले भी है। व्यक्तिस्वातंत्र्य की आस रखने वाले इनके कहानी तथा उपन्यासों के स्त्री पात्र स्वतंत्र ओर स्वेच्छापूर्ण जीव जीने की लालसा रखते हैं। विषवस्तु के प्रति तटस्थता उनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है।

कृष्णा सोबती

कृष्णा सोबती का जन्म: १८ फरवरी १९२५ गुजरात में हुआ। साठवें दशक के बाद में महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में से इनकी रचनाएँ विवादस्पद रही है। इनकी कहानियों को लेकर काफ़ी विवाद हुआ। विवाद का कारण इनकी मांसलता है। स्त्री होकर ऐसा साहसी लेखन करना सभी लेखिकाओं के लिए सम्भव नहीं है। 'बादलों के घेरे', 'डार से बिछुड़ी', 'तीन पहाड़' एवं 'मित्रो मरजानी' कहानी संग्रहों में कृष्णा सोबती ने नारी को इतने बोल्ड तरीके से सामने लाया है की साधारण पाठक हतप्रभ तक हो सकता है। कृष्णा सोबती ने 'यारों के यार', तीन पहाड़, 'बादलों के घेरे' इन कहानी संग्रहों के माध्यम से नारी जीवन में यौन प्रश्नों को लेकर, आधुनिक भारतीय पितृसत्तात्मक पारिवारिक सामाजिक संरचना पर करारा प्रहार किया है। कृष्णा सोबती अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं उन्होंने हिंदी की कथा भाषा को विलक्षण ताज़गी दी है।

उनकी "मित्रो मरजानी" की मित्रो एक विवादस्पद नारी चरित्र है। इसे आदर्श का मोह नहीं है, न समाज का भय, न ईश्वर का। इसके लिए किसी विशेषण की आवश्यकता नहीं है। यह मात्र मॉस -मज्जा से बनी एक नारी है। जिसमें स्नेह भी है, ममता भी, माँ बनाने की हौस भी, और एक अविरल बहती वासना सरिता भी"। (22)

प्रभा खेतान

प्रभा खेतान ने कोलकता विश्वविद्यालय से ज्यां पॉल सार्त्र के अस्तित्त्ववाद पर पीएचडी की थी। उन्होंने अपने साहित्य में स्त्री की व्यथा और संघर्ष को भिन्न रूप से प्रस्तुत कर अपनी गहरी चिंतनशीलता एवं संवेदनशीलता का परिचय दिया था। उनके कविता संग्रह- 'अपरिचित उजाले', 'सीढ़ीयां चढ़ती मैं', 'एक और आकाश की खोज में', 'हुस्नोबानो' और

उपन्यास 'आओ पेपे घर चले', 'तालाबंदी', 'अग्निसंभवा', 'एडस', 'छिन्नमस्ता', 'अपने -अपने चहरे', 'पीली आंधी' और 'स्त्री पक्ष' साहित्यिक क्षेत्र में प्रशंसित रहे।

फ्रांसीसी रचनाकार सिमोन द बोआर की पुस्तक 'दि सेकेंड सेक्स' के अनुवाद 'स्त्री उपेक्षिता' ने उन्हें काफी चर्चित किया। प्रभा खेतान के व्यक्तित्व के अनेक आयाम न केवल नारी विमर्श को एक क्रन्तिकारी संज्ञा देते है अपितु आम स्त्री को भी स्वयं सिद्ध बनाने की प्रेरणा देते है इसके अतिरिक्त उनकी कई रचनाओं ने उनकी नारीवादी छवि को स्थापित किया। अपने जीवन के अनछुए पहलुओं को उजागर करनेवाली आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' लिखकर सौम्य और शालीन प्रभा खेतान ने साहित्य जगत को चौंका दिया था।

डॉ॰ प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री यंत्रणा को आसानी से देखा जा सकता है। स्त्री और पुरुष के बीच चलनेवाले भावनात्मक संघर्ष का अत्यंत प्रभावशाली उनके कहानियों में देखा सकता है । उनके उपन्यास तथा कहानियों के लगभग सभी पात्र जीवन के यथार्थ धरातल से जुड़े होने के कारण सजीव लगते है । शशिकला त्रिपाठी के शब्दों में कहा जा सकता है - "प्रभा जी मुक्तबोध की तरह पहले जीवन में सत्य का साक्षात्कार करती है, बाद में साहित्य में । शायद यही वजह है कि उनकी रचना आत्मसाक्षात्कार की एक प्रक्रिया होती है । [२३]

डॉ॰ प्रभा खेतान को जहाँ स्त्रीवादी चिन्तक होने का गौरव प्राप्त हुआ वहीं वे स्त्री चेतना के कार्यों में सक्रिय रूप से भी हिस्सा लेती रहीं। उन्हें 'प्रतिभाशाली महिला पुरस्कार' और टॉप पर्सनैलिटी अवार्ड' भी प्रदान किया गया था। "प्रभा खेतान का साहित्य नारी की व्यापकता को तो इंगित करता है, साथ ही उसको नविन दृष्टिकोण भी प्रदान करता है। आज की नारी बाजार के बीच में है, मगर वह बाजार के विरुद्ध भी खड़ी है। समय की नजाकत को देखते हुए हम बाजार से नहीं भाग सकते, मगर अपने आप को वस्तु भी न बनाने दे। [२४]

मृदुला गर्ग

मृदुला गर्ग का जन्म जन्म २५ अक्टूबर, १९३८ में कोलकता में हुआ, उनके उपन्यासों को अपने कथानक की विविधता और नयेपन के कारण समालोचकों की बड़ी स्वीकृति और सराहना मिली। उनका उपन्यास 'चितकोबरा' नारी-पुरुष के संबंधों में शरीर को मन के समांतर खड़ा करने और इस पर एक नारीवाद या पुरुष-प्रधानता विरोधी दृष्टिकोण रखने के लिए काफी चर्चित और विवादास्पद रहा था।

उसके हिस्से की धूप, वंशज, चित्तकोबरा, अनित्य, मैं और मैं तथा कठगुलाब उनके प्रमुख उपन्यास है। उनके आज तक कुल ग्यारह कहानी संग्रह चार नाटक एक और अजनबी, जादू का कालीन, तीन कैदें और सामदाम दंड भेद, दो निबंध संग्रह, एक यात्रा संस्मरण एक व्यंग्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं - "उनकी रचनाओं की विशेषता यह है की नारी के प्रेम और वासनात्मक जीवन पर उन्होंने अपना एक विशेष दृष्टिकोण अभिव्यक्त किया है। अब तक की नारी पूर्व की नारी की उपेक्षा प्रेम सम्बन्धो और दाम्पत्य सम्बन्धो को साहस से विश्लेषित करती है। उनके उपन्यास योन-संबंधों को लेकर चलते है"। [२५]

मुर्दुला गर्ग के साहित्य में आज के टूटते परिवेश में स्त्री जीवन की परिवर्तनशीलता और जीवन दृष्टि की अभिव्यक्ति नजर आती है। उनकी कहानियों में स्त्री की दयनीय स्थिति, शोषण, कामेच्छा, परपुरुष संबंध का चित्रण नजर आता है। उनकी कहानियाँ जादातर सेक्स को महत्त्व देनेवाली और पारिवारिक संबंधों के बदलाव को उजागर करनेवाली कहानियाँ है। उनकी रचनाओं की विशेषता यह भी है, कि स्त्री के प्रेम और वासनात्मक जीवन पर उन्होंने अपना एक विशेष दृष्टिकोण अभिव्यक्त किया है।

मैत्रयी पुष्पा

मैत्रयी पुष्पा एक ब्राह्मण परिवार में अलीगढ जिले के सिकुर्रा गाँव में जन्मी। उन्होंने बुंदेलखंड कॉलेज, झांसी से हिंदी साहित्य में एम. ए. किया था। मैत्रयी पुष्पा का लेखन स्त्री विमर्श को नयी पहचान देनेवाला लेखन माना जाता है। उनके लेखन द्वारा स्त्री चरित्र की विभिन्न पर्ते पाठकों के सामने उद्घाटित होती है। उनके 'चितकोबरा' से लेकर 'अल्मा कबूतरी' तक के लग भग सभी उपन्यास स्त्री जीवन से जुडी समस्याओं से व्याप्त हैं।

उनके उपन्यास स्मृति दंश, चाक, मैत्रेयी, अल्मा कबूतरी, कहैं ईसुरी फाग, बेतवा बहती रही, चिन्हार, इदन्नमम, गुनाह बेगुनाह, झुला नट इन उप्नायासों में नारी विद्रोह और स्वाभिमान दिखाई देता है। तथा उनके कहानी संग्रह में चिन्हार, ललनमियाँ तथा अन्य कहानियां, फैसला, सिस्टर, सेंध, अब फूल नहीं खिलते, बोझ आदि प्रसिद्ध है।

मैत्रयी पुष्पा ने अपना कथा साहित्य अधिकांश स्त्री को केंद्र में रखकर किया है। स्त्री के समस्याओं का उहापोह उनके कथा साहित्य में मिलता है। मैत्रेयी पुष्पा के नारी पात्र नरिगत कोमलता, लज्जा आदि दुर्बल गुणों का त्याग कर सामने आते हुए नजर आते हैं। उनके कथासाहित्य में अधिकांश नारि पात्र हर क्षेत्र में अग्रिम पंक्ति में दिखाई देते है -"मैत्रेयि पुष्पा के उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश और प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद नारी की महत्वपूर्ण और गरिमामय भूमिका की प्रतिष्ठापना दिखाई देती है। 'बेतवा बहती रही' की उर्वशी, 'इदन्नमम' की मंदा, 'चाक' की सारंग, 'झुलानट' की शीलो, 'अल्माकबूतरी' की अल्मा, 'अगनपाखी' की न्हुवनमोहिनी, 'विजय' की डॉ. नेहा तथा 'कस्तूरी कुण्डल बसै' की कस्तूरी और पुष्पा, समस्त नारी पात्र अपनी अदम्य जिजीविषा, साहस, धैर्य, आत्मविश्वास आदि गुणों के बल पर समाज की कुरीतियों, परम्पराओं, रूढ़ियों तथा समाज के तथाकथित ठेकेदारों से लोहा लेती दिखलायी देती है"। [२६]

मेहरुनिस्सा परवेज,

मेहरुनिस्सा परवेज़ का जन्म १० सितम्बर १९४४ में हुआ। माता- पिता के वैचारिक भिन्नता के कारण उनका बचपन दुःखद और बेचारगी भरा रहा था । पिता के प्रशासनिक विभाग में होने के कारण उन्हें कई शहरों में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। उनकी शिक्षा हिंदी और मराठी माध्यमों से हुई। चौथी कक्षा के बाद उनका परिवार बस्तर आकर बसा। उनका बचपन बस्तर के आदिवासियों के बीच गुजरा इसलिए वह के जीवनशैली, समस्याओं और रीतिरिवाजों को उन्होंने अपने साहित्य में उजागर किया है।

साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में मुस्लिम मध्यवर्गीय चेतना की कथा लेखिका मेहरुनिसा परवेज़ का नाम अग्रगण्य है। उनके कथासाहित्य में यथार्थवादी चेतना अभिव्यक्त होती है। वह साहित्य के विभिन्न विधाओं में नज़र आती है।

मेहरुनिसा जी का लेखन जीवन की समग्रता को प्रस्तुतु करता है। उनके लेखन में मध्यमवर्गीय मुस्लिम परिवार की समस्याएँ, शोषित एवं पीड़ित नारी की दुर्दशा, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याएं इत्यादि विषय समग्रता से प्रस्तुत होते हुए नजर आते हैं ।

उनके 'आखों की दहलीज' 'उसका घर' ' करोजा' 'अकेला पलाश' आदि प्रमुख उपन्यास हैं तथा 'आदम और हव्वा', 'गलत पुरुष' 'टहनियों पर धुप', 'फाल्गुनी', 'अंतिम चढ़ाई' और 'सोने के बेसर आदि प्रमुख कहानी संग्रह है । मेहरुनिस्सा परिवेज की कहानियों में मुस्लिम समाज में नारी की दशा, उसका उत्पीडन और आधुनिक युग में उसके बदलते रूप को दर्शाया गया है । मुस्लिमों के जीवन को नए स्वरुप में पाठकों के सामने रखनेवाली लेखिकाओं में वह अग्रणी मानी जाती हैं ।

उन्होंने सिर्फ मुस्लिम समाज को ही नहीं दुसरे समाज की स्त्री जीवन को भी चित्रित किया है । उनके 'उसका घर' उपन्यास में इसाई समाज की विसंगतियों को उकेरा गया है ।

खासकर उन्होंने अपने साहित्य में स्त्री के बदलते रूप और भोगे हुए जीवन की दयनीय दशा पर जोर दिया है।

सुनीता जैन

सुनीता जैन आधुनिक कहानीकार और उपन्यासकार हैं। सुनीता जैन ने 'स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयार्क' से एम. ए. किया था। इसके बाद उन्होंने 'यूनिवर्सिटी ऑफ़ नेब्रास्का' से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा और साहित्य का 'पद्मश्री' उनको प्राप्त है। सुनीता जैन के अब तक २० कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनके पांच उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। इन उपन्यासों के साथ साथ उनके चार कहानी संग्रह भी प्रदर्शित हो चुके हैं। उन्होंने कई पुस्तकों का अनुवाद भी किया है, जिनमें मन्नू भंडारी का उपन्यास 'आपका बंटी' का अनुवाद शामिल है।

उनकी कहानियों में परम्परा और आधुनिकता के बीच गुजरती स्त्री की मनस्थिति को दर्शाती है, उनकी कहानियों में सामाजिक कुरीतियों को विरोध नजर आता है।उनकी उपन्यासों की नायिकाएँ रुढ़ीग्रस्त समाज की दुर्भेद्य दीवार को टकराती नजर आती हैं।

"समकालीन महिला कथा लेखिकाओं द्वारा जड़ हो गई परम्पराओं, कुरितियों इत्यादि के प्रति न केवल विरोध जताया गया है अपितु उन्हें चुनौती भी दी गयी है। नारी ने समझ लिया है की वह न पैर की जूती है और न दासी। पुरुष और स्त्री के बाघ-बकरी वाले सम्बन्धो को उन्होंने चुनौती दी है। पत्नी की अग्निपरीक्षा लेने और गृह निष्कासन के जन्मसिद्ध पुरुषीय एकाधिकार अब चरमरा उठे हैं। वह दासी की तरह, गुलाम बनकर रहते रहते बेजार हो गयी है। मनुष्य के रूप में जीना कैसा होता है, मनुष्य होने के नाते जानना चाहती है। समकालीन महिला लेखन तथाकथित संकीर्ण नैतिकता तथा अनैतिकता के काले-सफेद बाहर निकलकर नितांत मानवीय आधार पर अपनी अस्मिता को तलाशने से जुड़ा लेखन है।" [२७] इस तरह के

लेखन की एक मुख्य सूत्रधार में मधु कांकरिया का स्थान अनन्य साधारण है जिन्होंने स्त्री के मन को बहुत ही गहराई से टटोला है। उनके कथा साहित्य में स्त्री के विविध गुण, व्यंग बोध, प्रेम एवं यौन दृष्टिकोण आदि चेतनाओं पर विषय वस्तु की दृष्टि से विमर्शात्मक रूप से प्रकाश डाला हुआ नजर आता है।

२ .३.१ -प्रमुख लेखिकाओं का स्त्री- विमर्श परक चिंतन

प्रमुख स्त्री लेखिकाओं का स्त्री विमर्श के बारे में अपना एक अलग मत है। मैत्रयी पुष्पा, मृणाल पांडे, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा तथा अनामिका की स्त्री विमर्श विषयक अवधारणाओं को स्त्री विमर्श का अर्थ समझने हेतु नीचें प्रस्तुत किया है।

मैत्रयी पुष्पा स्त्री- विमर्श के बारे में कहती है- "विमर्श शब्द क्या है, ये मैं नहीं जानती। स्त्री - विमर्श की हम बात करते है तो अनुभव और अनुमान का फर्क है। लिखते तो पुरुष भी आयें है, लेकिन स्त्री तो अपने अनुभव लिखती हैं, कि हम अपना जीवन ऐसा बनाना चाहते है, हमारी इच्छा यह है। आपने हमारी इच्छा कभी नहीं पूछी। नहीं पूछी तो हम कब तक चुप रहेंगे ? अब हम आपको अपनी इच्छा बताते हैं; जिस तरह पुरुष की नैसर्गिक इच्छाए हैं, वो हम स्त्रियों की भी होती है, जो समाज ने एकदम निष्क्रिय कर राखी हैं। समाज को निष्क्रिय स्त्री ही अच्छी लगती है; जब नारी आगे आती है तो कुलटा, उच्छुंखल हो जाती है। समाज में अच्छी औरत वही है जो अपने काँ बंद रखे, आँखों पर पर्दा डाले। जुबान बंद रखे, ऐसी औरत हमें नहीं बनना है। [२८]

मृणाल पांडे स्त्री विमर्श के बारे में कहती है - नारी स्वतंत्रता के समर्थकों की इच्छा यही है कि स्त्री के अस्तित्व को उसके पुरुष से जुडे संबंधों तक सीमित करके न देखा जाए और जन्मजात उसे अनुचरी नहीं सच्चे अर्थों में सहचरी के रूप में प्रेरित, परिभाषित और प्रोत्साहित किया जाए। [२९]

प्रभा खेतान स्त्री के विकास के लिए उसकी स्वतंत्रता पर जोर देती हैं। वह मानती है, कि हर एक स्त्री को अपनी इच्छाओं, आकाँक्षाओं की पूर्ति करने का पूर्ण रूप से अधिकार है। वह मानती है कि स्त्री अस्मिता बचाएं रखनी है तो समाज में स्थापित सामाजिक, सांस्कृतिक स्त्री विरोधी परम्पराओं का विरोध होना चाहिए। इसी बात पर टिपण्णी करते हुए वह कहती है - " परम्पराएं, स्त्री को घर सौपंती है, बच्चो का भरण- पोषण सौंपती है, मानवता के नाम पर वृद्ध और बीमारों के लिए उससे नि;शुल्क सेवा लेती है, और बदले में उसके द्वारा की गईं सेवाओं का महिमा- मंडनकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेती है। स्त्री- भूखी है या मर रही है इसकी चिंता किसी को नहीं होती। [३०]

अनामिका स्त्री के विकास के लिए उसका आर्थिक रूप से स्वावलंबित होना जरुरी मानती हैं। स्त्री विमर्श के सन्दर्भ में अनामिका लिखती है - "स्त्री एक साथ कई धरातलों पर जी लेती हैं, एक साथ कई- कई स्थानिकताएं और काल बोध वैसे तो हर भारतीय की नियति है, पर स्त्री ने तो जैसे हमारे देश की इस सच्चाई का रूपक पूरी मनीषा में आत्मसात किए है।[३१] अपने कथा साहित्य से स्त्री कोष को समृद्ध बनाने का काम नसिरा शर्मा ने किया है। नासिरा शर्मा स्त्री- जागृति के बारे में कहती है - हमारी पुरानी पौराणिक, ऐतहासिक स्त्रियों की महत्वाकांक्षाएँ मुख्यतः पति और पुत्र, परिवार और निजी इच्छाओं पर केन्द्रित थी। आज की सचेत और जागरूक स्त्री परिवाए से जुड़कर समाज के लिए कुछ रचनात्मक कार्य भी करना चाहती है। यदि किसी औरत का पति उसकी इच्छा के विरुद्ध घर तोड़ता है तो उसमें इतना आत्मविश्वास होना चाहिए कि घर टूटने को वह व्यक्तित्व टूटने के रूप में लेने से बच सके। [३२]

मधु कांकरिया स्त्री विमर्श के बारे में कहती है - "स्त्री विमर्श का पहला और सीधा मतलब है कि अपने भीतर आत्मविश्वास पैदा करना, अपने भीतर के अंधविश्वास से मुक्ति पाना, अपने भीतर के कु संस्कारों से मुक्ति पाना। स्त्री विमर्श का मतलब पुरुषों की नक़ल

नहीं। न ही पुरुषों की स्वछंदता को अपनाना। मेरा दृढ विश्वास है कि पुरुष अस्मिता, पुरुषों को कुचलकर स्त्री विमर्श आगे नहीं बढ़ सकता। मैं ये मानती ही नहीं हूँ। जिस प्रकार जैसे कई लोग कहते है की हमें पुरुष की जरुरत ही क्या है ? मैं ये नहीं मानती। मैं ये मानती हूँ की पुरुष को कुचलकर आप स्त्री अस्मिता बचा नहीं सकती। इसलिए मैं कहती हूँ कि पुरुषों को उनकी सामंतवादी मानसिकता से मुक्ति पानी होगी। मदवादी मानसिकता से मुक्ति पानी होगी।" [२९]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते है, कि स्त्री विमर्श का एक लंबा इतिहास है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक स्त्री विमर्श की लम्बी परम्परा है। स्त्री ने अपना अस्तित्व बोध को स्थापित करने के लिए स्त्री विमर्श को प्रेरणा दी। हाशिये की जिंदगी छोड़ने के लिए प्रयास किये। स्त्री विमर्श के द्वारा साहित्य में ऐसे लेखन की शुरुआत हुई जिसने समाज की हर एक स्त्री को गहराई से सोचने -समझने में मजबूर कर दिया।

आज स्त्री विमर्श की जो अवधारणाएँ, वे स्त्री को स्वतंत्र रूप से स्थापित करना चाहती है। स्त्री लेखिकाओं ने भी स्त्री विमर्श को अपने साहित्य में से अपने- अपने ढंग से प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय - सन्दर्भ सूची

1.	राधा कुमार	स्त्री संघर्ष का इतिहास	२३,
2.		जनसत्ता १९ अप्रैल २००९	४
3.	मुंशीराम शर्मा	वैदिक संस्कृति सभ्यता	१०१
4.	डॉ. रोहिणी अग्रवाल	हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्टभूमि	२२९
5.	शरद सिंह	स्त्री विमर्श का सही रास्ता दिखाता है मैत्रयी का साहित्य "आलेख" हंस पत्रिका नवंबर, २०१०	७०
6.	जगदीश्वर चतुर्वेदी	स्त्रीवादी साहित्य विमर्श	१८९
7.	रमणिका गुप्ता	स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने	९५
8.	अनुपम आनंद	स्त्री - विमर्श: स्त्री मुक्ति का आख्यानआलेख	७
9.	कल्पना वर्मा	राजेंद्र कुमार, महिला लेखन के सन्दर्भ में स्त्री विमर्श (लेख), सन्दर्भ, स्त्री विमर्श : विविध पहलू	१५
10.	मृणाल पांडे	परिधि पर स्त्री	९
11.	मन्नू भंडारी	त्रिशंकु	१०४
12.		शोधश्री पत्रिका- २००९	१३
13.	विनयकुमार पाठक	स्त्री विमर्श	२५
14.	पायल शर्मा	मैत्रयी पुष्पा का साक्षात्कार	deshabndhu.co.in
15.	डॉ. अर्जुन चव्हाण	विमर्श के विविध आयाम	४४
16.	डॉ कुमार नरेश	दलित चिंतन के सरोकार	१२
17.	डॉ अर्जुन चव्हाण	विमर्श के विविध आयाम	१८१

18.	महादेवी वर्मा	श्रृंखला की कड़िया	९२
19.	डॉ. सुनीता कावले.	कथाकार मधु कांकरिया	९१
20.		शिवानी परिचय (**हिंदी**) गद्यकोश। अभिगमन तिथि: 20 मार्च, 2013	
21.	डॉ. पुष्पपाल सिंह	समकालीन हिंदी कहानी	१८९
22.	डॉ. हरबंश कौर।	महिला लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी	५४
23.	डॉ. रामचंद्र माली	अंतिम दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में नारी	८२
24.	डॉ. कृष्णा जाखड़	प्रभा खेतान के साहित्य में नारी विमर्श	५२
25.	डॉ. सुनीता कावले	कथाकार मधु कांकरिया	१०४
26.	प्रीति यादव	मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में नारी-संवेदना	१४६
27.	डॉ. सुनीता कावले.	कथाकार मधु कांकरिया	११५
28.	उजैर खान	वांग्मय मैत्रयी पुष्पा से उजैर खान की अन्तरंग बातचीत	१६०
29.	डॉ, विष्ट जगत सिंह	स्त्री विमर्श और मृणाल पांडे का कथा साहित्य	८८
30.	प्रभा खेतान	उपनिवेश में स्त्री	१४
31.	अनामिका	मन मांझने की जरुरत	५१
32.		मधु कांकरिया का साक्षात्कार - इसी शोध प्रबंध से	९.

तृतीय अध्याय

मधु कांकरिया का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श

तृतीय अध्याय

मधु कांकरिया का कहानी साहित्य : स्त्री विमर्श

3 .१ कहानी की परिभाषा एवं स्वरुप

कहानी की परम्परा आदिकाल से लोकप्रिय रही है । हिंदी साहित्य क्षेत्र की गद्य विधाओं में उपन्यास के बाद कहानी दूसरी महत्वपूर्ण विधा है। कहानी एक छोटी आख्यानात्मक रचना है, जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सकता है। अन्य विधाओं की तुलना में कहानी के पाठक सर्वाधिक हैं क्योंकि आज भी कोई कहानी सुनने की बात से लोगों में उत्सुकता जाग जाती है । वर्तमान युग में भी उच्चशिक्षित व्यक्ति भी कहानी को पढने में या सुनने में उतनी ही दिलचस्पी लेता है जीतनी कि एक सामान्य बालक । कहानी में एक ऐसी विशिष्टता है की आधुनिक युग के यथार्थवादी आन्दोलन के बाद भी कहानी का अस्तित्व बना ही नहीं रहा, अपितु दिनों दिन लोकप्रिय होता रहा है ।

श्री एडगर एलिन पो के अनुसार कहानी की परिभाषा है - "कहानी एक ऐसा आख्यान है, जो इतना छोटा हो कि एक ही बैठक में पढ़ा जा सके और जो पाठक पर एक ही प्रभाव को उत्पन्न करने के उद्देश से लिखा गया हो । उसमे ऐसी बातों का बहिष्कार हो जो इस प्रभाव को अग्रसर करने में सहायक न हो ।"[१]

बाबू गुलाब राय कहानी की व्याख्या करते हुए लिखते है - "छोटी कहानी एक स्वयं पूर्ण रचना है, जिसमे एक तथ्य का प्रभाव को अग्रसर करने वाली व्यक्ति केन्द्रित घटना या घटनाओं के आवश्यक परन्तु कुछ अप्रत्याशित ढंग से उत्थान और पतन और मोड़ के साथ पात्रों के चरित्र पर प्रकाश डालने वाला कौतूहल पूर्ण वर्णन हो ।" [२]

प्रेमचंद कहानी के विषय में लिखते है - " कहानी एक ऐसी गद्य रचना है, जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते है।[3]

श्री इलाचंद्र जोशी के विचार में कहानी का मतलब है - "जीवन का चक्र नाना परिस्थितियों के संघर्ष से उल्टा -सीधा चलता रहता है। इसी चक्र की विशेष परिस्थिति का प्रदर्शन ही कहानी होती है।" ४

समीक्षक नामवर सिंह ने कहानी के विषय में अपनी मान्यता प्रकट करते हुए लिखा है - "कहानी शायद समय की कला है, समय के साथ कहानी अनेक प्रकार की कलाएँ दिखाती है। कभी वर्षों को समेटकर एक क्षण में बाँध देती है, कभी क्षण को खोलकर वर्षों में फैला देती है, कभी समय के दायरों को तोड़ती है, और कभी टुकड़ों को जोड़कर नया दायरा बनाती है।"५

कहानी के उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहानी के स्वरुप के बारे में कहा जा सकता है कि कहानी जीवन के संवेदनात्मक चित्रण के अनुभव का माध्यम है, क्योंकि कहानी विधा में जीवन की समस्या तथा आतंरिक द्वंद्व को प्रस्तुत करने की शक्ति है।

भारत में इतर विधाओं जैसी कहानी यह विधा पाश्चात्य प्रभाव से विकसित नहीं हुई है, क्योंकि भारतीय लोक और शास्त्र दोनों में कहानी की एक समृद्ध परंपरा रही है।

हिंदी कहानी आधुनिकता की देन है। हिंदी कहानी का इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है। परंपरागत कहानीयों में उत्सुकता और रोचकता को अहमियत दे दी गयी थी। कहानी के उदभव का प्रश्न प्रारंभ से ही चिंतन का विषय रहा है। डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल कहानी के उदभव के सन्दर्भ में लिखते है - "कहानी के उदभव का इतिहास उतना ही प्राचीन है, जितना कि स्वयं

मनुष्य के जन्म का इतिहास। क्योंकि जन्म के साथ ही मनुष्य को अपने अस्तित्व की अनुभूति हुई होगी, और अस्तित्व की इस अनुभूति को ही अभिव्यक्ति प्रदान करने के लिए उसने हावभाव अथवा निरर्थक शब्दों के उच्चारण से जो कुछ कहा होगा, वही मानव जाती की उसकी कहानी रही होगी।"[६] हिंदी साहित्य की बात की जाए तो भारतेंदु युग में कुछ कथात्मक शैली के निबंध लेखन की शुरुआत हुई थी, परन्तु इन्हें कहानियाँ नहीं कहा जा सकता। इ. १९०० के आसपास कहानी का विकास होने लगा। डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल कहते है - " वस्तुतः उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्ध में जब हिंदी कहानी का जन्म हो रहा था, भारतवर्ष में सुधारवादी प्रवृत्तियाँ बलशाली हो रही थी। उन्नीसवी शताब्दी का काल नवजागरण का काल था। इस युग में समाज का ध्यान आकर्षित करने के लिए, साहित्य में अनेक शैलियों के प्रयोग किये गए और इन्ही प्रयोगों से आधुनिक हिंदी कहानी का जन्म हुआ। परन्तु यह शताब्दी न तो पूर्ण रूप से प्राचीनता का मोह त्याग सकी और न ही आधुनिकता को ठीक से अपना सकी। इस कारण इस शताब्दी को कहानी के जन्म का श्रेय नहीं मिल सका। यह श्रेय मिला अंततः बीसवीं शताब्दी को।"[७]

किशोरीलाल गोस्वामी लिखित "इंदुमती" (१९०३) को हिंदी कहानी साहित्य की पहली कहानी माना जाता है। इसी समय में माधव प्रसाद मिश्र की 'मन की चंचलता' कहानी प्रकाशित हुई थी। १९०२ में भगवान् दिन की 'प्लेग की चुड़ैल' कहानी प्रकाशित हुई थी। 'ग्यारह वर्ष का सपना' यह रामचंद्र शुक्ल की कहानी १९०३ में और बंग महिला की 'दुलाई वाली' कहने १९०७ में प्रकाशित हुई थी। महिला कहानी लेखन की दृष्टी से बंग महिला की 'दुलाई वाली' कहानी को प्रथम कहानी मानी जाती है। लेकिन कहानी के मानकों के धरातल पर उतरने वाली कहानी चंद्रधर शर्मा की ' उसने कहा था' इस कहानी को माना जा सकता है। इसीलिए श्री राजेंद्र यादव हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी का श्रेय चंद्रधर शर्मा गुलेरी की

'उसने कहा था' को देते है - " इंदुमती पर टेम्पेस्ट की छाप है। रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का सपना' (१९०३) और बंग महिला की 'दुलाई वाली' (१९०७), अपनी मौलिकता के बावजूद कहानी होने की माँग पूरी नहीं करती। हिंदी की पहली मौलिक और कलापूर्ण कहानी, चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' (१९१६) है और उसे ही यहाँ की आधुनिक कहानी का प्रारम्भ मानना चाहिए। [८]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर एक बात स्पष्ट होती है कि हिंदी कहानी का जन्म १९०० के आसपास हुआ और १९१२ से लेकर १९१८ तक हिंदी कहानी एक साहित्यिक विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

हिंदी कहानी के विकास का इतिहास कुल नवासी वर्षों का माना जाता है। डॉ. शुक्ल और डॉ. त्रिपाठी ने हिंदी - कहानी के विकास के इतिहास को पाँच उत्थानो के अंतर्गत विभाजित किया था।

१. प्रथम उत्थान १९०० से १९२५

२. द्वितीय उत्थान १९२६ से १९३६

3. तृतीय उत्थान १९३७ से १९४७

४. चतुर्थ उत्थान १९४८ से १९६०

५. पंचम उत्थान १९६१ से १९८९ [९]

हिंदी कहानी साहित्य के विकास में जयशंकर प्रसाद और मुंशी प्रेमचंद का योगदान महत्वपूर्ण है। इन दोनों लेखकों की भूमिका खानी के विकास के प्रथम उत्थान में महत्वपूर्ण रही है। प्रेमचंद की कहानियाँ जीवन की सामाजिक घटनाओं और समस्याओं को लेकर लिखी गयी थी और प्रसाद ने अपने कहानियों के माध्यम से मनुष्य के भीतरी भाव द्वंद्व को व्यक्त किया था।

१९६० के बाद के युग को हिंदी कहानी के विकास के दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। इस दौर में कहानियाँ यथार्थवादी होने लगी थी। डॉ. गोपाल राय के शब्दों में - "बीसवी शताब्दी के इस सातवे दशक को मोहभंग का दशक कहना उचित होगा। इस दशक में कहानी कारों ने रोमांसमुक्त होकर, नए यथार्थ का साक्षात्कार किया।"[१०]

हिंदी कहानीकारों ने अपनी रचनाओं में नारी मुक्ति को साकार बनाने की हमेशा कोशिश की हैं। पुरुष प्रधान समाज में दबी कुचली जानेवाली स्त्री की स्थिति को दर्शाने का प्रयास कहानियों में शुरू से हम देख सकते हैं। विशेष रूप से स्त्री रचनाकारों का प्रयास इस सन्दर्भ में विचारणीय हैं। अपने वर्ग से सम्बधित समस्याओं को लेखिका जितनी गंभीरता से अभिव्यक्त कर पा रही है उतना लेखक नहीं कर सकता। पुरुष कहानीकारों की तुलना में स्त्री लेखिकाओं की कहानियाँ सामाजिक व्यवस्था को सशक्तता से अभिव्यक्त करती है। जैसे - जैसे समय बदलता गया, हिंदी लेखिकाओं के दृष्टि में भी परिवर्तन आता चला गया, उनके कहानियों में नारी समस्याओं का अधिक गहरा अध्ययन हुआ। उनकी लेखनी केवल नारी वर्ग की दयनीयता को दर्शाने का माध्यम न रहकर समाज के शोषण के खिलाफ विद्रोहात्मक रूप मे मुखर होने लगी - "समकालीन लेखिकाओं को पता है, कि स्त्री ने व्यवस्था के हाथो सदियों से शोषण सहा है, लेकिन स्थिति अब भी बदली नहीं है। महिलाओं में एक चेतना की लहर आई तो जरुर है लेकिन बहुत ही कम मात्रा में उन्होंने व्यवस्था का विरोध करना चाहा। इसलिए वे प्रतिनिधि बनकर व्यवस्था के प्रतिरोध में खड़ी लेखिका के दायित्व के प्रश्नों को मुखर रूप से उठाती है। [११]

देखा जाए तो स्त्री विमर्श एक चिंतन का विषय है। स्त्री विमर्श जन्म लेने का कारण हमारे समाज की पितृसत्ताक पद्धति में बसा है। परंपरागत रूप से स्त्री का जो शोषण होता आ

रहा है, उसी के विरोध में स्त्री विमर्श का मूल बसा है।"स्त्री विमर्श" का मूल स्वर प्रतिशोधात्मक नहीं है, यह स्त्री की मुक्ति की कामना, एवं अस्तित्व का स्वर है। स्त्री विमर्श यह नहीं मानता कि स्त्री की गुलामी का कारण पुरुष है, अपितु पितृसत्ताक सिद्धांतो पर आधारित हमारी जो सामाजिक व्यवस्था है, वह जन्म से लेकर मृत्यु तक पुरुष जाति को एक ही बात सिखाती है कि स्त्री उनसे हीन है।

हिंदी कहानी में भी स्त्री विमर्श के अनेक बिंदु मिलते हैं। एक और सदियों से शोषण, अत्याचार सहती आ रही स्त्री का चित्रण है, तो दूसरी और पुरुष सत्ताक समाज से अपने ऊपर होते आ रहे शोषण तथा अत्याचार से मुक्त होने के लिए किए संघर्ष करती स्त्री का भी चित्रण मिलता है। हिंदी कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श पर जितने भी कहानीकारों ने अपनी लेखनी चलाई है, उनका स्वर एक ही है, स्त्री को उसके अधिकार मिलना उसका हक है। स्त्री विमर्श का मतलब पुरुष का विरोध करना नहीं है, न ही उसके साथ प्रतिस्पर्धा करने की चेष्टा, बल्कि स्त्री को अपनी आत्मचेतना जागृत करने का एक ज़रिया है।

राकेश कुमार कहते है - "जब से स्त्री विमर्श आया है इसने स्त्री के सोचने, विचारने, लिखने, की शैली को ही प्रभावित नहीं किया, उनमें अपने स्वत्वाधिकारों के प्रति चेतना भी विकसित की है। उनके नजरिये को काफी हद तक बदला भी है, यही कारण है कि कविता हो या कहानी, उपन्यास लेखन हो या वैचारिक निबंध या कलाकृति उनमें उनकी तीखी आलोचनात्मक चेतना, नारीवाद सोच को साफ़- साफ़ पहचाना जा सकता है।" [१२]

हिंदी कहानीकारों ने अपनी कहानियों में स्त्री मुक्ति को साकार बनाने की तथा स्त्री चेतना को जागृत करने की कोशिश हमेशा की है। पुरुष प्रधान समाज में शोषित स्त्री का चित्रण करने का प्रयास कहानियों में हम शुरू से देख सकते हैं। महिला कहानी लेखिका की बात की जाए तो आरंभकालीन कहानी साहित्य में बंग महिला, उषादेवी मित्र, शारदा कुमारी आदि

लेखिकाओं ने कहानी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। बंग महिला हिंदी कहानी साहित्य की पहिली महिला लेखिका मानी जाती है। बंग महिला की तीन कहानियाँ प्रसिद्ध हुई मिलती है, जैसे की 'दुलाईवाली', 'भाई बहन' और 'हृदय परीक्षा'। 'दुलाईवाली' कहानी उस समय के स्त्री जीवन पर प्रकाश डालने वाली कहानी थी तथा इस कहानी को हिंदी की प्रथम मौलिक कहानी माना जाता है। बंग महिला ने अपने लेखन के आक्रामक शैली द्वारा पुरुषसत्ताक समाज को चुनौती दी थी। स्त्रियों के पैरों में दासता की बेड़ियाँ डालती रूढ़ परम्पराओं को नकारते हुए बंग महिला ने स्त्री शिक्षा का नया माहोल बनाया तथा पति का स्वेच्छा चुनाव करने, तलाक देने तथा पुनर्विवाह के अधिकारों की माँग की।

जगदीश्वर चतुर्वेदी ने बंग महिला के बारे में कहा था - " बंग महिला का मौलिक अवदान यह है कि उन्होंने पहली बार आधुनिक ढंग की कहानी लिखी। देश प्रेम, सामाजिक सुधार एवं स्त्री मन की विभिन्न झांकियों को उन्होंने बड़ी खूबसूरती से रचा है। [१३]

यशोदा देवी बंग महिला के समकालीन थी। उन्होंने भी स्त्री के अनेक परंपरागत रूपों को अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया था।

स्त्री विषय के प्रति विशेष लगाव रखने वाली लेखिका उषा देवी मित्रा को कहा जा सकता है। उनकी 'वचन का मोल', 'रागिनी', 'आवाज' आदि कहानियों में विधवा, बाल विवाह, वेश्याओं की जिंदगी का वर्णन मुखारित है। जगदीश्वर चतुर्वेदी उषा देवी मित्रा के बारे में लिखते है - "उषादेवी मित्रा की कहानियों में स्त्री के प्रति विशेष लगाव नजर आता है। इसी लगाव की रोशनी में उन्होंने अंतरजातीय विवाह , वेश्याओं की समस्या , परितक्त्या नारी की समस्याओं तथा वर्ण व्यवस्था के प्रति जाती पर पड़ने वाले प्रभावों आदि पर श्रेष्ठ सामाजिक कहानियाँ लिखी है।[१४]

सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियों में भी स्त्री का यथार्थ चित्रण देखा जा सकता है। ऊपर प्रस्तुत लेखिकाओं के कालखंड के बाद हिंदी कहानी स्त्री अस्मिता तथा स्त्री विमर्श को उजागर करती नजर आने लगी। स्त्री विमर्श से सम्बंधित कहानियाँ लिखनेवाली लेखिकाओं में कृष्णा सोबती , मन्नू भंडारी , उषा प्रियंवदा , राजी सेठ , मृदुला गर्ग, मैत्रयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, अलका सरावगी, उषा प्रियंवदा, मनु भंडारी, मृदुला गर्ग, नमिता सिन्हा, रमणिका गुप्ता, नासिरा शर्मा, आदि लेखिकाओं ने समाज की जड़ हो गयी परम्पराओं एवं कुरीतियों का विरोध किया। उनका लेखन अपनी अस्मिता को तलाशते तथा पहचानते स्त्री से जुड़ा हुआ दिखाई देता है। और इसी लेखन की एक मुख्य सूत्रधार के रूप में मधु कांकरिया को देखा जा सकता है।

समकालीन लेखिकाओं के बात की जाए तो यह कहा जा सकता है कि, समय के साथ-साथ हिंदी कथा लेखिकाओं की दृष्टि में जो परिवर्तन आया, उसी की वजह से उसने स्त्री समस्याओं का अधिक गहन अध्ययन किया हैं। इसीलिए उनका लेखन केवल नारी वर्ग की दयनीयता को अभिव्यक्ति देने का माध्यम न रहकर समाज के पितृसत्ताक मानसिकताओं के प्रति विद्रोहात्मक स्वर में मुखर होने लगा है। स्त्री के अधिकारों के प्रति सतर्कता, संघर्षशील प्रवृत्ति, और मुक्ति की कामना आदि समकालीन कहानी लेखिकाओं के विद्रोह की आधारभूत विशेषताएँ है।

समकालीन महिला कहानीकारों ने समाज के सभी वर्गों की स्त्रियों को अपनी कहानी से प्रस्तुत किया है। चाहे वर्ग कोई भी हो, इनमें स्त्री की भूमिका मौन दिखाई नहीं गई है। इन स्त्री कहानीकारों की कहानियों के माध्यम से यह सिद्ध होता है, कि आज समाज में शोषण को सहनेवाली स्त्री के स्थान पर संघर्षरत स्त्री नजर आती है - "स्त्रिया अब पुरुषों के हाथ का खिलौना नहीं रह गयी है। आज की स्त्रियाँ उद्बोधित हो गयी है और उनमें जागृति भर उठी है।

स्त्रियाँ अपने अधिकारों की माँग इसलिए नहीं कर रही है कि उन्हें पाकर किसी के प्रति अत्याचार किया जाए, बल्कि हमें तो अपने अधिकारों को प्राप्त करने की आवश्यकता इसलिए है, जिससे कि हम उन उतारायित्वो का पालन कर सके जो हमारे अधिकारों से संबंद्ध है।" [१५] अपने हक़ तथा विमर्श की लड़ाई में चल रहा स्त्री का संघर्ष भी द्वंद्वात्मक है। एक और समाज में चली आ रही नैतिकता और झूठे आदर्शों के टूटने का डर है तो दूसरी ओर खुद का भविष्य बनाने का सपना। समाज में अपना मुकाम पाने के लिए स्त्री को कई उतार- चढाओं का सामना करना पड़ता है, समस्याएँ तो अनेक रूप में उसके सामने खड़ी रहती हैं।

ऊपर प्रस्तुत लेखिकाओं ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री जीवन के अलग-अलग पहलुओं को अपने-अपने ढंग से बड़ी रचनात्मक तरीके से पाठकों के सामने रखा है। पाठकों को स्त्री जीवन के हर एक पहलू से अवगत कराने कराने की कोशिश की है। स्त्री को केंद्र में रखकर लिखी गयी कई कहानियाँ हिंदी साहित्य में नजर आती हैं। वैसे तो स्त्री को केंद्र में रखकर उसके इर्द गिर्द कहानी रचना आसान बात नहीं है।

3.२ . हिंदी कहानी लेखिकाओं के कहानी में स्त्री विमर्श

स्त्री विमर्श के बारे में कई लेखिकाओं ने कहानियाँ लिखी है। उन्होंने वर्तमान जीवन में आनेवाले अनुभवों से उभरने वाली सच्चाइयों को निडरता से अपनी कहानियों का विषय बनाया है। वर्तमान समाज और स्त्री जीवन के प्रति लिखी गयी इनकी रचनाएँ उनके मन की संवेदनशीलता दर्शाती है। समकालीन लेखिकाओं ने अपनी कहानियों में स्त्री चेतना से जुडी, अपनी मुक्ति और अस्मिता की पहचान के लिए संघर्ष करती स्त्री को केंद्र में रखकर कई महत्वपूर्ण कहानियाँ लिखी। स्त्री लेखिकाओं द्वारा लिखी गयी कहानियों में स्त्री जीवन के संघर्ष को दर्शाती, स्त्री चेतना से जुडी कुछ कहानियों को आगे प्रस्तुत किया है जिससे हम समकालीन लेखिकाओं के कहानियों में स्त्री की बदलती प्रतिमा के बारे में जान सकते हैं ।

नमिता सिंह की "गलत नंबर का जूता" में लेखिका ने सुजाता नाम के पात्र को आर्थिक स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत साहसी रूप में पेश किया है। इस कहानी में सुजाता का पति इंजिनियर रहता है, फिर भी पैसे की लालच में अवैध काम करता है। यहाँ तक कि अपने बॉस की मर्जी पाने के लिए अपने पत्नी से कहता है "तुम लाला हरदयाल को मिलकर उसे खुश करो तो तुम्हे नौकरी मिल जाएगी"। लेकिन सुजाता नौकरी पाने के लिए कोई भी गलत समझौता नहीं करना चाहती। पति के धन कमाने के गलत तरीकों से तंग आकर वह अपने पति को छोड़ अलग से रहने लगती है। बॉस को खुश करने की नाजायज माँग नकारती हुई वह कहती है- मै नौकरी करुँगी, अपने पैरों पर खड़े होने के लिए। मै खुद को इस लायक बनाउंगी, लेकिन अपने तरीके से, तुम्हारे ऐशोआराम तुम्हारी महत्वाकांक्षा के रास्ते को पुख्ता करने के लिए नहीं। [१६]

उषा महाजन की 'एक श्रवणकुमार' कहानी में चित्रित माँ को वृद्धावस्था में अपने बेटों का सहारा नहीं मिलता। तीन बेटे होते हुए भी उसे अपनी बेटी के पास रहना पड़ता है। छोटा बेटा उसको अपने पास झूठा प्यार दिखाकर ले जाता है। असल में उसे अपने बेटे की देखभाल करने के लिए आया नहीं मिल रही थी। जब माँ को यह बात पता चलती है तो उसे अपनी जिंदगी निरर्थक लगने लगती है। उसे अपने बेटे के घर आया बनने से दूसरों के घर में आया बनकर रहना बेहतर लगता है वह कहती है - "जो आया ही बन के रहना पडेगा मैनूं तो तेरे नहीं पड़ोसियों के करुँगी आया का काम। इज्जत तो देंगे वे मुझे।" [१७]

मैत्रयी पुष्पा लिखित 'केतकी' कहानी में स्त्री संघर्ष को देखा जा सकता है। कहानी की नायिका केतकी के पास बलात्कार के बाद दो ही मार्ग थे, एक आत्महत्या करना और दुसरा पापी को सजा देना। केतकी दूसरा मार्ग अपनाती है, क्योंकि उसपर अत्याचार करनेवाले अपराधी ने अब तक न जाने कितने स्त्रियों को अपनी हवस की प्यास बुझाने के लये बरबाद

किया था। भविष्य में अपने जैसे स्थिति किसी पर न आये यह सोचके केतकी स्त्री जाती के अस्तित्व की रक्षा हेतु गन्धर्व सिंह को सजा देने के लिए कदम उठाती है। पुलिस इंस्पेक्टर को लिखे गए पत्र में केतकी के क्रांतिकारी स्वभाव का दर्शन होता है - " चन्दन, आज तुम्हे पुकारती हूँ, सब कुछ लुट जाने के पश्चात्, लेकिन यदि मैं चुप रही तो यही अत्याचार दुहराया जाता रहेगा। इस गाँव की न जाने कितनी युवतियाँ अपने मुख पर स्वयं ही कालिख पुतवाना स्वीकार करती रहेंगी ..... डर से, इन दुराचारियों के भय से .....। मैं पंडित श्री गोपाल के उज्वल कुल की पुत्रवधू इस कुल के कलंकित होने के भय से यदि आज डर गयी तो न जाने कितनी केतकी यों ही लुटती रहेंगी, बदनाम होती रहेंगी और कितने नवयुवक उस कलंक को अपने सिर लेकर आजन्म कुंठित होते रहेंगे। मेरे बताए दिन तुम्हे माधवपुर पहुँच जाना है, आजन्म तुम्हारी ऋणी रहूँगी.....। केतकी [१८]

मन्नू भंडारी की कहानी 'रानी माँ का चबूतरा' कहानी की नायिका का पति शराबी है। पति की शराब पीने की आदत से परेशान होकर वह उसे घर से बाहर निकालती है। किसी के आगे हाथ फैलाए बिना वह मेहनत करके बच्चों को पालती है। उसे लोग चुड़ैल, और बुरे चलन की समझते है, लेकिन वह किसी के आगे झुकती नहीं बच्चों का पालन करने के लिए खुद मेहनत करती है।

उपर्युक्त रचनाकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री विमर्श को चित्रित करने का प्रयास किया है। मधु कांकरिया की बहुत से कहानिया भी स्त्री विमर्श को पाठकों के सामने लाती है।

३.३ मधु कांकरिया के कहानी साहित्य में स्त्री विमर्श

मधु कांकरिया की बहुत सी रचनाएँ स्त्री को केंद्र में रखकर लिखी गयी हैं। उसके जीवन की विभिन्न समस्याओं का वास्तव चित्रण उन्होंने अपने कहानी साहित्य में किया हैं ।

अपनी सभी कहानियों में मधुजी ने हर एक नए विषय को न्याय देने की कोशिश की है। उनकी कहानियों के विषय हर सामाजिक समस्याओं से पाठकों को रु-ब-रु कराते हैं।

मधु कांकरिया की कहानियाँ भी नारी जीवन के त्रासदी के उदाहरण है, सदियों से नारी, दहेज़ प्रथा, बालविवाह, विधवा जीवन, वेश्या जीवन, पुरुषी अहम् आदि सामाजिक समस्याओं की शिकार है। आज के आधुनिक युग में भी नारी इन समस्याओं से जुंझ रही है। उनकी कहानियों में इन्ही समस्याओं का चित्रण मिलता है। समाज में जीते समय नारी कई कठिनाइयों से गुजरती है, कई समस्याएं उसके सामने आती हैं। इन समस्याओं को सहना या इनका विरोध करने के लिए पितृसत्ताक समाज के परंपरागत मान्यताओं को तोड़कर निकलना यह दो मार्ग उसके सामने हैं, दोनों रास्तों में कठिनतम समस्याएं, शोषण हैं। समाज के इन्ही समस्याओं और शोषण के खिलाफ विद्रोह करती हुई स्त्री उनकी कहानियों में दृष्टिगोचर होती हैं। अपने कहानी साहित्य में मधु कांकरिया ने विविध नारी चरित्रों का चित्रण किया है। अपनी स्त्री विषयक मान्यताओं को कहानी साहित्य द्वारा स्थापित किया तथा स्त्री की अस्मिता और सन्मान की तरफ जादा ध्यान दिया। अपनी कहानियों द्वारा सामाजिक व्यवस्था के बदलाव की आवश्यकता महसूस कराई। अपनी कहानी के माध्यम से वह परंपरागत रूढ़ियाँ, नैतिकता तथा मान्यताओं के भार से दबी हुई स्त्री के मौलिक व्यक्तित्व को पाठकों के सामने रखती हैं।

मधु कांकरिया ने अपने कहानी संग्रह "स्त्री मन की कहानियाँ" में उनकी आजतक प्रकाशित विविध कहानियों में से स्त्री के विविध रूपों पर आधारित कहानियों को संकलित किया हैं। मधु कांकरिया की कहानियों में 'स्त्री विमर्श' को उदघाटित करना है, तो उनकी कहानियों का मूल्यांकन होना जरुरी है। स्त्री विमर्श की उत्पत्ति शोषण के खिलाफ जागृत हुई स्त्री की आत्मचेतना से होती है। स्त्री शोषण का चित्रण, पारिवारिक जीवन, प्रेम के सन्दर्भ में

दृष्टिकोण, स्त्री अस्मिता एवं संघर्ष क्षमता इन अवधारणाओं के आधार पर मधुजी के कहानियों स्त्री विमर्श की दृष्टी से मूल्यांकन किया है।

3.३.१ स्त्री शोषण का चित्रण

स्त्री शोषण के अंतर्गत स्त्री की स्वतंत्रता उससे छीनना, स्त्री को प्रताड़ित करना, उसके जन्म लेने के अधिकार से उसे वंचित करना, पारंपरिक रीति-रिवाजों में उसे बांधना, उस पर बलात्कार करना, उससे वेश्यावृत्ति करवाना, दहेज़ के लिए उसका शोषण करना आदि स्त्री शोषण के अंतर्गत आता है। जिस समाज में स्त्री को देवी माना जाता है, उसी समाज में उसके साथ अत्याचार भी किए जाते है। पूर्व युग में नारी के हाथों में सत्ता थी, समाज पर उसका आधिपत्य था। उस समय हमारा समाज मातृसत्ताक था, लेकिन वक्त के बदलते पुरूषों ने स्त्री की सत्ता का हरण कर अपना आधिपत्य जमाया। अपनी सत्ता पुरुषों से छीन जाने के बाद स्त्री का जीवन शोषण से भर गया। उसे अधिकारों, शिक्षा, स्वतंत्रता आदि से वंचित कर दिया गया। जिससे वह पुरूषों पर आश्रित रहने लगी। इन बुरे समय में मनु के पंक्तियों का गलत अर्थ निकला गया। नारी का बचपन में पिता , यौवनवास्था में पति तथा पति की मृत्यु के उपरांत पुत्र के संरक्षण में रहना चाहिए। इन वाक्यों का गलत अर्थ निकालकर हमारे पुरुष समाज ने स्त्री की आजादी का हनन कर दिया। स्त्री के साथ अत्याचारों का सिलसिला शुरू हो गया था। स्त्री के ऊपर हर तरह की पाबंदिया लादी गयी, इन पाबंदियों ने नारी को पुरुष जाति द्वारा स्त्री नहीं बल्कि एक भोग्या के रूप में देखा जाने लगा, उसका शोषण होने लगा। शोषण के अंतर्गत उसका दैहिक, मानसिक, सामाजिक तथा आर्थिक शोषण होने लगा। शोषण के इस चक्रव्यूह से निकलने के लिए स्त्री ने बहुत प्रयास किए, उसने उन परम्पराओं का, रुढियों का विरोध करना शुरू किया जिसमें उसे फँसाकर उसका हनन किया जाता था।

आधुनिक काल में हिंदी कहानी साहित्य में बड़े पैमाने पर स्त्री शोषण जैसी समस्याओं पर लिखा जा रहा हैं। कहानियों में स्त्री विमर्श के अंतर्गत स्त्री शोषण के विविध परिप्रेक्षों को रेखांकित किया जा रहा हैं। यह कहानियाँ संवेदनशील होती है, तथा वैचारिक स्तर पर स्त्री जीवन की समस्याओं से पाठकों को रू-ब-रु कराती है। इन कहानियों में प्रस्तुत हुई स्त्री शोषण की घटनाएँ मिथ्या नहीं होती बल्कि वास्तविकता के करीब जानेवाली होती है।

स्त्री शोषण की शुरुवात उसके गर्भ में होने से शुरू होती है। जब गर्भ में स्त्री भ्रूण होने का पता चलता है, तो उसकी हत्या की जाती है। उससे भी वह बच निकलती है तो, उसे अपने जीवनकाल में कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। संस्कृति के नाम पर तो उसके उपर कई पाबंदिया डाली जाती हैं। उसके जीवन की डोर तो केवल पितृसत्ताक समाज के हाथ में होती है। डॉ सुरेख सिन्हा कहती है - "औरत एक कठपुतली मात्र है। मर्द जब चाहे तब उसको सजा- धजा कर, जहाँ मन हो नचा ले जब चाहे विवस्त्र कर ले। औरत के मान-अपमान, लाज- शर्म आदि किसी भी बात का ख़याल केवल मर्द की ख़ुशी और नाराजगी पर निर्भर करता है। मर्द खुश है तो औरत सिर आँखों पर और यदि नाराज हो गया तो पैरों तले कुचल दे"। [१९]

मधु कांकरिया के कहानियों में स्त्री शोषण का चित्रण स्त्री पात्रों के माध्यम से देखा जा सकता है। मधुजी की "शून्य होते हुए" यह कहानी गर्भपात पर आधारित है। मेडिकल टर्मिनेशन एक्ट ऑफ़ १९७७ के नए संशोधित नियम के अनुसार गर्भपात करने के लिए किसी का पूर्ण रूप से डॉक्टर होना भी जरूरी नहीं था। कोई भी आर. एम. पी. या डी. जी. ओ. (डिप्लोमा इन गायनीकोलॉजिस एंड एब्स्ट्रेटिक्स) भी जिसने कम से कम बीस गर्भपात के केस किसी डॉक्टर के अधीन किए हो वह भी कानूनी रूप से गर्भपात कर सकता था। इसके

अतिरिक्त अब गर्भपात किसी भी डॉक्टर के प्राइवेट नर्सिंग होम में भी किया जा सकता था। उसका रजिस्टर्ड होना भी जरूरी नहीं था।

इस कहानी में डॉ विजय मजबूरी से पांच महीने के विकसित भ्रूण के गर्भपात के लिए विवश हो जाते है। डॉ. विजय के अस्पताल में काम करने वाला आदिवासी भैरो उराँव अचानक अस्पताल से ग़ायब हो जाता है। जब लौटता है, तब अपने साथ अपनी अठारह-उन्नीस बरस की बेटी शनचारिया को साथ ले आता है। शनचरिया पांच महीने की गर्भवती होती हैं । आदिवासी से ईसाई फादर बना, फादर जेवा शनचरिया को फंसाकर उसे गर्भवती बनाता है। आदिवासियों में धोखा देनेवालों का सर धड़ से अलग किया जाता है। लेकिन इस कहानी में कही भी अत्याचार और शोषण के खिलाफ विरोध नहीं नजर आता। शनचरिया के उद्धार के लिए डॉ. विनय गर्भपात के लिए तय्यार हो जाते है।

'दाखिला' कहानी में लेखिका का भोगा हुआ यथार्थ है । इस कहानी की पात्र सुकीर्ति पति से विभक्त हुई है। अपने पुत्र विक्रम को अच्छे स्कूल में दाख़िला देना चाहती है। आत्मविश्वास से भरी सुकीर्ति को विश्वास था, कि वह अपने साढे पाँच वर्षीय विक्रम को अच्छे स्कूल में दाख़िला दिला देगी। लेकिन विक्रम के साक्षात्कार के दौरान उनके पति साथ में नहीं इस कारण से तो, कही किसी और वजह से दाख़िला नहीं मिल पाता।

जब सुकीर्ति अपने पति के घर रहती थी तब पति द्वारा उसका इतना शोषण होता था, कि उसका असर भी नन्हे विक्रम पर पड़ता था । गृह क्लेश के दिनों में घर के चाकू ग़ायब हो रहे थे। एक बार घर के पिछवाड़े की सफाई करते वक्त बहुत सारे चाक़ू मिल गए, सुकीर्ति ने विक्रम को पूछा तो नन्हे विक्रम ने जबाब दिया - "मैंने फेके है चाकू यहॉं, मुझे डर था कि पापा गुस्से में ये चाक़ू ही तुम पर न फेक दे"। [20]

' फैसला फिर से' इस कहानी में पैसष्ठ वर्षीय विधवा औरत महाश्वेता देवी जिस फ्लैट में वह तीस वर्षों से रह रही थी, उस फ्लैट को खाली करने के लिए फ्लैट के मालिक और प्रतिपक्षी हरिनारायण घोष ने न्यायलय में दावा ठोका था। मुकदमा जब कोर्ट में चल रहा था, तब मकान मालिक ने महाश्वेता देवी को डराया, धमकाया, उसके पीछे गुंडे लगवाए, उसे मार डालने तक की धमकी दे दी। आधी रात को बिजली काटने लगा यहाँ तक कि महाश्वेता देवी के यहाँ काम करने वाली बाई को भी डरा-धमका कर भगा देता है। फ्लैट का मालिक धूर्तता और चालाकी से अपना केस जीत जाता है। इस कहानी में महाश्वेता देवी फ्लैट के मालिक से शोषण का शिकार रही है । अपने जीवन की सारी जमा पूँजी, कोर्ट के केस में डालने के बावजूद भी झूठ और मक्कारी की वजह से फैसला उसके खिलाफ होता है।

'फैलाव' कहानी की नायिका श्रुति घर की बोरियतवाली जिंदगी से छुटकारा पाने के लिए वह अपने पति के ऑफिस में अकाउंट का काम संभालने लगती है। उसका पति क्षितिज भी खुश है क्योंकि बिना तनखा दिए उसे एक केशियर मिल गया है। छ सात महीनों में घर और ऑफिस के काम सँभालते-सँभालते श्रुति थकने लगती है। क्षितिज को जो शारीरिक सुख चाहिए वह नहीं दे पाती। एक रात दोनों में झगडा होता हैं।

पत्नी के नकारने से क्षितिज के पुरुषार्थ को ठेस पहुँचती है, और वह ऑफिस में श्रुति की गलतियाँ गिनना शुरू करता है। हिसाब में दो लाख का तालमेल ना बैठने पर श्रुतिसे हिसाब माँगता है। श्रुति ने सही बात बताने पर भी उसे ऑफिस स्टाफ के सामने क्षितिज से कटुता भरी बाते सुननी पड़ती है। इस कहानी द्वारा मधुजी यह बताना चाहती है, कि हमारा समाज स्त्री की उन्नति सहन नहीं कर पाता, क्योंकि एक स्त्री की उन्नति देख बाकी सब स्त्रियाँ भी आगे आ सकती है यह डर उन्हें लगा रहता है। इसीलिए पुरुष कामयाब स्त्री को हमेशा अपना दुश्मन मानता है। इसी पुरुषी मानसिकता को लेकर रमणिका गुप्ता ने कहाँ है - " पुरुष

के मुकाबले कोई पुरुष हो तो उन्हें अपनी क्षमता का फरक उन्नीस बीस ही नजर आता है। लेकिन अगर औरत खुद मुक्तहार होकर सामने खड़ी हो जाए, वह भी निर्णय ले सकने वाली औरत, तो चाहे बिन चाहे वह हिन् भावना से दब जाता है और उसे अपनी तुलना में वह औरत बाईस लगने लगती है। इर्श्यावश शत्रुता का अंकुर मन में जन्म लेता है"। [२१]

'फाइल' कहानी में पिंकी नाम के लड़की के शोषण का चित्रण किया है "सिनी आशा" संस्था में रहनेवालों में से सबसे खतरनाक है पिंकी -"पिंकी की फाईल में स्पष्ट लिखा था ११ वर्ष से लेकर १४ वर्ष तक उसके साथ कई बलात्कार हुए और वह भी उसकी माँ के ग्राहकों के द्वारा।"[२२]

जो पिंकी के साथ हुआ उसके लिए वह अपने आप को दोषी नहीं मानती थी। वह अपने माँ के द्वारा ही शोषण का शिकार होती है। उसकी माँ चाहती थी कि पिंकी भी उसके जैसी वेश्या बने, माँ के ग्राहकों द्वारा उसके ऊपर कई बार बलात्कार किये जाते हैं। जिसके कारण माँ का नाम सुनते ही पिंकी शिकारी कुत्ते कि तरह बौखला जाती थी।

'सिनी आशा' संस्था में आने के बाद अपने अतीत को भुलाकर वह एक लड़के से प्रेम भी करने लगी थी। वह लड़का भी उसे प्यार करता था। एक दिन उस लड़के ने ऑफिस के क्लर्क को घुस देकर पिंकी की फाइल पढ़ी और उसके बाद उससे मिलना ही छोड़ दिया। पिंकी के पूछे जाने पर "रंडी की बेटी रंडी ही निकली" कहकर उसे अपने जिंदगी से निकाल दिया।

"नामर्द" कहानी में सोनू विकलांग रहता है, उन्ही दिनों विकलांग होने के परिणामस्वरूप सोनू को सरकारी बैंक में क्लर्क की नौकरी मिलती है। बैंक में नौकरी मिलने की बजह से सोनू के पिता ने सोनू की शादी विकलांग लड़की से न करके दीपा नाम की लड़की से की। शादी के आठ दिन बाद ही दिपा सोनू को छोड़ कर अपने मायके चली गयी वहाँ से दीपा संदेशा भेजती है की सोनू नामर्द है।

अपने पीड़ा को भुलाकर सोनू सामाजिक आंदोलन से जुड़ने लगता है, जहाँ उसकी भेट एक युवा कुबड़ी युवती से होती है। वह वेश्याओं के मतदान पहचान पात्र दिलवाने एवं मतदाता सूची बनवाने में लगी हुयी थी, लेकिन सोनू के पिता को लगा की सोनू अगर अपने पुरुषार्थ परिक्षण करता तो ठीक रहेगा ताकि फिर से पहले जैसी नौबत ना आ जाए, लेकिन पिता की बात सुनते ही सोनू का दिमागी संतुलन और आत्मविश्वास सभी गड़बड़ा जाता है। कुबड़ी अब उसे अपनी प्रेमिका कम एक विशुद्ध मादा अधिक दिखाई देती। वह सोचता है, क्या कुबड़ी भी उसकी विकलांगता का यह मतलब निकाल सकती है? क्या उसके दिमाग में भी यह सब है? और इन्ही काले डगमगाते एवं दरकते आत्मविश्वास के क्षणों में वह कुबड़ी के साथ बलात्कार करता है। बलात्कार के बाद कुबड़ी सोनू के साथ अपने सम्बन्ध तोड़ देती है।

'पोलीथिन में पृथ्वी' कहानी में युवती का पति आश्विन, व्यापार के बाद जो समय बचता उसमें नए नए मैजिक आइटम तैयार करता, वह मेजिशियन भी था। स्टेज पर कार्यक्रम के दौरान वह अपनी पत्नी याने युवती की मदत लेता था। उसके पास एक सुन्दर कबूतर का जोड़ा था। मैजिक शो में स्पेशल आइटम करते करते युवती को उनसे लगाव हो गया था। लेकिन कबूतरों की जोड़ी के पंखों में कीड़े पड़ने की वजह से वह मर जाते हैं। पोलीथिन की थैली में डालकर आश्विन उन्हें फेंक देता हैं। आश्विन और युवती को पाँच साल की एक लड़की थी उन्ही दिनों में युवती फिर से गर्भवती रहती है। आश्विन नहीं चाहता था कि कोई और लड़की पैदा हो, लेकिन युवती के जिद पर वह कहता है, लड़का होगा तो रख लेंगे नहीं तो गिरा देंगे। सोनोग्राफी में पता चला कि स्त्री भ्रूण है। युवती के न चाहते हुए भी आश्विन ने उसे गर्भपात के लिए बाध्य किया। पाँच महीने की बच्ची का गर्भपात उस युवती को तोड़ जाता है, और वह मानसिक रोग का शिकार हो जाती है।

'युद्ध और बुद्ध' यह कहानी मेजर विशाल राणावत के फौजी जीवन की है। बचपन से उनका सपना था फ़ौज में भरती होना। यह कहानी उन दिनों की है, जब मेजर विशाल राणावत की पोस्टिंग राष्ट्रीय रायफ़ल्स २४ में भारत के सबसे संवेदनशील इलाके गुंड गाँव में हुई थी। गुंड गाँव में खुले आम "हिंदुस्तानी कुत्ते वापस जाओ" या "कश्मीर की मंडी रावलपिंडी" जैसे उत्तेजक नारे लगते थे। ऐसी स्थिति में मेजर विशाल राणावत का काम था, मिलीटेंन्सी का सफ़ाया करना और वहाँ के लोगों के बीच भारतीय फ़ौज और भारत सरकार के प्रति सदभावना फैलाना।

इन्ही दिनों मेजर विशाल को खबर लगी थी कि गुंड गाँव के एक परिवार का बड़ा बेटा जमील मिलिटेंट बन गया है। विशाल राणावत उसके घरवालों से पूछताछ करते है। घरवालों से कुछ हासिल नहीं हुआ तो, मिलिट्री ने पुलिस वालों के साथ मिलकर उनका टार्चर शुरू करते है । पुलिस हर सप्ताह जमील की बहन रुबीना और उसके दो भाइ हामिद को थाने बुलाती। हामिद को गिले कम्बल में लपेटकर पिटती थी, ताकि उसके बदन पर पिटाई के निशान न उभरे। कुछ पुलिसवाले उनके घर जाकर जवान रुबीना को घूरते, उससे गंदे-गंदे मजाक करते, भद्दे इशारे करते । उसके सामने माँ- बहन कि ऐसी अश्लील और भद्दी गालियाँ निकालते । आखिर कार अपने बाकी बच्चों को बचाने के लिए जमील की माँ जमील के मिलने आने की खबर देती है और मिलिट्री वाले जमील को घेरकर मार देते हैं ।

कश्मीर में सेना के नौजवानों को नैतिकता में न बैठते हुए भी शोषण जैसा हथियार हाथ में लेना पड़ता है ताकि मिलिटेंट का सफाया हो सके । 'युद्ध और बुद्ध' कहानी कि रुबीना भी इसी शोषण का शिकार है ।

अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मधु कांकरिया ने अपनी कहानियों में नारी को केंद्र में रखकर उसके शोषण का चित्रण किया है । जिसमें परितक्त्या नारी का शोषण,

विधवा स्त्री का शोषण, बलात्कार, स्त्री भ्रूणहत्या शामिल है। उनकी कहानियाँ स्त्री जीवन के सभी संवेदानात्मक आयामों को छुती है और उनके शोषितपूर्ण जीवन की प्रासंगिकता स्पष्ट करती है।

३. ३ . २ पारिवारिक जीवन,

परिवार समाज की प्रारंभिक इकाई है। परिवार की रचना समाज तथा राजनीतिक व्यवस्था जैसी ही है। परिवार स्वयं एक संस्था है जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों की उपस्थिति अनिवार्य है और दोनों का अस्तित्व समान रूप से होना चाहिए, लेकिन आज के युग में मनुष्य अपने स्वाभाविक मूल्य, स्नेह को खो चुका हैं। परिवार में रहते हुए भी व्यक्ति अकेला महसूस करता है। आज के इस जागतिकिकरण के युग में परिवार में रहनेवाला प्रत्येक सदस्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा निरंकुश अस्तित्व अपने हाथ में चाहता है। इसी कारण आज परिवार टूटते और बिखरते नजर आते हैं। दांपत्य संबंधों में कटुता बढती जा रही है, पीढ़ियों में वैचारिक समतलता न होने की बजह से मतभेद पैदा हो रहे हैं। विवाहपूर्व यौन संबंध रखना तथा लीव इन रिलेशन में रहना अब आम बात हो गयी है। परिवार, जो एक समय में संस्था होती थी, आज उसका अस्तित्व न के बराबर है। लेखिका सावित्री रांका इस बारे में कहती है कि - "वर्तमान पारिवारिक स्थितियाँ और सामाजिक समीकरण पारंपरिक मूल्यों को दरकिनार करते हुए परिवार विघटन और सामाजिक विखंडन की ओर उन्मुख है। स्त्री- पुरुष की पारंपारिक संपुराकता शनै : - शनै : समाप्त होती जा रही है, स्वार्थपरता संतानों में बढ़ रही है और बुजुर्ग पीढ़ी उपेक्षित होकर बच्चों की कृतघ्नता का शिकार बन रही है। एक अजीब- सी बैचेनी सारे परिवार - तंत्र को ध्वस्त करती दिखाई देती है।" [२३]

भारतीय इतिहास में विवाह और परिवार संस्था को उच्च स्थान प्रदान किया था। किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके परिवार के आधार पर की जाती थी। परन्तु

जागतिकीकरण तथा आधुनिकता के इस युग में पारंपरिक मूल्यों के टूटने से तथा नविन मूल्यों की बजह से भारतीय परिवार संस्था में आमूलाग्र बदल हो चुके है। आज विवाह एवं परिवार नाम की संस्थाओं से विश्वास उड़ता जा रहा है, जो कभी इस समाज कि नीव थी।

आज की उपभोक्तावादी संस्कृति की वजह से पति- पत्नी के संबंधों में कटुता आ गयी है। बच्चे अपने बुजुर्गों का तिरस्कार करने लगे हैं। हमारे परंपरागत मूल्यों का अध:पतन हो चुका है। आधुनिक मूल्यों ने परंपरागत मूल्यों की जगह ले ली है। इस स्थिति के बारे में डॉ. कुमार कृष्ण कहते है - "आज हमारे ऊपर जो तारापथ है उसमें टिमटिमाते तारे, वो तारे नहीं जो हमारी दादा- नानी या "चंदामामा" कि कहानियों में चमकते थे। उस तारापथ में सूचनाएँ ही सूचनाएँ है - बेशुमार सूचनाएँ और उनके बिच है एक विध्वंसक ताडिता जो किसी क्षण भी इस खुबसूरत वसुंधरा को भस्म कर सकती है। यह ऐसा समय है जब बच्चों कि शरारते मर चुकी है। उनके सपने 'गलिवर' ने नहीं 'ही मेन' ने छीन लिए है। बहुत बार सोचता हूँ हमारे शिशुओं के शैशव की शरारतों का मरना क्या हमारे भविष्य का मरना नहीं है। एक समय था जब बाजार मनुष्य की आवश्यकताओं के अनुसार बनते थे। लेकिन आज बाजार की आवश्यकता नुसार मनुष्य को ढाला जा रहा है। फिर इस बाजारवाद कि फाउंड्री में क्या वास्तव में मनुष्य बाख पायेंगे ? ऐसे में कहानीकार के सामने किस प्रकार की चुनौतिया है, वह स्वयं अनुमान लगा सकता है।[२४]

मधुजी के कहानी साहित्य की बात की जाए तो उनके कहानियों में संयुक्त परिवार का चित्रण दिखाई देता है। स्त्री के जीवन में आनेवाली अनेक समस्याओं का धैर्य से सामना करने वाले स्त्री पात्रों को पारिवारिक संबंधों के माध्यम से लेखिका ने उजागर किया हैं।

'महानगर की माँ ' कहानी में एक माँ के ममतामयी स्वभाव का दर्शन होता है। मीना अपने दो पुत्र संदीप और समीर के भविष्य के प्रति चिंतित है। मीना ने संदीप के पढाई करने के

लिए भाड़े का कमरा लेना चाहती है, पर आर्थिक तंगी के कारण वह यह विचार भी छोड़ देती है । संदीप और समीर दोनों का स्वभाव विपरीत था। समीर किसी पहाड़ी झरने सा मस्त, आजादी-पसंद, बातूनी एवं टी. वी. देखने का शौक़ीन । पर संदीप के इम्तिहान की वजह से समीर पर टी. वी. न चलने की, बातचीत न करने की, घर पर यार दोस्तों के साथ बाते करने की पाबंदिया लगी थी।

एक दिन समीर की नादानियों की बजह से गुस्से में आकर मीना उसे घर से बाहर निकाल देती है। समीर को घर से हकाल देने के बाद मीना को रह रहकर अपने गरीबी, असमर्थता, जगह की कमी जैसे कमियों के दंश डसने लगते हैं। जब उसे समीर की याद आती है कि समीर पिछले दो घंटों से गायब है। तब उसके मन में अनेक आशंकाएँ उत्पन्न हो जाती है। कही समीर घर छोड़कर तो नहीं चला गया। कई उसने आत्महत्या तो नहीं कर ली। वह अपने आप को कोसने लगी। देवी देवताओं की प्रार्थना करने लगी।

'महानगर की माँ ' इस कहानी में एक माँ का अपने बेटों के प्रति दायित्व का हृदयस्पर्शी चित्रण मिलता है । अपने बेटों को वह अच्छे से पढ़ाना चाहती है ताकि बड़े होकर वे कोई अच्छा मुकाम पा सके जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति सुधर जाए ।

'दरअसल अम्मी' इस कहानी में मम्मी अपने बेटे की कैंसर की बीमारी से परेशान है, विव्हल है, और उसे बचाने की कोशिश छोड़ना नहीं चाहती है। और इस लिए वह अपने पति की हर बात मानकर उसकी खरी खोटी सुनकर भी हमेशा खुश रहने की कोशिश करती है। ताकि उसके पुत्र के इलाज के लिए कोई कमी ना पड़े। सात वर्ष का बंटी थैलीसीमिया से पीड़ित है। उसे खून चढ़वाने हर महीने ले जाना पड़ता है। शुरू शुरू में बंटी के डैडी भी जाते थे लेकिन बाद में उन्होंने भी जाना बंद कर दिया। बंटी के कारण मम्मी, डैडी से कुछ ज्यादा ही दबी रहती है। उसे डर रहता है कि कही बंटी के डैडी बंटी के बढते ख़र्चों की वजह से कटौती

ना करे। इसीलिए जब उसकी बड़ी बेटी कुलदीप बुवा के जेठ के लड़के की गन्दी हरकतों के बारे में माँ को बताती है, तब वह उसे कहती है "लड़के के चलते यु ही दुखी हूँ ..... अपनी गृहस्थी भी चौपट कर दूँ ..... उन्हें भी हाथ से निकल जाने दूँ। [२५]

इस कहानी में एक माँ के ह्रदय तथा सहनशील नारी का चित्रण देखने को मिलता है, जो परिवार को बांधे रखने के लिए हर कसक कोशिश करती है।

'आसमान कितनी दूर' इस कहानी में मंदा नाम की युवती ने। शादी से पहले ही उसने सुहाग रात के सपने संजोए थे। शादी के बाद उसके सुहाग रात के हसीन सपनों में फूलों से और रेशमी चादर से सजे खूबसूरत पलंग की ख्वाइश की थी। शादी के बाद मंदा अपने परिवार में व्यस्त रहती है, फिर भी पलंग पर सोने का सपना उसके मन से नहीं जाता। पलंग खरीदने के लिए वह पैसे भी जमा करती है, लेकिन उसके माँ की मौत, अपनी बेटियों की शादी, पुत्र की सगाई के ज़िम्मेदारियों में वह अपना सपना पूरा नहीं कर पाती। उसकी जेष्ठ पुत्री मंगला उसका सपना पूरा करती है, एक खूबसूरत पलंग उपहार में देकर। परन्तु पति भैरोसिंह उस पलंग को वापस भेज देते है, लेकिन मंगला भी उसे दोबारा भेज देती है। पुत्री के आग्रह की ख़ातिर भैरोसिंह पलंग को रख लेते है।

'घाटा' इस कहानी में आधुनिक युग में गिरते हुए पारिवारिक जीवन मूल्यों को दिखाया है। दोनों बहुएं शेअर मार्केट की चकाचौंध में इतनी मशगूल है कि उनके पास अपने माँ समान साँस की तरफ ध्यान देने के लिए भी समय ही नहीं रहता, उनके बीच प्रेम और स्नेह ग़ायब हो चुका है।

दोनों बहुएँ प्रीति और दीप्ति शुरू में शेयर मार्केट में मिली सफलता के बाद दिल खोल के शेयर खरीदने और बेचने का धंधा शुरू करती है। एक समय था जब दोनों बहुएँ सांस के आगे पीछे घुमती थी। दिन भर उनकी सेवा करने से नहीं थकती थी, लेकिन आज उसी साँस ने

कुछ माँगा तो काटने को दौड़ती है। घर में सब कुछ होते हुए भी उनको पेट भर खाना भी नहीं मिल पाता। आज के जागतिकीकरण के दौर में पैसे के लालच में मानवीय मूल्य गिरते नजर आते हैं। आज कल पैसे को इतना महत्व दिया जा रहा है कि अपना परिवार भी पराया होने लगा है।

'मिसफिट' यह कहानी जीवन के गिरे हुए मानवीय मूल्यों को दर्शाती है। इस कहानी की नायिका "अपूर्वा" अमेरिका में रहती है। पिताजी बुढापे की बजह से बिस्तर पर पड़े रहते हैं। उनके मन में जीवन जीने की कोई वजह नहीं रहती है। अपूर्वा यहाँ की जिंदगी की तुलना अमेरिका की जिंदगी से करती है। अमेरिका में लोग बूढ़े हो जाते हैं, हाथ पैर काँपते है फिर भी जीने की योजना बनाते हैं। अमेरिकावाली सोच लिए वह चाहती है, कि उसके बीमार पिताजी भी वैसेही जिए जैसे अमेरिका के बूढ़े लोग जीते हैं। इसलिए वह उनका पल पल अपमान करती रहती है। वह अपनी पिता के आत्मा को लहुलुहान करने की कोई कसर नहीं छोडती, यह सोचकर कि अपमान बोध से ही वह अपनी बीमारी भूल जाए।

कठोर व्यक्तित्व वाली अपूर्वा वापस अमेरिका चली जाती है, तो वह अपने पिता को भुला नहीं पाती, उसका किसी भी काम में मन नहीं लगता। इस कहानी में अपने परिवार को लेकर मानवीय मन का एक अनोखा चित्रण अपूर्वा के अन्दर दिखाई देता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि स्त्री के जीवन में आनेवाली अनेक समस्याओं का धैर्य से सामना करने वाले स्त्री पात्रों को पारिवारिक संबंधों के माध्यम से मधु कांकरिया ने अपने कहानियों के माध्यम से उजागर किया है।

३.३.३ प्रेम के सन्दर्भ में दृष्टिकोण

प्रेम हमारे जीवन का व्यापक और आधारभूत तत्व है। सृष्टि की रचना में प्रेम का महत्त्व अनन्यसाधारण है। साहित्य के क्षेत्र में भी प्रेम इस शब्द को विषद करने का प्रयास

हुआ है। हमारे वेदों और उपनिषदों में प्रेम तत्त्व का महत्त्व विषद किया है, प्रेम मानवीय जीवन का मूलाधार है। मानवीय जीवन में गरिमा कायम रखने में प्रेम का स्थान महत्वपूर्ण है।

प्रेम के रिश्ते मन की कोमल भावनाओं पर निर्भर करते हैं - "पुरुष का प्रेम पुरुष के जीवन का हिस्सा भर होता है। लेकिन स्त्री का तो यह सम्पूर्ण अस्तित्व ही है" [२६] ऊपर प्रस्तुत सिमोन द बोआर के वाक्य से यह बात स्पष्ट होती है कि, प्रेम शब्द का अर्थ स्त्री और पुरुष के लिए अलग- अलग होता है। विवाह होने से पहले स्त्री किसी से प्रेम करती है, तो दिल में उससे शादी करने की चाहत रखती है। लेकिन इसके विपरीत, पुरुष जब प्रेम करता है तब वह विवाह के बारे में नहीं सोचता - "पुरुष के लिए प्रेम किसी मापदंड में नहीं बंधता इससे स्पष्ट है, कि स्त्री एवं पुरुष की प्रेम विषयक भावनाओं का उद्वेलन समान नहीं है। सीधे शब्दों में कहा जाये, तो स्त्री के लिए प्रेम हृदय की अटल गहराइयों से जुडी अनुभूति होती है, तो पुरुष के लिए समय काटने का जरिया।" [२७]

हिंदी कहानी साहित्य की बात की जाए तो प्रेमचंद युग के कथाकारों ने अपने कथा साहित्य द्वारा प्रेम इस शब्द को आदर्श करने का प्रयास किया है। स्वतंत्रता के बाद जैसे जैसे सामाजिक जीवन में बदलाव आते चले गए, वैसे- वैसे स्वच्छंद प्रेम को खुले तौर पर अंकित किया जाने लगा। आज के आधुनिक युग में प्रेम इस शब्द का अर्थ ही बदल गया है। स्त्री हो या पुरुष दोनों ही प्रेम इस शब्द में व्यावसायिकता देखने लगे हैं। आज के युग में ज्यादातर किसी से जुड़कर रहने की भावना से कोई प्रेम करते नजर नहीं आता, ना ही किसी से टूटने का दुःख होता है। आज की लेखिकाओं की कहानियों में परंपरागत जीवन शैली का चित्रण नहीं होता है, बल्कि परिस्थितिजन्य सत्य का चित्रण देखने को मिलता है। प्रेम इस शब्द से जुड़े हुए समाज में प्रचलित मान्यताओं में जो स्वच्छंदता दिखाई देती है, उसका यथावत चित्रण आज की कहानियों में दिखाई देता है। मन्नू भंडारी प्रेम के सन्दर्भ में कहती है - "नारी प्रेम प्राप्त

करना ही नहीं देना भी चाहती है, बल्कि उसके मन में देने की अकुलता अधिक विद्यमान रहती है। [२८]

मधु कांकरियाआधुनिक युग की सवेंदनशील तथा चिन्तनशील लेखिका है। उनकी कहानियों में परंपरागत बंधी हुई जीवन शैली का चित्रण न रहते हुए परिस्थितिजन्य सत्य का चित्रण मिलता है -" मधुजी के कहानी साहित्य में प्रेम समर्पण से शुरू होकर पीड़ित होता हुआ जीवन के ठोस धरातल पर खड़ा होकर व्यावसायिक बन जाता है, जहाँ आकर्षण समाप्त हो भी जाए तो हार्दिकता बनी रहती है। इसके पश्चात अन्यत्र प्रेम संबंधों के प्रति परहेज नहीं रहता। कही मानसिक जुड़ाव है, कही शारीरिक घनिष्टता" [२९]

मधु कांकरिया की 'बीतते हुए' यह एक असफल प्रेम कहानी है, मणिदीपा और इंद्रजीत की। मणिदीपा और इंद्रजीत कॉलेज के सहपाठी थे। दोनों के विचारों में एकरूपता होने की बजह से वे एक दूसरे के करीब आ गये थे। इंद्रजीत जब मणि के सामने अपने प्यार का इज़हार करता है तो मणि उसे कहती है- " मुझे क्षमा करना इंद्रजीत, नारी झुके हुओं पर नहीं झुकती। उसे याचक नहीं चाहिए।"[३०] मणि के इन शब्दों से घायल इंद्रजीत जैसे तैसे एम. ए. पास होकर यूको बैंक में प्रोबेशनरी अफ़सर के लिए चुना जाता है।

कुछ समय बाद मणि की शादी हो जाती है। मणि के शादी में निमंत्रण होने पर भी इंद्रजीत नहीं जाता है। "मणि और उसका पति दोनों का स्वभाव विपरीत था। मणि की आत्मा यथार्थ को जानकर दुःखी हो जाती है। तब उसे याद आता है, किसी बेहतर की आशा में उसने इंद्रजीत को ठुकराया था, तो जीवन ने उसे ही ठुकरा दिया। [३१]

इसी विचार से पंद्रह वर्षों बाद जब मणि कलकत्ता आती है, तब इंद्रजीत से मिलना चाहती है। उसे बताना चाहती है, कि उसे खोने का क्या ग़म है। मिलने का दिन और वक्त तय होते हुए भी इंद्रजीत उसे मिलने नहीं आता तो उसके मन में विचार आता है, कभी मैंने तुम्हारा

अपमान किया था, आज तुमने। एक समय मणि के लिए अपना सबकुछ छोड़ने के लिए तैयार इंद्रजीत के पास आज मणि के लिए आधा घंटा भी निकालना मुश्किल था। इंद्रजीत को न मिलने से मणि का मोहभंग हो जाता है। लेकिन दूसरे दिन जब मणि ऑफ़िस में पहुँचती है, तब उसे पता चलता है, कि उसके जाने के बाद एक साहब उसे मिलने आए थे और अपना कार्ड देकर चले गए थे। कार्ड देखते ही मणि के- "मन-प्राण-आत्मा जैसे सब आँखों में सिमट आए.....। एक अलग किस्म की मुक्ति, तृप्त, एवं आत्मिक पवित्रता की अनुभूति अंग-अंग में दौड़ गयी। जैसे वह कार्ड नहीं कोई संजीवनी हो जिसने जीने के ख़्वाहिश को यकायक कई गुना बढ़ा दिया था"।[३२]

'एक रुकी हुई स्त्री' कहानी में मेडिकल कॉलेज में पढ़नेवाली युवती मानसी, सरबजीत से प्रेम करती है और सालों अपने प्यार को पाने के इंतजार में गुजार देती हैं। मेडिकल की पढ़ाई करते समय मानसी और सरबजीत एक दूसरे से प्यार करने लगते हैं, लेकिन दोनों का प्रेम अलग किस्म का था। मानसी पढ़ाई परीक्षा छोड़कर केवल सरबजीत पर जान छिड़कती है, लेकिन सरबजीत बड़ा महत्वाकांक्षी है। वह कार्डिओ थैरेसिस थेरपिस्ट बनना चाहता है -"नई उम्र की सुगंध की तरह महकता वह समय था जब लड़के और लड़की दोनों अपने- अपने सौंदर्य की पराकाष्ठा पर खड़े अपने शरीर को ही जमाने की सबसे बड़ी नियामात समझते थे। जब सरबजीत ने मानसी को पहली बार कॉलेज के बाहर मिलने बुलाया तब मानसी का चेहरा लाल चुनरी बन गया था। - "मंद मंद मुस्कुराती, मन ही मन रिझाती वह घंटो ड्रेसिंग टेबुल के सामने खड़ी अपने गेहुआं रंगत के चेहरे पर "फेयर एंड लवली" पोतती रहती। अपनी प्रतिभा और व्यक्तित्व के बजाय उसे अपना शरीर ही जमाने की सबसे बड़ी नियामात लगता, जिसे वह इंच-इंच सजाकर रखती। और अपने शारीर के कुछ प्राकृतिक कमियों को अपनी मेहनत और कौशल से पूरा करने में लगी रहती"। [३३]

सरबजीत की महत्वकांक्षा मानसी के प्यार को ठुकरा देती है। मानसी एक होनहार, होशियार और प्रतिभा संपन्न होने के बावजूद प्यार में ठेस पहुचने पर टूट जाती है और अपने जीवन को सही दिशा नहीं दे पाती। अपने प्यार सरबजीत को पाने के लिए वह सत्रह वर्षों तक रुकी हुई है, जिसे उसे भुलाने में पंद्रह मिनिट भी न लगे।

'चिड़िया ऐसे मरती है' कहानी मारवाड़ी परिवार के एक विजय नाम के युवक की है, उच्चशिक्षित होने के बावजूद नौकरी न मिलने के कारण वह अपनी जिंदगी को बेकार समझने लगा था। उसके सभी दोस्त काम धंधे कर रहे थे। उसके बेकारी के चलते घरवालों ने भी उससे बात करना छोड़ दिया था। उसे लगने लगा था, कि वह इस सृष्टि की सबसे निकृष्ट और अधूरी रचना है। वह एक कीड़ा है, धीरे धीरे रेंगने वाला। पराश्रित, पराजीवी।

कोलकाता के नेशनल लाइब्रेरी में अपने बेकारी के दिनों में विजय की मुलाकात रेशमा से होती है। दोनों किताबों के प्रेमी। एक हिंदी तो दूसरी बंगाली। बेकार निराश युवक विजय को रेशमा अपने भतीजों को पढ़ाने का काम देती हैं। उसकी हताशा को वह पीछे धकेलती है। मिल्टन की कविता- "दे आल्सो सर्व हु वेट एंड स्टैंड (वे भी सर्व करते है जो सिर्फ खड़े होकर प्रतीक्षा कर रहे होते है)"[३४] सुनाकर उसका संबल बढाती है।

जब सब कुछ भव्य दिव्य सा आगे बढ़ रहा था, तब एक शाम रेशमा ने उसे आग्रह किया कि उसे भगाकर ले जाए, क्योंकि मामला अब प्राइवेट से पब्लिक हो गया था। उनकी प्रेम की खुशबु रेशमा के पिता तक पहुँची थी और वह चाहते थे कि रेशमा किसी बंगाली लड़के के साथ ब्याह करे। विजय ११० वर्गफीट के सिलन भरे घर में रेशमा को ले जाना नहीं चाहता था। रेशमा तो उसके साथ भाग जाने के लिए तैयार थी, लेकिन विजय उससे छ महीने का समय मांगता हैं।

रेशमा की शादी के बाद विजय की माँ उसे लाख समझाती है, पर वह शादी के लिए राजी नहीं होता। लेकिन विजय को सच्चाई का पता तब चलता है, जब एक दिन रेशमा विनय को मेट्रो सिनेमा के हॉल के बस स्टॉप पर मिली। विजय को लगा कि उसके मन में वही प्रेम, वही जादू है, लेकिन वह गलत था। रेशमा उससे बात करते करते बच्चों के रेडीमेड कपड़ों की दुकान में घुसी जहाँ कपड़ों पर भारी डिस्काउंट था। विजय को लगा जैसे कहानी के जादूगरनी ने एकाएक रूप बदल दिया है। विजय तड़प उठा जैसे कोई तेज धार का चाकू उसके छाती में धस गया हो। रेशमा तल्लीन थी बाबासुटों को देखने में और साथ ही साथ पूरी तरह निरपेक्ष थी विजय के उपस्थिति से- "न अतीत की कोई चाँदनी छिटकी हुई थी उसके चेहरे पर और न ही बरसों बाद हुए मिलन की कोई उत्तेजना, न लगन और रोमांच ही था। शायद हर सत्य अपने विरोधी सत्य में ही दम तोड़ता है।[३५]

'विरासत' यह एक दीपा नाम की युवती की कहानी है, जिसने देखे हुए स्वप्न पुरे होने से पहले ही टूट जाते है। बढती उम्र में उसके जीवन में अनचाहे प्यार ने दस्तक दी। वह इस प्रेम का इनकार न कर पायी। कुलभूषण नाम का शादी-शुदा मर्द दीपा के लिए उसका जीवन बन गया था। वह जीवन में प्रेम को सबसे ऊपर मानती थी। ऐसे ही एक रात दोनों के मन में सागर की खौलती हुयी लहरे उठी। उस प्रेम की पहली छुहन ने उसकी जिंदगी बदल दी थी। वह एकाएक युवती से स्वप्निल औरत बन गयी थी। उसे लगने लगा था प्रेम जीवन का सबसे ऊपरी मुकाम है जो आज उसने हासिल कर लिया था। प्रेम उसके लिए ऑक्सीजन बन गया था। पर धीरे-धीरे उसे इस प्रेम का खोकलापन नजर आने लगा दीपा ने बहुत कोशिश की अपने प्यार कुलभूषण से न बिछड़ने की पर वह उसकी पत्नी और पुत्रियों के पास लौट जाता है।

इस घटना से दीपा की मानसिक स्थिति बिघड जाती है। उसकी जिंदगी मानो बंजर रेगिस्तान बन गयी जहाँ पर दूर दूर तक कोई नहीं था। दीपा को इस मानसिक बीमारी से निकलने के लिए दीपा के भाई सुशिल अपार प्रेम के साथ अपनी पाँच महीने की पुत्री नन्ही को दीपा के गोद में रख देता है।

उस बच्ची की बजह से देखते ही देखते दीपा का जीवन फिर से मुस्कुराने लगा। उसका नाम दीपा ने आभा रख लिया। जैसे जैसे आभा बड़ी होती गयी दीपा ने उसे टी.वी. सिनेमा से दूर रखा ताकि प्यार का एहसास उसके मन को छुए ना। दीपा कभी नहीं चाहती थी, कि उसकी विरासत उसकी बेटी को मिले।

३ .३ .४. स्त्री अस्मिता एवं संघर्ष क्षमता

आज का आधुनिक समाज अनेकायामी परिवर्तनों की देन है। इन परिवर्तनों के कड़ियों में सबसे प्रभावी दिखनेवाला परिवर्तन स्त्रियों से सम्बद्ध रहा है। देखा जाये तो स्त्री में उत्पन्न हुई जागृती और सशक्तिकरण वैश्विक धरातल पर हुआ है। महिला कहानीकारों ने इन्ही बदलाओं को अपनी कहानियों के जरिये परखने का प्रयास किया है। स्त्री सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता पाने के लिए संघर्ष करती है। लेकिन कडा संघर्ष करने के बावजूद भी उसे सफलता नहीं मिलती। अपनी संघर्ष का फल पराजितता में पाकर कई स्त्रियाँ घुटने टेंक देती है। जिंदगी से हारने वाली स्त्री कभी भी अपनी अस्मिता को प्राप्त नहीं कर सकती है।

अस्तित्व के लिए संघर्ष करती तथा समाज और पुरुषों की यातनाएँ झेलती हुई स्त्री के चित्रण के साथ -साथ पुरुष के समकक्ष अपनी बराबरी माँगती, अपने ऊपर हुए अन्याय का बदला लेती तथा पुरुष एकाधिकारों में अपनी दखल दर्ज कराती स्त्री नजर आती हैं।

आज के युग में स्त्री निरंतर संघर्ष करते हुए अपना मुकाम पाने की ओर बढती नजर आती है। वह अपने कदम पर खड़ी रहकर पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में अपने अस्तित्व की रक्षा

करती नजर आती हैं। उनके लिए अब ऐसा कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रह गया है जहाँ उन्होंने अपना वजूद स्थापित किया न हो, हर एक क्षेत्र में उन्होंने प्रवेश पाया है। अथक परिश्रम और आगे बढ़ने की चाह में वह अथक संघर्ष करते हुए अपनी सफलता पाती है। स्त्री की सफलता में आर्थिक स्वावलंबन महत्वपूर्ण है । आज की शिक्षित एवं आधुनिक स्त्री अपना स्वतंत्र वजूद बनाए रखी है और वही वजूद और अपनी अस्मिता कायम रखने के लिए संघर्ष करने से पीछे नहीं हटती । संघर्ष के माध्यम से ही स्त्री ने अपने आप को अधिकारों के प्रति सचेत बनाया हैं।

अस्मिता का अर्थ है "स्व" की पहचान। आदि काल से नारी , पुरुष की इच्छानुसार जीवन - यापन करती आई है। उसके व्यक्तित्व को सार्थक व्यक्तिव नहीं माना गया, लेकिन आज के युग में नई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक मान्यताओं के कारण काफी बदलाव आये हैं। स्त्री अपनी अस्मिता को पहचानती नजर आने लगी है। उसकी इस खोज में जागरूकता और सजगता के साथ-साथ स्वयं की मुक्ति के लिए किए जाने वाले विद्रोह भी नजर आने लगे हैं। रमणिका गुप्ता स्त्री अस्मिता को परिभाषित करते हुए कहती है - "आखिर स्त्री अस्मिता है क्या? दरअसल यह पुरुष के समान स्त्री का समान अधिकार, स्त्री के प्रति विवेकमूलक दृष्टिकोण तथा स्त्री द्वारा पुरुष के वर्चस्व का प्रतिरोध है। औरत का केवल स्वतन्त्र होकर निर्णय ले सकना या आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाना ही उसकी अस्मिता नहीं है। सही मायने में स्त्री अस्मिता का अर्थ होगा स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण और मानसिकता में बदलाव जिसमें स्त्री का खुद का दृष्टिकोण भी शामिल हो।" [३६]

भारतीय समाज में आधुनिक चेतना की वजह से स्त्री अस्मिता का प्रश्न खड़ा हो चूका है। आधुनिक स्त्री को जब अपनी आज की भारतीय परंपरा में अपना स्थान नजर नहीं आता, तब वह अपनी परंपरा की तलाश करती हुई इतिहास में लौटती है, जहाँ स्त्रियों को अधिकार

दिए गए थे और उसी ऐतिहासिकता के आधार पर अपने को स्थापित कराना चाहती है। इसी बजह से समाज में रह रहे पुरुषवर्ग को यह समझना ही होगा कि -"स्त्री समानता की लड़ाई बुनियादी लड़ाई है। इससे उसे स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता एवं अस्मिता की पहचान मिलेगी। इस संघर्ष के प्रति तदर्थभाव, दयाभाव या सहानुभूतिभाव, स्त्री के संघर्ष एवं अवदान को कम करेगा। स्त्री की समानता के संघर्ष के प्रति दया या सहानुभूति की जरूरत नहीं है, बल्कि यह महसूस करने की जरूरत है कि यह तो उसका अधिकार था जो उसे दिया जाना चाहिए।" [३७]

मधु जी के कहानी साहित्य में स्त्री अस्मिता एवं स्त्री संघर्ष की अभिव्यक्ति नजर आती है। उनके कहानी के नारी पात्र प्रतिकार करते नजर आते हैं।

'चूहे को चूहा ही रहने दो' कहानी में युवती अपने नौ वर्षीय पुत्र उमंग के साथ गंगटोक आयी है। अचानक निकले काम से पति आ नहीं पाते लेकिन साथ में अपने ऑफ़िस का कर्मचारी भेजते है, लेकिन युवती उसे वापस भेजती है। गंगटोक के इस यात्रा के दौरान युवती की एक युवक के साथ मुलाकात होती है।

युवती अपने पति से प्रतिशोध लेना चाहती थी। उसके पति ने उसके ऊपर पाबंदियाँ डाली थी। यहाँ तक कि छोटे भाई के मित्र के साथ हाथ मिलाने पर उसके हाथों को दीवार पर रगड़ दिया था। जिससे उसका स्पर्श मिट जाए। वह हम उम्र इंसान से बात करने तक के लिए तरस जाती थी। इसलिए स्वयं को एक सीमा तक किसी गैर मर्द के हवाले करके अपने अपमान का बदला लेना चाहती थी

इसी प्रतिशोध के चलते एक रात युवक को युवती से आमंत्रण मिलता है, आवेग, मादकता, उजास, उम्मीद, स्वप्न और यौवन की उच्छृंखलता के सौ-सौ सूर्य जगमगाने लगते है, तल्लीनता और तन्मयता के खामोश क्षण स्वप्न और यथार्थ के समागम के क्षण जब युवक चरमोत्कर्ष की और अग्रसर होता है, तभी एक झटके से युवती स्वयं को उस ऐन्द्रिक जाल से

मुक्त कर लेती है। अपमानित युवक से पूछे जाने पर युवती कहती है कि 'इससे आगे बढ़ना उसके एजेंडा में नहीं था। आज की रात उसके प्रतिशोध की रात थी।

युवक समझ जाता है, कि अब उसे चले जाना चाहिए क्योंकि युवती का उद्देश्य पूर्ण हो चुका था। जाते जाते उसने पूछा "क्या तुम अपने पति को अपने प्रतिशोध के बारे में बताओगी? युवती विद्रूपता से हँसकर कह देती है - "शायद हा, शायद नहीं .. पर यदि नहीं बताया तो क्या हर्ज, लेट माउस बी अ माउस (चूहे को चूहा रहने दो)। [३८]

मधुजी पर आलोचकों ने बहुत बार यह आरोप लगाए है कि वह स्त्री विमर्श की लेखिका कहलाने से बचती है, लेकिन इस कहानी में वे स्त्री विमर्श की पैरवी करते नजर आती है। यहाँ युवती के प्रतिशोध में 'स्त्री विमर्श' दृष्टिगोचर होता है। उसका यही प्रतिशोध उसे कही न कही उसका आत्मसन्मान लौटा देता है।

'कुल्ला' कहानी स्त्री विमर्श को दर्शाती है। इस कहानी की नायिका प्रमिला की शादी हो जाती है। शादी के बाद प्रमिला ससुराल में अपने पति को अपना सारा प्यार देना चाहती है। उसका प्रेम मीराबाई और मधुमती के बीच के चीज जैसा ही कुछ था। वह दौड़- दौड़ कर पति की आवभगत करती रहती। एक सुबह उसने सोचा कि पति के लिए लजीज खाना बना दिया जाए जिससे कि पति खुश हो जाए। इन्ही विचारों में डूबी वह रसोई में अपने पति के लिए कुछ पका रही थी, कि उसके पति ने टूथ पेस्ट के झाग का कुल्ला उसके पीठ पर मारा। झूठे कुल्ले से प्रमिला खौल उठती है। "म्यान से निकली नंगी तलवार की तरह वह लहराई। अपमान से थरथराई और अभी-अभी पकड़ी गयी मछली की तरह छटपटाइ "इश्य... ! किस कूड़ेदान की अर्चना करती रही वह भी। कहाँ कंचन सी उसकी काया और कहाँ यह झूठा कुल्ला।[३९]

प्रमिला की साँस उसे समझाती है, यह झूठा कुल्ला फेकने की आदत उसने पति ने उसके बाप से उठाई है, वह भी इसी तरह झूठा कुल्ला फेका करता था। धीरे-धीरे उसे भी इस

झूठे कुल्ले की आदत हो जाएगी। लेकिन प्रमिला का ध्यान साँस के समझाने पर नहीं रहता है। वह कुल्ला उसे दुनिया के सारे पुरुषों की संवेदनहीनता और क्रूरता का प्रतीक दिखाई देता है। स्त्री की चेतना तथा अस्मिता पर चोंच मारती पुरुषों को वह सबक सिखाना चाहती है, क्योंकि वह जानती है, कि जैसे जिंदगी का जबाब जिंदगी है, वैसे ही कुल्ले का जबाब कुल्ला है।

"लेडी बॉस" कहानी की नायिका ने बंगलोर में कंप्यूटर साइंस करने के बाद अमेरिका में मास्टर डिग्री हासिल की थी, कम उम्र में ही उसने अपना खुदकी कंपनी स्थापित कर तरक्की की बुलंदियों को छु लिया था, जब इंटरव्यू लेनेवाली रिपोर्टर उसे सवाल पूछती है, कि आपके कोई बच्चे हैं, तब वह कहती "माय कंपनी इज़ माय चाइल्ड" माँ को जिस प्रकार अपने बढ़ते बच्चे को देखकर ख़ुशी होती है, उसी प्रकार अपने कंपनी को बढ़ता देखकर उसे ख़ुशी मिलती है।

कंपनी को ग्लोबल बनाना मैडम का सपना था, इसी कारण वह मॉस्को में स्थित पति के कंसल्टेंसी का फायदा उठाकर, जापान, जर्मनी, और मॉस्को की प्रतिष्ठित कंपनियों के सॉफ्टवेयर के आर्डर लेती है। जो काम पुरुषों के लिए करने मुश्किल थे वह काम वह खुद कर रही थी क्योंकि उसकी आकांक्षा थी, कि कंपनी को एक ऊँचे मुकाम तक पहुचाया जाए । अपना कर्तुत्व दिखाने के लिए उसने एक कठिनतम कार्य हाथ में लिया था भौतिक तकनीक का "इंटेलिजेंट कार्ड तकनीक" पोस्ट ऑफिस के अकाउंट सिस्टम को नियंत्रित करने वाला न्यूनतम लागत वाला यह प्रोग्राम था। इस शोध पर मैडम की सारी आकांक्षाएं टिकी थी, क्योंकि उन्हें विश्वास था, कि जल्द ही वह भारत के कंप्यूटर क्षेत्र का सार्वजनिक चेहरा बनेगी। अपनी महत्वाकांक्षा द्वारा अपनी अस्मिता को स्थापित करनेवाली स्त्री का चित्रण इस कहानी में मिलता है।

'महाबली का पतन' कहानी में रिज़र्व बैंक के गवर्नर कि बेटी जया आशिष दा के प्रेम में सब कुछ करने के लिए तैयार रहती है। नक्सलवादी आन्दोलन से जुड़े आशिष छात्र राजनीति करने के लिए आशिष दा बी. एस. सी. करके एम्. एस. सी. करने की बजाय उसी कॉलेज में दूसरे विषय में फिर से बी. एस. सी. करने लगे थे।

जया के पिता अपनी पुत्री को लेकर काफी चिंतित थे। वह चाहते थे, कि जया स्टेट्स के किसी लड़के से ब्याह कर ग्रीन कार्ड होल्डर बन जाए लेकिन समान उद्देश्य, समान ध्येय के साथ जीने के लिए जया, आशिष दा से शादी कर लेती है। शादी के बाद कामरेड बनकर शेल्टर हाउस चलाती है। पुलिस भी नक्सलवादियों के पीछे लगी होती हैं और ऐसे ही दिनों में आशिष दा को गिरफ्तार किया जाता है। आशिष दा के गिरफ्तार होने के बाद पुत्री "रचना" का जन्म होता है।

बीस वर्ष बाद लेखिका की मुलाकात रचना से होती है, तब वह उसे पूछती है कि क्या वह आशिष दा की बेटी है। रचना जबाब देना टालती है और कहती है कि वह जया की बेटी है। लेखिका जब जया से मिलती है तब देखती है कि जया के घर में आशिष दा का नामोनिशान नहीं है। वह जया से जानती है, आशिष दा ने अपने से आधी उम्र की लड़की के साथ दूसरी शादी की थी।

इस कहानी में रचना और जया दोनों माँ बेटियाँ नारी अस्मिता का ज्वलंत उदहारण है, अपने भीतर की अस्मिता के कारण ही रचना अपने आपको केवल जया कि बेटी मानती है।

'फैलाव' इस कहानी की नायिका श्रुति के माध्यम से लेखिका ने स्त्री अस्मिता को दर्शाया है। श्रुति अपने पति के ऑफिस में अकाउंट का काम संभालने लगती है। उसका पति क्षितिज भी खुश है क्योंकि बिना तनखा दिए उसे एक केशियर मिल गया है। एक रात दोनों में झगडा होता हैं। क्षितिज श्रुति का ऑफिस स्टाफ के सामने अपमान करता है। ऑफिस के इस

घटना से श्रुति के मन में वैराग के भाव आने लगे। उसे लगने लगता है कि वह जिंदगी से हार गयी है। पर फिर वह अपने आप को संभालती है। सोचती है कि -'उसने एक प्रयास किया था अपने जिंदगी की सिमित परिधि को फ़ैलाने का, पहले उसकी जिंदगी में सिर्फ बिस्तर था..... फिर आया दफ्तर और अब वह मुकाम कि बिस्तर और दफ्तर गड्डमड्ड हो गए है।[४०] अपने जिंदगी को विस्तृत फ़ैलाने के लिए उसके पास बहुत अवसर है। यह सोचकर सारे अवसाद और हताशा को झाड अपने जिंदगी को और विस्तृत बनाने के लिए श्रुति निकल पड़ती है अपने फैलाव भरे जिंदगी को और विस्तृत फैलाने को।

'बस दो चम्मच औरत' कहानी में देवर अपने फ़ौजी भाई के मृत्यु के बाद परिवार की ज़िम्मेदारी अपने कंधो पर लेता है। वह भाई के शहीद होने के बाद शपथ लेता है कि भाई के बेटे नितिन को जब तक उसके पिता जैसा मेजर नहीं बनाता चैन से सोयेगा नहीं, नहीं किसी औरत को पास आने देगा।

जिंदगी के आखिरी क्षणों में उसकी डायरी उसके भौजि के हाथ लगती है। जिस औरत को देवर ने उम्र भर दूर रखा, जिंदगी के अंतिम क्षणों में वही औरत आज लहकती लपक बन उसे लील रही थी। -"मुझे भोगो, मुझे जानो हे ब्रम्हचारी। उफ़ अब यह फीकी चाय उससे पी नहीं जाती, उसे मिठास चाहिए बस दो चम्मच।" [४१]

देवर की डायरी के पन्नों को पढने के बाद भौजी की बीमार देवर के प्रति राय बदलती है। उसके मेजर पति ने अपनी पोस्टिंग राष्ट्रिय राइफल्स में मांगी थी। शादी के तुरंत बाद वह चला गया। कश्मीर में आतंकवादियों के साथ हुए मुठभेड़ के दौरान उसके पति अपने साथियों के साथ मारे जाते है।

देवर की मेडिकल रिपोर्ट बता रही थी, कि वह कुछ दिनों का मेहमान है। देवर ने अपनी सारी सेविंग सर्टिफ़िकेट और एफ. डि. भौजी को थमाए। वह सिसक पड़ी, मरने के बाद का

इंतज़ाम भी कर दिया था देवर ने। देवर की डायरी पढने के बाद नायिका को लगा कि शहीद उसके पति नहीं बल्कि शहीद तो उसका देवर हुआ है।

दूसरे दिन देवर को खुद स्पंज करने लगती है। उसे यह अहसास हुआ कि देवर शांति से मर नहीं पायेंगे, क्योंकि अतृप्त कामनाओं के साथ मृत्यु मुक्ति नहीं देती, सिर्फ देह का अंत करती है। उसने निश्चय किया कि देवर शान्ति से मृत्यु को प्राप्त हो, वह करेगी सहायता उसे। उसने खुद को दर्पण में देखा। "पिछले छब्बीस सालों में शायद पहली बार देखा था खुद को इतने गौर से। उसके चेहरे पर उदास हँसी बिखर गयी, वह अभी भी कामचलाऊ थी। जवान थी... [४२] इस कहानी में नैतिकता और अनैतिकता के बीच में स्त्री के मन का आन्दोलन नजर आता है। अपने अस्मिता को कायम रखते हुए अपने देवर की आखिरी इच्छा पूर्ण करने कि कोशिश नायिका करती है ताकि देवर शांति से मृत्यु को प्राप्त हो।

'फैसला फिर से' इस कहानी पैसष्ठ वर्षीय महाश्वेता देवी के संघर्ष की कहानी है। जिस फ्लैट में वह तीस वर्षों से रह रही थी, उस फ्लैट को खाली करने के लिए फ्लैट के मालिक और प्रतिपक्षी हरिनारायण घोष ने न्यायलय में दावा ठोका है। कानून की विशेष धारा "निजी आवश्यकता" के आधार पर महाश्वेता देवी से फ्लैट खाली कराने के लिए उसने दावा ठोका था। मुकदमा जब कोर्ट में चल रहा था, तब मकान मालिक ने महाश्वेता देवी को डराया, धमकाया, उसके पीछे गुंडे लगवाए, उसे मार डालने तक की धमकी दे दी। आधी रात को बिजली काटने लगा यहाँ तक कि महाश्वेता देवी के यहाँ काम करने वाली बाई को भी डरा-धमका कर भगा दिया।

महाश्वेता देवी के वकील तपन दा ज्ञान, अनुभव, एवं तर्क शक्ति से भरे होकर भी झूठ का सहारा न लेने की वजह से अपने से कम उम्र, अनुभवहीन प्रतिपक्षी वकील सपन चौधरी से परास्त होते है। वह झूठ को सच बोलने की कला का इस्तेमाल करके झूठे भाड़े के बिलों को

दिखा कर यह साबित करता है कि हरिनारायण के दोनों बेटों के पास रहने के लिए मकान नहीं है और वह भाड़े के घर में रहते है। इसी बात के आधार पर महाश्वेता देवी मुकदमा हार जाती है।

फिर भी प्रशंसकों की बधाईयाँ बटोरते वकील चौधरी को महाश्वेता देवी ने इस अंदाज में बधाई दी कि उसकी विवेक बुद्धि जाग उठी, वह कहती है कि "शाबास पुत्र ! जिस तर्क एवं युक्ति के करिश्मे से तुमने कानून की धज्जियाँ उड़ाकर सच को झूठ कर दिखाया वह अदभुत था। मेरा भी एक पुत्र था जो कानून की पढ़ाई करते समय गुजर गया था। आज सोचती हूँ कि अच्छा ही हुआ कि वह मर गया, नहीं तो क्या पता उसकी आत्मा भी तुम्हारी आत्मा की तरह फीस के मोटी रकम पाकर बिक जाती और वह भी जाने कितने निःसहाय एवं विवश वृद्धाओं को कानून को ठेंगा दिखाकर घर से बेघर कर देता।[४३]

इस कहानी का अंत में केस को जीते हुए वकील के हृदय में परिवर्तन होता है और वह महाश्वेता देवी से माफ़ी माँगने के लिए घर से निकल पड़ता है।

'पोलिथिन में पृथ्वी' कहानी की युवती अपनी पति ने जबरदस्ती से करवाए हुए एबॉर्शन से मानसिक बिमारी का शिकार होती है। उसे परमानंद मेंटल हॉस्पिटल, फीमेल वार्ड नंबर १०२ में भर्ती किया जाता है। डॉ. सौमित्र को वह अपने मानसिक बीमारी के कारण सारा सत्य बता देती है। उसका पति आश्विन नहीं चाहता था, कि कोई स्त्री संतान पैदा हो। लेकिन युवती के जिद पर उसने कहाँ, लड़का होगा तो रख लेंगे नहीं तो गिरा देंगे। सोनोग्राफी में पता चला कि स्त्री भ्रूण है। युवती के न चाहते हुए भी आश्विन ने उसे गर्भपात के लिए बाध्य किया।

युवती की कहानी सुनते ही डॉ. सौमित्र के संवेदना के तार अनायस ही युवती की संवेदना के तारों से जुड़ गए। भ्रूण रक्षा उनके जीवन का एक मात्र मिशन बन गया। वे घर-घर,

क्लिनिक-क्लिनिक जाकर भ्रूण हत्या के विरुद्ध प्रचार करने लगे। युवती अपना दुःख भुलाकर इन कामों में उनकी मदत करने लगी।

जिस घटना से उसका पूरा जीवन नष्ट होने को था,, उसी घटना को रोकने के लिए वह निकल पड़ती है वह लोगों को बताना चाहती है कि औरत हो या धरती जब भी उसकी कोख में छेड़खानी की जाएगी नतीजे भयंकर निकलेंगे

'चिड़िया ऐसे जीती है' कहानी में अखिलेश और आकांक्षा शादी के कई साल बाद भी निस्संतान है। वे यह सोचकर खुदको तसल्ली देते रहते हैं कि जिंदगी में सबको सब कुछ नहीं मिलता।

दोनों नेपाल घुमने जाते हैं । रामश्रेष्ठ, नाम का एक अधेड़ पुरुष आकांक्षा को घूरता रहता है। जहाँ आकांक्षा जाती है, उसके पीछे अपनी कामुकता भरी नजरे गडाए रहता है। आकांक्षा जब विमान से हिमालय के सौंदर्य का मजा ले रही थी, तब उसके सामने बैठा रामश्रेष्ठ शिखरों की चांदी न देख आकांक्षा को दीदे फाड़कर ताके जा रहा था। एक रात अखिलेश की तबियत एकाएक खराब हो गई और उसे खून की उलटी हो गयी। आकांक्षा घबरा गयी, होटल का मैनेजर घर जा चुका था, आस-पास कोई डॉक्टर भी नहीं था। आकांक्षा और कोई पर्याय न पाकर वह रामश्रेष्ठ से मदत मांगती है। अपनी वासना की इच्छापूर्ती के चलते वह उसे मदत करने के लिए राजी हो जाता है ।

अखिलेश को ब्रेन हेमरेज हुआ था। उसे "ड्रीमलैंड नर्सिंग होम" में लाया गया। वहाँ के न्यूरोलोजिस्ट डॉ. प्रदीप घिमानी ने बताया, यदि थोड़ी देर हो जाती तो केस खराब हो सकता था। डॉक्टर के कहने पर आकांक्षा और रामश्रेष्ठ वापस होटल लौट आते है। रास्ते में रामश्रेष्ठ ने आकांक्षा के करीब आने की भरकसक कोशिश करता है। होटल पहुचते ही रामश्रेष्ठ की वासना जाग जाती है, उसे लगने लगा जो कुछ भी करना है उसे आज ही करना है। आकांक्षा

उसके मन की बात पढ़ लेती है। जिस पति से वह बे इंतहा प्यार करती है, उसी पति को बचाने वाले इंसान की कामेच्छा पूर्ण करने का वह फैसला लेती है। अपने सौभाग्य को बचाने वाले रामश्रेष्ठ के सामने प्रस्तुत करने के लिए तैयार होती है - "मै नहीं जानती पाप-पुण्य, नैतिकता-अनैतिकता, धर्म- अधर्म इन सभी सवालों को मैंने अफीम पिलाकर सुला दिया है। इसे तुम क्षणों का आवेग भी मत समझना और नहीं मेरे सतीत्व की चिंता करना, क्योंकि जो तुम तक जाएगा वह मेरा सिर्फ मेरा सरप्लस रहेगा, मेरा मै मेरे पास सुरक्षित रहेगा। [४४]

आकांक्षा की बाते सुनकर रामश्रेष्ठ महालाज्जित हुआ। उसकी वासना निढाल हो जाती है। वह आकांक्षा से आँखे मिलाये बिना वहाँ से तेजी से बाहर निकल जाता है। अपनी अस्मिता को कायम रखते हुए अस्मिता कठिनतम परिस्थिति से भी मार्ग निकालती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते है, कि मधु कांकरिया की कहानियों में मानवी जीवन के अलग अलग सन्दर्भ का चित्रण नजर आता है। उन्होंने स्त्री शोषण का चित्रण, पारिवारिक जीवन, प्रेम के सन्दर्भ में दृष्टिकोण, स्त्री अस्मिता एवं संघर्ष क्षमता इन अवधारणाओं के आधार पर अपने कहानियों से स्त्री विमर्श को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

स्त्री का शोषण जो रूढिगत परम्पराए, पुरुषी विचार के बदौलत चला आ रहा है, वही शोषण का प्रतिबिम्ब उनकी कहानियों में नजर आता हैं। उनकी कहानियों के स्त्री पात्र शोषण के खिलाफ झुझते नजर आते हैं तथा अपनी अस्मिता पाने के लिए संघर्ष करते नजर आते हैं।

स्त्री शोषण के साथ साथ अपने परिवार के लिए जीते स्त्री पात्र उनके कहानी में नजर आते हैं। इन पात्रों में पारिवारिक संबंधों में जहाँ कडवाहट नजर आती है, वही कभी- कभी मिठास भी दिखाई देती है। पति-पत्नी, सांस- बहु, पिता- पुत्री, माँ- बेटा जैसे पारिवारिक सम्बन्ध इनकी कहानियों से उजागर होते हैं।

मधुजी के कहानी साहित्य के पात्रों का जीवन प्रेम समर्पण से शुरू होकर पीड़ित होता हुआ जीवन के ठोस धरातल पर खड़ा होकर व्यावसायिक बन जाता है। इन कहानियों में कही मानसिक जुड़ाव दिखाई देता है, तो कही शारीरिक घनिष्टता। कही-कही अपनी महत्वाकांक्षा को पाने की चाह में टूटते प्रेम संबंधों का चित्रण भी दिखाई देता है।

इस प्रकार मधुजी कि कहानियों में स्त्री विमर्श पर आधारित विविध आयाम हम देख सकते हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों को मानसिक धरातल पर छु लेती है तथा सोचने पर मजबूर कर विद्रोह का रास्ता दिखाती है। स्त्री विमर्श को मद्दे नजर रखते हुए उनकी कहानियों की विशेषता यह है कि पाठक कहानी में चित्रित स्त्री पात्र से सीधा जुड़ जाता है। मानो वह स्त्री पात्र उसके असल जिंदगी का कोई रिश्तेदार हो।

तृतीय अध्याय - सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१.	जोसफ टी शिप्ले	द क्वेस्ट फॉर लिटरेचर	३९९
२.	बाबू गुलाब राय	काव्य के रूप	१९५
3.	मुंशी प्रेमचंद	कुछ विचार	३१
४.	इलाचंद्र जोशी	कहानी कला सिद्धांत और विकास	१०
५.	देवीशंकर अवस्थी	साहित्य विधाओं की प्रकृति	१४५
६.	डॉ. शुक्ल, डॉ. त्रिपाठी	कहानी कला सिद्धांत और विकास	२६
७.	वही	वही	८४
८.	राजेंद्र यादव	कहानी स्वरुप और संवेदना	२५
९.	डॉ. नगेन्द्र	हिंदी साहित्य का इतिहास	५२३
१०.	वही	वही	६९३
११.	राजेन्द्रबाला घोष		१
१२.	राकेश कुमार	नारीवादी विमर्श	६०
१३.	जगदीशचंद्र चतुर्वेदी	स्त्री वादी साहित्य विमर्श	१३१
१४.	वही	वही	१४४
१५.	स्त्रीयों को खिलौना न समझो- २००८	स्वाधीनता संग्राम, हिंदी प्रेस और स्त्री का वैकल्पिक क्षेत्र	
१६.	नमिता सिंह	जंगल गाथा- गलत नंबर का जूता	१२३
१७.	उषा महाजन	शोषित और अन्य कहानियाँ	५८
१८	केतकी	चिन्हार	१३२
१९ .	डॉ सुरेखा सिन्हा	उस धुप की छाह	९९

२०.	मधु कांकरिया	दाखिला- बीतते हुए	१४५
२१.	रमणिका गुप्ता	हादसे	१५
२२.	मधु कांकरिया	फाइल- भरी दोपहरी के अँधेरे	५५
२३.	सावित्री रांका	पन्ने जिंदगी के भूमिका	१०
२४.	डॉ कृष्ण कुमार	कहानी के नए प्रतिमान	२०)
२५.	मधु कांकरिया	दरअसल अम्मी- बीतते हुए-	१२१
२६.	प्रभा खेतान	स्त्री उपेक्षिता - -द सेकंड सेक्स का भाषांतर	३३
२७.	उषा कीर्ति राणावत	मधु कांकरिया का रचना संसार	११४
२८.	मन्नू भंडारी	सम्पूर्ण कहानियाँ, भूमिका मेरी कथा यात्रा	XVIII
२९.	उषा कीर्ति राणावत	मधु कांकरिया का रचना संसार	११४
३०.	मधु कांकरिया	बीतते हुए- बीतते हुए	७४
३१.	वही	वही	७५
३२.	वही	वही	७५
३३.	मधु कांकरिया	बितते हुए - एक रुकी हुई स्त्री	१६७
३४.	मधु कांकरिया	चिड़िया ऐसे मरती है- चिड़िया ऐसे मरती है	१०
३५.	वही	वही	१०
३६.	रमणिका गुप्ता	स्त्री विमर्श: कलम और कुदाल के बहाने	५५

३७ .	जगदीश्वर चतुर्वेदी	स्त्रीवादी साहित्य विमर्श	204
३८ .	मधु कांकरिया	चूहे को चूहा ही रहने दो- बीतते हुए	१८७
३९ .	मधु कांकरिया	कुल्ला - और अंत में इशु	९७
४० .	मधु कांकरिया	फैलाव- और अंत में इशु	८ ४
४१.	मधु कांकरिया	दस प्रतिनिधि कहानिया - बस दो चम्मच औरत	५८
४२ .	मधु कांकरिया	बस दो चम्मच औरत- चिड़िया ऐसे मरती है	५८
४३ .	मधु कांकरिया	फैसला फिर से- बीतते हुए	१६२
४४ .	मधु कांकरिया	चिड़िया ऐसे जीती है दस प्रतिनिधि कहानियाँ	१३०

चतुर्थ अध्याय

मधु कांकरिया का उपन्यास साहित्य : स्त्री विमर्श

चतुर्थ अध्याय

मधु कांकरिया का उपन्यास साहित्य : स्त्री विमर्श

४ . १. उपन्यास की परिभाषा एवं स्वरुप

साहित्यिक विधाओं में उपन्यास आज सर्वाधिक विकसनशील और यथार्थ धर्मी विधा हैं। इस विधा में समाज के सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों का वर्णन होता है। जीवन की गहराई जानने तथा परखने की क्षमता इसके समान किसी अन्य विधा में नहीं हैं -"उपन्यास केवल कथात्मक विधा नहीं है, वह मानव के जीवन की विधा है। ऐसी पहली कला है, जो सम्पूर्ण मानव को लेकर उसे अभिव्यक्ति प्रदान करती है। उपन्यास को अन्य कलाओं से अलग करने वाली महान विशेषता यह है कि, उसमें गुप्त जीवन को प्रत्यक्ष करने की शक्ति है। इस प्रकार यह कविता या नाटक या सिनेमा या चित्रकला या संगीत से यथार्थ का भिन्न दृश्य प्रस्तुत करती है। हमारे जीवन का परिचालन क्रियाओं द्वारा होता हैं और जीवन में अनेक प्रकार की घटनाएँ क्रियाओं द्वारा ही घटित होती हैं। उपन्यास में यह क्रिया पात्रों द्वारा ही संपन्न होती हैं। उपन्यास में पात्र ही कथा के संचालक होते है और पात्रों की अपनी निजी अस्मिता और भूमिका होती हैं"।[१]

डॉ. वी. के. अब्दुल जलील के अनुसार -"उपन्यास जीवन की अभिव्यक्ति का सबसे बडा चित्रण है। इसके विशाल वितान में समाज, राजनीति, मानव – व्यवहार , न्याय -अन्याय , धर्म , संस्कृति , विज्ञानं और कला जैसे उपादान एक साथ समाहित हो जाते है। उपन्यास जीवन के क्षितिज पर जो विशाल अनुगुन्जे और तन्कारे पैदा करता है, उनका प्रभाव समाज और उसके इतिहास में रेखांकित किया जाता है। इस प्रक्रिया में उपन्यास में सृजित संवेदन सुरक्षित ही नहीं होते , पल्लवित और पुष्पित होने का वातावरण भी उन्हें मिलता है। [२]

स्त्रीत्व की दृष्टि से अगर देखा जाए तो, हिंदी साठोत्तरी उपन्यास पूर्व उपन्यास की तुलना में काफी संपन्न है। कथा सम्राट प्रेमचंद उपन्यास के बारे में लिखते है, "मैं उपन्यास को मानव-जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ, मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और अनेक रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है"। [3]

हिंदी उपन्यासों में "स्त्री" को केंद्र रखते हुए तीन चरणों में लेखन किया गया। पहला चरण सुधारवादी है, दूसरा चरण यथार्थवादी तथा तीसरा चरण स्त्रीवादी हैं। समकालीन हिंदी उपन्यासों में जो स्त्री की भूमिका प्रदर्शित हुयी है, उसमे भी स्थितियाँ है। एक स्थिति अवमानता की है। दूसरी दमन और यौन शोषण, अधिकारों से वंचना, पराधीनता और दासता की है। तीसरी स्थिति शिक्षित कामकाजी नारी की है जो अपने अधिकारों के प्रति सचेत है और पुरुषों द्वारा किये जाने वाले अत्याचार का विरोध करती है।

उपन्यासों में स्त्री की जो तीसरी भूमिका प्रदर्शित हुई है, उसी से उपन्यासों में "स्त्री विमर्श" की व्युत्पत्ति हुई है। स्त्री विमर्श आज के उपन्यास साहित्य का ज्वलंत विषय है। स्त्री को केंद्र में रखकर हिंदी उपन्यास की विधा में कई विषयों पर लेखन किया गया हैं। इन उपन्यासों में स्त्री अपनी नई राह बनाती एवं पितृसत्ताक व्यवस्था को चुनौती देती नजर आती है। आज अनेक लेखिकाएँ स्त्री विमर्श से जुड़े अनेक मुद्दों पर अपना सक्रिय सहभाग दर्शा रही है। कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, मृदुला गर्ग, मैत्रयी पुष्पा, अलका सरावगी मधु कांकरिया आदि ने अपने उपन्यासों में स्त्री विमर्श का अर्थ अपनी- अपनी तरीके से प्रस्तुत किया हैं।

आज के युग में स्त्री की प्राथमिकताओं में बदलाव आया हैं। यह बदलाव उनके लेखन में भी देखा जा सकता है। उपन्यासों के माध्यम से अनेक आधुनिक लेखिकाओं ने मानव एवं समाज जीवन के साथ साथ स्त्री जीवन के विविध पहलुओं का सफलता से चित्रण किया हैं।

इन लेखिकाओं के साथ- साथ मधु कांकरिया एक सशक्त हस्ताक्षर है। कथासाहित्य में उन्होंने अनूठा योगदान दिया है । वे अपने उपन्यासों में मानवीय मूल्यों को शाश्वत रूप देती नज़र आती है, तथा अपने उपन्यासों में मिथ्य के बजाय सत्य एवं चरित्र को महत्व देती है। उनके उपन्यासों में वह अनुभवगम्य विमर्श प्रस्तुत करती है। जिसमें समाज की विसंगतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने और खोखली हुई हमारी समाज व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव लाने की महत्वाकांक्षा दिखाई देती है।

"मधु कांकरिया ने विषय वस्तु के चुनाव में स्वतंत्र रहकर, नैतिक- अनैतिक के प्रश्नों को तिलांजलि देकर अपने उपन्यासों में स्त्री पुरुष संबंधों का प्रतिपादन किया हैं। उनके उपन्यास नर-नारी के यौन सम्बन्धो, पारिवारिक सम्बन्धों को लेकर लिखे गए हैं। जीवन के प्रत्येक पहलुओं पर ज्यादा जोर देकर पाठकों को समझाने का प्रयास लेखिका ने किया है। नारी पुरुष शोषण, प्रणय प्रसंग, कामवासना, विवाह समस्याएं, सामन अधिकारों की पक्षधरता, यौन सम्बन्धों की उन्मुकता, चरित्रों का विकास, अधूरा प्रेम आदि सब तरीकों से लेखिका ने जाँच-पड़ताल करके उन पर खुलेआम लिखने की कला को अपनाया हैं"। [४]

४. २ मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श

मधु कांकरियाँ ने अपने औपन्यासिक लेखन में स्त्री जीवन के जिन पक्षों को रखा हैं, उनमें समाज एवं परिवार में नारी की विविध दशाओं का वर्णन हैं और इन्ही दशाओं से उभरते स्त्री पात्र मधुजी के उपन्यासों में नजर आते हैं। मधुजी के प्रकाशित उपन्यासों में अधिकांश उपन्यास नारी को सहज मानवीय रूप में चित्रित करते तथा नारी के अस्तित्व को स्वतंत्र रूप में दृढ़ता से स्वीकार करते है। उनके 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में साध्वी जीवन की सच्चाई सामने आती है। 'सलाम आखिरी' उपन्यास में नारी का स्वरुप तथा नारी का आधुनिक युग में बदला हुआ सशक्त रूप दिखाई देता है।

मधु कांकरिया के 'खुले गगन के लाल सितारे' (२००२), 'सेज पर संस्कृत' (२००५), ' सलाम आखिरी' (२००९), इन उपन्यासों में अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती तथा समाज और पुरुष की यातनाएँ झेलती हुई स्त्री के चित्रण के साथ -साथ पुरुष के समकक्ष अपने अधिकारों की मॉग करती, अपने ऊपर हुए अन्याय का बदला लेती तथा पुरुष एकाधिकारों में अपनी दखल दर्ज कराती स्त्री नजर आती हैं। मधु कांकरिया ने अपने उपन्यासों में स्त्री- विमर्श का जो चित्रण किया है, वह उनके अपने अनुभवों की ज़मीन से उपजा है। मधुजी ने जिस पीड़ा और त्रासदी का अनुभव किया है। उसी पीड़ा और त्रासदी से निपटने की जो आत्मिक शक्ति है उसे अपने उपन्यास लेखन में स्त्री-विमर्श के रूप में उन्होंने अभिव्यक्त किया है।

मधु कांकरिया ने अपने उपन्यासों में आसान शैली में स्त्री के रूप और उसमे आए परिवर्तनों का विस्तृत विवेचन अपने उपन्यास साहित्य में किया है। मधु कांकरिया के औपन्यासिक साहित्य के समग्र लेखन में "स्त्री विमर्श" को समझने हेतु स्त्री विमर्श को अन्य अवधारणाओं के साथ समझना आवश्यक है जो उनकी रचनाओं का मूलाधार है। स्त्री शोषण, मनोवैज्ञानिक चित्रण, स्त्री संघर्ष, आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्त्री स्वातंत्र्य, जैसी अवधारणाओं के आधार पर उनके उपन्यास साहित्य में स्त्री विमर्श का प्रकटीकरण होता हैं।

मधु कांकरिया के उपन्यासों में स्त्री विमर्श का ऊपर प्रस्तुत अवधारणाओं के आधार पर विवेचन करने का प्रयत्न इस अध्याय में किया है। इसमें कुछ समकालीन स्त्री उपन्यास कारों के उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों का समावेश हैं।

४ .२.१ स्त्री शोषण का चित्रण

स्त्री शोषण हमारी परंपरागत समस्या है। स्त्री शोषण दो तरीकों से होता है, एक है पारिवारिक शोषण और दूसरा सामाजिक शोषण। अपने परिवार में स्त्री, पुत्री, पत्नी तथा माँ के रूप में शोषित रहती हैं। समाज में स्त्री की पहचान तो सिर्फ उसके देह से की जाती है। स्त्री की

पहचान देह से अलग भी होती है, यह समाज नहीं मानता। स्त्री तो उनके लिए एक वस्तु मात्र है। इसीलिए तो वह घर से बाहर हमेशा यौन दृष्टि से उत्पीडित रहती है। हमारे पितृसत्ताक परिवार में पुरुष को हमेशा ऊँचा स्थान दिया जाता है। इसीलिए तो पुत्र की चाहत में हमारे समाज में पुत्री को जन्म से पहले मार दिया जाता है। इसका मतलब यह है, कि हमारे समाज में स्त्री का शोषण वह पैदा होने से पहले ही शुरू होता है। समाज की यह मानसिकता हमारे भारत देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी है।

इसका चित्रण प्रभा खेतान के "अग्निसंभवा" उपन्यास में आया है। उपन्यास में चीनी महिला आइवी के घर बेटी पैदा हुई थी। उसके पति ने अपनी बेटी को देखा तक नहीं। उसकी साँस ने उस नवजात बच्ची को मार ही डाला। इसके बारे में आइवी कहती है- "मेरी पहली संतान लड़की थी। सरकार की ओर से हम दो ही बच्चे पैदा कर सकते थे। अतः किसान के घर लड़की होना अभिशाप था। पति ने बच्चे को देखा तक नहीं। साँस ने खाने में पता नहीं कौन सी दवा मिलाकर दी कि दूध से भरी मेरी छातियाँ सुख गई। बच्ची को दूध साँस ही पिलाती थी। पर वह उसी दूध नहीं पिलाती थी। घोला हुआ सफ़ेद पानी जैसा स्टार्च पिलाती थी। बच्ची का पेट फूलता गया और दस दिन में वह मर गयी। [५] समाज की इसी मानसिकता की वजह से स्त्री भ्रूण हत्या आज समाज में आम बात हो गयी है। परिणामस्वरूप स्त्रीयों की संख्या घटती जा रही हैं।

धर्म के नाम पर भी स्त्री शोषण बढ़ता जा रहा है। जिन धर्मो का उगम समाज की कुरीतियाँ ख़त्म करने के लिए हुआ था, उन्ही धर्म के नाम पर स्त्रियों पर पाबंदिया डाली जाती है तथा धर्म के नाम पर बनी कुरीतियाँ स्त्री के शोषण का आधार बन रही है।

आज की इक्कीसवीं सदी में भी स्त्री की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया है। बल्कि यह कहा जा सकता है, कि जब तक पुरुष अपनी सामंती मानसिकता बदलकर स्त्री को

समानाधिकार देने की बात पर अमल नहीं करता तब तक समाज में स्त्री का शोषण चलता रहेगा। जगदीश चतुर्वेदी के शब्दों में - "पुरुष अपनी अस्मिता का स्वयं निर्माता था। किन्तु स्त्री ने जब अपनी हकों की माँग की, अपने लिए सार्वजनिक जीवन में स्थान, स्पष्ट अभिव्यक्ति, स्वतंत्र पहचान एवं लिखने की कोशिश की, लज्जा को त्यागकर सहज शैली में व्यवहार करना शुरू किया। पुरुष निर्मित नियमों, मूल्यों एवं रिवाजों से विचलन को बदचलनी का रूप दे दिया गया। [६]

स्त्री शोषण का चित्रण करते हुए मधुजी ने मानवीय रिश्तों का सहारा अपने उपन्यासों में लिया हैं। मानवीय रिश्तों में सर्वाधिक छलावा, कपट चलता हैं। मानवीय रिश्तों में स्त्री का शोषण हमेशा होता रहता है, चाहे वह बेटी हो, पत्नी हो, बहन हो या ऑफिस में काम करने वाली औरत हो। कही न कही इन सभी को शोषण से गुजरना पड़ता हैं। हमारे समाज में स्त्री इसी शोषण से आहत है। मधुजी के उपन्यास के कई स्त्री पात्र शोषण का शिकार होते नजर आते हैं।

उनके 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में नक्सलवादियों से सहानुभूति रखने वाले रामस्वरूप ने एक नक्सलवादी को शरण दे दी थी। उसे उसकी पत्नी के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। इंटरोगेशन कक्ष में उसकी पत्नी को उसी के सामने नग्न कर पुलिस द्वारा उसके ऊपर अत्याचार किये जाते हैं।

'सलाम आखिरी' उपन्यास के आत्मकथ्य में मधुजी ने कहा है- "पिछली सदी ने कई क्रांतियाँ देखी। आम आदमी को इंसान की गरिमा देने के लिए रूस, क्यूबा और वियतनाम में क्रांतियाँ हुई, पर इन लालबत्ती इलाकों का अन्धेरा घना ही होता जा रहा है क्योंकि इन्हें आम आदमी समझा ही नहीं जाता है। महिला संगठन इन्हें उत्पाद बनाने पर तुले है। सरकारी खाते में ये भिखारियों के समकक्ष है, इनकी आय पर कोई आयकर लगाया नहीं जाता क्योंकि यह

अनैतिक ढंग से कमाया जाता है। वोट देने का अधिकार होने पर भी ये वोट नहीं दे पाती क्योंकि सरकारी कर्मचारी इन गन्दी एवं बदनाम गलियों में जाकर इनके नामों को सूची में डालने की जहमत नहीं उठाते और सबसे बढ़कर भद्र समाज इन्हें बुरी औरत एवं कुलटा के रूप में देखता है। पर यह सोचने की बात है कि अधिकांश वेश्याएँ बारह-तेरह वर्ष की उम्र में ही इन गलियों में धकेल दी जाती हैं, कुछ यही आँखे खोलती है। प्यार और सरक्षण से वंचित, अपने स्व और गहराइयों से दूर, ऐसी अर्धविकसित और अशिक्षित महिलाएँ, हर रात जिनकी देह का ही नहीं आत्मा का चीरहरण होता हो, ऐसी महिलाएँ जीवन आस्था के आलोक बिंदु कहाँ से पाए जो स्त्री को स्त्री बनाते है ?[७]

मधु कांकरिया के ' सेज पर संस्कृत' उपन्यास में छुटकी याने साध्वी दिव्यप्रभा कम उम्र में ही साध्वी बनने के बावजूद अपने ही आश्रम के अभयमुनी द्वारा शोषण का शिकार होती है। अभय मुनि उसे फँसाकर उस पर बलात्कार करते है। जिसकी बजह से वह गर्भवती बनती है। साध्वी दिव्यप्रभा को इस दुष्कर्म के लिए दोषी मानकर आश्रम से निकाला जाता है। आश्रम से निष्कासित होने के बाद अपने बढ़ते गर्भ के साथ वेश्यावृत्ति का सहारा लेती है। अठारह वर्ष तक अपनी बेटी का पालन करने के लिए घिनौने बस्ती में देह व्यापार करने से उसे अनेक बीमारियाँ जकड लेती है और इन्ही बिमारियों के चलते उसका अंत होता है।

इसी उपन्यास की नायिका संघमित्रा को भी शोषण का सामना करना पड़ता है, लेकिन अन्याय का हमेशा विरोध करती संघमित्रा कभी खुद को शोषण का शिकार नहीं होने देती। नौकरी के तलाश में फिरती संघमित्रा को अनेक बुरे अनुभवों का सामना करना पड़ता है। एक ऑफिस में मालिक ने उसके हाथ अपने हाथों में लेकर दबाते हुए कहा था "आपकी नौकरी पक्की पर ..... यह बताइए कि प्रोग्रामिंग के अलावा आप क्या कर सकती है ?[८]

मधु कांकरिया के उपन्यास 'सलाम आखिर' में चित्रित असहाय स्त्रियों के परिदृश्य को देखकर वाचकों के मन में करुणा के भाव उत्पन्न होते हैं। उपन्यास में चित्रित वेश्या पात्र मीना, नूरी, कृष्णा, रमा, नलिनी, जुली, चम्पा यह सब शोषण के शिकार है।

नूरी नाम की वेश्या नौकरी की खोज में वेश्याओं की बदनाम बस्ती में पहुँचती है। सत्रह साल की भोली नूरी अपने माँ, बाप, भाई, बहन का पालन करने के लिए शोषित जीवन जीने के लिए मजबूर है।

चकला चलानेवाली मीना अपने बचपन में घर चलाने के लिए चौका बर्तन करती थी। उसे अच्छे पैसों का लालच देकर पाँच साल की लड़की की देखभाल करने के लिए कलकत्ता लाया जाता है। जिस घर में वह काम करती थी उस घर का मालिक मौक़ा देखकर उस पर बलात्कार करता है। मालिक चोरी के मामले में पकडवाने का डर दिखाकर उसका शोषण करता रहता है। एक दिन वह घर से भागती है, लेकिन एक रेलवे कर्मचारी के वासना का शिकार होती है। वह मीना को पुरे छ: महीने भोगकर सोनागाछी के वेश्यावस्ती में बेचता है।

नलिनी नाम की वेश्या घर की गरीबी के कारण एक सुखी संसार की चाह में अधेड़ उम्र के प्यार में पड़के घर से भागकर कलकत्ता आती है। कुछ समय तो वह पति पत्नी जैसे रहते है। लेकिन कुछ समय बाद वह आदमी उसे बहुबजार के चकले में बेच देता है।

रेशमी नामक वेश्या एच. आई. वी. पॉजिटिव है, परन्तु वह अपना इलाज नहीं करना चाहती। क्योंकि वह इस जानलेवा बिमारी को उस व्यक्ति के लिए संभलकर रखना चाहती है, जिसने उसे तेरह वर्ष की उम्र में ही वेश्या बनाया था।

लालबत्ती इलाके में वेश्या व्यवसाय करने वाले प्राय: सभी वेश्याये शोषण की शिकार रहती है। चकले की मालकिन, दलाल इन सबको पैसे देते देते उनके हाथ में कुछ नहीं रहता।

इसी उपन्यास में बैरकपुर की एक महिला को वेश्या व्यवसाय करने के आरोप में पुलिस पकड़कर थाने ले गयी। उसके विरोध करने पर थाने के पुलिस मिलकर उसके ऊपर सामूहिक बलात्कार कर देते हैं। उस वेश्या ने हिम्मत करके धमकी दी कि वह सीनिअर पुलिस से इसकी शिकायत करेगी तो वहाँ खड़े सभी पुलिसवाले हँस पड़े थे ….. वेश्या के साथ बलात्कार …. भले उसकी भी कोई इज्जत होती है ?

"सूखते चिनार" उपन्यास की रुबीना भी शोषण का शिकार है। अपने आतंकवादी भाई के फ़ौज के साथ मुठभेड़ में मारे जाने के बाद वह भारतीय फ़ौज और पुलिस से घृणा करती है। रुबीना का छोटा भाई पैसों के लिए अपने घर में आतंकवादियों को छुपाने के लिए तहखाना बनाता है। उसी तहखाने में छिपकर बैठे आतंकवादी उस पर बलात्कार करते है। जिन्हें वह अपना मान बैठी थी उन्ही आतंकवादियों द्वारा उसका शोषण होता है।

रुबीना के आतंकवादी भाई जमील के मारे जाने के बाद मेजर संदीप उसे सहारा देना चाहते थे। लेकिन उसने मेजर संदीप को ठुकराया क्योंकि उसे लगता था कि उसके परिवार की तबाही के लिए हिन्दुस्तानी फ़ौज और सरकार जिम्मेदार है। लेकिन जब आतंकियों द्वारा उसका शोषण होता है तब वह सच्चाई से वाकिफ होती है। मेजर संदीप को लिखे ख़त में वह सच्चाई बयान करती है।- "आज जब किसी काफिर ने नहीं, हिन्दू ने नहीं, हिन्दुस्तानी फ़ौज ने नहीं वरन अपने ही लोगों ने, कश्मीर की आजादी का नारा लगानेवालों ने ही वहशियों की तरह मुझे नोच डाला तो मै समझ पायी हूँ तुम्हारे बातों की सच्चाई को कि "कश्मीर की आजादी" और "इस्लाम की हिफाजत" कितना बड़ा भ्रम है, छलावा है जिसे कुछ विशेष लोगों ने जाल की तरह फैला रखा है। ये शैतान क्या इस्लाम को बचाएँगे जो खुद औरत की इज्जत से खेलते है और नमाजियों और दरगाहों पर ग्रेनेड फेंकते है। [९]

४ . २.२. मनोवैज्ञानिक चित्रण

समकालीन स्त्री उपन्यासकारों ने स्त्री मनोविज्ञान को दृष्टि में रखकर स्त्री के अंतर्मन का विस्तृत चित्रण अपने उपन्यासों में किया हैं। मधु कांकरिया के साहित्य का अध्ययन करने पर यह पता चलता है, कि उनके साहित्य में हमें पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा मनोवैज्ञानिक विषयों पर लेखन मिलता हैं। स्त्री समस्याओं पर लिखे उनके उपन्यासों में मनोविज्ञान का अपार कोश छिपा हुआ है। उनके स्त्री जीवन पर आधारित उपन्यासों में स्त्री के मनोवृत्ति का चित्रण मिलता है।

मनोविज्ञान याने जिसमें मानव व्यवहार का अध्ययन, विश्लेषण किया जाता है। मनुष्य के ऊपर उसके आस पास के परिस्थितियों का प्रभाव पड़ता है। और ये परिस्थितियाँ उसके आचरण एवं व्यवहार का नियमन करती है। मनोविज्ञान एक ऐसा विषय है, जो मानव व्यवहार के सम्बन्ध में मूल प्रश्नों का उत्तर प्रदान करता है। मानव का मन विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान है तो साहित्य मानव मन के मनोविकारों की निर्मिती है। सिगमंड फ्रायड को साहित्य में मनोविज्ञान का सर्वहारा माना जाता है। फ्रायड के अनुसार मानव मन और व्यक्तित्व के मूल द्वंदों की अभिव्यक्ति ही साहित्य है- "व्यक्ति के अंतर्जगत में अनेक अभिलाषाएँ उठती है। इसमें से कुछ जन्मजात होती है और कुछ अर्जित प्रेरणाएं होती है। ये दैहिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। किन्तु इन सबकी तृप्ति प्रायः एक सी नहीं होती। कभी इनके मार्ग में इनके मार्ग में बाधाएँ उत्पन्न हो जाती है। बाधाओं के कारण व्यक्ति की अभिलाषा अपूर्ण रह जाती है। और इन्ही अपूर्ण अभिलाषाओं का परिवर्तन कुंठा में होता है। [१०] .

फ्रायड ने मन की संरचना दो स्तरों पर की है, एक है गत्यात्मक पहलू जिसमें इदम, अहम्, तथा परम अहम् का समावेश है। और दूसरा पहलू है स्थुलरूपरेखीय जिसमें चेतन, अवचेतन तथा अचेतन मन के प्रकार है। फ्रायड के अनुसार हमारा मन हिमनग के समान है।

उसके ऊपर का मन हम देख और जान सकते है, लेकिन निचले भाग का हमें कोई ज्ञान नहीं रहता। फ्रायड ने मन के ऊपर के भाग को चेतन मन कहा है जो व्यक्ति के हित के बारे में सोचता है। दूसरा भाग अचेतन मन का है जो चेतन मन की इच्छाओं का विरोध करता है, और तीसरा अवचेतन मन जो सभ्यता, संस्कृति और नैतिकता का संरक्षण करता है।

ईदम में मनुष्य, विकास के लिए कोई क्रम या नियम नहीं रखता, उसकी वृत्तियाँ स्वछंद होती है। " इगो" याने अहम् 'ईदम ' की अनियंत्रित वासनाओं को तृप्त करने के लिए बाह्य जगत को बदलने का उपक्रम करता है। परम अहम् नैतिक विचारों को चलाना देता है, वह अहम् के साथ ईद की असामाजिक प्रवृत्तियाँ दबाने का काम करता है ।

कई महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में स्त्री का मनोवैज्ञानिक चित्रण दृष्टिगोचर होता है । रजनी पनिकर के 'दूरियाँ' उपन्यास की चारु यश को चाहती है। परन्तु यश चारू के प्यार को ठुकरा देता है और दूसरी लड़की के साथ शादी कर लेता है। तब चारु का मन विचलित होता है। वह पुरुष मनोवृत्ति से आक्रोशित पुरुष जाती से प्रतिशोध लेने का निर्णय लेती है। -"किसी घटना की अथवा परिस्थितियों की विषमता या अतृप्त आकांक्षाओं आदि के कारण पात्रों के मन पर ऐसा अघात पड़ता है कि उनका स्वाभाविक रूप दब जाता है और उनका व्यवहार अस्वाभाविक हो उठता है।[११]

मृदुला गर्ग का उपन्यास 'कठगुलाब' की स्मिता पर उसके जीजा द्वारा बलात्कार किया जाता है। यह बलात्कार तेज रोशनी और आईने के सामने होता है। इसीलिए उसका मन तेज रोशनी और आईने को सह नहीं पाता है, तथा वह पुरुष जाती से घृणा करने लगती है।

मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य का फ्रायड के मतानुसार विचार किया जाए तो उनके साहित्य में हमे अनेक मनोवैज्ञानिक पहलू मिलते है जैसे मनुष्य की मूल वृत्तियाँ अहम्, काम, भय, आदि। मधुजी के उपन्यास साहित्य में दमन, आत्मपीडन, परपीडन, मोह, स्वप्न,

काम जैसी मनोवृत्तिया शामिल है, जो फ्रायड द्वारा विश्लेषित की गयी है उन मनोवृत्तियों का साक्षात्कार होता है। उन्होंने मानव मन की अभिरुचियों के आधार पर उपन्यास लिखे है।

स्त्री विमर्शकारों ने स्त्री के मनोविज्ञान को भी स्त्री के व्यक्तित्व विकास का पहलू माना है। पितृसत्ता स्त्री के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। स्त्री के मनोविज्ञान पर यह निर्भर करता है कि पितृसत्ताक पद्धति के नीचे कुचलते रहना है, या अपना अस्तित्व स्थापित करना है। इसीलिए मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य के पुरुष पात्रों के मनोविज्ञान के साथ साथ स्त्री पात्रों के मनोविज्ञान का विश्लेषण होना जरुरी हैं। शोध प्रबंध की दृष्टी से मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य में केवल स्त्री पात्रों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

मधुजी के 'पत्ताखोर' उपन्यास में नायक आदित्य के मानसिक द्वंद्व का चित्रण मिलता है, तो 'सलाम आंखिरी' उपन्यास में वेश्याओं की त्रासदी और कुंठाओं का वर्णन मिलता है। 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में कामरेडी जीवन के दमन का दर्शन पाठकों के सामने आता है। उनके 'सेज पर संकृत' उपन्यास में काम और बदले के भावना का दर्शन मनोवैज्ञानिक धरातल पे नजर आता है तथा उपन्यास 'सूखते चिनार' में फौजी जीवन की मानसिकता के साथ साथ आतंकवादी बने बेटे की परिवार के मानसिकता का दर्शन होता है। स्त्री विमर्श प्रधान उनके उपन्यास 'सेज पर संस्कृत' और 'सलाम आखिरी' के नारी पात्र मानसिक दशा का चित्रण मनोविश्लेषणात्मक मानदंडों को सिद्ध करने में सक्षम है। मनोवैज्ञानिकता की कसोटी पर इस उपन्यासों के स्त्री पात्र खरे उतरते है।

मनोविज्ञान के आधारपर स्त्री- जीवन का जायजा लिया जा सकता है । शोषण निराशा से घिरी स्त्री अपना अस्तित्व तभी स्थापन कर सकती है जब उसकी मानसिकता सकारात्मक हो। परंपरागत कुरीतियों को ठुकराती हुई स्त्री का चित्रण मधुजी के उपन्यासों में नजर आता है।

मधु कांकरिया के सेज पर संस्कृत उपन्यास के स्त्री पात्र संघमित्रा, छुटकी और उनकी माँ की मानसिकता का वर्णन मिलता है। उपन्यास में माँ अपने दोनों पुत्रियों को समाज की गन्दी नजर से बचाने के लिए दीक्षा लेने के लिए दबाव डालती है और खुद भी दीक्षा लेते नजर आती है। पति और पुत्र की मृत्यु के बाद माँ पर सारे परिवार की ज़िम्मेदारी आ पड़ती है। घर में दो-दो बेटियाँ और पुरुष न होने के कारण लोगों की बुरी नजर उस परिवार पर पड़ती है। लोगों के हवस भरी नज़रों से बचने के लिए माँ, साध्वी बनने का फैसला लेती ही। साथ में अपनी दोनों बेटियाँ संघमित्रा और छुटकी को भी दीक्षा दिलवाना चाहती है। दीक्षा लेने का उसका एकमात्र उद्देश होता है कि दीक्षा लेने के बाद उनका साध्वी जीवन बड़े आराम से कट जायेगा। समाज में सन्मान भी मिलेगा और सुरक्षा भी। माँ के कहने पर दीक्षा लेने वाली चुटकी मात्र नौ वर्ष की होते हुए भी माँ के जिद के कारण साध्वी बन जाती है, लेकिन बड़ी बेटी संघमित्रा स्वावलंबन के रास्ते में आने वाली अडचनों और उनसे मुकाबला कर अपने वजूद की ताकत को पहचानती है। वह स्वयं का अस्तित्व निर्माण कर अपने परिवार का पोषण खुद करना चाहती है। वह माँ से कहती है- " जैसी मनसा वैसी दशा। आदमी डूबने की सोचेगा तो डूबेगा ही। जिनके पास आशा है वही धनी है। उसी के पास सबकुछ है। तुमने तो धर्म को लोमड़ी की तरह चालाक बना दिया है। जीवन मुश्किल बन गया है तो धर्म का लबादा डाल लो" [१२] इसी मानसिकता के कारण वह दीक्षा नहीं लेना चाहती तथा इसी मानसिकता के चलते अपनी बहन छुटकी की दीक्षा भी रुकवाना चाहती है।

अपनी कम उम्र में छुटकी दीक्षा तो लेती है परन्तु बड़ी होने के बाद उसकी मानसिकता बदलती है। संसार के प्रति उसका आकर्षण बढता है। संन्यास जीवन के प्रति उसे घृणा उत्पन्न होती है। साध्वी होते हुए भी अपने मन से दैहिक आकर्षण के भाव से मुक्त नहीं हो पाती - "

कई बार सावन में उमड़ती घटाओं को देख उसके पाँव में कामनाओं के घुंगरू बज उठते .... जीवन पुकारने लगता, मन डोलने लगता..... [१३]

मनोविज्ञान में मन की प्रकृति, विकृति, दशाओं और क्रियाओं का विवेचन किया जाता है। इस उपन्यास में छुटकी के मन में अनेक इच्छाएँ, अभिलाषाएँ जन्म लेती है। इसमें कुछ इच्छाएँ पूर्ण होती है तो कुछ इच्छाएँ अपूर्ण रह जाती है। अपूर्ण रहती इच्छाओं की बजह से मनुष्य कुंठित हो जाता है।

छुटकी के विपरीत उसकी बड़ी बहन संघमित्रा की मानसिकता है। बी. कॉम पढ़ी संघमित्रा साध्वी जीवन के खिलाफ है। आखिर तक वह अपनी बहन छुटकी को दीक्षा लेने से रोकना चाहती है। वह स्वावलंबन के रास्ते में आने वाली अडचनों का मुकाबला करती है अपने वजूद की ताकत को पहचानती है। कंप्यूटर सॉफ्टवेर में डिप्लोमा कर नौकरी प्राप्त कर लेती है। मैनेजर मिस्टर मेहता की बदतमीजी का करार जबाब देकर नौकरी से इस्तीफा देती है और उन्हें माफ़ी माँगने पर मजबूर करती है। जीवन को नए सिरे से जीने की कोशिश करते समय समाज में उसे कुछ ऐसे अनुभव मिलते हैं, जिससे वह औरत की हालात पर झल्ला उठती है और वह अपने साथ साथ समाज के उपेक्षित स्त्रियों के लिये स्वाभिमान और व्यक्तित्व की लड़ाई लड़ती है उनके लिए "नारी शक्ति संघ" की स्थापना करती है। छ फीट की कोठरी और तीन महिलाओं से शुरू किया गया "नारी शक्ति संघ" कुछ ही सालों में दस हजार महिलाओं का संघ बन जाता हैं।

संघमित्रा अपने सकारात्मक मानसिकता के चलते अपना संघर्षपूर्ण जीवन जीने के साथ-साथ अपने जैसी अनेक महिलाओं के बारे में सोचती है, न कि अपनी अम्मा ओर बहन छुटकी की तरह जीवन से हार मानती है। जब उसे पता चलता है कि उसके बहन की बरबादी के लिए अभयमुनी जिम्मेदार है, तब वह अभयमुनी को ख़त्म करके अपना प्रतिशोध लेती है।

ऊपर प्रस्तुत संघमित्रा के मानसिकता से यह पता चलता है कि स्त्री की अपनी मानसिकता तय करती है कि आने वाली घटना के साथ वह किस तरह से सामना करती है। जीवन के कठिन प्रसंगों में वह डटकर खड़ी रहती है या पलायनवादी भूमिका स्वीकारती है।

मधु कांकरिया के 'सलाम आखिरी' उपन्यास में भी स्त्री का मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। स्त्री वेश्याओं की मानसिकता इस उपन्यास में प्रकट होती है। हिंदी उपन्यास साहित्य में देहव्यापार पर केन्द्रित वेश्याओं के जीवन पर आधारित कई उपन्यास आए हैं। अलका सरावगी का 'शेष कादंबरी', जगदंबा प्रसाद दीक्षित का प्रचलित उपन्यास 'मुर्दाघर' संभवत: बड़े फलक पर वेश्याजीवन को प्रतिबिंबित करनेवाले मौलिक उपन्यास है। सलाम आखिरी उपन्यास में लालबत्ती इलाके में रहनेवाली वेश्याओं का चित्रण है। इन बदनाम गलियों में घिनौने धंदे में पड़नेवाली महिलाएँ अपनी एक मानसिकता बना लेती है, कि जीवन के आखिर तक उसे इसी बदनाम गलियों के दायरे में जीवन बिताना है।

'सलाम आखिरी' उपन्यास के आरंभ में चकले की मालकिन मीना नाम की वेश्या की मानसिकता से होती है। अपने भूतकाल में हुए अत्याचारों को याद करके मीना आज भी दु:खी हो जाती है। मर्द द्वारा धोखा मिलने के बाद जीवन की ठोकरों ने उसको इतना बेहाल कर दिया कि अपना पेट पालने के लिए इन बदनाम गलियों में वेश्या बन जाती है। दुनिया के खिलाफ बगावत करके एक अच्छा जीवन जीने की कोशिश भी वह नहीं करती। उसकी मानसिकता का वर्णन करता यह वाक्य, - "यहाँ सभी मर्द हरामी है। यहाँ सबकी लंगोटी में दाग है। ऊ मेरी जिंदगी का पहला ऐसा बड़ा दु:ख था जिसे मैंने मन से कबूल लिया था और उसके बाद मई खुद अपनी मालकिन बन गई। अपने माँ- बाबा को धियान कर उनसे में ही मन माफी माँगकर मैंने अपनी, नै बनी चकले की मालकिन द्वारा दी गयी साड़ी पहन ली और वेश्यावृत्ति कबूल कर ली"। [१४] इस तरह धोखे से वेश्या बनने के लिए मजबूर मीना की यह मानसिकता बन गयी

कि इस समाज में एक वेश्या के व्यतिरिक्त उसका कोई स्थान नहीं बन पायेगा। जिस दुःख को उसने भोगा उस दुःख में बाकी लड़कियों को पड़ने से रोकने की बजाय वह उन्हें अपने चकले में स्थान देती है।

इस उपन्यास में सुकीर्ति नाम की पत्रकार अपने पत्रकार मित्र विजय के साथ मिलकर वेश्याओं के लिए काम करती है। वह लालबत्ती इलाके में जाकर वेश्याओं से मिलाती है और उनके दुःख दर्द समझने की कोशिश करती हैं। विजय के लिए सुकीर्ति के मन में प्यार के भाव जग उठे थे। फिर भी वह विजय के साथ अपनी गृहस्थी बसाना नहीं चाहती क्योंकि वह मानती है कि "तृप्ति आदमी की भीतरी चिंगारी को मशाल बनाने नहीं देती, उसकी उड़ान और उठान को वापस लौटा देती है।" [१५] सुकीर्ति सोनागाछी के लालबत्ती इलाकों में वेश्याओं की मानसिकता एवं उनके दुःख दर्द को वाणी देने के लिए प्रयत्न करती नजर आती है।

उपन्यास की एक और वेश्या नलिनी के माध्यम से मधुजी ने कुंठित मानसिकता को व्यक्त किया है। नलिनी अपने प्रेमी के साथ भागकर चली जाती है। प्रेमी उससे शादी का नाटक करता है और एक दिन वेश्या वस्ति में बेच भाग जाता है। वेश्या बस्ती में बेचे जाने के बाद नलिनी अपनी मानसिकता को बदलती है। अब यह वेश्याओं का जीवन ही उसे अच्छा लगता है, क्योंकि यहाँ नाटक, दिखावा, धोखा नहीं है। जो भी है वह केवल सत्य है और सामने है। उसीको में शब्दों से उसकी मानसिकता का पता लग सकता है "आज भी जब-जब दिन के पहले ग्राहक के पास मैं जाती हूँ तो उसके नाम पर उस पहले मर्द पर एक बार थूक अवश्य देती हूँ"। [१६.]

मधु कांकरिया के उपन्यास 'खुले गगन के लाल सितारे' में एक जैन मध्यमवर्गीय परिवार का वर्णन आया है। उपन्यास की नायिका मणिदीपा अपने पिता अमरनाथ, माता गंगाबाई, बहन पारसी और भाई पारस के साथ रहती है। गंगाबाई अमरनाथ बाबू की दूसरी

पत्नी होने, कि बजह से दोनों में बीस साल का अंतर है। इसी का कारण गंगाबाई की मानसिकता अधेड़ उम्र की पति के मानसिकता से मेल नहीं खाती। अनमेल विवाह के कारण वह हमेशा असंतुष्ट दिखाई देती है। अपनी इच्छा, अपेक्षाओं का गला घोटकर पारिवारिक ज़िम्मेदारियों को निभाती गंगाबाई अंत तक मानसिक द्वंद्व से लडती रहती है।

इसी उपन्यास की एक और पात्र मुन्नी का विवाह मंदबुद्धि चांदमल से होता है। पहले रात सुहाग रात जैसा कुछ नहीं घटता। दूसरे दिन भाभी, साँस और परिवार की महिला शाखा मुन्नी को प्रशिक्षित करते हुए मर्द को संभालने की टिप्स के साथ-साथ एक सचित्र पुस्तक दे दी। तीसरे दिन सुहागरात का काम संपन्न कराया जाता है। कुछ-कुछ इस प्रकार जिस प्रकार उच्च वर्गों में लोग पालतू कुत्तों को मेटिंग के लिए कुतिया के पास ले जाते है या गाँव में गायों को। वह एक ऐसा सम्भोग था जहाँ न राग था न आवेग, न योवन की अकुलाहट भरी दस्तक, न समर्पण का एहसास। पहली बार मुन्नी को हलकी वितृष्णा हुई। पति के काम संबंध के ठंडेपन की बजह से उसकी वासनाएँ दमित रहती है। इन्ही दमित वासनाओं के चलते अपने देह के संतुष्टि के लिए अपने जेठ के साथ संबंध बनाती है।

'पत्ताखोर' की वनश्री भी मानसिक कुंठाओं का शिकार है। वह अपने राम जैसे भोले पति में साज शृंगार, नैन शेन और नशीली बातों के जरिये भी काम नहीं जगा सकी तो धीरे-धीरे उसके मन में निराशा घर करने लगती है। और ऐसे नीरस वैवाहिक जीवन से मुक्ति पाने के लिए वह नौकरी का सहारा लेती है।

“स्त्री की मानसिकता हमेशा यह रहती है कि वह खुद को पुरुष से निम्नवर्ग की समझती है। जैन धर्म का ही उदाहरण लेंगे तो एक बात नजर आती है कि पूरे जैन समाज के २६०० वर्षों के इतिहास में आज तक आचार्य - प्रमुख कोई भी साध्वी नहीं बनी है। खुले गगन के लाल सितारे उपन्यास की प्रमुख पात्र मणि सोचती है कि,- " किसी भी साध्वी को यह बात

परेशान नहीं करती कि सन्यास आयु में वरिष्ठ होने के बावजूद साधू- नियमों के अनुसार उन्हें एकदम नए बने साधू की भी वन्दना करनी पड़ती है[१७]

"सुखते चिनार" की एक नारी पात्र रुबीना, को भारतीय फ़ौज से घृणा है, क्योंकि भारतीय फ़ौज और पुलिसवालों ने उस पर और उसके घरवालों पर बड़े ही जुल्म किये थे ताकि वो अपने आतंकवादी बने भाई का पता बता दे। उसका भाई फ़ौज के साथ हुए मुठभेड़ में मारा जाता है। इसी वजह से उसके मन में भारतीय फ़ौज के प्रति घृणा उत्पन्न होती है। मेजर संदीप ने बढ़ाया हुआ प्यार का हाथ भी वह थामने से इनकार करती है क्योंकि उसे लगता था कि उसके परिवार की तबाही के लिए हिंदुस्तानी सरकार और फ़ौज जिम्मेदार है। लेकिन जब उसके साथ जिहादियों द्वारा बलात्कार होता है तब उसे अफसोस होता है उसने मेजर संदीप के प्यार को ठुकरा दिया।

मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य के नारी पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करने के बाद हम यह निष्कर्ष लगा सकते है कि, उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों की मनोदशा का मनोवैज्ञानिक तथा मनोविश्लेषणात्मक चित्रण सफलता पूर्वक हुआ है। नारी की घुटन, उपेक्षा, अवहेलना तथा कुंठा को सही ढंग से वाणी प्रदान की है।

४ .२. ३ स्त्री संघर्ष

हमारे समाज में सदियोंसे स्त्री का दमन और शोषण होता रहा है। इस दमन और शोषण के खिलाफ जो स्त्री चेतना जागृत हुई उसी ने स्त्री विमर्श को जन्म दिया। स्त्री की अपनी आत्मचेतना जागृत होते ही वह आत्मसन्मान, आत्मगौरव, समानता जैसे अपने हक प्राप्त करना चाहती है और अपना हक पाने के लिए संघर्ष तो उसे करना ही पड़ता है।

कई बार देखा जाता है, कि स्त्री सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता पाने के लिए संघर्ष करती है। लेकिन कडा संघर्ष करने के बावजूद भी उसे सफलता नहीं मिलती। अपने संघर्ष के

फल के रूप में पराजित हुई कई स्त्रियाँ आत्महत्या करती नजर आती है। लेकिन असफलता की वजह से आत्महत्या करना यह कोई समाधान नहीं है, बल्कि स्त्रियों को संघर्ष करते करते ही जीना चाहिए उसके लिए खुद को सशक्त एवं संघर्षशील बनाना है।

मीरा की कृष्ण भक्ति एवं साधू संगती के खिलाफ पुरे सामंती समाज ने उसे कष्ट दिया। फिर भी मीरा अपने ध्येय से पीछे नहीं हटी, उनके खिलाफ उसने संघर्ष किया। इसी लिए मीरा को स्त्री विमर्श का प्रतीक मानते है।

आज इक्कीसवीं सदी में भी स्त्री दोहरी जिंदगी जीती हुए नज़र आती है। उसके नये रूप में भी एक पुराना रूप छुपा रहता है। अपने स्वतंत्र जीवन की ओर बढती स्त्री को अपने में छुपे उस पुरानी स्त्री के साथ संघर्ष करना पड़ता है।

महादेवी वर्मा ने अपनी कृति 'श्रृंखला की कड़ियाँ' में कहा था कि- "वास्तव में अंध:कार कुछ न होकर आलोक का अभाव है। इसी से तो छोटे से छोटा दीपक भी उसकी सघनता को नष्ट कर देने में समर्थ है। अर्थात स्त्री संघर्ष के खडतर मार्ग में उसे अपना दीपक स्वयं ही बनना पड़ता है। [१८]

प्रभा खेतान का 'पिली आंधी उपन्यास' इन्ही विचारों को अभिव्यक्त करता है - "स्त्री की पीड़ा, शोषण, अन्याय, तथा उसके संघर्ष एवं विद्रोह को व्यंजित करता है। इस उपन्यास की सोना भाग्यहीन आधुनिक नारी है, जो नपुंसक पति की पीड़ा का दंश पारिवारिक प्रतिष्ठा हेतु झेलती है। किन्तु उसकी स्त्री चेतना अन्ततः विद्रोह कर उठती है। वह पुसवादी सत्ता की दासी बनकर पारिवारिक प्रतिष्ठा को नहीं ढोती बल्कि परंपरागत नारी- संहिता के नियमों को स्त्री विरोधी बनाती हुई घर छोड़कर स्त्री शक्ति, स्त्री सत्ता एवं स्त्री अस्मिता का परिचय देती है।"[१९]

मधु कांकरिया का मानना है, कि- स्त्री प्रकृति की सुकोमल कविता है। लेकिन स्त्री विमर्श पर तमाम करुण क्रंदन के बावजूद उसकी स्थिति जस की तस है। वह लेखक हो, कलाकार हो, साधू हो, या गृहस्थ, उसे अपनी जगह बनाने के लिए विद्रोह करना होता है। कई बार जीवन की अनिवार्य सुविधाएँ तक तज देनी पड़ती है। दो पहिये की स्त्री पुरुष की गाडी कभी-कभी स्त्री को अकेले खीचनी पड़ती है। स्त्री लेखक हो या कलाकार जीवन के सारभूत प्रश्नों से बच नहीं सकती। उनके उपन्यासों में ऐसे कई स्त्री पात्र है, जो इन्ही समस्याओं में लिपटे है फिर भी अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष करते है।

'खुले गगन लाल सितारे' उपन्यास में मणि जो मध्यमवर्गीय परिवार में रहते हुए पारिवारिक संघर्ष के बावजूद अपना अलग वजूद स्थापित कर इस दुनिया से लडती है। कही पर भी हार या मायूसी उसके रास्ते की रुकावट नहीं बनती। अपने बहन पारसी को दीक्षा लेने से परावृत्त करने के लिए वह अंत तक प्रयत्न करती है। धर्म के इस शुष्क, कर्महीन और भावना शुन्य रास्ते पर जाने वाली पारसी को मणि समझाना चाहती है, कि वह दीक्षा इसलिए लेना चाहती है कारण इस समाज में उसकी शादी संभव नहीं, लेकिन यह सच नहीं है कि शादी ही जीवन की उपलब्धि है। वह उसे समझाती है - " विष पीकर विष ही दिया तो क्या दिया। कड़वाहट पीकर भी जीते जाना ही जीवन का नाम है, बाकी सब पलायन है। फल देनेवाला पेड़ न सही छांह देनेवाला पेड़ तो तुम बन ही सकती हो। जाना है तो सेवा के मार्ग पर जाओ। [20]

'सलाम आखिरी' उपन्यास वेश्याओं का संघर्षपूर्ण जीवन बयान करता है। जैसे जैसे उपन्यास आगे बढ़ता है, वैसे- वैसे वेश्याओं का संघर्षपूर्ण जीवन अनावृत्त हो जाता है। स्त्री जीवन क्रूर, भयावह और बीभत्स सच अपनी समूची कुरूपता, कुत्सा और विद्रूपता के साथ उजागर होता है। अपने परिवार का पोषण करने के लिए देह विक्रय का सहारा लेने वाली वेश्याएँ अपना जीवन बड़े ही संघर्षपूर्ण तरीके से जीती है।

सभी उम्र के पुरुषों की यौनेच्छा को संतृष्ट करने के खातिर वेश्याएँ अपनी जान जोखिम में डालती है, क्योंकि कई बार गुंडा टाइप ग्राहक कंडोम का इस्तेमाल नहीं करना चाहते फिर भी वह उन्हें मना नहीं कर सकती, और इन्ही ग्राहकों द्वारा उन्हें जानलेवा रोग की सौगात मिलती है। इस धंदे में ना उम्र देखी जाती है ना मासूमियत। ग्यारह- बारह वर्ष की मासूम लडकियाँ जिन्हें चकले की भाषा में छुकरी कहते है, उन्हें अप्राकृतिक ढंग से बड़ी घृणता पूर्वक औरत बना दिया जाता है। रास्ते में पड़ी कुतियाँ से बदतर जिंदगी है वेश्याओं की। कोई भी ठोकर मार दे, जो भी डाल दो पैसे, उसी के आगे बिछ जाना पड़ता है। खुद ऐसी गन्दी जिंदगी जीते हुए भी उपन्यास की कई वेश्याएँ अपनी गन्दगी झेलती हुई जिंदगी की तरह ताउम्र और किसी लड़की को न मिले इसके लिए संघर्ष करती नजर आती है।

संलाप संस्था के माध्यम से इंद्राणी दी वेश्या सुधार कार्यक्रम चलाती है। वेश्या सुधार कार्यक्रम से प्रभावित होकर श्रावणी नाम की एक वेश्या कम उम्र की बालिका को वेश्या होने से बचाती है। लेकिन बूढ़ी वेश्याएं और दलाल उसे दारु में जहर मिलाकर मार डालते है। "संलाप" जे जुडी चंद्रिका नाम की वेश्या का संघर्ष इस उपन्यास में नजर आता है। चंद्रिका संलाप संस्था में इंद्राणी दी के कार्य में मदत करती है। आयेशा और अफसान नाम की दो लडकियाँ जिन्हें उनकी खाला ने ही इन गलियों में बेच दिया था उन्हें चंद्रिका उनके माँ- बाप के पास पहुँचाने में मदत करती है।

वेश्यावृत्ति अगर बंद करने की भी सोची जाए तो इस निर्णय का विरोध खुद वेश्याये ही करेंगी। इस उपन्यास में संघर्ष दो रूपों में उभरकर आता है। एक, वेश्या अपना जीवन जीते समय करती है वह संघर्ष। और दूसरा, जो संस्थाएं, वेश्याएँ या और कोई समाज सेविका वेश्यावृत्ति को बंद करना चाहती है, उनका संघर्ष। इस उपन्यास की मध्यवर्ती पात्र सुकीर्ति का संघर्ष भी नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। अपने मित्र मेघन के साथ वेश्यावस्ती में

जीनेवाली इन स्त्रियों का सुख-दुःख बाटना चाहती है। मेघन सुकीर्ति को अपनाने के लिए तैयार है लेकिन सुकीर्ति के मन में विजय के लिए प्यार-भाव है। फिर भी वह दोनों में से किसी एक के साथ अपनी गृहस्थी नहीं बसाना चाहती है। अपनी पत्रकारिता के माध्यम से अपने जीवन की सही खोज के साथ- साथ वेश्याओं की वेदनाओं को उजागर करने वाली सुकीर्ति स्व-अस्तित्व के लिए संघर्ष करती नजर आती है।

मधु कांकरिया का दूसरा उपन्यास 'सेज पर संस्कृत में' संघमित्रा जैसे विद्रोही स्त्री पात्र के साथ-साथ, छुटकी उसकी माँ के जीवन संघर्ष का मार्मिक चित्रण हुआ है। आर्थिक समस्या से परेशान संघमित्रा की माँ पति के मरने के बाद पापड बेलकर घर चलाती है। दो-दो बेटियाँ और घर में कोई पुरुष नहीं , इस बजह से शिकारी कुत्तों की तरह लोगों की नजर उनके घर पर रहती है। इस डर की बजह से माँ अपनी दोनों बेटियों के साथ दीक्षा लेने का निर्णय लेती है। लेकिन संघमित्रा इसका विरोध करती है वह स्वावलंबन के रास्ते में आनेवाली अड़चनों का मुकाबला करने की अपनी ताकत को पहचानती है। इसके विपरीत उसकी माँ अपने जिम्मेदारियों से सन्मान पूर्वक मुक्ति लेना चाहती है। इसलिए वह अपने बेटियों के शादी के खिलाफ है। वह कहती है - कितनी वाहियात चीज है ये शादी! मै नहीं चाहती की तुम इसमें फँसो, मेरी ही तरह विधवा हो और तिल-तिल कर अपने बच्चे को मरते हुए देखो। संसार में रहने का मतलब है , दु:खों के दलदल में फँसना [२१]

संघमित्रा अपनी माँ जैसी पलायनवादी भूमिका का स्वीकार नहीं करती। घर-घर, गली-गली जाकर ट्यूशन पढ़ाती है। अपने पिता के पैतृक व्यापार में साबुन बनाकर गाँव में बेचती है, तथा अपने कॉलेज की पढ़ाई भी करती है। कॉलेज, व्यापार, ट्यूशन यह सबकुछ संभालकर वह अपनी माँ- बहन की देखभाल करना चाहती है। न की उसे माँ ने अपनाया हुआ दीक्षा का मार्ग अच्छा लगता है। इसीलिए वह अपनी माँ से कहती है- "तुम्हे लगता है कि तुम

अपने बूते हमारे लिए पति का जुगाड़ नहीं कर पाओगी तो इन्ही धर्मरुपी पति के हवाले कर दो। पर हमें न पति चाहिए न घर। हमें बस थोडा- सा भरोसा दो जिससे हमारे पंखों को मजबूती मिल जाए। फिर हम अपना आसमान खुद ढूंड लेंगे। औरत होने के डर से तुम खुद भी मुक्त हो जाओ और हमें भी मुक्त करा दो"।[२२]

लाख कोशिशें करने के बाद संघमित्रा अपनी माँ और बहन छुटकी को दीक्षा लेने से परावृत्त नहीं कर सकती। फिर भी वह छुटकी को दीक्षा लेने से रोकने के लिए उसे घुमाने ले जाती है। लाल रंग की फ्रॉक खरीदकर, उसे ट्रायल रूम में ही पहना देती है। कंघी खरीदकर उसके बाल संवार देती है। बालों में खुबसूरत बकल लगाती है। रेस्तरां जाकर उसे जलेबी और समोसा खिलाती है। लेकिन उसकी माँ उसे धमकी देती है कि उसने अगर धर्म के काम में रोक लगाई तो वह छुटकी के साथ उपासर में रहेगी। संघमित्रा अपने हथियार डालती है। वह समझ जाती है कि वह चाहकर भी छुटकी को दीक्षा लेने से नहीं रोक पाएगी।

माँ और छुटकी के दीक्षा लेने के बाद भी वह जिंदगी से हार नहीं मानती। वह अपने गाँव वापस आती है। अपने पूर्वजों द्वारा हडप किया हुआ घर उसके असली हकदार पंचम माँझी को देती है। कलकत्ता जाकर कंप्यूटर एप्लीकेशन सॉफ्टवेर की डिग्री हासिल कर कंपनी में नौकरी करने लगती है। अपने जीवन संघर्ष में उसके स्वाभिमान और सम्मान को कई बार आहत होना पड़ता है। अपने आसपास की औरतों की दुनिया देख उसका दिल दहल जाता है। इसी कारण वह अपने साथ-साथ बाकी स्त्रियों की सम्मान स्वाभिमान और व्यक्तित्व की लड़ाई के लिए "नारी शक्ति संघ" की स्थापना करती है।

'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास की मुख्य पात्र मणि अपने पारिवारिक संघर्ष में भी अपना अलग वजूद स्थापित करती है। अपने प्रेमी इंद्र की तीस साल लगातार प्रतीक्षा में वह संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करती है। कॉलेज के दिनों में वह इन्द्रनील से प्यार करने लगी थी।

लेकिन इंद्र नक्सलवादी आन्दोलन का हिस्सा बन जाता है। वह बाकी आन्दोलनकर्ताओं के साथ गिरफ्तार होता है। लेकिन नक्सलवादी आन्दोलन का तूफ़ान थमने पर भी उसका कुछ अता पता नहीं रहता. अपने जीवन के तीस साल मणि इंद्र को ढूंढती है। अपने उम्र के पैंतालिसवे साल में भी वह इंद्र की प्रतीक्षा में रहती है।

आदिवासियों के लिए काम करनेवाले अलोक भगत पैतालीस की उम्र में मणि के सामने जीवन संगिनी बनने का प्रस्ताव रखते है। पैंतालीस वर्ष की मणि को समझ नहीं आता वह क्या निर्णय ले। इंद्र की खोज या आलोक भगत जी का प्रस्ताव। उम्र की ढलान पर मणि को अपने संघर्षपूर्ण जीवन से छुटकारा पाने का मौक़ा मिलता है। लेकिन तब उसे पता चलता है कि इंद्र के आखिरी दिनों की जानकारी रखनेवाला एक नक्सलवादी कवि गाँव में रहता है, तब अलोक भगत के शादी के प्रस्ताव पर सोचने की बजाय वह इंद्र के बारे में जानने के लिए निकल पड़ती है।

मधुजी के उपन्यासों में ऊपर प्रस्तुत स्त्री पात्रों द्वारा किया गया संघर्ष अपना वजूद बनाने के लिए किया गया था। लेकिन मरकर भी अमर होने का संघर्ष उनके उपन्यास "सेज पर संस्कृत" में नजर आता है। इस उपन्यास में गंगाबाई साठ वर्ष की उम्र में कई वर्षों तक एक दिन उपवास और एक दिन एकासना कर मोक्षप्राप्ति की ओर जाने के लिए अपना शरीर गलाती है। अंत में वह संथारा अपना लेती है। संथारा लेने के लिए वह पानी तक त्याग देती है जिससे उनके प्राण शीघ्र ही अनन्त में विलीन हो जाए।

४ .२. ४. आर्थिक आत्मनिर्भरता

अर्थ जीवन का प्रमुख अंग है। समाज का राजनीतिक और सामाजिक घटनाक्रम आर्थिक प्रतिक्रया से प्रभावित होता है। स्त्री अपने सभी रूपों में आर्थिक रूप से पराश्रित रहती है। चाहे स्त्री आर्थिक रूप से परिपूर्ण हो फिर भी अर्थ का व्यय करने का अधिकार भी उसके

पास नहीं रहता। अगर स्त्री शादी शुदा हो तो अर्थ का व्यय करने का अधिकार पति के पास रहता है। बिन-ब्याही हो तो पिता के पास अधिकार रहता है। पिता उसे बताता है कि उसके अर्थार्जन का व्यय कैसे किया जाता है। स्त्री को पूर्ण रूप से अपना व्यक्तित्व विकास करना है तो उसे आर्थिक रूप से पूर्णतः आत्मनिर्भर होना चाहिए इसके लिए उसे पुरुषों के समान आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, एवं धार्मिक अधिकार प्राप्त होने चाहिए।

अनेक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में स्त्री कि आर्थिक आत्मनिर्भरता के बारे में लिखा है। महादेवी वर्मा स्त्री के लिए आर्थिक मुक्ति जरुरी मानती है। समाज ने स्त्री जीवन को इस व्यवस्था में बनाया है, जिसमे पुरुष के अभाव में उसके जीवन की साधारण सुविधाएँ नष्ट हो जाती है इसी कारण वह स्त्री हताशा में ऐसा मार्ग स्वीकार करती है, जो उसके लिए तथा समाज के लिए घातक हो सकता है।

उषा प्रियंवदा लिखित "पचपन खम्बे लाल सितारे" की सुषमा अपने पिता के सेवा निवृत्ति और पक्षाघात के बिमारी के चलते नौकरी करने के लिए विवश है। उसके ऊपर दो छोटी बहने और भाई की भी ज़िम्मेदारी है, जिनको उसे पढ़ाना है। सुषमा के माता पिता को उसके विवाह की चिंता नहीं क्योंकि वह अर्थाजन का साधन है। घर में सभी भाई बहनों की शादी होती है, तब वह महसूस करती है कि वह केवल पैसे कमाने का यंत्र है।

'प्रभा सक्सेना' के उपन्यास "टुकड़ों में बंटा इंद्रधनुष्य" की नायिका आत्मनिर्भर है। आर्थिक दृष्टी से सक्षम है। पति खुद नौकरीशुदा होते हुए भी उसके पैसों पर अपना हक जताता है तथा उसका आर्थिक शोषण करता है। लेखिका इसके बारे कहती है -"अर्थ मानव-संबंधों का निर्धारण करता है। इसे थोड़ा ढंग से कहाँ जाए तो, अर्थ नहीं अर्थ से बचने वाली मानसिकता, विभिन्न सामाजिक स्तर, आर्थिक स्थिति में एक मानसिकता प्रदान करते है और यह मानसिकता ही संबंधों के विघटन अथवा एकीकरण के लिए जिम्मेदार है। कहा जा सकता

है, आर्थिक स्तर एक स्वभाव बना देता हैं। उसका सामंजस्य अपनी ही स्थिति के लोगों से हो पाता है। [२३]..

भारत में कई जगह हम देख सकते हैं, कि स्त्री आर्थिक संकट से उभरने के लिए वेश्यावृत्ति अपनाने के लिए विवश है। शुभा वर्मा के उपन्यास "फ्रीलांसर" की शुभा मानती है कि- "काम ही ऐसा है दोस्त जो दगा नहीं देता, सिर्फ वक्त की पूँजी माँगता है और तमाम, जिंदगी परेशानियों से उबारे रहता है। [२४]

ममता कालिया के उपन्यास "बेघर" की संजीवनी अपने पारिवारिक समस्या के कारण नौकरी करने के लिए बाध्य है। पिता घर में बेकार बैठे है और भाई परिवार के प्रति कोई दायित्व उठाना नहीं चाहता। उसे और उसके माँ को पैसों के लिये भाई पर निर्भर रहना पड़ता है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास "कठ गुलाब" की असिम आर्थिक परिस्थिति के कारण बारहवीं कि परीक्षा उत्तीर्ण होते ही नौकरी करने के लिए मजबूर होती है। कालांतर से अमेरिका की एक कंपनी में उच्च पद की नौकरी प्राप्त होती है। इस प्रकार वह अपने आर्थिक कमियों से उबरने के लिए अथक परिश्रम करते नजर आती है। असिम की माँ भी खराब आर्थिक हालात के चलते कपड़े सीने का काम करती है, और धीरे धीरे बुटिक डालती है। उसके सिले हुए कपड़ों की देश- विदेश में माँग बढ़ जाती है।

मधु कांकरिया के उपन्यासों में भी स्त्री कि आर्थिक आत्मनिर्भरता का चित्रण मिलता है 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में कुटीर उद्योगों की दशा का वर्णन किया है। जगितिकिकरण के चलते कुटीर उद्योग धराशाही होने लगे थे। गाँव के लोग आर्थिक तंगी के कारण अपने परम्परागत उद्योग छोड़कर पैसा कमाने के लिए शहर की तरफ निकलने लगे थे। गोरखपुर गाँव के हाट में अब पहले जैसा कोई घरेलु साबुन नहीं खरीदता।- "सभी ब्राईट साबुन, निरमा, सर्फ़

खरीदते है। अब मैदान में बड़े बड़े राक्षस उतर आये है। पहले गाँव का साबुन गाँव में खप जाता था। अब बड़ी बड़ी कम्पनियाँ एजेंट बन साबुन बेच रही है।[२५]

उपन्यास में संघमित्रा की माँ इन्ही कुटीर उद्योगों के सहारे जीनेवाली महिला है। वह अपनी आर्थिक स्थिति सुधरने के लिए पति के मौत के बाद पापड़ बेलकर घर चलाती है। लेकिन अपनी जिम्मेदारियों से दूर हटने के लिए अपने बेटियों के साथ साध्वी बनना चाहती है। संघमित्रा अपनी माँ को और बहन छुटकी को इस फैसले से परावृत्त करना चाहती है। वह माँ और बहन छुटकी की खुद देखभाल करना चाहती है। अपनी माँ जैसी परिस्थितियों से दूर भागना नहीं चाहती। इसीलिए अपने पिता के साबुन बनाने के पैतृक व्यापार को पुनः शुरू करती है। वह खुद साबुन बनाकर गाँव में बेचती है तथा घर घर जाकर ट्यूशन पढ़ाती है।

उपन्यास में जागतिकीकरण की बजह से सारे कुटीर उद्योग बंद हो चुके है। लोगों के पास काम न रहने की वजह से ज्यादातर लोक शहर की तरफ निकल चुके है। जो बचे है उन्हें अपने आर्थिक परिस्थिति की चिंता नहीं। गाँव में तो चर्चा का विषय एक ही है, कि विधवा पूर्णिमा देवी अपने दोनों बेटियों के साथ दीक्षा ले रही है। मारवाड़ी समाज में सबसे ज्यादा सन्मान धनिकों को मिलता है। और उसके बाद धर्माचार्यों को सन्मान मिलता है। शायद इसलिए आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण संघमित्रा की माँ पूर्णिमा देवी दूसरा रास्ता अपनाती है। क्योंकि वह जानती है, अपनी गरीबी से निजात पाना है, तथा समाज में सन्मान एवं सुरक्षा पाना है तो दीक्षा लेने के अलावा और कोई बेहतर मार्ग नहीं है। जैसे ही समाज में खबर लगती है कि फला परिवार दीक्षा लेने जा रहा है तो समाज में उसका महत्व बढ जाता है। अपनी आर्थिक स्थिति ठीक न होते हुए भी लोग उनकी सेवा करने में जुट जाते हैं । संघमित्रा की माँ का हाल भी वही है। दीक्षा लेने से पूर्व उनके घर में तीन साध्वियाँ पधारती है उनकी आवभगत देख संघमित्रा कहती है - "तीन साध्वियाँ पधारी । उनके लिए माँ ने तीन-तीन

सब्जियाँ, धनिये की चटनी, तरबतर फुलके, तबियत की छोंकी दाल, कई फल के प्याले।एक कोने में सफ़ेद मलमल की साड़ियाँ। संघमित्रा अवाक्, महीनों हो गए साबुन से नहाए। अंगूर छोड़ अमरुद देखे मुद्दत हो गयी और इन साध्वियों के लिए इतना धन लुटाया जा रहा है।शायद बची कुची चांदी भी बेच डाली गयी। [२६]

'खुले गगन के लाल सितारे' की मणिदीपा की बहन पारसी का विवाह आर्थिक अभाव के कारण योग्य वर से हो नहीं पाया। एक हादसे में तीस प्रतिशत जल जाने की वजह से पारसी कि शादी टूट जाती है। पारसी का होनेवाला पति महेंद्र उसे अपनाने से इनकार करता है। पारसी का भाई पारस इस घटना से परेशान होता है, क्योंकि पारसी के शादी के लिए उसने कर्जा लिया था।

मधु कांकरिया आर्थिक स्वतंत्रता को जीने की पहली शर्त मानती है। वह मानती है कि स्त्री के अस्तित्व की पहचान के लिए वह आर्थिकदृष्टया आत्मनिर्भर होना जरूरी है। मधु कांकरिया के उपन्यास साहित्य में चित्रित ऐसे स्त्री चरित्र दिखाई देते है जो आर्थिक कठिनाइयों से विवश तो होती है, किन्तु इस विवशता से स्वयं मार्ग ढूंढने की कोशिश करती है। 'सेज पर संस्कृत' की संघमित्रा, खुले गगन के लाल सितारे की मणिदीपा तथा जया। सलाम आखिरी उपन्यास की सुकीर्ति इत्यादि पात्र आर्थिक स्वतंत्रता पाने के लिए प्रयत्न करते नजर आते है ताकि वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित कर सके।

४. २.५. स्त्री स्वातंत्र्य

संसार में स्त्री का स्थान बाकी मानव प्राणियों जैसा स्वतंत्र और स्वायत्त होना चाहिए। स्त्री के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए समाज में उसका स्वतंत्र रहना जरूरी है। स्त्री की अपनी इच्छाएँ एवं आकांक्षाएँ होती है और उनकी पूर्ति करना उसका अधिकार है। हमारे समाज में स्त्री को स्वतंत्र देखना मना है। स्त्री स्वातंत्र्य को हमेशा दुय्यम स्थान दिया जाता है।

अगर स्त्री अपने स्वातंत्र्य का इस्तेमाल करती है, तो उसे चरित्रहीन माना जाता है। स्त्री का स्वतंत्र होना और उसका चरित्र इन दोनों को हमेशा जोड़ा जाता है। स्त्री स्वतंत्र है मतलब वह चरित्रहीन है। यह गलत धारणा समाज में हमेशा से चली आ रही है।,

समाज में स्थापित, सामाजिक, सांस्कृतिक स्त्री विरोधी परम्पराओं पर टिप्पणी करते हुए प्रभा खेतान लिखती है, - "परम्पराएँ, स्त्री को घर सौपती है, बच्चों का भरण पोषण सौपती है। मानवता के नाम पर वृद्ध और बीमारों के लिए उससे नि:शुल्क सेवा लेती हैं और बदले में उसके द्वारा की गयी सेवाओं का महिमा मंडन कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर लेती है।, स्त्री भूखी है या मर रही है इसकी चिंता किसी को नहीं होती"। [२७]

तसलीमा नसरीन स्त्री के स्वतंत्रता के बारे में लिखती है- " स्त्री एक पूर्ण व्यक्ति है। पृथ्वी पर ज़िंदा रहने का अधिकार, चलने का, बोलने का, प्यार करने का, घृणा करने का अधिकार उसे जन्म से है। स्त्री को सचेतन होना चाहिए जिससे उसे अपनी स्वतंत्रता की भीख न माँगनी पड़े। स्त्री को पुरुषों के बाजार में अपना व्यक्तित्व न बेचना पड़े"। [२८]

आज की आधुनिक स्त्री में अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्र सत्ता स्थापित करने का दृढंनिश्चय है। उसकी अभिव्यक्ति मधु कांकरिया के उपन्यास में मिलती है। उनके अनुसार अगर स्त्री अपना व्यक्ति स्वातंत्र्य पा लेती है, तो वह स्वयं को सार्थक अनुभव कराती है। आज की स्त्री अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित करना चाहती है। स्त्री स्वतंत्रता के अवधारणा ने ही स्त्री को स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता प्रदान की है। मधु कांकरिया के उपन्यासों में अनेक स्त्री पात्र स्वतंत्र निर्णय लेते हुए नजर आते है- "उनके उपन्यासों में विचारों के दो ध्रुवीकरण दृष्टिगोचर होते हैं, एक पितृसत्ता की सुविधा सुरक्षा तो दूसरी स्त्री की अपनी मानवी गरिमा की चाह वे दोनों विरोधाभास साथ- साथ नहीं चल सकते। यह नहीं हो सकता कि पुरुष को सभी प्रकार की सुविधाएँ मिलती रहे और वह तमाम घिनौने कृत्यों के बावजूद श्रेष्ठ कहलाए और स्त्री

भोग्या बनकर रोती बिलगती रहे।"[२९] इसीलिए शायद मधुजी के उपन्यासों के स्त्री पात्र अपनी खुदकी स्वतंत्र पहचान बनाना जानते हैं।

मृदुला गर्ग के उपन्यास "कठगुलाब" की स्मिता और मरियान के मन में मर्द बनने की इच्छा ज़रा भी नहीं है। वह दोनों अगले जनम में भी स्त्री जन्म की इच्छा करती है। स्मिता स्वतंत्रता के नाम पर स्त्री के पुरुष होने की इच्छा के विरुद्ध है। उसके अनुसार स्त्री के इस मोह के कारण ही वह दूसरी स्त्री के साथ अन्याय करती है - "औरत औरत के साथ अन्याय क्यों करती है, क्या उसके मूल में पुरुष इर्ष्या नहीं रहती? वह पुरुष होना चाहती है, इसीलिए समर्थ होते ही दूसरी स्त्रियों पर अपने उधार के पौरुष का रौब जमाने लगती है। अपने को कमतर माननेवाली औरत मर्द होना चाहती है, वही उसकी सबसे बड़ी महत्वकांक्षा होती है। तभी तो वह बराबरी के हक की माँग करती है तो पुरुष से। आजादी की गुहार मचाती है तो मर्द से; समाज, इतिहास, मानव जाती की सदी- गली, युगों से चली आ रही मान्यताओं से नहीं"। [३०] प्रभा खेतान का उपन्यास 'अपने अपने चहरे' की रीमा के विचार में स्त्री की स्वतंत्रता केवल आर्थिक स्वतंत्रता ही नहीं होती है, स्त्री तब स्वतंत्र होती है जब वह अपनी मानसिक जकडन से मुक्त होती है।

'चाक' उपन्यास की पात्र सारंग, श्रीधर के साथ अपने दैहिक संबंध को आजादी मानती है। उसके विचार में स्वतंत्रता मतलब देह की मुक्ति है। वह सोचती है- "वह समझा सकती है, अपने बेटे को कि मैं वह रास्ता खोलने जा रही हूँ जिसे खोलना औरत के लिए वर्जित है। लोकलाज का डर मुझे नहीं। तेरे पिता को लेकर मै गद्दारी नहीं कर रही। यह व्यभिचार नहीं आज़ादी है"। [३१]

मधु कांकरिया के अनुसार- " स्त्री के लिए स्वतंत्रता कर्तव्य एवं दायित्व बोध लेकर आती है। स्त्री अगर स्वतंत्र होना चाहती है तो उसे अपने कर्तव्य और दायित्व बोध का भी

उतना ही ज्ञान होना चाहिए इसीलिए स्वतंत्रता की आदर्श स्थिति क्या हो? इसके बारे में सोचना होगा। आज तक स्त्री ने जितनी भी स्वतंत्रता हासिल की है वह संघर्ष करके हासिल की है। [३२]

'खुले गगन के लाल सितारे' यह उपन्यास नक्सलवादी आन्दोलन तथा कॉमरेड़ों की जीवन गाथा है। इस उपन्यास के स्त्री पात्र मणि तथा मेरी टायलर रुढ़िवादी समाज से टकराकर अपने अस्तित्व को नए आयाम से परिभाषित कर अपनी प्रतिभा और संकल्प शक्ति से नई शक्ति और चुनौती के रूप में उभरती है।

मणि अपने प्रेमी इंद्र की तीस साल प्रतीक्षा करके आखिर में उसका क्या हुआ यह जानने के लिए गोपाली दा से मिलती है। गोपाली दा से मिलने का मणि का एकमात्र उद्देश्य था, भूमिहीन किसानों के लिए लादे जानेवाले नक्सलवादी आन्दोलन की जानकारी के साथ-साथ वह इंद्र के बारे में भी जानना चाहती है। कॉलेज के दिनों में मणि इन्द्रनील की तरफ आकर्षित होती है। इंद्र सभी गुणों से संपन्न था, वाद-विवाद का श्रेष्ठ वक्ता, गायक, मार्क्स, लेनिन, चाणक्य, कौटिल्य जैसे सभी विषयों में पारंगत था। उम्र के उन चढ़ते दिनों में मणि को अपनी प्यार की भावनाओं को एक परम्परावादी जैन मारवाड़ी परिवार से होने की बजह से दबाना पडा। लेकिन उसके जीवन में घटी घटनाओं से अपने घर की परम्परावादी श्रृंखला से बाहर निकलती है और साथ में अपनी बहनों को भी बाहर निकलने की कोशिश करती है। उसकी बहन पारसी को वह दीक्षा लेने से रोकना चाहती है। वह सोचती है -" पुरे भूमंडल पर शायद हिन्दुस्तानी औरत ही एकमात्र ऐसी नस्ल है, जो अपनी औकात उतनी भर ही समझती है, जितनी समझा देता है पुरुष उसे। उतनी ही उड़ान से संतुष्ट जितना आकाश थमा दे पुरुष। [३३] मणि इंद्र की खोज जारी रखती है। उम्र के पैतालिसवें अध्याय में मणि स्कूल की प्रिन्सिपल है और एक कवयित्री भी है। उसके चर्चित पुस्तकों ने उसे एक तेजस्वी और प्रभावशाली

कवयित्री के रूप में साहित्य की दुनिया में चर्चित बना दिया है। मणि एक परम्परावादी मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की होते हुए भी अपना एक स्वतंत्र वजूद बनाने के लिए अपने परिवार वालों से, इस दुनिया से लडती है तथा अनेक समस्याओं में भी अपनी ध्येय प्राप्ति की और मार्गक्रमण करती है।

'सेज पर संस्कृत' उपन्यास की संघमित्रा संघर्षपूर्ण जीवन से पराजित न होकर अपना जीवन नए सिरे से शुरू कर लेती है। समाज में उपेक्षित औरतों कि अलग पहचान बनाने के लिए स्वाभिमान और व्यक्तित्व को उभरने के लिए वह अपने साथ साथ समाज के उपेक्षित स्त्रियों के लिये कार्य करती है। समाज की उपेक्षित स्त्रियों के लिए "नारी शक्ति संघ" की स्थापना करती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: मधु कांकरिया के उपन्यासों के बारे में हम कह सकते हैं कि उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री को केंद्र में रखकर उसके स्वरुप तथा उसके समस्याओं का चित्रण किया है। उनके 'सलाम आखिरी', 'सेज पर संस्कृत' और 'खुले गगन के लाल सितारे' इसी का उदाहरण है। अपने लेखन को एक ही विषय तक सिमित न रखकर उन्होंने अपने उपन्यासों में से विविध आयामों पर चिंतन किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री विमर्श के साथ साथ मध्यमवर्गीय परिवार का आर्थिक विवशताओं से जूझता हुआ अभावपूर्ण जीवन का चित्रण नजर आता है।

स्त्री शोषण हमारे समाज की सनातन समस्या है। मधुजी के सलाम आंखिरी और सेज पर संस्कृत उपन्यास में स्त्री शोषण का चित्रण पाठकों को झकझोर देता है। समकालीन नारी सक्षमीकरण के युग में भी स्त्री कैसे अपमानित रहती है। उसका आर्थिक दैहिक एवं मानसिक शोषण कैसे होता है। इसका चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है।

मधुजी के उपन्यासों में हम स्त्री पात्रों के साथ-साथ पुरुष पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी देख सकते है। स्त्री मन की अनेक स्थितियों का वर्णन उनके उपन्यासों में हुआ है। पितृसत्ताक समाज में शोषित जीवन जीना है, या शोषण का विरोध कर अपना स्व- अस्तित्व स्थापित करना है, यह स्त्री के मनोविज्ञान पर निर्भर करता है। मधुजी के उपन्यासों में हमें अनेक मनोवैज्ञानिक पहलु नजर आते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री की कुंठाओं उसके अंतरद्वंद्व का सफलता के साथ वर्णन किया है। इसी कारण उनके उपन्यासों के स्त्री पात्र यथार्थ की भाव-भूमि पर खरे उतरते है।

मधुजी के उपन्यास स्त्री मुक्ति औरी शोषण की लम्बी दास्तान है। उनके उपन्यास के अनेक स्त्री पात्र जीवन की लड़ाई में हारते हुए, तो कभी उस लड़ाई कपने तरीके से लड़ते हुए विजय प्राप्त करते नजर आते है। इससे यह साबित होता है कि उनके उपन्यासों में शोषण के साथ-साथ स्त्री संघर्ष की भी अभिव्यक्ति हुई है। "स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि उसे बना दिया जाता है" साइमन बाउवार का यह वाक्य पूरी प्रमाणिकता के साथ मधुजी के उपन्यासों के स्त्री पात्रों की हकीकत बयान करता है।

मधुजी के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष दो रूप से दृष्टिगोचर होता है, एक जीवन के संघर्ष में अपनी पहचान बनाकर खुदका वजूद स्थापित करना और दुसरा रूप है, खोकली अंधश्रद्धा के चलते मरकर अमर होने की चाह में किया गया संघर्ष।

स्त्री जीवन में अर्थ की विशेष महत्ता है। क्योंकि स्त्री को ही परिवार का आर्थिक दायित्व संभालना पड़ता है। मधुजी के उपन्यासों में धर्म के साथ साथ अर्थ यह विषय मुख्य रहा है। मार्क्सवादी विचारधारा की मधुजी समाजवाद पर विश्वास रखती है। वह ऐसा समाज चाहती है जहा कोई आमिर न हो, न कोई गरीब। बचपन से आर्थिक अभावों से झूझती मधुजी को अर्थ की महत्ता का ज्ञान है। इसीलिए उनके उपन्यास में चित्रित कई स्त्री पात्र आर्थिक रूप

से विवश होते हुए भी स्वयं मार्ग ढूंढने की कोशिश कर अपना अस्तित्व स्थापित करती नजर आती है।

चतुर्थ अध्याय - सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. डॉ. दुर्गेश नंदिनी प्रसाद	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में पुरुष पात्र	प१
२. डॉ. वी. के. अब्दुल जलील	समकालीन हिंदी उपन्यास- समय और संवेदना	आवरण पृ. २
३. प्रेमचंद	कुछ विचार	३८
४. सुनीता कावले	कथाकार मधु कांकरियाँ	१८८
५. प्रभा खेतान	अग्निसंभवा	५८
६. जगदीश चतुर्वेदी	स्त्रीवादी साहित्य विमर्श	२१
७. मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	१५०
८. वही	वही	१३३
९. मधु कांकरिया	सूखते चिनार	९७
१० . डॉ शकुंतला शर्मा	जैनेन्द्र की कहानियाँ : एक मूल्यांकन	१०९
११. डॉ. किरणबाला अरोड़ा	साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में नारी	२११
१२. मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	५१
१३ . मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	१६१
१४ . वही	वही	३६
१५ . वही	वही	३६
१६ . वही	वही	४०
१७ . मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	१५४
१८ . महादेवी वर्मा	श्रृंखला की कड़ियाँ	२८
१९ . रवि कुमार	आठवे दशक के बाद हिंदी लेखिकाओं की स्त्री विमर्श सम्बन्धी अवधारणाएँ	२३०

२०. मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	१३५
२१ . मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	४६
२२. वही	वही	४६
२३. प्रभा सक्सेना	टुकड़ों में बटा इंद्रधनुष्य"	८०
२४ . शुभा वर्मा	फ्रीलांसर	१४
२५ . मधु कांकरिया)	सेज पर संस्कृत	१०
२६ . वही	वही	१२
२७ . प्रभा खेतान	उपनिवेश में स्त्री	१४
२८ . तसलीमा नसरीन	औरत के हक में	१२३
२९. डॉ उषा कीर्ति राणावत	मधु कांकरिया का रचना संसार	१२०
३० . मृदुला गर्ग	कठगुलाब	१०५
३१ . मैत्रयी पुष्पा	चाक	२६४
३२. डॉ उषा कीर्ति राणावत	मधु कांकरिया का रचना संसार	१४१.
३३. मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	१४३

पंचम अध्याय

मधु कांकरिया का कथा साहित्य: भाषा शैली

पंचम अध्याय

मधु कांकरिया का कथा साहित्य : भाषा- शैली

अपने विषय की अनुभूति व्यक्त करना एक कथाकार की स्वाभाविक प्रक्रिया है। वह हमारे समाज के चेतन अचेतन सृष्टि को देखता है, महसूस करता है और अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करता हैं । कथाकार द्वारा अनुभूतियों की अभिव्यक्ति होते समय भाषा का स्थान विशिष्ट होता है । भाषा विचारों के अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से बना है, जिसका अर्थ है बोलना या कहना। हिन्दी साहित्य कोष के अनुसार - "यदि वैज्ञानिक और सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो भाषा मनुष्य के केवल विचार- विनिमय का हि साधन नहीं है लेखन का भी साधन है ।" [१]

साहित्यकार की साहित्य सृजन में भाषा का महत्त्व अनन्य रहता है। भाषा मनुष्य के भाव एवं विचारों को अभिव्यक्ति प्रदान करने का माध्यम है। कथाकार मधु कांकरिया ने अपने कथा साहित्य में रचना के माँग के अनुरूप भाषा का प्रयोग कर अपनी अनुभूतियों की सक्षम अभिव्यक्ति की हैं । उनकी भाषा रचना में सम्मिलित देश काल एवं पात्रों के अनुरूप है। पात्रानुकूल भाषा, प्रसंगानुकूल भाषा, प्रतीकात्मक भाषा, बिम्बात्मक भाषा तथा स्वाभाविक एवं सहज भाषा का प्रयोग कर कहानी तथा उपन्यास साहित्य में अपनी अनुभूतियों की सक्षम अभिव्यक्ति की है तथा उनके साहित्य सृजन का महत्वपूर्ण आयाम उनकी भाषा है ।

उपन्यास लेखिका के रूप में मधु कांकरिया ने विशेष रूप से अपनी भाषा को रचनाओं के काल एवं पात्रों के अनुसार रचा है । उनके कथासाहित्य में कही गाँव की आदिवासी बोली है, तो कही प्रांजल शहरी भाषा है। उनका कथा साहित्य जिस विषय पर टिका हुए है उनमें नवीनता दिखाई देती है । अपने नूतन कथ्य के साथ- साथ नूतन शिल्प के

इस्तेमाल के कारण उनके उपन्यास तथा कहानियाँ पाठक तथा आलोचकों को आकृष्ट करते है।

मधु कांकरिया के हर एक उपन्यास नूतन कथ्य के कारण वाचनीय तो बने ही है, लेकिन कथ्य को शब्दांकित करते वक्त जो भाषिक वैशिष्ट्य उन्होंने अपनाया है, उससे उन्होंने अपनी अलग पहचान बनायी है - "उनके प्रमुखतः सभी उपन्यासों में भाषा के नए- नए रूप और प्रयोग, भाषा के काव्य, भाषा के उपकरणों की प्रतिक, बिम्ब, संकेत अलंकार आदि का प्रयोग हुआ है। फलस्वरूप उनकी औपन्यासिक भाषा अधिक सम्प्रेषणीय बन पड़ी है। लेखिका अपनी कहानियों की अपेक्षा उपन्यासों में भाषा की दृष्टि से विशेष सतर्क लगती है और भाषा तथा शैली के प्रति इस सजगता के कारण उनके उपन्यासों में शिल्पगत चमत्कार भी अनुभव होता है"। [२]

मधु कांकरिया अपनी भाषिक सीमाओं की कमियाँ भी वाचकों से छुपाती नहीं। 'सलाम आखिरी' उपन्यास लिखते समय उपन्यास में भाषा को लेकर उनके सामने समस्या आयी थी। कलकत्ता में प्राय सभी वेश्याये बंगाली भाषी थी और शायद बंगाली भाषा की समृद्धि के कारण सभी वेश्याये उच्च प्रति की बंगाली बोलती थी। उनके उच्च बंगाली को निम्न हिंदी में रूपांतरित करने की कोशिश मधु कांकरिया से सधी नहीं। फिर भी उनका 'खुले गगन के लाल सितारे' हो या 'पत्ताखोर', 'सलाम आखिरी उपन्यास', 'सेज पर संस्कृत', तथा सूखते चिनार' इन उपन्यासों की भाषा काल एवं पात्रों के अनुसार होने के कारण यह उपन्यास काफी प्रभावी बन गए हैं । सुनीता कावले का मानना है कि - “उनकी भाषा शब्द भण्डार से संपन्न , सूक्तियों से सजी और अलंकारिता से पूर्ण है। अपने भाषा को पाठकों तक तीव्रतर रूप में संप्रेषित करने की क्षमता उनकी भाषा में है। [3]

शशिकला त्रिपाठी जी भाषा- शैली का महत्त्व विषद करते हुए लिखती है - " अपनी इच्छित विषय वस्तु के संप्रेषण हेतु रचनाकार सृजनात्मक प्रक्रिया अपनाता है। किसी भी कथा- वस्तु की रचनात्मक भाषा, आम भाषा से इस भिन्न रूप में होती है कि उसमे विचारों की संयमित श्रृंखला होती है और अर्थ की संवहन क्षमता । रचनाकार जिन परिस्थितियों , जीवन सन्दर्भों और आसपास के परिवेश का अंकन करता है, वह सब कुछ उसे भाषा में ही प्राप्त नहीं होता। दृश्य, संवेग, मूक घटनाओं और स्पष्ट स्थितियों की भाषा निर्मित करनी पड़ती है [४]

मधु कांकरिया के कथा साहित्य में भाषा तथा शैली निम्नलिखित विशेषताओं के आधार दृष्टिगोचर होती है।

५. १ भाषागत विशेषताएँ

५. १.१. स्वाभाविकता और सहजता

साहित्य का अविभाज्य अंग है, 'भाषा '। भाषा साहित्य के रूप और आत्मा के भाव का वहन करती है। भाषा मानवीय अनुभूतियों एवं संवेदनाओं को उदघाटित करने का एक सबल माध्यम है, भाषा संप्रेषण से पहले संवेदन का माध्यम है। इसीलिए किसी भी व्यक्ति या रचनाकार की मानसिकता की पहचान उसके द्वारा इस्तेमाल की गयी भाषा से होती है। भाषा जितनी सरल, स्वाभाविक और सहज होती हैं, उसकी प्रभावशीलता उतनी ही बड़ी होती है। कथा साहित्य की भाषा सरल होनी चाहिए। भाषा में सांकेतिकता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता हो सकती है, लेकिन एक कलाकृति लिखते समय जो संकेत, प्रतीक तथा बिम्ब इस्तेमाल किये जाते है अगर वह पाठकों को आसानी से समझ ना आए तो वह कलाकृति निरर्थक हो सकती है। इसीलिए भाषा में स्वाभाविकता और सहजता होना महत्वपूर्ण हैं।

मधु कांकरिया के उपन्यास के पात्र जन साधारण से जुड़े होने के कारण उनकी भाषा में सहजता और स्वाभाविकता नजर आती हैं - "यह दुनिया कलकत्ता महानगर के विभिन्न दरवाजों- सोनागाछी, बहु बाजार, काली घाट, बैरकपुर, खिदिरपुर आदि में खुलती है। यहाँ जीवन के कुरूप से कुरूप एवं भयंकर से भयंकर नग्न रूप मिल जायेंगे, क्योंकि यहाँ संस्कृति, मर्यादा एवं परम्पराओं का कोई डर नहीं है। बंधन नहीं है। इस रूप के बाजार का रूप विहीन जीवन अपने चरम रूप में आपके समक्ष खुलते स्थान की तरह बेशर्मो से खुला हुआ है। इन सभी लाल बत्ती इलाकों में सबसे प्राचीन, सबसे स्थापित, बदनाम, खासी आबादी वाला इतिहास और विरासत वाला इलाका है सोनागाछी

तो सबसे पहले लीजिये एक जाम सोनागाछी के नाम।"[५] 'सलाम आखिरी' उपन्यास की शुरुआत करते समय मधु कांकरिया ने सहज भाषा में लालबत्ती इलाकों का वर्णन किया है, जिसे पढ़कर वहाँ की जिंदगी पाठकों के आसानी से समझ आती है।

उनके पत्ताखोर उपन्यास में भी स्वाभाविक भाषा का प्रयोग हुआ है - " मन के पृष्ठों पर पड़ा विवेक का पेपर वेट उस दिन अनायास ही हटा दिया गया था। इस कारण रह- रह कर उस का मन उचट जाता। फिजिक्स का इलेक्ट्रो डायनामिक्स, केमिस्ट्री का यूकिलिबियम और बिज गणित का क्वाड्राटिक इक्वेशन्स कब एक दुसरे में गड्ड मड्ड हो जाते। सामने पुस्तक खुली रहती पर भटकता मन पहुँच जाता ..... दूर बहुत दूर। अपने आप से लड़ता हुआ, अपने आपके विरुद्ध, अपने आप से बचता हुआ ..... वह फिर बाहर निकल जाता। हर शाम तीन -चार सुदीर्घ घंटो के लिए बाहर अस्त होते सूर्य की केसरिया आभा में तैरते पत्तों के झुण्ड उसे सलामी से देते। आदमियों का समूह देखकर भीतर का शून्य जैसे भरने लगता। वह सामान्य होने लगता। भीतर की गुल होती बत्ती फिर रिचार्ज हो जाती और उसके इस विश्वास में फिर एक गाँठ पद जाती की जिंदगी की जगमगाहट उसे घर से बाहर रहकर मिल

सकती है। हर शाम एक आवाज जैसे निरंतर उसका पीछा करती - भागो- भागो।" [६] पत्ताखोर उपन्यास के आदित्य जो की नशे के जाल में फंस गया है, उसके मनस्थिति का चित्रण सहज भाषा में किया हुआ मिलता है।

"उस दिन मैंने निश्चय किया कि अब बस छुटकी, मेरे भरपूर विरोध के बावजूद यदि माँ दीक्षा लेती है तो ले क्योंकि जैसा भी रहा हो, जीवन का स्वाद उन्होंने चख लिया था। उनके कोठे स्मृतियों और अनुभवों से भरे थे। पर छुटकी ? वह तो कोरी स्लेट है। मुझे उसके कैनवास पर रंग भरना है। खुबसूरत और फूल से कोमल और गाँधी जी की अहिंसक चुप्पी। [७] उपन्यास में संघमित्रा अपनी बहन छुटकी के दीक्षा लेने के खिलाफ है। उसके विचार से छुटकी ने अभी पूरी जिन्दगी देखि ही नहीं। कम उम्र में दीक्षा लेने से उसकी बाकी की जिन्दगी मुरझा जाएगी। उसके यही विचारों को मधु कांकरिया ने सहज भाषा में पाठकों के सामने प्रकट किया है।

"तो मेरे भाई हम सभी एक पतनोंन्मुख समाज में जी रहे है। ऐसा समाज जिसकी संवेदनाएँ मर चुकी है। आर्मी भी तो उसी समाज का हिस्सा है। कई बार मैं स्वंय को मानवीय नियति का दार्शनिक जामा पहनकर सांत्वना देने की कोशिश करता हूँ। मैं स्वयं को यह समझाने का प्रयास भी करता हूँ कि मानव जीवन सम्पूर्ण कभी नहीं होता, आतंरिक अधूरापन बना ही रहता है। महाभारत युद्ध के बात कुरुक्षेत्र विजेता भी उल्लसित नहीं थे। उन्हें भी लग रहा था कि सब ठीक नहीं हुआ है, कही धोखा हुआ है। [८] सूखते चिनार उपन्यास में गणित के प्रतीकों का उपयोग करते हुए भी भाषा का काठिन्य नजर नहीं आता।

मधु कांकरिया के कहानियों में भी स्वाभाविक और सहज भाषा का इस्तेमाल किया हुआ मिलता है -"यूँ मधुबन गाँव भारत के भाल पर माथे की महीन बिंदी जितना भी नहीं, पर जैसे ही उसका रूपांतरण समवेत शिखर जी के रूप में हुआ .... माथे की वह बदरंग हीरे की

कणी की तरह झिलमिलाने लगी। जैनियों का मक्का -मदीना- यह शिखरजी ।[९] जैनियों का स्थान शिखरजी जिस गाँव में बसा है उस गाँव का महत्त्व सहज भाषा में दर्शाया है। ऐसे ही कई वाक्यों का प्रयोग मधु कांकरिया ने अपने अनेक कहानियों में किया है, जो अतिशय सहजता से कहानी के कथ्य को पाठकों के सामने लाते है।

"बातों के टुकड़े रह- रह कर मुझसे टकरा जाते। मेरी चेतना हिलडुल जाती। भीतर बहार चला आता और बाहर भीतर।" [१०]

"उस मनहूस सुबह की भोर रिमझिम- रिमझिम बारिश हुई थी और आप जानते ही है कि, नए- नवेले प्रेम को पराकाष्ठा तक पँहुचाने में बरसात की कितनी अहम् भूमिका होती है।"[११]

उपर्युक्त विवेचन और उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि मधु कांकरिया के कथा साहित्य में स्वाभाविकता और सहजता नजर आती है जिससे पाठकों को भाषा का काठिन्य नजर नहीं आता।

५. १. २. प्रतीकात्मकता

वैसे तो सारे शब्द हमारे भावों के प्रतीक होते हैं। उपन्यास रचना में शामिल सभी पात्र भाव, विचार तथा प्रवृत्ति के प्रतीक होते हैं। परन्तु जब पात्रों के भाव विचार की अभिव्यक्ति में सामान्य भाषा का प्रयोग किया जाए तो पात्रों का प्रभाव नष्ट हो जाता है। इसीलिए साधारण शब्द तथा वाक्य के स्थान पर प्रतीकात्मक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उपन्यास तथा कहानियों में प्रतीकात्मकता उसके शीर्षक में, पात्रों के संवाद द्वारा देखी जा सकती है। -"उपन्यास में प्रतीक, प्रतीकात्मक शीर्षक तथा प्रतीकात्मक चरित्रों की योजना द्वारा लेखक किन्ही विचार बिन्दुओं को संकेतिक करता है। प्रतीक योजना द्वारा वर्णन स्फीति से बचता हुआ अपने अभिप्रेत को व्यंजित करता है।" [१२]

मधु कांकरिया के रचनाओं में प्रतीकों का सशक्त प्रयोग मिलता है। प्रतीक का आशय स्पष्ट करते हुए रेनेवेलेक और आस्टिन वेरेन लिखते है - "प्रतिक एक ऐसी वस्तु हैं जो किसी अन्य वस्तु की और संकेत करती है, पर एक प्रस्तुतीकरण के रूप में उसके अपने स्वरूप की और भी ध्यान देने की अपेक्षा होती है। [१३] हमारे जीवन में हम कही जगहों पर प्रतीकों का प्रयोग देखा जा सकता है। तिरंगा ध्वज भारतीय राष्ट्र का और देशभक्ति का प्रतीक है, वटवृक्ष विद्या का प्रतिक होता है, कमल भारतीय संस्कृति का प्रतिक है। इसी प्रकार सफ़ेद कबूतर शान्ति का प्रतीक है।

मधु कांकरिया के सभी उपन्यासों के शीर्षक प्रतीकात्मक है। देखा जाए तो किसी भी रचना का महत्वपूर्ण तत्व उसका शीर्षक होता है यही बात ध्यान में रखकर शायद मधु कांकरिया के सभी उपन्यासों के शीर्षक प्रतिकात्मक है।

मधु कांकरिया के उपन्यास के शीर्षक प्रतीकात्मक तो है ही, साथ ही उनके उपन्यासों के पात्रों की भाषा में भी प्रतीकात्मकता देखी जा सकती हैं। उनकी कहानियों की बात की जाए तो उन्होंने अपनी कहानियों का प्रतिक योजना द्वारा उनका अर्थ सौष्ठव तथा भाषिक सौन्दर्य बढ़ाया है। यद्यपि आज कहानी में प्रतिक योजना बहुत ही दुरूह हो गयी है। फिर भी अधिकतम नए प्रतीकों का इस्तेमाल, कहानी की शिल्पगत विशेषता बन चुकी है। आज की कहानीयों में प्रतीकात्मक शिल्प का प्रयोग नजर आता है। मधु कांकरिया के उपन्यासों के साथ -साथ अनेक कहानियों के शीर्षक प्रतीकात्मक है। उदा. युद्ध और बुद्ध, उसे बुद्ध ने काटा, चिड़िया ऐसे जीती है, शुन्य होते हुए, कीड़े, कुल्ला, फाइल, चिड़िया ऐसे मरती है इत्यादि।

मधु कांकरिया के ऊपर प्रस्तुत उपन्यासों के प्रतीकात्मक शीर्षक के साथ साथ उपन्यास में शामिल पात्रों या चरित्रों की भाषा भी प्रतीकात्मक है।

“खुले गगन के लाल सितारे" उपन्यास में प्रतीकात्मकता का उदहारण है - "हजार काँइयों के मरने के बाद जन्मा वह एक अलग ही तरह का काँइया है पूरा सैडिस्ट, आदमी के आत्मविश्वास को तोड़कर जब तक उसे दम हिलाने वाला कुत्ता नहीं बना लेता, उसे चैन नहीं पड़ता।" [१४] यहाँ पे मनुष्य को हाँजी हाँजी करनेवाले कुत्ते के रूप में दर्शाया गया है।

"मेरा दम घुटता है उन्हें देख, जैसे इन सबको छाती पर रखी मैं कोई भारी भरकम शिला- भर हूँ। मैं इनके जीवन में कुछ राहत नहीं ला सकती तो कम से कम अपने भार से तो इन्हें मुक्त ही कर सकती हूँ।" [१५]

"सत्ता का जीन्स पहनते ही इनके जिन्स ही बदल जाते हैं। लाल बत्ती लगी नहीं इनके गाडी में कि इनके आत्मा की बत्ती गुल !” [१६] 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में इस प्रकार की प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है।

'सलाम आखिरी' उपन्यास भाषिक संरचना के स्तर पर अत्यंत प्रभावी उपन्यास माना जाता है। इसी उपन्यास से प्रतीकात्मक भाषा के अन्य उदाहरण मिलते हैं- "विरोधों की नुकीली नौक पर क्या घिसते- घिसते सपाट सड़क नहीं बन जाएगी एक दिन। जीवन की अपर्याप्ताएं शीघ्र ही सुख डालेगी भितर हलहलाते विरोध की बारूद को।” [१७]

"सदियों से चला आ रहा वेश्या शब्द ' धरती की सबसे बुरी औरत' का रूपांतर एक ऐसी औरत के रूप में हो चुका था जो किसी के लिए यूज एंड थ्रो, किसी के लिए उगालदान, किसी के लिए टाइम- पास, किसी के लिए चूसा और थूका मार्का 'चुइंगम' तो किसी के लिए गिनीपिग थी।"[१८]

"अब वह दहशत में अकड़े हाथ - पैर बाँधे हलाल के लिए ले जाती जानवर में तब्दील हो चुकी थी।"[१९]

"कालीघाट की प्रेम की इन्ही गलियों में से एक गली है बड़ी गली जहाँ न कोयल कूकती है, न फुल महकते है न समीर अठखेलिया करता है।"[२०]

कालीघाट की वेश्या बस्ती में सिर्फ हवस की पूजा चलती है, प्रेम यह शब्द वहा पर कोई मायने नहीं रखता, महत्व रखती है तो शरीर की भूख। उपर्युक्त विधानों से मधु कांकरिया ने वेश्यावृत्ति को प्रतीकात्मक रूप में प्रयुक्त किया है।

"सेज पर संस्कृत उपन्यास में भी प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग हुआ है। इस उपन्यास में संघर्षरत स्त्री का चित्रण करते समय मधु कांकरिया ने प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है- "अभय मुनि के संघमित्रा के प्रेम के इशारों से अपनी बंद पड़ी इन्द्रियों और कामनाओं के झरोखे खुलने लगे थे। एकांत साधना में बैठे मुनिवर को बजाय प्रभु दर्शन के स्त्री दर्शन होने लगे। युवती की एक - एक भाव भंगिमा दिमागी स्क्रीन पर चोच मारने लगी। [२१]

जैन धर्म में कम उम्र में दीक्षा लेने के कारण साधू और साध्वियाँ अपनी दमित इच्छाओं, कुंठाओं के साथ जीते हैं इन्ही दमित इच्छाओं और कुंठाओं के चलते कई बार ऐसा भी होता है, कि उनका पतस्लखन हो जाता है, इसी स्थिति को दर्शाते हुए मधु कांकरिया ने प्रतिक योजना का प्रयोग किया है इसी प्रकार की अपनी दमित इच्छाओं, कुंठाओं के साथ जीती है। कई बार ऐसा भी होता है कि पतस्लखन हो जाता है, ऐसे कई उदहारण उपन्यासों में देखे जा सकते है - "अंकुरित चना, दही और पानी में छिपे सूक्ष्म जीवों की चिंता है तुम्हे, पर तुम्हारी आत्मा में जो फफूँदी जमी है जो चूहे की तरह हर पल जिंदगी के डर से कांपती रहती है, उसकी चिंता नहीं है तुम्हे।" [२२]

"देखिये हर गाय या कुत्ती के पास अपना दूध होता है, पर हर दूध से घी नहीं बनाता। अपने जीवन के दुष्कर्मों के अंत के लिए जरुरी है, कि जीवन को तपाकर उसे घी बनाया जाए अन्यथा दुःख सहने को बाध्य है इंसान।" [२३]

पत्ताखोर उपन्यास में भी प्रतीकात्मक भाषा अभिव्यक्त हुई है - “मेरी माँ और तुम में यही अंतर है, उन्होंने घड़े को पूरी तरह पकाकर संसार-समुद्र में छोड़ा - तुमने कच्चेपन में ही उसे छोड़ दिया।"[२४]

"तुम्हारी अंतरात्मा तुम्हे यदि आज चूहे की तरह कुतर रही है, तो समझ जाओ की अब भी संभावना शेष है - तुम्हारे मनुष्य होने की।"[२५]

"मैंने देखा है, कई नशेबाजों को शुरू में मोर की तरह नाचते, फिर नशा नहीं मिलने पर बाघ की तरह गुर्राते और अंत में सूअर की तरह गन्दगी पर लोट लगाते। [२६]

उनके आखरी उपन्यास "सूखते चिनार" में प्रतीकात्मक शब्द उपन्यास के भाषिक सौन्दर्य को गहरी अर्थवत्ता देते है - "जवाब सुन दंग रह गए शेखरबाबू। भीतर का सूर्य डूबने लगा। डूबती आँखों से फिर देखा पुत्र को - क्या यही उनका बेटा है ? अपना खून ! क्या सचमुच उनसे भूल हुई ? क्यों समझ नहीं पाए बेटे को ? वे दिन -पर- दिन पाने व्यापार में गहरे धँसते गए, उनके लिए वित्त-सत्य ही जीवन-सत्य बनता गया और बेटा उनके गुरुत्वाकर्षण से छिटक लहर की तरह दूर होता गया उनसे।" [२७]

"श्रीनगर की सारी आबादी उतर आई सड़कों पर जश्न मनाने और देखते -ही -देखते शांत समुन्दर में बवंडर पैदा हो गया। " [२८]

मधु कांकरिया के कहानियों में भी प्रतीकात्मकता देखी जा सकती है। उनकी अनेक कहानियों के शीर्षक में प्रतीकात्मकता नजर आती है - “ बाद के बीस वर्षों में हम दोनों ही डाल से गिरे दो पत्तों की तरह जीवन के तेज प्रवाह में अपनी-अपनी दिशाओं में उड़ते चले थे।"[२९] 'महाबली का पतन' इस कहानी में जया और आशीषदा की संबंधो में दुरिया दर्शाने के लिए डाल से गिरे पत्तों को प्रतिक के रूप में इस्तेमाल किया है। इसी तरह मधु कांकरिया के कई कहानियों में प्रतीकात्मक भाषा की अभिव्यक्ति हुई है - "और देखते ही देखते उन विशाल

पनीली ऑंखो में गुलाबी डोरे खींच गए, जिन्हें देख युवक को लगा, अब वह युवती किसी खतरनाक जोन में बदल चुकी है और जाने किस आदिम और अपराजेय शक्ति से वशीभूत होकर उसने युवती के कन्धों का हल्का सा स्पर्श किया। जाने उस स्पर्श में क्या था कि युवती की ऑंखों का रंग देखते-देखते ही बदल गया। अब वहा गुलाबी रंग नहीं, वेदना की कोई गहरी झील झिलमिला रही थी।" [३०]

'फैलाव' कहानी में मधु कांकरिया ने स्त्री जीवन का स्वतंत्र, उसके जीवन के विविध आयामों को प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया हैं। " जाने कब मद छा जाये उस पर अपनी उच्च नस्ल का और उखाड़ फेंके वह श्रुति की प्रतिष्ठा का तम्बू ! स्वयं श्रुति का भी यही अनुभव रहा है कि सोते में भी पुरुष इस मद में रहता कि वह उच्च नस्ल की पैदाइश है।" [३१]

बस दो चम्मच औरत कहानी में शहीद फौजी के भाई ने अपनी सारी जिंदगी शहीद भाई के परिवार के नाम कर दी थी, लेकिन मौत की निर्णायक घड़ियों के दौरान उसे नारी - संसर्ग की चाहत इस कदर जकड लेती है, कि उसे लगता है, बिना नारी संसर्ग के वह शांतिपूर्वक नहीं मर पायेगा। -" मै विचलित अपनी आनेवाली मृत्यु से नहीं वरन् सहसा उछल पड़ी वासना की इस लहर से हूँ। मै समुद्र के पास गया। मै नदी के पास गया। लहर, बादल-हवा फूल .... सबके पास गया कि स्त्री को भूल जाऊँ पर मैंने विस्मित होकर देखा, लहर, बादल, हवा ..... सब स्त्री के ही विस्तार थे। उसी के अलग अलग रूप।" [३२] इस कहानी में शहीद फौजी का भाई अपनी पूरी जिंदगी औरत से दूर रहता है लेकिन हामारे जीवन स्त्री रूप के कई विस्तार पाए जाते है। मधु कांकरिया ने नदी, बादल, हवा, फुल इन सबको स्त्री के प्रतिक रूप में दर्शाया है।

५.१.3. शीर्षक की सार्थकता

मधु कांकरिया के सभी उपन्यासों के शीर्षक प्रतीकात्मक है। ' खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में नक्सलवादी आन्दोलन में मारे गए क्रांतिकारी लाल सितारों का प्रतिक है। ' सेज पर संस्कृत' उपन्यास का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है। जैन साधू होकर भी अपनी कुंठित यौनाकांक्षाओं के चलते साधू अभयमुनी के मन में ' सेज' की लालसा रहती है और इसी लालसा में वह साध्वी दिव्यप्रभा का बलात्कार करते हैं। ' सलाम आखिरी' उपन्यास का शीर्षक भी प्रतीकात्मकता दर्शाता है। इस उपन्यास में चित्रित वेश्याओं का जीवन हमेशा दर्दनाक रहता है, और इस दर्द से छुटकारा उन्हें बस मौत ही दे सकती है। वेश्यावृत्ति के घिनौनी दुनिया में कदम रखते ही उनका जीवन के प्रवाह में आने का सपना टूट जाता है। वेश्याजीवन के इस घिनौने जीवन को वह आखिरी सलाम करना चाहती है। लेकिन उन्हें यह भी पता है, कि मौत ही एक ऐसी चीज है जो उन्हें इस दुनिया से छुटकारा दे सकती है। ' पताखोर' उपन्यास का शीर्षक भी प्रतीकात्मकता दर्शाता है। नशीली दुनियाँ में "पत्ता" मतलब एक ग्राम ड्रग्स का बिसवा भाग और उसका सेवन करने वाला ' पत्ताखोर' कहलाता है। ' सूखते चिनार' उपन्यास में कश्मीर के धरती पर पनपते आतंकवाद के तले निरपराध लोगों का जीवन सुख रहा है इस नज़रिये से उपन्यास का वह शीर्षक दिया है।

'कीड़े' कहानी का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है। प्रोफेसर वर्मा के शरीर में घाँव हुए थे, और उन घावों में कीड़े हो गए थे। जिसके के कारण उनके सारे शरीर से बदबू आती थी। शरीर के घाँव, खून, मवाद, कीड़े और बदबू के वजह से उनका बड़ा बेटा मयंक उन्हें अस्पताल में एडमिट करवाता है। तंग आकर वह मर्सी किलींग का चुनाव करते है। जहर का इंजेक्शन उन्हें दे दिया गया लेकिन इंजेक्शन की जहर की वजह से उनके शरीर के सब कीड़े मर गए। सुबह बच्चे उनकी अर्थी उठाने आये। उन्हें ज़िंदा देखकर वापस घर ले जाना चाहते थे,

लेकिन यथार्थ में लौटे प्रोफेसर वर्मा घर जाने से इनकार कर देते है। "मैं इन कीड़ों का कृतघ्न हूँ जिन्होंने ब्रह्मांड की तरह मुझे मृत्यु और संबंधों के कई रूप दिखाए और अंततः मेरी आत्मा पर लगे अंध- मोह और अज्ञान के कीड़े को झाड दिया है।" [३३]

'कुल्ला' कहानी का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है - "वह एक क्षण दुनिया के सारे पुरुषों की संवेदनहीनता और क्रूरता का अप्रतिक बन उसके भीतर ठहर गया था, और उसकी चेतना पर चोंच मारता रहा था। उस एक क्षण के बाद से ही वह मुँह में कुल्ला भरे जंगल-जंगल भटक रही है, क्योंकि समय और इतिहास ने उसे समझा दिया है कि जैसे जिंदगी का जबाब जिंदगी है, वैसे ही कुल्ले का जवाब कुल्ला है।" [३४]

'नंदीग्राम के चूहे' कहानी का शीर्षक प्रतीकात्मकता दर्शाता है - "अब बिल्ली की इस दौड़ में कुछेक हजार चूहे मर भी जाए तो क्या हर्ज है ? यह तो जमाने से होता आया है। नंदीग्राम के चूहे क्या कोई अनोखे चूहे है। देखना, बिल्ली दौड़ेगी और लाख टके की सस्ती कार में दौड़ेगी। बचे हुए भूखे नंगे चूहे अपने बिलों में दुबके देखेंगे इस शाही नज़ारे को। अब चूहों का दुःख भी भला कोई दुःख है।" [३५]

५. १.४ . अर्थ व्यंजकता

कथा साहित्य लिखते समय मुख्य कथा के साथ उसमें शामिल पात्रों के चरित्र बनते हैं। कभी कभी मुख्य कथा, संवादों के बजाय चिंतन के आधार पर आगे बढती है और पात्रों के चरित्र में भी कही- कही चिंतन उभरता है। मधु कांकरिया के उपन्यास तथा कहानियों की बात की जाए तो उसमें इस्तेमाल की गयी भाषा में रोमांस का चित्रण कम नजर आता है लेकिन स्त्री- विमर्श हो या जीवन दर्शन का चित्रण, मधु कांकरिया का साहित्य, संवाद कम चिंतन परक अधिक है न कि रोमांस परक - "ताजमहल, राजमहल, अंतपुर की प्रेम कथाओं, राजा महाराजाओं की कीर्ति - कथाओं से अँटे पड़े इतिहास के पन्नों में क्या एक भी पृष्ठ ऐसा

है - जो किसी श्रमवीर के माथे के पसीने, पैरो के चाले, हथेलियों के ठाढ़ के गीत गाता हो - सभ्यता के सम्पूर्ण इतिहास में संघर्ष किसी और का और वर्चस्व किसी और का रहा है।" [३६]

" भंगी और कम्युनिस्ट पैदा नहीं होते, जीवन की मार खा- खाकर बना दिए जाते है।"[३७]

" गुरुदेव जैसे एक वीणा वादक का सत्य उसकी वीणा में, नृत्यांगना का सत्य उनके घुँघरुओं में, कुम्हार का चाक में, पक्षी उड़ान में, वैज्ञानिक का प्रयोगशाला में क्योंकि यही वे अपनी आत्मा का सर्वश्रेष्ठ उंडेलकर अपना सर्वश्रेष्ठ मानवता को देकर मुक्त हो सकते हैं। मोक्ष पा सकते हैं , वैसे ही ग्यारह वर्षीय बालक का सत्य तो उसके खिलौने और उसकी पुस्तक ही हो सकता है। उसके सत्य पर किसी और सत्य का आरोपण करना क्या उसके सत्य के साथ बलात्कार नहीं होगा ?[३८]

"अपराध तो सिर्फ बलात्कारी और हत्यारे ही करते है। इन चमचमाते अफसरों की ये सूक्ष्म कमिनी हरकते अपराध ही है। ये इनका चारित्रिक पतन नहीं बल्कि हल्का, फुल्का दिल बहलाव है और इसका आदि हो जाना चाहिए। इसलिए जिस अपमान ने मुझे हिला डाला आपको एक हिचकी तक नहीं आई, क्योंकि आधुनिकता की इन चकाचौंध ने आपको इतना मोटा देखने का अभ्यस्त बना डाला कि नारी स्वाभिमान और सन्मान की ये बारीक हरकते आप लोगों को दिखलाई नहीं पड़ती। [३९]

मधु कांकरिया के उपन्यास के साथ- साथ कहानियों में भी अर्थ व्यंजकता का प्रयोग दिखाई देता है - "बहुत दिनों तक मैं भी यह लगातार सोचती रही, कि आखिर ऐसा हुआ कैसे? महाबली का पतन और वह भी इतने तूफानों से गुजर- जाने के बाद ? उम्र की ढलान पर ? मुझे लगता है कि यह युग और वातावरण का ही प्रभाव है, जिससे वह भी नहीं बच सका। तब फिजा में क्रान्ति थी, दुनिया को बदल डालने के नारे थे। पर आज फिजा में खुला बाजार

है। क्षणों में जीते लोग है। मुनाफे का गणित है। विश्व सुंदरियां है। औरत छाप विज्ञापन है। जीने और भोगने का बाजार है।"[४०]

"अब जीवन पर मेरी राय बदल चुकी है। मैं इन कीड़ों का कृतघ्न हूँ, जिन्होंने ब्रम्हांड की तरह मुझे मृत्यु और संबंधों के कई रूप दिखाए और अंततः मेरी आत्मा पर लगे अंध मोह और अज्ञान के कीड़ों को झाड दिया हैं। जीवन जैसी विराट चीज को मैंने किस खटराग में गवाँ दिया ..... मृत्यु के समीप पहुँचकर मैंने इसकी पीड़ा महसूसी। जैसे- जैसे ये कीड़े मरते गए, एक वृहत्तर सत्य मेरे भीतर उतरता गया- हरि- भरी यह वसुंधरा और चतुर्दिक कुलबुलाते ये असंख्य कीड़े। यदि शीघ्र ही कुछ न किया गया तो मनुष्यता को लगे ये कीड़े वह सब कुछ नष्ट कर देंगे जो शिव है, सुन्दर है, पवित्र है और मानवीय है।" [४१]

"जितना मेरा नुकसान मेरी माँ ने किया, उससे ज्यादा फाइलों के इन खुले जबड़ों ने किया है। निगल ली है इन्होने मेरी सारी खुशियाँ। इज्जत की डाल पर झुलते आप लोग क्या कभी सोच सकते है। यह सत्य कि ११ से १५ वर्ष तक मेरा कई बार बलात्कार हुआ। जब तक इन फाइलों में दर्ज रहेगा, समझ लीजिये यह मेरे माथे पर दर्ज रहेगा।" [४२]

"कही न कही हर कैरियरिस्ट औरत को यही लगता है, कि कही कोई औरत होने का अनुचित फायदा न उठा ले। इस कारण वे बेवजह आक्रामक. क्रूर और हिंसक हो जाती है। और तो और गांधी की सफलता के पीछे भी उनकी अप्रेहेंसिव (शंकालु) मन:स्थिति का हाथ बताया जाता है। इसके कारण वे हमेशा शांशक और चाक चौबंद रहती एवं अपने ही केबिनेट के मंत्रियों की खुपियागिरी करवाती रहती।"[४३]

"हे तत्वज्ञानी ! मेरे नन्हे इश्वर ! तुमने जीवन को शायद मुझसे कही अच्छे समझा था। तरक्की की मार- काट प्रतियोगिता से स्वयं को पृथक रखते हुए तुमने जीवन को एक सहज जलधारा की तरह लिया - उसके सहज बहाव में बहते हुए ..... वही किया जिसकी

अन्तःप्रेरणा से तुम अनुप्राणित रहे, और तुम्हे, तुम्हारी प्रकृति के अनुसार ही बहने दिया होता तो शायद तुम भी जीवन को कुछ और सुदर बनाने में अपना योगदान दे पाते।" [४४]

"न अल्पे सुखम अस्ति" (अल्प में सुख नहीं है) निजात की परिधि फैलाओ। जब से मैंने अपनी निजात की परिधि फैलाई है, स्वयं को ब्रम्हांड से जोड़ा, विराट से जोड़ा। प्रकाश ही प्रकाश है मेरे चतुर्दिक। यहाँ आदिवासियों के बिच काम करते हुए मैंने यही सत्यान्वेषण किया है कि जब तक जीवन संकुचित रहेगा, कोई बड़ी ख़ुशी आसिल नहीं होगी।"[४५]

"शाबास पुत्र, जिस तर्क एवं युक्ति के करिश्मे से तुमने कानून की धज्जियाँ उड़ाकर सच को झूठ कर दिखाया वह अदभुत था। तुम जिंदगी में बहुत आगे बढोगे। "लेकिन अपने जीवन के स्थूल सुखों में डूबे संतृष्ट सूअर सा जीवन जीने वाले तुम मेरी बात को नहीं समझोगे, क्योंकि तुम्हारी खाल मोटी हो चुकी है, और तुम्हे यह सब अपराध ही नहीं लगता।" [४६]

"प्रकृति का यह कैसा 'सेन्स ऑफ़ ह्यूमर' है कि जिसने तुम्हे भुलाने में पंद्रह मिनट भी नहीं लगाए उसे आज तुम पन्द्रह वर्षों बाद भी नहीं भुला पाई हो।..... कि तुम एक रुकी हुई स्त्री हो, अपने सोच में आज भी उतनी ही अवैज्ञानिक, तर्क एवं बुद्धि से परे, उतनी ही अपरिपक्व एक भावुक गधी हो ... और जो गधे होते है, वे उस परम सौन्दर्य का अन्वेषण कर ही नहीं सकते, जिसका कभी स्वप्न पाला था तुमने।" [४७]

"जैसे जिंदगी नहीं कोई सिगरेट हो, कि मन माफिक नहीं मिला तो बुझा दी। " घबराओ नहीं यह प्रतिशोध मैंने तुमसे नहीं अपने पति से लिया है। और यह प्रतिशोध तो इसी प्रकार लिया जा सकता है - उसी प्रकार बिना देह से गुजरे यह प्रतिशोध लिया ही नहीं जा सकता था। रही बात अपने को गिरा कर लेने की, सो मै नहीं मानती कि मैंने स्वयं को गिराया है क्योंकि वह मेरी वासना नहीं प्रतिशोध की अग्नि की जिसकी ज्वाला में मै धधक रही थी। नैतिकता, सच्चरित्रता और पवित्रगत ये सारे सत्य मुक्तात्मा पर लागू होते है। जीवन की

स्वाभाविक माँग को ठुकराकर कोई भी सत्य हासिल नहीं किया जा सकता है। और पवित्रता ? वह हँस पड़ी- पवित्रता जैसे संदिग्ध पदार्थ के लिए क्या प्रतिशोध जैसी भावना की आहुति दी जा सकती है ? इस प्रतिशोध में भी जीवन के कुछ मूल्य और नारी बोध जुडा हुआ था - पर तुम उसे नहीं समझ सकोगे।" [४८]

५. १.५ बिम्बात्मकता

जब लेखक की कल्पना मूर्त स्वरुप धारण करती है, तब बिम्ब का सृजन होता है। आज के आधुनिक युग में साहित्य में अलंकार की अपेक्षा बिम्ब का प्रयोग का इस्तेमाल होने लगा है -" वास्तव में बिम्ब अपनी सांकेतिक शैली में भाषा को केन्द्रित करने के साथ -साथ वह रचनागत अनुषंगों को भी केन्द्रित करता है। शब्द की अपेक्षा बिम्ब अधिक सन्दर्भ - सापेक्ष होता है, क्योंकि वह यथार्थ का एक सार्थक टुकड़ा होता है। वह अपनी ध्वनियों और संकेतों से भाषा को अधिक संवेदनशील और पारदर्शी बनाता है। उसका आधार कोशगत शब्द नहीं होता है बल्कि सम्पूर्ण विस्तृत जीवन और इतिहास होता है। [४९]

बिम्ब अनेक प्रकार के होते है, जैसे कि दृश्य, श्रव्य, स्पर्श, स्वाद, घ्राण, गत्यात्मक इत्यादि। इन्ही बिम्बों का प्रयोग मधु कांकरिया ने बड़ी सूझ- बुझ एवं मार्मिकता के साथ कथा- साहित्य में अभिनव ढंग से प्रस्तुत किया है - "वास्तव में बिम्ब अपनी सांकेतिक शैली में भाषा को केन्द्रित करने के साथ- साथ वह रचनागत अनुषंगों को भी केन्द्रित करता है। शब्द की अपेक्षा बिम्ब अधिक सन्दर्भ - सापेक्ष होता है क्योंकि वह यथार्थ का एक सार्थक टुकड़ा होता है। वह अपनी ध्वानियों और संकेतों से भाषा को अधिक संवेदनशील और पारदर्शी बनाता है। उसका आधार कोशगत शब्द नहीं होता है, बल्कि सम्पूर्ण विस्तृत जीवन और इतिहास होता है। वह अभिधा की अपेक्षा लक्षणा और व्यंजना पर आधारित होता है। [५०]

बिम्ब के यही महत्त्वपूर्णता को विचार में रखते हुए मधु कांकरिया ने अपने उपन्यासों में बिम्ब का प्रयोग अभिनव ढंग से किया है - "क्या हाई पावर सुख ! उसका मूड एकदम बदल गया। वह फुल की तरह हल्का हो गया। खींच- खींचकर वह उस सुख को टानने लगा जो उस सिगरेट के धुएँ के रूप में मिल रहा था। उन जादुई क्षणों में उसे लगा, उसमे जीवन जाग रहा है, ठीक वैसा ही जैसा कभी उसने पूरी के समुद्र तीर पर गाते हुए महसूसा था। उसके मन में जैसे पंख लग गए थे, और अब वह एक दूसरे ही लोक में था, बेफिक्र, मस्ती, खुशमिजाजी के आलम में एक अद्भुत पिनक में। आत्मरति और आत्मस्फिति की एक रोमानी दुनिया में जिसका शहंशाह, भगवान्, डिप्टी भगवान् सब कुछ वही था।" [५१] यहाँ मधुजी ने दृश्य बिम्ब की योजना की है।

"कोई एक गुमसुम स्पंदनहिन दोपहरी और ऐसे में ही सुरंग के समान लम्बी सँकरी और अँधेरी गली का मुहाना। और उस मुहाने पर कड़ी आठ - नौ ' ऑनलाइन' वेश्याएँ - बिकाऊ है की अदृश्य तख्ती लटकाए हुए। अँधेरे और उम्मीद के संधिस्थल पर। अपने स्वाभिमान के विरुद्ध। अपने खिलाफ। किसी दूसरे देह का इन्तजार करती। उबकाई और उदास। लिपी- पुती देह। आँखों में भविष्यहीनता। चेहरे पर सस्ता और भड़कीला मेकअप। रँगे होंठ। सस्ती चमक के आभूषण। चटक और सस्ती किस्म की पोशाक। प्लास्टिक की चपलें। कही चमड़े की भी। प्रतीक्षा के लाखों कल्प।" [५२] यहाँ मधुजी ने दृश्य तथा घ्राण बिम्ब की योजना की है।

"एकाएक अपने व्यर्थताबोध और तुरंत उगे अवसाद से उनकी आँखे छलछला आयी। अतीत के गलियारे से झाँक गई माँ। स्मृतियों के ताप से भीतर कुछ जोरों से पिघला और उनका रोमरोम रो पड़ा ... गालों पर आँसू टप- टप गिरने लगे। कोई उन्हें रोते हुए देख न ले ... इस डर से आँसुओं को बिना बिना पोंछे ही किसी सँकरी पतली गली में घुस गए और

अब तक उन अनजान गलियों और सुने मन की भूलभुलैया में एक साथ भटकते रहे..... जब तक इस प्रकार निरूद्देश भटकने का उदास सम्मोहन बना रहा।" [५३]

"ऐसी ही वह एक रात थी जो एकाएक खुलता हुआ सागर बन गयी थी। जिसमे उद्दाम आवेग और उफान लेती कामनाओं ने जिंदगी से अन्तरंगता स्थापित की थी।" [५४]

मधु कांकरिया ने अपने कहानी रचनाओं में भी बिम्बात्मकता का प्रयोग नजर आता है- "उसकी आत्मा में गहराई तक ठुकी मातृत्व की किल .....यहाँ की सुखद -दुखद स्मृतियों के दंश ... इन सबसे वह इसी प्रकार जुडा है, जिस प्रकार समुद्र से खारा पानी और इन सबसे ऊपर उठना भी उसके लिए नामुमकिन था ..... क्योंकि उसका अहसास... उसकी महसूस करने की शक्ति... उसकी संवेदनशील सभी कुछ अभी ज़िंदा थी।" [५५]

"पर ढ़लती रात जब चश्मा उतार वे सोने की तैयारी करते। उनके साथ देवता संवाद करने लगते। उनकी अंतरात्मा चीखने लगती। टप्पा खाकर उछलती दुःख की गेंद उन्हें बेचैनियों के समुद्र में उतार देती और फिर शुरू हो जाती उनकी अपने को पाने की तलाश। शान्ति और सम्पूर्णता की तलाश। [५६]

"बहरहाल .... विचारों की उन छोटी -छोटी तरंगों को जल- कणों सा झाड़ते हुए उसने शुरूआती झिझक के बाद काम की उस साकार प्रतिमा को आहिस्ता -आहिस्ता छुआ फिर धीरे-धीरे चूमना शुरू कर दिया दुनिया की सारी प्रेमकथाएं, लोककथाएं, परिकथाएं इस रहस्य रोमांच कथा के सामने फीकी थी। आवेग, मादकता, उकास, उम्मीद, स्वप्न और योवन के सौ - सौ सूर्य वहाँ जगमगा थे।" [५७]

इस प्रकार मधु कांकरिया के उपन्यास तथा कहानियों में बिम्ब का प्रयोग हुआ है ।

५. १. ६ . सांकेतिकता ,

कथा साहित्य में सांकेतिकता का प्रयोग कृति को और भी प्रभावशाली बना देता है। सांकेतिक भाषा अर्थ से युक्त होने की वजह से रचना में चेतना और अनुभूति लाने का काम करती है। मधुजी ने अपने लेखन में कई स्थानों पर सांकेतिकता का उपयोग कर अपनी बात पाठकों के सामने रखी है - "एकांत साधना में बैठे मुनिवर को बजाय प्रभु दर्शन के स्त्री दर्शन होने लगे। युवती की एक- एक भाव भंगिमा दिमागी स्क्रीन पर चोंच मरने लगी। हारकर माला पटककर सो गए। एक- दो झपकियाँ आई तो स्वप्न भी पीछे न रहे।" [५८] उपन्यास में विजयेन्द्र मुनि को साध्वी दिव्यप्रभा से प्रेम होता है। दीक्षा लेने के बाद मानवीय भावनाओं को अपने मन में स्थान देना संघ के नियमों के खिलाफ होता है। एक तरफ संघ के नियम और दूसरी तरफ साध्वी दिव्यप्रभा से प्यार इन दोनों बातो में उलझे हुए स्वामी विजयेन्द्र मुनि के मानसिकता संकेत के माध्यम से परिलक्षित होती है।

" नारी देह मात्र से उन्हें वही आसक्ति थी जो किसान को बरसात से। नारी देह के समुद्र में विधुर द्वारिका सिंह क्षणभर के लिए सही, अपने सारे चिडचिडेपन, बढती उम्र की उदासी, पुत्रों की स्वार्थपरता, एकाकी जीवन की थकान एवं कामकाजी जिंदगी के झमेले सभी को डुबो देते थे।"[५९]

" शुन्य में से हजारों कमानेवाले सटोरिये क्या है ? बिना श्रम की अर्जित कोई भी कमाई क्या वेश्या की कमाई नहीं ? पर विडम्बना यह है, कि राज्य को वेश्या की कमाई पर राजस्व स्वीकार नहीं क्योंकि यह अवैध एवं अनैतिक तरीके से की जाती है पर, चोरी के माल खरीदने- बेचनेवाले, घुसखोर, भ्रष्ट मिलावट करनेवाले व्यापारी, सटोरिए, स्मगलर आदि सबकी कमाई पर गिद्ध दृष्टी है।" [६०]

"भर -भर मक्खन लगी ब्रेड का चटकारा लेती विमाता को देख जब चाँद ललचाता या मक्खन खाने की जिद करता तो विमाता कठोर हो उठती, अधिक मक्खन ही तो पिघलकर रात को बिस्तर पर निकल आता है।" [६१]

मधु कांकरिया ने अपने कहानियों में भी सांकेतिकता का प्रयोग किया है - "उसकी नजर खिड़की से झांकते चाँद पर गई। वह पिघल रहा था, बूंद- बूंद। उसकी नजर फिसलती हुई ड्रेसिंग टेबल पर जड़े दर्पण पर अटकी..... गौर से देखा उसने खुद को, पिछले छब्बीस सालों में शायद पहली बार देखा था खुद को इतने गौर से। उसके चेहरे पर उदास हँसी बिखर गयी, वह अभी भी कामचलाऊ थी। जवान थी।" [६२] प्रस्तुत वाक्य 'बस एक चम्मच औरत' कहानी की भौजी की मानसिकता की और संकेत करता है जो अपने देवर की नारी संसर्ग की आखिरी इच्छा को पूर्ण करना चाहती है।

"मै फुट पड़ी - वाह ! क्या धर्म ! अंकुरित कोख को उजाड़ने जिन्हें लाज नहीं आती वे अंकुरित चने की वकालत कर रहे है।" [६३]

५.१.७ .अलंकारिकता ,

उपन्यास तथा कहानियों के कथ्य को अधिक आकर्षक बनाने के लिए अलंकार का उपयोग किया जाता है। अलंकार के उपयोग से कथ्य की अभिव्यक्ति में स्पष्टता आती है, तथा भाषा का सौन्दर्य बढ़ता है। अलंकार के उपयोग से लेखक अपने निजी अनुभवों, विचारों तथा कल्पना को वाणी देता हैं। अपने उपन्यास तथा कहानी के कथ्य को अधिक आकर्षक बनाने के लिए मधु कांकरिया ने भाषा को अलंकार से सजाने का प्रयास किया है - "पर उदासी का यह बोझ भी असह्य हो गया तो आतंरिक दबाव के चलते फिर खुली डायरी। टप-टप गिरने लगे शब्द .... रिसते घाव से टप-टप गिरते खून की तरह, " जाने किस काली रात में रचा था

इश्वर ने धरती के इस तुकडे को कि जितना खून बह रहा है उतनी ही खुनी प्यास बढती जा रही है इसकी।" [६४]

"तुम्हारा एक स्वर मेरे भीतर की सारी जड़ता और मानसिक तामस को उखाड़ फेंकता है। तुम्हे देखने मात्र से ही जैसे मेरे भीतर सदैव छाया रहनेवाला घना कोहरा छँट जाता है, सुख और सुकून की गुनगुनी धुप मुझ पर छा जाती है। तुम्हारी विराटता में मै अपनी लघुता भूल जाता हूँ।"[६५]

"मुझे उसके कैनवास पर रंग भरना है। खुबसूरत और खिलते हुए रंग। मुझे इसके बचपन और रंगों को इसे वापस लौटाना है ओर इसके साथ ही मैंने एक चुप्पी ओढ़ ली। फूल सी कोमल अहिंसक चुप्पी [६६]

मधु कांकरिया ने अपनी कहानियों की भाषा को भी अलंकारों से श्रृंगारित किया है। अपने कहानियों के कथ्य को अधिक आकर्षित तथा चमत्कारी बनाने के लिए मधु कांकरिया ने अलंकारों का प्रयोग अपने कहानी में कई जगह किया है - "शाम को 'बुढिया के बाल मुँह में डाल' 'बर्फ का गोला लाल पिला' की आवाज पर घरों से बच्चे और किशोर गलियों में दौड़ आते थे। शाम का आकाश पतंगों से भर जाता था।[६७] नामर्द कहानी में सोनू के बचपन के दिनों का वर्णन अलंकार पूर्ण ढंग से किया है।

" मैं नहीं जानती पाप -पुण्य, नैतिकता- अनैतिकता, धर्म- अधर्म। इन सभी सवालों को मैंने अफीम पिलाकर सुला दिया है। नहीं इसे तुम क्षण का आवेग भी मत समझना और न ही मेरे सतीत्व की ही चिन्ता करना। क्योंकि जो तुम तक जाएगा वह मेरा सरप्लस रहेगा। मेरा मैं मेरे पास सुरक्षित रहेगा।" [६८]

"कई बार मुझे महसूस होता कि प्रकृति भी अकेले को और अकेला और भरे हुए को और भर देती है। क्या इसलिए इस देश के ऋषि- मुनियों ने सर्वोत्तम प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच वैराग्य और मौत का वरन किया ?" [६९]

"हवा जब सामने कड़ी नीली पहाड़ियों पर कविताएँ रचती और डूबता सूरज जब उसकी आँखों के आगे अपनी रंगोलियाँ बिखेरता, तो ऐसे में वह भी एक नगमा हवाओं के साथ किसी अनजान प्रेमी और पति के नाम उन पहाड़ियों पर जड़ देती है।" [७०]

"पर गंगा में तुम नहीं विसर्जित हुए थे पुत्र। तुम तो भोर के सितारे की ही तरह ओझल हो गए थे। गंगा में तो विसर्जित हुई मेरी संतति भावना, मेरे भीतर की सारी आर्द्रता। भीतर का सारा श्रेष्ठ ईश्वरीय अंश।" [७१] इस कहानी में पिता अपनी ग़लतियों की बजह से अपने पुत्र को खो चुके है। उनके अपराधी होने की मानसिकता को का दर्शन अलंकरिकता से प्रदर्शित होता है

५.१.८. काव्यभाषा का प्रयोग

अपने उपन्यास तथा कहानियों में कही जगह पे मधुजी ने भाषा को सजाने के लिए काव्य पंक्तियों का प्रयोग किया है।

"दिलों से दूर न जाओ बहुत उदास है रात।
सितारों सामने आओ बहुत उदास है रात।" [७२]

"हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार ,
उषा ने हँस अभिनन्दन किया और पहनाया हीरक हार।" [७३]

"तूभी रवे नीरवे हृदय मम, मम जीवन जौवाने
मम सकल भुवने, तुमी भरेवी सौरमी।"

(तुम मेरे हृदय में सदैव रहोगी, मेरे यौवन, मेरे सम्पूर्ण ब्रम्हांड में खुशबू बिखेरती सी ...) [७४]

पी लो, पी लो मधु का प्याला,

इसके कण कण में है ज्वाला।[७५]

५. १. ९ . डॉट्स प्रयोग,

रचनाकार वाक्य को अधूरा छोड़कर बिन्दुओं का प्रयोग करता है। बिंदुक भाषा का इस्तमाल करके रचनाकार बहुत कुछ कह देता है। बिंदुओं का प्रयोग वाक्यों में अप्रिय शब्द से बचने के लिए, अमर्यादित कथन से बचने के लिए तथा अनुमेय छोड़ने के लिए होता है। - "कथा- साहित्य में कई ऐसे बिंदु होते हैं जहाँ विविध भावों को पाठकों के मन रूपी महासमुद्र की गहराई तक पहुँचाने हेतु तथा उपयुक्त रस उत्पन्न कराने हेतु विशेष प्रकार की भाषा का इस्तेमाल करना पड़ता है। अन्यथा काला अक्षर भैंस बराबर ही समझा जाता है। उन्ही विशिष्ट भाषाओं में तनावपूर्ण एवं अमृत भावों की पकड़ के लिए डॉट्स भाषा का प्रयोग होता है। मनुष्य के भिन्न भावों जैसे द्वंद्व, निराशा, अवसाद, खीज, विद्रोह सुझाने के लिए डॉट्स भाषा अत्यंत आकर्षक एवं सार्थक सिद्ध होती हैं। [७६]

मधु कांकरिया ने भी अपनी उपन्यास रचनाओं में बिंदुक भाषा का प्रयोग किया है। मनुष्य के भिन्न भावों तथा कथा की माँग के अनुरूप बिंदुक भाषा का प्रयोग मधुजी के कथा साहित्य में दिखाई देता है।- "बहरहाल, मेजर भूपेश सिंह ने एक शाम यूँ ही टाइम पास फ़ोन किया हसन राकी को। जनाब बाथरूम में थे। जैसे ही बजा मोबाइल, उसके मिलिटेंट दोस्त अहमद रशीद ने मोबाइल उठाया.... जैसे ही नाम चमका, वह चौक गया .... हिन्दुस्तानी आर्मी के यहाँ से फ़ोन ! आदिम जिज्ञासा। दुश्मनों के यहाँ से फ़ोन ! उसने झट से लपक लिया ..... हेलो !" [७७]

"क्या इसी प्रकार घेरा जाता है उन्हें ... जिंदगी का खौफ दिखाते हुए। सोलह- सत्रह वर्ष की मासूम उम्र कुछ समझती .... कुछ नासमझती उम्र .... भुखमरी का डर... अजनबी

शहर की अजनबी गलियाँ....आसपास कुछ करो, कुछ करो .....देह देकर भी अर्जी करो का क्रूर माहौल। [७८]

इस प्रकार अनचाही तथा बुरी बात को टालने का प्रयत्न बिन्दुओं का इस्तमाल करके किया है।

"तुम क्या जानो भैया, रवि को मैंने कैसे बडा किया .... यह तो मैंने उसे बचाने के लिए नौकरी का कवच पहना दिया ... पर यदि उन्हें भनक भी पड़ जाती कि मैं उसकी सहायता कर रही हूँ तो ये इसे निकाल ही देते, अरे इन्हें तो यह भी सहन नहीं होता था कि उसे बराबरी का खाना दूँ। बेचारे को छिप-छिपकर कमरे में जाकर खिलाती ..... उसके बाल झाडती..... उसे पढ़ाती। मेरे पीछे से कही उसका पत्ता ही नहीं काट दे इस डर से मैं मैके नहीं जाती .... फिर भी मैं उसे अपने बेटों की तरह पढ़ा तो नहीं पाई .... पर मेरा भगवान जानता है कि न मैंने उसे बेटों से कम माना है और न ही उसने मुझे माँ से कम जाना।"[७९]

"अनकहती आँखों ने शायद और भी कुछ कहना चाहा था। पर पिछले दिनोंवाली वह गहरी भावुकता ... वह समर्थन ... वह नफीस मूड सब पर जैसे एक ही रंग पोता हुआ - लाल रंग। क्रांति का नशा।" [८०]

मधु कांकरिया के कहानियों में भी कई जगह पर डॉट्स भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है -"स्वयं को ही बार - बार दोषी ठहराने लगते डॉ. योगेश ..... मैं जैसे उनके ऐश्वर्य के आतंक से ही दब गया था ..... उनके हर वाजिब, गैरवाजिब सवाल का बस जबाब देता रहा ..... बुद्धू की तरह।" [८१] इस कहानी में लेखिका ने आत्मसन्मान से ग्रस्त डॉ. योगेश के मानसिकता का चित्रण करने के लिए डॉट्स भाषा का प्रयोग का किया है

"छह दिन की ही तो बात है ..... फिर पास ही पंचमढ़ी है ..... स्वर्गीय सौन्दर्य। तुम तो शायद सह भी नहीं पाओ, इतनी सुन्दरता .... क्या पहाड़ियाँ ... क्या आदिम गुफाएँ और

क्या झरने … तुम यहाँ दिन भर कागज़ काला करती हो, पर ढंग का आज तक भी कुछ नहीं लिख पायी …. लोग वहाँ जाकर जाने कितना लिखते है।" [८२]

"लेकिन पिछले साल भर से जब से उसका केस निर्णायक स्थिति में प्रायः आ गया था …. उसकी चिंता का पार नहीं था …. सारी योजना, सारा सच... सारी कल्पना …. सारा भविष्य …. इसी बिंदु पर केन्द्रित हो गया था उसका।" [८३]

"बहरहाल …. जब मैंने अपनी एक – दो किताबे साथ रखनी चाही तो उसने फिर टोक दिया मुझे – क्या करोगी इस पोथी को साथ रखकर …. दम मारने को भी फुर्सत नहीं मिलेगी वहाँ। देखो अब छह दिन ये ही रहेंगे तुम्हारी किताबें … कहते हुए आश्विन ने मुझे एक कार्टन थमाया। उत्सुकता से मैंने उसे खोला तो देखा कार्टन के भीतर दो खुबसूरत पिजरे …. दोनों पिंजरों के भीतर खुबसूरत नर्म सफ़ेद पन्हों वाले कबूतर …. लाल मोटी से चमचम करती उनकी आँखे।[८४]

५. १. १० हिंदी के अलावा अन्य भाषाओं का प्रयोग,

मधु कांकरिया ने अपने उपन्यासों में तथा कहानियों में अधिकतर बंगाली भाषा का प्रयोग किया है। उनका का जन्म मारवाड़ी परिवार में हुआ था। इसलिए मातृभाषा मारवाड़ी का प्रयोग भी उनके उपन्यासों में तथा कहानियों में दिखाई देता हैं। बंगाली और मारवाड़ी भाषा के साथ- साथ अंग्रेजी भाषा तथा कही कही जगह बिहारी भाषा का प्रयोग भी दिखाई देता है। पात्रों की माँग के अनुसार उन्होंने भाषा का इस्तेमाल किया है। उनके सूखते चिनार उपन्यास में "कश्मीरी" भाषा का प्रयोग भी दिखाई देता है।

कश्मीरी भाषा का प्रयोग

"वन से कछी, छुई नेहू (बता तेरा बेटा कहाँ है)

मैं छुन पता (मुझे पता नहीं)।" [८५]

बंगाली भाषा का प्रयोग

"तोमार किछु काजे आस्ते पालराम ना ….(तुम्हारे कुछ भी काम नहीं आ सका)"[८६]

"अमार बाबा केमन आछे।" [८७]

"फ़ोन कोरते गिछिये अमित दा के, एसे जाबे एखुन ही (अमित दा को फ़ोन करने गए है, आ जायेंगे अभी)" [८८]

"संघमित्रा बोले छे कि काल के विकाले आपने उसके साथ बोदतमीजी किया।" [८९]

"माई गॉड ! मेय आछे कि तोप ? एकबारगी ममता बैनर्जी मानो जेद्दी। तुमि एक काज करो, ओके होस्टल थेके एखु हिडेके नियो ऐसो" [९०]

'कि बोलछेन, आमि व्यवहार ओ करी। ना सब समय ना, शुद्ध पूजार समय (क्या बोलते हैं, मैं तो लगाती भी हूँ, नहीं हर दिन नहीं, सिर्फ दुर्गा पूजा के समय)।" [९१]

मधु कांकरिया ने अपने उपन्यासों के अलावा कहानियों में भी बंगाली भाषा का प्रयोग किया है - "ना, आमि पाँव लगाईं नी, जदी आमि लगातम आमि ठीक ही बुझते पाउतम। (मैंने पाँव नहीं लगाया है। यदि लगाया होता तो मुझे ही ठीक पता चल जाता)" [९२]

"बेशी कोथा कोरले चेने बेन्दे दिवो।" (अधिक बक-झक किया तो चेन से बाँध दूँगा।"[९३]

" ना ….. आज के और कोनो काजे मन बोसवे ना" (आज किसी दुसरे काम में मन नहीं लगेगा)" [९४]

दूर मोशाय सब समय शेयर- शेयर … जानिस आजके माजरा हाटे एकटा दस वर्षीय छैले अद्भुत काज करोछे …. !" [९५]

"एखुनो चालीस पाना बाकी आछे' (अभी भी चालीस पन्ने बाकी है)" [९६]

अंग्रेजी भाषा का प्रयोग

"एक्टिव /किल्ड / सरेंडर्ड/ मिसिंग मिलिटेंट और उनके भाई - बहन और करीबी रिश्तेदारों की भी पूरी जानकारी रखे।" [९७]

“I am handing over the possession of house No. 304 … ghee walon ki gali. The property which was illegally and forcibly acquired by our predecessor (मैं अपने मकान नं. ३०४, जो घी वालों की गली के सामने है, उसे पंचम के हवाले कर रही है, क्योंकि यह संपत्ति हमारे पूर्वजों द्वारा बलपूर्वक और गैर - वैधानिक ढंग से जब्त कर ली गई थी।" [९८]

"व्हेन रेप इस इनएविटेबल, लाई डाउन एंड एन्जॉय इट" (बलात्कार जब अपरिहार्य हो तो लेटकर इसका मजा लीजिए)” [९९]

"आई लव यू नॉट बिकॉज व्हाट यू हैव मेड योरसेल्फ बट बिकॉज व्हाट यू आर मेकिंग ऑफ़ मी" (तुम्हे प्यार इसलिए नहीं करता कि तुमने स्वयं को किन उंचाईयों तक पहुँचाया, वरन् इसलिए कि तुमने मुझे क्या से क्या बना डाला)" [१००]

“lawful entry and unlawful stay.” [१०१]

“it is with much embarrassment that, I have returned alive (मेरे लिए यह लज्जा की बात है कि मैं जीवित हूँ।" [१०२]

“ rajori & phulgam police, 31 RR 62 RR & 4 para in a joint operation killed 2 militants between saipathri & Ardwas area in the hill of SHOPIAN [१०३]

मधु कांकरिया ने अपने कहानियों में भी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग प्रगल्भता से किया है-"मैंने लाईसेजन (पादरित्व से त्याग -पत्र देने की ईसाई औपचारिकता) के लिए सारे पेपर्स तैयार कर लिए है।" [१०४]

"ममा, मेरा माइक्रो मैनेजमेंट मत करो"। [१०५]

"ऐन आई फॉर ऐन आई, विल मेक दि वर्ल्ड ब्लाइंड " [१०६]

"हमारा एक्सपोर्ट हाउस स्थानीय बाजार से नीलामी से चायपत्ती खरीदता, फिर उनकी ब्लेंडिंग, टेस्टिंग और ग्रेडिंग आदि कर उसे रूस, जर्मनी, जैसे देशों को मोटे फायदे में एक्सपोर्ट करता था।" [१०७]

"लेट माउस बी अ माउस।" [१०८]

"क्रिएट दि माइनोरिटी , मेक आईटी मिलिटेंट, डिवाइड दि कंट्री एंड रुल दि वर्ल्ड।"[१०९]

बिहारी भाषा का प्रयोग

मधु कांकरिया के पत्ताखोर उपन्यास में बिहारी भाषा का प्रयोग मिलता है - "कलकतिया रिक्शावालन का अच्छा रिकाऊर्ड बाटे। आज तक ऊ लोगन ने ना कौनो सवारिन को लुटल .... ना कौनो बेजा हरकत करत रहल। इहाँ अकेली औरत टैक्सी में ना बैठे पर अकेली रिक्शा में बैठे कौनो जगह चली जाई। पर तू माँ का ..... मांस उग आया है .... में। इहाँ आकर मुटियाने लगे तो जवानी जोर मारन लगी। अरे अइसा ही था तो चला जाव माँ - बहनिया के इहाँ ... ऊ ठंडा करि देव तोर जवानिया के .... दफा हो इहाँ से .... नहीं तो पकड़कर ऐंठ देव तोर पोतवा।" [११०]

मारवाड़ी (राजस्थानी) भाषा का प्रयोग

मधु कांकरिया मारवाड़ी परिवार से होने कि वजह से उनके कथा साहित्य में कई जगह मारवाड़ी (राजस्थानी) भाषा का प्रयोग मिलता है - "लाडो, ये लाख लक्खड के नहीं सुच्चे बसता मोती रा गजरा छै। लोहा उठाने वाला हाश्या सूँ फूल नहीं उठाया करै।" [१११]

"बावली कैसी बात कही, थूक दे इन दृष्ट विचारों को सोच कित्ती ऊँची पदवी थारी, कित्तो मान। लोग सुनेंगे तो थू- थू मच जाएगी .... अरे गैली, पुण्य उदय होय जो ई घर में दीक्षा हुई .....। तू बैठे अठै .... मई मेहमानों नैं विदा कर अबार जाऊं।" [११२]

"हर बिज नै मन लायक धरती कोनी मिलै बेटी.... अब जो रास्ता तूने पकड़ा है उसी पर बनी रह ... इसी में सगला री भलाई है।" [११३]

पंजाबी भाषा का प्रयोग

रहना नहीं देश विराना है" इस कहानी में पंजाबी भाषा का प्रयोग हुआ है - "जी.... सतश्रीअकाल मम्मी .... नहीं तुसी बिलकुल घबडाना नहीं .... मैनू पापा दे दिन दा पता है .... तुसी हिम्मत रखो ... वाहे गुरु सब ठीक करेगा .... [११४]

५. १. ११ मुहावरे , कहावते, लोकोक्तियों और लोककथाओं का प्रयोग

उपन्यास तथा कहानी साहित्य की भाषा को सुंदर बनाने हेतु मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग आवश्यक माना गया है। मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ भाषा को सजीव, प्रवाहपूर्ण तथा आकर्षक बनाती है। - " मुहावरों और कहावतों को भाषा का श्रृंगार कहते है इनके प्रयोग से भाषा में सजीवता और स्फूर्ति का संचार होता है।" [११५] मधुजी के कथा साहित्य में अनेक भाषाओँ के मुहावरे मिलते है।

कहावते

उपन्यासों में कहावतों के कुछ उदहारण -"बित्ते भर की छोकरी और गज भर की जीभ।", "माल खाए खसम का, गीत गाएँ वीरों का ।", "प्रकृति माँ की गोद में शिशु बाद में देती है, स्तनों में दूध पहले ।", "जैसी करनी वैसी भरनी ।",, "चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए ।", "बिना खूंटे के गाय नहीं उछलती ।", "सहजा चूड़ो फूट गयो, अल्को हो गयो हाथ ।"

कहानियों में मुहावरों के कुछ उदहारण -धरती' बोझ ही नहीं चोरती ।" हमारा घडा हम ही प्यासे ।"

मुहावरे

उपन्यासों में मुहावरों के कुछ उदहारण - "गुस्सा थूकना ।, "पिंड छुड़ाना ।, "काटने को दौड़ना , "होश ठिकाने लगाना ।, "धर्म की चादर ओढ़ना ।", "पाँव जम जाना ।","उम्मीद का जुगनू ।", लोहा लेना ।", "न्याय का सूरज उगाना।",आँखे चार होना ।"

कहानियों में मुहावरों के कुछ उदहारण - "आकाश मुट्ठी में भरना ।", "रंग में भंग पढ़ना।", "डंक मारना।", "ख्याली पुलाव पकाना ।" ताजिएं ठंडे पढ़ना ।", "तारे गिनकर रात काटना ।", बुद्धि पर पत्थर पड़ना ।"

लोकोक्तियाँ

"बेटा खाए रोटी तो बेटी खाए बोटी ।", "जिसकी लाठी वाही लठैत ।", "रूप साग सत्तू और तेवर हरि मिर्च ।" हुँह- खस्सी कि जान, खवैया को स्वाद नहीं ।"

लोककथाएँ

लोककथाएँ मानव कि अविकसित आदिम व्यवस्था से सम्बन्धित है । इन्ही लोककथाओं का प्रयोग आंचलिक उपन्यासों में मिलता है। अवसरानुकूल होने के कारण इन लोककथाओं का उपन्यास में विशेष महत्व होता है । मधु कांकरिया के उपन्यास तथा

कहानियों में लोककथाओं का प्रयोग मिलता है - "एक बार कश्मीर नरेश की राजसभा में एक वारांगना निर्वस्त्र होकर खड़ी हो गई। सबने लानत भेजी - यह क्या ? पुरुषों की सभा में कोई इस प्रकार आता। वेश्या जानती थी, उनमें से अधिकांश उसके ग्राहक रह चुके थे। उसने गर्दन तानते जवाब दिया " इस सभा में तो एक भी पुरुष नहीं नजर आता, जब तक कोई पूर्ण पुरुष नहीं मिल जाता, मैं अपनी देंह ढाँकने का प्रयत्न किसलिए करूँ? "[११६]

"एक बार एक विमान में हठात कोई तकनिकी खराबी पैदा हो गयी ।विमान गिर पड़ने को हुआ तो पायलट ने घोषणा की कि विमान में हम चार यात्री है और तीन पैराशूट है। यानी हममें से किसी एक को मरना ही होगा। पर मेरा बचना बहुत जरुरी है क्योंकि मुझ पर देश ने इतना खर्च जो किया है। इतना कहकर वह पैराशूट लेकर कूद पड़ा। उसी विमान में एक नेता भी था। उसने घबराते हुए कहा - देखिये, देश मेरे सहारे चल रहा है, यदि मै नहीं रहा तो कैसे चलेगा मेरा देश, मेरा बचना बहुत जरुरी है और वह पैराशूट लेकर कूद गया। अब बचे हुए दो में एक शिक्षक और एक शिष्य था। शिक्षक ने शिष्य से कहा - तुम कूद जाओ, क्योंकि तुम देश के भविष्य हो, तुम्हारा बचा रहना बहुत जरुरी है, मेरा क्या है ....। शिष्य ने कहा - पर सर, हम दोनों ही बच सकते हैं। शिक्षक ने कहा - यह कैसे संभव है ? एक पैराशूट में हम दो कैसे अटेंगे?

शिष्य ने जवाब दिया, 'सर, घबराहट और हड़बड़ी में वह नेता बजाय पैराशूट के मेरे स्कूल बैग को लेकर हु कूद पड़ा।" [११७]

५. २. शैलीगत विशेषताएँ

कथा साहित्य में कथ्य की अभिव्यक्ति में भाषा की भूमिका प्रमुख होती है, वैसे ही शैली की भूमिका अहम् होती है। शैली वह भाषिक वैशिष्ट्य है, जो किसी रचनाकार के भावों और विचारों को विशिष्ट रूप में प्रकट करती है। हर एक कथाकार की अपनी अलग एक

शैली होती है। आज की कहानियों में तथा उपन्यासों में शैली का प्रयोग नैसर्गिकता से हो रहा है। शैली की दृष्टी से मधु कांकरिया के कथा साहित्य का अध्ययन करने यह परिलक्षित होता है, कि उनके कहानियों तथ उपन्यासों के कथ्य के निरूपण की विविध शैलियाँ मिलती हैं। उन्होंने अलग-अलग शैलियों का प्रयोग कर कथ्य को पाठकों के सामने रखा हैं। अनेक प्रचलित शैलियों के प्रयोग के साथ साथ उपन्यास के कथानक को खंड में विभक्त करने की शैली काफी मनभावन है। उनके कहानियों तथा उपन्यासों की शैलीगत विशेषताएँ हम इस प्रकार देख सकते हैं ।

५.२.१. वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली यह एक प्राचीन प्रचलित और पारंपारिक शैली है। वर्णनात्मक शैली में प्रसंग के वर्णन की प्रधानता होती है। इसमें लेखक की प्रवृत्ति, रूचि एवं योग्यता को लक्षित किया जाता हैं। वर्णनात्मक शैली में लेखक अपनी अनुभव के आधार पर वर्णनों में विश्वसनीयता और कथा में यथार्थ लाने के लिये अपनी कलात्मकता का उपयोग करता है। मधु कांकरिया के कथा साहित्य में इसी शैली का प्रयोग देखने को मिलता है - "इन गलियों के लगभग हर कमरे बदबूदार, अँधेरे, चूना झड़ती दिवारोवाले, जंग खाए जंगलोंवाले एवं टूटे फर्शवाले है। हर कमरे में एक उंचा सा कही -कही ईटों के सहारे उंचा कर दिया गया एक सिंगल बेडनुमा तख्ता है जिस पर पतला- सा बिस्तर है, जिस पर पतली - सी मैली -सी एवं किसी पूर्व ग्राहक के पसीने से अटी पड़ी फुलालेन या कोई छीटदार चद्दर है। पाँवों की तरफ तह किया हुआ सस्ता मिला कम्बल है। मेल और तेल से आते पड़े गिलाफवाला, कही - कही बिना गिलाफवाला। एकदम कम रुई का कडा - सा तकिया है। जलंगों पर वेश्या या आनेवाले ग्राहक की इज्जत पर पर्दा डालने के लिए डोरी से लटके, धूल से अटे गंदे परदे है। अमूमन हर दीवारों पर देवी -देवताओं के चित्र है - कही कैलेण्डर में तो कही फ्रेम में। किसी-

किसी दीवार पर श्रृंगार का प्रतिक एक छोटासा आइना है। कमरे के बीच या कही-कही कोने पर तिरछी बंधी एक प्लास्टिक की डोरी है जिस पर लटकी कई पोशाकें है। कमरे की जमीन पर बिछी आधी गृहस्थी है - स्टोव है, स्टील एवं अल्युमिनियम के बर्तन है। मसालों के डिब्बे है। शीशियों में चमकता कडुआ तेल है। कही- कही कमरे के कोने में रखी पानी से भरी प्लास्टिक की बाल्टी है।" [११८] सलाम आखिरी उपन्यास में वेश्याओं कि रहने कि जगह का वर्णन किया है जिससे पाठकों के आँखों के सामने वहाँ का दृश्य आता है।

"मंच के बाई ओर सरोवर में तैरते हंसों की तरह एक कतार में झक-झक उज्वल वस्त्रों में दिपदिपाते परमहंस सरीखे साधू। दाई ओर एक कतार में बैठी देदीप्यमान – आत्माएँ-साध्वियाँ। बिच में अनुशासित ढंग से बैठा श्रावक समाज। हवा की झकोरियों की तरह हर तीन मिनट पर उठती धर्म की जय -जयकार। धर्म के सौरमंडल में अलग से ही किसी ध्रुवतारे की तरह झिलमिलाते मुगले - आजम गुरुदेव, जिवसिद्धि। आचार्यों के आचार्य। होनेवाली इक्कीस दीक्षाओं को देख चेहरे पर वही पुलक और परितोष, जो परिवार के बुजुर्ग पर होता है, अपनी लहराती वंशबेल को बढ़ते देख। " [११९]

मधु कांकरिया ने अपनी कहानियों में भी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है - 'मर्द होते हुए ' कहानी में लेखिका ने नेपाली कांछा का वर्णन बखूबी किया है - " ठिगनी सी उसकी पहाड़ी काया। फिरी नाक , पावरटोली से फुले-फुले गाल। एकदम वृत्ताकार एवं गोर से चेहरे पर बटन से चिपकी एक जोड़ी कंजी आँखे, बिल्लोरी चमक लिए। सब मिलाकर मीठा- मीठा चेहरा। " [१२०]

"वह मनहूस सुबह थी, किसी चिल की तरह उस घर के आँगन में उतरी और जिंदगी पर अपने पीने पंजे गड़ाकर चली गयी और देखते -देखते प्रेम की एक शीतल धारा एक बागी लपट बन गयी।" [१२१]

"सुखी नदी- सी निगाहें घडी की ओर उठी- ग्यारह बजकर ग्यारह मिनट । हिसाब चलने लगा - अब इस आखिरी रात के और कितने लम्हे हैं उनके पास, कुल जमा दो घंटे और उनचास मिनट । उसके बाद ? ? सब शून्य ..... अपनी समस्त पीड़ा के साथ शून्य होते हुए शून्य में विलीन हो जायेंगे वे ।"[१२२] कीड़े कहानी में प्रोफेसर वर्मा को जहर का इंजेक्शन देने के बाद उनकी मनस्थिति का वर्णन, वर्णनात्मक शैली में किया है ।

"एक नजर मैंने उसके पिता पर डाली । साँवला रंग । एक मरियल तकिये के सहारे आधे लेटे और आधे बैठे हुए । बुझा हुआ चेहरा । कछुए की तरह सिकुड़े हुए अंग ।फटी-फटी आँखे । बूढ़े बैल के झुके हुए सींग की तरह झुके हुए कंधे । झुकी हुई पीठ । मेरे नमस्कार के जवाब में हँस दिए वे - एक मरियल हँसी ।" [१२३]

"दूसरे दिन ऑफिस पहुँची तो बडा विचित्र नजारा था । जिंदगी जीता- जागता युद्ध बन चुकी थी। गिरते- डोलते बावन वर्षीय फोनी बाबू को तीन पियन पकड़ कर टैक्सी में चढ़ा रहे थे। वह उनके पंजे से निकलने की असफल कोशिश कर रहे थे । बीच-बीच में वह अपनी अकड़ी गर्दन को दायें - बायें हिला रहे थे । उनका दिल अभी भी बुझती लालटेन की तरह भक- भक कर रहा था ।" [१२४]

५.२.२. संवादात्मक शैली,

संवाद कथा रचना का महत्वपूर्ण अंग है । अगर कथा रचना में संवाद न हो, तो कहानी की शैली वर्णनात्मक लगती है और कथा विरस हो जाती है । अगर कथा में पात्रों के बीच संवाद का इस्तेमाल किया हो तो वह मुखर उठती है । अगर कथ्य की रचना को प्रभावशाली बनाना है, तो उसमे संवाद का उपयोग होना जरुरी है । मधु कांकरिया ने भी प्रसंगाकुल संवादों का इस्तेमाल किया है । इनके कथा साहित्य में इस्तेमाल की गए संवादों की यह विशिष्टता है कि, वह बड़ी से बड़ी, कठिन, जटिल बात, भाव, प्रसंग और स्थिति इत्यादि को आसानी से

स्पष्ट कर देते है । देखते है वर्णनात्मक शैली के उनके उपन्यास तथा कहानियों के कुछ उदाहरण।

“ इकोनॉमिक्स ही क्यों लिया आपने। "(क्या बात पूछी है !)

“ खाली समय में क्या करती है ?” (आपका सिर !)

"और क्या- क्या शौक है ?” (आपसे मगजमारी करने का।)

“ कैसे लोग आपको पसंद है ? (सभी तरह के, विशेषकर बूढ़े !)

“और लड़के !” (आपसा हरगिज नहीं।)

“खाने में क्या- क्या पसंद है ? “ (भुट्टा) [१२५]

तुम्हे डर नहीं लगता, अपनी इज्जत को इस प्रकार पराए मर्द के हवाले करते …..”

“क्यों नहीं लगता है, बहुत लगता है - एकदम शुरू- शुरू में तो बोटी- बोटी अकड गई थी।

“तो फिर क्यों करती हो तुम ऐसा ?”,

“क्योंकि इससे भी ज्यादा डर एक एक और चीज है, उससे लगता है "

"क्या है वह ?”

“भूख ……। " [१२६]

‘सलाम आखिरी’ उपन्यास में संवादों का प्रयोग नाटकीय अंदाज में किया है । इस उपन्यास में इस्तेमाल किये गए संवादों के माध्यम से ही इन उपन्यासों के पात्रों का चरित्रात्मक विकास दिखाने में लेखिका सफल हुई है -" मैडम आप चाहती तो भाग सकती थी, शायद अपनी जान भी बचा सकती थी, फिर क्यों किया आपने आत्मसमर्पण ?

- हाँ, मैं भाग सकती थी, शायद अपनी जान भी बचा लेती, पर भागने से दुनियाँ नहीं बदलती जज साहब, दुनिया बदलती है, दुनिया की गन्दगी को साफ़ करने से, अपने हाथ गंदे करने से। मैं इस घटना को ….. इस सत्य को भविष्य और इतिहास को सौपना चाहती थी।

- मैं भाग जाती मी लार्ड, तो यह कथा भी एक परिकथा बन जाती। एक सत्य की हत्या हो जाती। वह सत्य जो मेरे प्राणों से ज्यादा बहुमूल्य है।" [१२७]

"अरे तू ! तू कब आया ? और इस प्रकार बिना सूचना के ? यहाँ कश्मीर में बिना सूचना के आना अपराध है। बोलते बोलते लिपट गया वह भाई से।

"सूचना देता कैसे ? यहाँ तो मोबाइल भी नहीं चलता। पर पहले मुझे अन्दर तो घुसा। घंटे भर से खडा हूँ बाहर। बोर हो गया हूँ पीठ पर घास के गट्ठर लादे इन कश्मीरी औरतों को देखते - देखते। हंस दिया मेजर " चल अब कुछ अच्छा दिखाता हूँ।

" अजीब बन्दे है तेरे भी। मै विश्वास दिला-दिला के थक गया, कि मैं मेजर संदीप का छोटा भाई हूँ लेकिन सुनते ही नहीं। एक ही रट, हमें ऑर्डर नहीं। भीतर एंट्री तो मेजर साब के आने पर ही मिलेगी। बाप रे ! इतनी सिक्यूरिटी ! इन्हें क्या हर बन्दा मिलिटेंट नजर आता है।"[१२८]

दरअसल कहानी आकार से छोटी होती है लेखक को कम शब्दों में पुरे कथ्य को पाठकों के सामने प्रस्तुत करना होता है। उसमे संवादात्मक शैली का इस्तेमाल कम ही किया जाता है लेकिन मधु कांकरिया के कहानियों में भी संवादात्मक शैली का प्रयोग मिलता है- "निहायत मुलामियत से पूछा मैंने, " बार- बार क्या गिन रही है ?"

" गिन नहीं रही हूँ, छू रही हूँ इन्हें।" लगा जैसे आवाज इनके मुँह से नहीं, किसी गहरी अँधेरी बावड़ी से आ रही है।

" क्यों ? "

" इन्हें जमील ने छुआ था। बहुत पसंद थी उसे ये। पूरी दस थी। तुम्हें उसके आने की खबर देने के बाद ही मैं बाजार से उधार लायी थी। इन लेमनचुसों को।" उनकी आँखों में यादों के

चिराग जल उठे होंठ काँपे। आँखे किसी अदृश्य को देखने लगी। एक बोझल चुप्पी। मेरी आँखों में फिर वही दृश्य कौंध गया ... चादर में लिपटा माँ का लाडला जमील।

"क्या जमील ने खायी ?"

पंख् कटी चिड़िया - सी वह फड़फडाई , " हां दो खाई, पूरी दस थी, अब आठ है।" [१२९]

नंदीग्राम के चूहे कहानी में -"कुछ नहीं, नींद नहीं आ रही थी, सोचा आपसे बतिया लू।"

" नींद नहीं आ रही है, पर क्यों ? मैं तो नया हूँ पर तुम लोग तो अभ्यस्त हो चुके हो इस माहौल से।"

मैंने उसके नींद नहीं आने का मजाक-सा उड़ाया। उसने ठंडा सा जवाब दिया, "नींद तो आई, रात जितनी नहीं। नींद थोड़ी, रात ज्यादा है।" [१३०]

'चिड़िया ऐसे जीती है' कहानी में - "क्या जनाब का भी इस ट्रेन में चढ़ने का इरादा है ?"

"इन्हें देखकर लगता है जैसे ये माँ की कोख से नहीं, ट्रेन की कोख से जन्मे है। देखो न। कैसे इसकी इंच-इंच से चिपके है ये लोग।

"इस ट्रेन की तस्वीर खींचकर विदेश में भेज दो, अच्छी - खासी कमाई हो जाएगी। "

"तुम्हे कमाई की सूझ रही है, मैं सोच रही हूँ कि इनके लिए महज जीना किसी युद्ध से कम नहीं। ज़रा - सा संतुलन गड़बड़ाया कि सीधी मौत या अपाहिज जिंदगी। [१३१]

मधु कांकरिया ने अपने कई कहानियों में फ़ोन द्वारा किये गए संवादों का भी इस्तेमाल किया है।

'उसे बुद्ध ने काटा कहानी में' - "नमस्ते आंटी , सब ठीक तो है।"

"हाँ - हाँ सब ठीक है।"

“दरअसल आंटी, आय मीन आंटी, अमित को कहिये कि एक बार ऑफिस आ जाए। नए मार्केटिंग मैनेजर को कुछ डेटा चाहिए। कितनी बार उसे फ़ोन किया पर उसका मोबाइल स्विच ऑफ मिला।

- रुकिए -रुकिए, आपको जरुर कुछ गलतफहमी हुई है, शायद गलत फ़ोन लग गया है, मेरा बेटा तो रोज ऑफिस जा आरहा है। मैंने बिच में ही उसे रोका।" [१३२]

५.२.3. पूर्वदीप्ति शैली,

आधुनिक कथा लेखकों में पूर्वदीप्ति शैली लोकप्रिय है। पूर्वदीप्ति शैली को अंग्रेजी में "फ़्लैश बैक" टेकनिक कहते है। फ़्लैश का अर्थ है 'प्रकाश' और 'बैक ' का अर्थ है, 'पीछे'। मतलब कथानक में भूतकाल में घटी घटना को प्रकाशित करना। पात्र की अतीत में घटी कुछ घटनाओं का वर्णन कर उसकी याद को ताजा करने के लिए यह शैली अपनाई जाती है। इस शैली में रचनाकार वर्तमान कथा के सूत्र को किसी भूतकाल की घटना से अकस्मात् ही प्रासंगिक रूप में जोड़ देता है और कथानक को गति देनेका प्रयास करता है।अंग्रेजी साहित्य के संपर्क से विकसित इस शैली में भूतकाल, वर्तमानकाल और फिर भूतकाल इस ढंग से कथावस्तु विकसित होती है। वर्तमान जिंदगी जीते हुए पात्र अपनी विगत जीवन की घटना का उल्लेख जब करते है तब उसे "पूर्वदीप्ति शैली (Flash Back) कहते हैं।

‘सूखते चिनार’ उपन्यास में मेजर संदीप अपने पिताजी आदिवासियों के जीवन की सच्चाई बताते समय अतीत की यादों में चला जाता है - “ एक दिन लालदेव कपडे सुखाते हुए एक गाना गा रहा था,

“हो आरी गांधी बाबा, हरे गुलितेम रु लेना।

सिन्धु कान्धु , बुद्धु जतरा, बिरसा भगवान, शहीद लेना गाँधी बाबा

हरे गुलितेम रु लेना गांधी बाबा।"

इतने मीठे स्वर में और इतनी तड़प के साथ गा रहा था वह की अपने काम में मन नहीं लगा सका। अपनी पूरी चेतना के साथ मैं सुनने लगा उसके गाने को। मंत्रमुग्ध हो मैंने पूछा, इस गाने का मतलब क्या है ? इसका मतलब सुन मैं चौक गया। इस गाने का मतलब था कि जंगलों में रहनेवाला एक आदिवासी गाँधी बाबा से अनुरोध कर रहा है कि आपकी शहादद के पूर्व भी इस इलाके में कई शूरवीर सिन्धु कान्हु, बुद्धु जतरा और बिरसा मुंडा आदि शहीद हो चुके है, तो हे गाँधी बाबा ! उनकी शहादद को भी याद कर तुम भी रो लेना।" [१३३]

'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में भी पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है। साध्वी अपूर्वा की स्थिति के लिए अतीत के कई कारण थे जो उसे याद आते है - " मेरी भाभी का बच्चा यानी मेरा भतीजा पीलिया में चल बसा। भाभी की भयंकर प्रसव पीड़ा भी मैंने देखी थी। जिन क्षणों वे उस मर्मान्तक प्रसव पीड़ा से छटपटा रही थी, तब भी मेरे भीतर जीवन भर रहा था, रही सही कसर भतीजे की मृत्यु ने पूरी कर दी। रोती- बिलखती भाभी को देख मैं सोचने लगी, इसी प्रकार मेरी शादी होगी, फिर बच्चे होंगे, फिर उनमें से कोई मर गया तो मेरी भाभी जैसी ही हालात होगी।"[१३४]

' पत्ताखोर' उपन्यास में भी पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग हुआ है। उपन्यास में आदित्य, सहदेव को उसके अतीत की बारे में पूछता है ।उसका कोलकत्ता आकर बसने का कारण पूछता है, तब सहदेव कहता है - " वह १९६२ का बिहार में पड़नेवाला भयानक सुखा था। फसले खराब हो गयी थी। आज भी याद है तब अमेरिका से ढेर सारा बाजरा यहाँ आ रहा था। अरे, वहाँ सूअर खाते थे, उनके मुँह से बच गया तो यहाँ भेज दिया। मेरे बाबा तब जीवित थे, उन्होंने ही कहीं से सूना था। आज भी याद है, हमने तब तिन महीने तक सिर्फ एक ही धान का मुँह देखा था - बाजरा। [१३५]

मधु कांकरिया ने अपने कहानियों में पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग किया है - "पत्र आज के करीब दो वर्ष पूर्व आया था। वे व्यस्तता से भरी अफसरी के दिन थे। उस समय भी प्रभावित हुए थे वे मित्र की बदलती जीवनधारा से। जीवन क्या है। सार्थकता क्या है ? स्वयं को विराट से जोड़ना क्या है ?" [१३६] 'उड़ान' कहानी में अवकाश प्राप्त समीर को घर से अपमानित किया जाता है तब उन्हें अपने मित्र की याद आती है।

"यदि एक बार भी मिलने जैसा मिलना हो उससे तो सिर्फ इतना भर कह दूँ कि तुम्ही ठीक थे इंद्र ! कोई भी सपना जीवन से उंचा नहीं होता।" [१३७]

'अन्वेषण' कहानी में फादर मैथ्यू को अपना बचपन याद आता है "माँ बताती थी कि बचपन में वे बहुत पेटू थे। माँ जब अपनी थाली में भात डालती थी तब थाली में थोड़ी- सी जगह बच जाती थी, तो वे परेशान कर डालते थे अपनी माँ को - माँ देखो यह जगह खाली पड़ी है, इसे भी भर दो।" [१३८]

'पॉलिथीन में पृथ्वी' कहानी कि युवती डॉक्टर को अपने अतीत के बारे में बताती है। पति ने बच्ची को कोख में ही मारने के कारण वह मानसिक रूप से संतुलित हो गयी थी।- डॉक्टर साहब, वह मेरी बच्ची, उस दिन वह शांत सोयी थी, माँ की कोख में। जिस दिन उसने कम उत्पात मचाया, उसी दिन उसे मार डाला। डॉक्टर साहब बड़ी जान थी उसमें। उसके सारे अंग बन गए थे। उँगलियाँ तक बन गयी थी। उसका माथा बड़ा था ... वह होती तो बड़ी बुद्धिमती होती।" [१३९]

५.२.४. आत्मकथात्मक शैली,

आत्मकथात्मक शैली कथा साहित्य में सर्वाधिक प्रचलित शैली है। इस प्रकार की शैली में कथाकार स्वयं को एक पात्र के रूप में रखकर भोक्ता या द्रष्टा के तौर पर कथावस्तु को संगठित करता है। इसमें लेखक कथा में संयोजित प्रत्येक घटना का पात्रों द्वारा निवेदन करता

है। आत्मकथात्मक शैली के उपयोग से कथानक अधिक आकर्षक बन जाता है । मधु कांकरिया के उपन्यास और कहानियों में कई जगहों पर आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग मिलता हैं । उनके पात्र पढ़ते समय कई बार महसूस होता है कि मानो वे उनके खुद के निजी जीवन के अनुभव हों ।

मधु कांकरिया के 'सूखते चिनार' उपन्यास में भी आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है- "हम चौकन्ने हो गए । समझ गए कि हमला हम पर ही होनेवाला है । आनन् फानन में हमारी कंपनी ने फ्रीक्वेंसी से लोकेशन का पता लगाया । पता लगा, मिलिटेंट बस तीन किलोमीटर की दूरी पर ही है, और हमले की योजना बना रहे है । थोड़ी ही ऊँचाई पर मिलिटेंट था । पकड़ा भी गया लेकिन उसने चालाकी से ग्रिनेड पास के ही डस्टबिन में डाल दिया । इस कारण हम पकड़ कर बभी उसे मिलिटेंट प्रूफ नहीं कर सके ।" [१४०]

पत्ताखोर उपन्यास में भी आत्मकथात्मक शैली के अनेक उदाहरण मिलते है ।- "पर रात अंग-अंग दुखने लगा । गोद पिराने लगे । छाती दुखने लगी । फिर भी हम शांत थे, छह रुपये हमारे पास थे .... पर जब भैया ने बताया कि दिन की शिफ्ट का भाडा ही दस रुपिया है ई गाडी का, तो हम रो पड़े ... हाड़तोड़ मेहनत करके भी चार रुपया अपनी टेंट से देने पड़ गए ... ई का नगरी ... दर्द के मारे हम ऐंठे जा रहे थे, उस रात तो हमने सोचा, अब जिंदगी में कबहुँ रिक्शा नहीं टान पाएँगे ।" [१४१]

" सलाम आखिरी' उपन्यास में भी पात्र आत्मकथात्मक शैली में बोलते नजर आते है।- "तुम्हारे लिए ही तो सब कर रहा हूँ, वरना गाँव में मेरे पास क्या नहीं था, और मै थोड़े दिन के लिए अपनी मामी के यहाँ तुम्हे छोड़ देता हूँ, बहुत ख्याल रखेगी वह तेरा .... ठीक यही शब्द थे उस भौसड़ी के .... और वह मुझे बहुबजार के किसी चकले में बेच गया ।" [१४२]

महाबली का पतन कहानी में मधु कांकरिया ने आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है। - "मुझसे आश्वासन लेकर और प्रतिदान में मेरी उद्विग्नता और बेचैनी बढ़ाकर वह चली गयी थी। और इसका सबसे बड़ा प्रमाण यही था कि उसके जाने के बाद भी मै उसकी गंध को सूंघ सकती थी। [१४३]

" तुम्हे नशेबाज के रूप में देखूंगी, कभी सोचा भी न था ….। "बोलते बोलते कंठ अवरुद्ध हो गया था मेरा …. एक संभावनापूर्ण जीवन का इस प्रकार असमय अवसान !" [१४४]

५.२.५. डायरी एवं पत्रात्मक शैली

एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को जो लिखित सन्देश भेजता है उसे पत्र कहते हैं। आत्मीय संवाद को कथा में लाने के लिए पत्रात्मक शैली का उपयोग किया जाता है। पत्रात्मक शैली के माध्यम से कथ्य की विकास गति को बढ़ाया जाता है। कथा में पत्र का उपयोग कथोपकथन की भूमिका भी निभाते है। मधु कांकरिया ने अपने लगभग सारे उपन्यासों में पत्र शैली का इस्तेमाल किया है

कहानी में डायरी के माध्यम से अतीत के पन्ने वर्तमान कथा में खोले जा सकते है। डायरी मनुष्य का निजी दस्तावेज है। जीवन की कुछ बाते ऐसी होती है, जिसे वह सामाजिक नहीं कर सकता, लेकिन उन्ही मन की बातों का जिक्र डायरी में करता है।

मधु कांकरिया ने अपनी बहुत सी रचनाओं में पात्रों के माध्यम से डायरी शैली और पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है।

डायरी शैली का प्रयोग मधुजी ने अपनी उपन्यास "खुले गगन के लाल सितारे" में किया है। उनकी कहानी "उसे बुद्ध ने काटा" में भी डायरी शैली का प्रयोग हुआ है।

डायरी शैली

'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास में इंद्र की प्रतीक्षा करती मणि अपनी ही डायरी के पन्नो को पढ़ती नजर आती है।- "५ फरवरी ७२ :देर रात।

जी भर तुम्हे देखा भी न था कि जी भारी कर और आधी बात कर तुम चले गए। अब बिन बरसे उस प्यार का मैं क्या करू, इंद्र जी मुझे भटकैसा को भटका रहा है गली- गली, कि असंभव का संभव हो जाए और तुम दिख जाओ।

मुझे शांति नहीं इंद्र, बिना यह जाने कि जाते वक्त क्या आवाज दी थी तुमने तुम चट्टान की तरह दृढ़ थे या यातनाओं ने तुम्हे दारा दिया था।" [१४५]

'पत्ताखोर' उपन्यास में आदित्य अपनी डायरी लिखता है ।- "मेरी निजी एलबम- शुरुवाती चित्र- जिंदगी की रोल को रिवाइंड कर रहा हूँ ... बस अब नो फर्दर रिवाइंडिंग पॉइंट। आधी- अधूरी, धुंदली सी एक याद। ठीक नहीं कह सकता तब मेरी उम्र कितनी थी, बस इतना भर ध्यान है कि मैं तब इतना छोटा था कि घर के स्टोर- रूम में चावल कि टंकी थी, मैं उसके पीछे खडा हो जाता तो पूरी तरह ढँक जाता था। उस दिन मेरे पड़ोस में मेरी ही उम्र का एक छोटा- सा बच्चा, जो कि पड़ोसियों का नाती था, आया हुआ था। दिन भर आंटी - अंकल (जिन्हें मै ताउजी -ताईजी कहता था) अपने चारो हाथों कि गाडी बनाकर उस पर टिंकू को बैठाकर उसे घुमाते रहते थे। वे उसे घुमाते और गाते जाते -

"हाथी घोड़ा पालकी। टिंकू उनके साथ भी गाता जाता - हाथी घोडा पालकी और ताली बजाता जाता। मुझे बहुत अच्छा लगता था। मै सोचता था कि घर जाकर मै भी अपने पापा- मम्मी के साथ इसी प्रकार खेलूंगा। [१४६]

इस प्रकार मधु कांकरिया ने डायरी शैली का उपयोग अपने उपन्यासों में किया है।

'उसे बुद्ध ने काटा' कहानी में भी डायरी शैली का प्रयोग हुआ है। अपने बेटे के बदलते स्वभाव को देख उसकी माँ बेटे की डायरी पढ़ लेती है। डायरी में बेटे ने लिखा था।- काश ! मैंने वह सब न देखा होता। ' पहली डुबकी में कहाँ समझ पाया था कि जिंदगी कही और है। अब समझ पाया हूँ जब गले तक धँस गया हूँ कि अरबों- खरबों का हमारा व्यापार झूठ और सिर्फ झूठ पर टिका हुआ है, खुबसूरत बनाने के झूठे वादों पर। पर अब नहीं मुझसे यह सब। शर्म आती है मुझे अपने पर। लोग मर रहे है। किसान आत्महत्या कर रहे है। गाँव -के - गाँव उजड़ रहे है और हमारी टीम अपनी सारी ताकत और ऊर्जा इस बात पर लगा रही है कि कैसे युवतियों को गोरापन बेचा जाए। [१४७]

पत्रात्मक शैली।

मधु कांकरिया के हर एक उपन्यास में पत्रात्मक शैली का प्रयोग नजर आता है। उनके 'सूखते चिनार ' उपन्यास की कथा पत्रात्मक शैली का इस्तमाल करके ही आगे बढती है।। 'सूखते चिनार' उपन्यास में बहुत जगह प्रदीर्घ पत्र देखने को मिलते है।मेजर संदीप अपने भाई सिद्धार्थ को लंबा सा पत्र लिखता है, जो इस प्रकार है।-

भाई मेरे,

इस पत्र में मैं स्वयं को पूरी इमानदारी के साथ पेश कर रहा हूँ। जब-जब मै अपने अभी तक के पूरे जीवन पर एक नजर फेंकता हूँ तो यह बात साफ़ समझ में आती है कि कुछ जीवन ऐसे होते हैं जो कभी जिये नहीं जाते हैं, जो जीवन को समझने और उसकी तैयारी करने में ही बीत जाते है। मेरे जीवन कि कहानी भी कुछ ऐसी ही है। जितना अधिक मैं जिंदगी को समझने कि चेष्टा करता रहा, उलझता रहा। जितना अधिक मैं इसके करीब आना चाहा, यह मुझे दूर धकेलती रही।

मेरी कहानी के बीज शायद तभी पड़ गए थे जब अपने अल्हड और तितलियों को पकड़ने की उम्र में मैंने अपने लिए एक सपना पाल लिया, बिना सोचे विचारे। पर वह स्वप्न ही क्या जिसे सोच- समझकर पाला जाए। बहरहाल, मैंने स्वप्न पाला एक कड़क फौजी बन जीवन के उन अनजाने रास्तों पर चलने का जो खतरों से भरा था, अनजाना था ।.....

..... मेरे पास अब दो ही विकल्प हैं। या तो अगले आठ वर्षों तक और इंतज़ार करूँ तब तक मेरे फौजी जीवन को २० वर्ष पुरे हो चुके होंगे और अनुबंध के अनुसार मैं स्वाभाविक रूप से फ़ौज से ससम्मान निकल जाऊँगा, या फ़ौज पर मुकदमा चलाऊँ। सोच कर मन उदास होता है कि जो फ़ौज कभी मेरा सबसे बड़ा हसीं स्वप्न थी, आज उसी पर मै मुकदमा चलाने कि सोच रहा हूँ ? हर सत्य क्या इसी प्रकार अपने विरोधी सत्य में दम तोड़ते है ? पर मैं क्या करू आज मेरे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती यही है कि मनुष्य एक सम्पूर्ण मनुष्य कि तरह मै जी सकूँ। बहुत जरुरी है कि आदमी अपने परिवेश के साथ जुड़ सके, तभी वह इंसान बनकर जीवित रह सकता है। पर यही चीज है जो आज सबसे अधिक खतरे में है ।कहाँ जाऊँ मैं ? किसके पास आश्रय लूँ ? कोई ईश्वरीय सत्ता ? कोई गुरु ? कोई अध्यात्म ? पुस्तक ? कहाँ मिलेगा मुझे जीवित रहने का आधार ? ख़त्म होगी यह भटकन ? यह उचाटपन ?

नहीं जानता कि मैं अपने को कितना कह पाया हूँ, पर मैंने अपने सारे भेदों को तुम्हारे सामने खोल दिया है। माँ, पापा को तुम समझाने कि चेष्टा करना। परिवार को कुछ दे नहीं पाया, इसका दुःख सर्वदा रहेगा।

तुम्हारा भाई

संदीप [१४८]

मधु कांकरिया ने अपनी "अन्वेषण" कहानी में पत्रात्मक शैली का उपयोग किया है।

प्रिय मैथ्यू

लग रहा है कि एक बड़ी रोशनी से तुम वापस अपनी सिमित रौशनी कि दुनिया में लौटने का मन बना चुके हो। मानव मन सचमुच अदभुत, जटिल और रहस्यमय है ….. खैर निर्णय लेने को तुम स्वतंत्र हो। फिर भी मै टर्टयुलिशन का यह उद्धरण अंतिम स्वरुप में भेज रहा हूँ, "जहाँ शैतान सीधा आक्रमण करने में हिचकता है, वहाँ वह औरत का सहारा लेकर पुरुष को मिटटी में मिला देता है।

गॉड ब्लेस यूं।

तुम्हारा

मंगलम [१४९]

निष्कर्ष

मधु कांकरिया के कथा साहित्य का भाषा और शैली की दृष्टी से अध्ययन करने के उपरांत यह बात सामने आती है, कि कहानियों की तुलना में लेखिका ने अपने उपन्यासों में भाषा-शैली का उपयोग जागरूकता से किया है। मधुजी के उपन्यास और कहानी संग्रह की भाषा शब्द भंडार से संपन्न, सुक्तियों से सजी और अलंकारिकता से पूर्ण हैं। अपने विचारों को पाठकों तक संप्रेषित करने की क्षमता उनकी भाषा में है।

अपने अलग अंदाज में लिखे उनके उपन्यास तथा कहानियों की भाषा दुरूह होने पर भी अर्थ को अधिक सक्षमता से स्पष्ट करती है। अंततः यह कहा जा सकता है, कि भाषा और शैली की विविधता उनके कहानियों में तथा उपन्यासों में देखने को मिलती हैं।

मधुजी के कथा साहित्य में भाषागत विशेषताओं में प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता, सांकेतिकता, अलंकारिकता, डॉट्स प्रयोग, बंगाली भाषा का प्रयोग, मुहावरे, लोकोक्तियों का प्रयोग दिखाई देता हैं, तथा शैलीगत विशेषताओं में वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली,

आत्मकथात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, संवादात्मक शैली तथा पत्रात्मक शैली का प्रयोग दिखाई देता हैं।

एक आधुनिक लेखिका के रूप में मधु कांकरिया ने भाषा और शैली के प्रति जागरूकता दिखाकर अपने साहित्य को दोनों स्तरों पर उच्च स्थान प्रदान करने की कोशिश की है। अपने उपन्यास एवं कहानियों में कथ्य के अनुरूप ही भाषा-शैली का चयन करके लेखिका ने अपने अभिव्यक्ति सामर्थ्य को प्रकट किया है। मधु कांकरिया के उपन्यास और कहानियों के भाषिक विधान पर दृष्टिपात करते हुए उनके भाषिक सौन्दर्य को जाना जा सकता है।

पंचम अध्याय - सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१.	धीरेन्द्र वर्मा	हिंदी साहित्य कोष	६०
२.	सुनीता कावले	कथाकार मधु कांकरिया	६०
3.	वही	वही	२३९
४.	शशिकला त्रिपाठी	राजेंद्र यादव : कथ्य और दृष्टि	२२३
५	मधु कांकरिया	सलाम आख़िरी	१३
६ .	मधु कांकरिया	पत्ताखोर	३०
७	मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	७०
८.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	१२५
९	मधु कांकरिया	भरी दोपहरी के अँधेरे - भरी दोपहरी के अँधेरे	१८३
१० .	मधु कांकरिया	नंदीग्राम के चूहे - चिड़िया ऐसे मरती है	१८३
११	मधु कांकरिया	कुल्ला- और अंत में इशु	९८
१२ .	बिंदु भट्ट	अद्यतन हिंदी उपन्यास	२०४
१३.	रेनेवेलक व् आस्टिन	साहित्य सिद्धांत	२४९
१४ .	मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	१३९
१५.	वही	वही	१३५
१६.	वही	वही	१३
१७.	मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	३०
१८.	वही	वही	४१

१९.	वही	वही	२८
२०.	वही	वही	१०७
२१.	मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	६४
२२.	वही	वही	३९
२३.	वही	वही	३३
२४.	मधु कांकरिया	पत्ताखोर	१९
२५.	वही	वही	१९७
२६.	वही	वही	४५
२७.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	१३
२८.	वही	वही	४४
२९.	मधु कांकरिया	महाबली का पतन- अंत में इशु	५६
३०.	मधु कांकरिया	चूहे को चूहा रहने दो - बितते हुए	१८६
३१.	मधु कांकरिया	फैलाव- और अंत में इशु	८१
३२.	मधु कांकरिया	बस दो चम्मच औरत - चिड़िया ऐसे मरती है	५७
३३.	मधु कांकरिया	कीड़े -और अंत में इशु	७१
३४.	मधु कांकरिया	कुल्ला - और अंत में इशु	१००
३५.	मधु कांकरिया	नंदीग्राम के चूहे - चिड़िया ऐसे मरती है	३४
३६.	मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	८९

३७.	मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	१०७
३८.	वही	वही	११७
३९.	वही	वही	१५८
४०.	मधु कांकरिया	महाबली का पतन- और अंत में इशु -	५६
४१.	मधु कांकरिया	कीड़े - बितते हुए	१५६
४२.	मधु कांकरिया	फाइल - बितते हुए	६१
४३.	मधु कांकरिया	लेडी बॉस - बितते हुए	४१
४४.	मधु कांकरिया	आर आसवो ना- बितते हुए	८३
४५.	मधु कांकरिया	उड़ान- बितते हुए	१२९
४६.	मधु कांकरिया	फैसला फिरसे - बिताते हुए	१६३
४७.	मधु कांकरिया	एक रुकी हुई स्त्री- बीतते हुए	१७६
४८.	मधु कांकरिया	चूहे को चूहा रहने दो- बितते हुए	१९१
४९.	केदारनाथ सिंह	आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान	२८
५०.	केदारनाथ सिंह	आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान	२८
५१.	मधु कांकरिया	पत्ताखोर	२७
५२.	मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	१४
५३.	मधु कांकरिया	पत्ताखोर	६९
५४.	मधु कांकरिया	विरासत- युद्ध और बुद्ध	११४

५५.	मधु कांकरिया	रहना नहीं देश विराना है - बीतते हुए	५६
५६.	वही	वही	१४३
५७.	मधु कांकरिया	चूहे को चूहा - बितते हुए	१८९
५८.	मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	१०२
५९.	मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	१४५-१४६
६०.	वही	वही	१६७
६१.	मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	६२
६२.	मधु कांकरिया	बस..दो चम्मच औरत - चिड़िया ऐसे मरती है	५८
६३.	मधु कांकरिया	पोलीथिन में पृथ्वी - दस प्रतिनिधि कहानियाँ	१४३
६४.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	१११
६५.	मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	५४
६६.	मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	७६
६७.	मधु कांकरिया	बितते हुए – नामर्द	९
६८.	मधु कांकरिया	चिड़िया ऐसे जीती है - युद्ध और बुद्ध	६७
६९.	मधु कांकरिया	उसे बुद्ध ने काटा - युद्ध और बुद्ध	१४६
७०.	मधु कांकरिया	कुल्ला - और अंत में इशु	९६
७१.	मधु कांकरिया	आर आसवो ना- बीतते हुए	८८.
७२.	मधु कांकरिया	चूहे को चूहा रहने दो - बितते हुए	१८८

७३.		वही	१७७
७४.	- मधु कांकरिया	बितते हुए - बितते हुए	७०
७५.	मधु कांकरिया	चूहे को चूहा - बिताते हुए	१८९
७६.	सीमा चंद्रन	मृदुला गर्ग का कथा साहित्य- एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	३८०
७७.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	७८
७८.	मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	२८
७९.	मधु कांकरिया	पत्ताखोर	१९२
८०.	मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	७१
८१.	- मधु कांकरिया	मुहल्ले में - और अंत में इशु	९४
८२.	मधु कांकरिया	पॉलिथीन में पृथ्वी- युद्ध और बुद्ध	८५
८३.	मधु कांकरिया	फैसला फिर से- बिताते हुए	१५८
८४.	मधु कांकरिया	पॉलिथीन में पृथ्वी- युद्ध और बुद्ध	८६
८५.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	१०२
८६.	मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	३९
८७.	वही	वही	१४६
८८.	मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	३४
८९.	मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	१५६

९०.	वही	वही	१५८
९१.	मधु कांकरिया	पत्ताखोर	५२
९२	मधु कांकरिया	महाबली का पतन - और अंत में इशु	४७
९३.	मधु कांकरिया	फाइल -और अंत में इशु	११७
९४.	मधु कांकरिया	लेकिन कामरेड - बितते हुए	३२
९५.	मधु कांकरिया	लोड शेडिंग - बिताते हुए	५९
९६.	मधु कांकरिया	काली चिल - युद्ध और बुद्ध	१३६
९७.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	३६
९८.	मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	१४७
९९.	मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	१०७
१००.	मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	३०
१०१.	मधु कांकरिया	सेज पर संकृत	१४६
१०२.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	२६
१०३.	वही	वही	३५
१०४.	मधु कांकरिया	अन्वेषण -बितते हुए	२०७
१०५	मधु कांकरिया	उ से बुद्ध ने काटा - युद्ध और बुद्ध	१५०
१०६.	मधु कांकरिया	काला चश्मा - युद्ध और बुद्ध	१४१
१०७.	मधु कांकरिया	काली चिल- युद्ध और बुद्ध	१३५

१०८. मधु कांकरिया	चूहे को चूहा रहने दो- बितते हुए	१९२
१०९. मधु कांकरिया	रहना नहीं देश विराना है- बितते हुए	५६
११०. मधु कांकरिया	पत्ताखोर	१७१
१११. वही	वही	१८५
११२ मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	१६६
११३ वही	वही	१६७
११४. वही	वही	५१
११५ डॉ जगन्नाथ चौधरी	महाभोज सृजन और समीक्षा	१२९
११६. मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	६२
११७. मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	९७
११८. मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	१६
११९. मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	१२९
१२०. मधु कांकरिया	मर्द होते हुए -बितते हुए	८९
१२१. मधु कांकरिया	कुल्ला -और अंत में इशु	९८
१२२. - मधु कांकरिया	कीड़े- और अंत में इशु	५९
१२३. मधु कांकरिया	मिसफिट - युद्ध और बुद्ध	१२८
१२४. मधु कांकरिया	काली चिल - युद्ध और बुद्ध	१३६
१२५. मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	४८

१२६	मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	१५०
१२७.	मधु कांकरिया	सेज पर संस्कृत	२२६
१२८.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	४०
१२९.	मधु कांकरिया	युद्ध और बुद्ध- युद्ध और बुद्ध	२३-२४
१३०.	मधु कांकरिया	नंदीग्राम के चूहे - युद्ध और बुद्ध	३१
१३१.	मधु कांकरिया	चिड़िया ऐसे जीती है - युद्ध और बुद्ध	५४-
१३२.	मधु कांकरिया	उसे बुद्ध ने काटा	१५७
१३३.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	८८
१३४.	मधु कांकरिया	सेज पर संकृत	१०७
१३५	मधु कांकरिया	पत्ताखोर	१८१
१३६.	मधु कांकरिया	उड़ान- बिततेे हुए	१२९
१३७.	मधु कांकरिया	बीतते हुए- बीतते हुए	७५
१३८.	मधु कांकरिया	अन्वेषण – बीतते हुए	२०३
१३९.	मधु कांकरिया	पॉलिथीन में पृथ्वी - युद्ध और बुद्ध	९२
१४०.	मधु कांकरिया	सूखते चिनार	४७
१४१.	मधु कांकरिया	पत्ताखोर	१६३
१४२.	मधु कांकरिया	सलाम आखिरी	४०
१४३.	मधु कांकरिया	महाबली का पतन - और अंत में इशु	४७

१४४. मधु कांकरिया	और अंत में इशु - और अंत में इशु	११
१४५. मधु कांकरिया	खुले गगन के लाल सितारे	१३२
१४६. मधु कांकरिया	पत्ताखोर	८९
१४७. - मधु कांकरिया	उसे बुद्ध ने काटा - युद्ध और बुद्ध	१५५
१४८. मधु कांकरिया	सूखते चिनार	१२४ -१२७
१४९. मधु कांकरिया	अन्वेषण- बितते हुए	२०६

उपसंहार

उपसंहार

साहित्य का प्रमुख उद्देश्य समाज के प्रति हमारे भाव, विचार तथा अर्थों की शाब्दिक अभिव्यक्ति करना है। साहित्य हमारे जीवन की अनुभूतियों के प्रकाशन का मार्ग है। हिंदी साहित्य में साहित्यकारों ने स्त्री के विषय में अपने किरदारों के माध्यम से काफी कुछ कहा है। प्राचीन काल से लेकर आज तक स्त्री की अवस्था में अनेक बदलाव आते रहे है। वर्गों, धर्मों, जातियों में बँटे समाज में स्त्री कभी देह, कभी वस्तु कभी दासी के रूप में ही चिन्हित की गई। अनेक महिला कथाकारों ने भी अपने कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से स्त्री संबंधित विविध प्रश्नों एवं समस्याओं को अभिव्यक्ति प्रदान की है। इन्ही महिला लेखिकाओं में मधु कांकरिया ने अपने लेखन के अलग शैली से अपना अलग अस्तित्व बनाया है तथा अपने कथा साहित्य से विशेष ख्याति अर्जित की है।

'मधु कांकरिया का कथा साहित्य : स्त्री विमर्श' इस शोध प्रबंध का अनुशीलन करने के बाद निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है की उनके कथा साहित्य में स्त्री विमर्श की अभिव्यक्ति जिस ढंग से हुई है वह अतुलनीय है। मधु कांकरिया के कृतित्व में उनके व्यक्तित्व के अनेकानेक प्रसंगों का यथार्थांकन हुआ है। एक मारवाड़ी परिवार में जन्मी मधु कांकरिया की पारिवारिक पृष्ठभूमि साहित्यिक की नहीं थी, फिर भी गहन अध्ययन, मनन और चिंतन से उन्होंने महत्वपूर्ण रचनाओं का निर्माण किया है। उन्होंने अपनी सृजन यात्रा कहानी से आरम्भ की लेकिन तत्पश्चात उन्हें यह अनुभव हुआ कि वे अपने भाव, विचारों को उपन्यास के माध्यम से अधिक सक्षमता से व्यक्त कर सकती है। इसीलिए उनके उपन्यास पढने पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके उपन्यास मिथक नहीं सार्थक लगते हैं।

मधु कांकरिया के उपन्यास हो या कहानी, हर बार नए विषय को लेकर कुछ अलग लिखना उनकी पहचान बन गयी है। उनका लेखन किसी एक दायरे में सिमटकर न रहकर हर नए अनछुए विषय को पाठकों के सामने रख देता है। कभी वह जैन साध्वी जीवन की कडवी सच्चाई पाठकों के सामने लाते हुए धार्मिक आडम्बरों पर कडा प्रहार करती हैं, तो कभी नक्सलवादी आन्दोलन से जुड़े युवाओं की मानसिकता दर्शाती है, तो कभी फौजी जीवन में भी बुद्ध के तलाश करती है तो कभी आज की मूल्यहीन युवापीढ़ी में बढ़ते नशे और उनके हालात के बारे में पाठकों को रु ब रु कराती हैं।

मधु कांकरिया का कथा साहित्य समाज की वास्तविकता के प्रति पाठकों को जागरूक करने में सफल रहा हैं। संक्षेप में, मधु कांकरिया का व्यक्तित्व एवं कृतिसंसार यह सिद्ध करता है कि उनका साहित्य सृजन उनके व्यक्तित्व के अनुरूप है।

इस शोध प्रबंध में मधु कांकरिया के कथा साहित्य में से स्त्री विमर्श को तराशने की कोशिश की है। हमारे समाज में स्त्री विमर्श का एक लंबा इतिहास है। स्त्री ने अपना अस्तित्व

बोध को स्थापित करने के लिए स्त्री विमर्श को प्रेरणा दी। हाशिये की जिंदगी छोड़ने के लिए प्रयास किये। स्त्री विमर्श के द्वारा साहित्य में ऐसे लेखन की शुरुआत हुई जिसने समाज की हर एक स्त्री को गहराई से सोचने -समझने में मजबूर कर दिया।

आज स्त्री विमर्श की जो अवधारणाएँ हैं, वे स्त्री को स्वतंत्र रूप से स्थापित करना चाहती है। स्त्री लेखिकाओं ने भी स्त्री विमर्श को अपने साहित्य में से अपने- अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। ऐसी ही कुछ प्रमुख लेखिकाओं की स्त्री विमर्श पर आधारित अवधारणाओं का अनुशीलन करते हुए स्त्री विमर्श का सही अर्थ समझने की कोशिश इस शोध प्रबंध में की है।

मधु कांकरिया के उपन्यासों के बारे में हम कह सकते हैं कि उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री को केंद्र में रखकर उसके स्वरुप तथा उसके समस्याओं का चित्रण किया है। उनके 'सलाम आखिरी', 'सेज पर संस्कृत' और 'खुले गगन के लाल सितारे' इसी का उदाहरण है। अपने लेखन को एक ही विषय तक सीमित न रखकर उन्होंने अपने उपन्यासों में से विविध आयामों पर चिंतन किया है। उनके उपन्यासों में स्त्री विमर्श के साथ साथ मध्यमवर्गीय परिवार का आर्थिक विवशताओं से जूझता हुआ अभावपूर्ण जीवन भी नजर आता है।

स्त्री शोषण हमारे समाज की सनातन समस्या है। मधुजी के 'सलाम आंखिरी' 'और सेज पर संस्कृत' उपन्यास में स्त्री शोषण का चित्रण पाठकों को झकझोर देता है। समकालीन नारी सक्षमीकरण के युग में भी स्त्री कैसे अपमानित रहती है, उसका आर्थिक दैहिक एवं मानसिक शोषण कैसे होता है, इसका चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है।

मधु कांकरिया के उपन्यासों में स्त्री विमर्श की अभिव्यक्ति मिलती है। उनके उपन्यासों में हम स्त्री पात्रों के साथ-साथ पुरुष पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी देख सकते है। स्त्री मन की अनेक स्थितियों का वर्णन उनके उपन्यासों में हुआ है। पितृसत्ताक समाज में शोषित जीवन

जीना है, या शोषण का विरोध कर अपना स्व- अस्तित्व स्थापित करना है, यह स्त्री के मनोविज्ञान पर निर्भर करता है। मधुजी के उपन्यासों में हमें अनेक मनोवैज्ञानिक पहलु नजर आते है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री की कुंठाओं उसके अंतरद्वंद्व का सफलता के साथ वर्णन किया है। इसी कारण उनके उपन्यासों के स्त्री पात्र यथार्थ की भाव-भूमि पर खरे उतरते है।

मधु कांकरिया के उपन्यास स्त्री मुक्ति और शोषण की लम्बी दास्तान है। उनके उपन्यास के अनेक स्त्री पात्र जीवन की लड़ाई में हारते हुए, तो कभी उस लड़ाई कपने तरीके से लड़ते हुए विजय प्राप्त करते नजर आते है। इससे यह साबित होता है कि उनके उपन्यासों में शोषण के साथ-साथ स्त्री संघर्ष की भी अभिव्यक्ति हुई है। "स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि उसे बना दिया जाता है" सिमोन द बोआर का यह वाक्य पूरी प्रमाणिकता के साथ मधुजी के उपन्यासों के स्त्री पात्रों की हकीकत बयान करता है।

मधु कांकरिया के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष दो रूप से दृष्टिगोचर होता है, एक जीवन के संघर्ष में अपनी पहचान बनाकर खुद का वजूद स्थापित करना और दूसरा रूप है, खोखली अंधश्रद्धा के चलते मरकर अमर होने की चाह में किया गया संघर्ष।

स्त्री जीवन में अर्थ की विशेष महत्ता है, क्योंकि स्त्री को ही परिवार का आर्थिक दायित्व संभालना पड़ता है। मधु कांकरिया के उपन्यासों में धर्म के साथ साथ अर्थ मुख्य विषय रहा है। मार्क्सवादी विचारधारा की मधुजी समाजवाद पर विश्वास रखती है। वह ऐसा समाज चाहती है जहा कोई आमिर न हो, न कोई गरीब। बचपन से आर्थिक अभावों से जूझती मधुजी को अर्थ की महत्ता का ज्ञान है। इसीलिए उनके उपन्यास में चित्रित कई स्त्री पात्र आर्थिक रूप से विवश होते हुए भी स्वयं मार्ग ढूंढने की कोशिश कर अपना अस्तित्व स्थापित करती नजर आती है।

मधु कांकरिया की कहानियों में मानवी जीवन के अलग अलग सन्दर्भ का चित्रण नजर आता है। उन्होंने स्त्री शोषण का चित्रण, पारिवारिक जीवन, प्रेम के सन्दर्भ में दृष्टिकोण, स्त्री अस्मिता एवं संघर्ष क्षमता इन अवधारणाओं के आधार पर अपने कहानियों से स्त्री विमर्श को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

स्त्री का शोषण जो रूढिगत परम्पराएं, पुरुषी विचार के बदौलत चला आ रहा है वही शोषण का प्रतिबिम्ब उनकी कहानियों में नजर आता हैं। उनकी कहानियों के स्त्री पात्र शोषण के खिलाफ जूझते नजर आते है तथा अपनी अस्मिता पाने के लिए संघर्ष करते नजर आते है।

स्त्री शोषण के साथ साथ अपने परिवार के लिए जीते स्त्री पात्र उनके कहानी में नजर आते है। इन पात्रों में पारिवारिक संबंधों में जहाँ कडवाहट नजर आती है, वही कभी- कभी मिठास भी दिखाई देती है। पति-पत्नी, सांस- बहु, पिता- पुत्री, माँ- बेटा जैसे पारिवारिक सम्बन्ध इनकी कहानियों से उजागर होते है।

मधु कांकरिया के कहानी साहित्य के पात्रों का जीवन प्रेम समर्पण से शुरू होकर पीड़ित होता हुआ जीवन के ठोस धरातल पर खड़ा होकर व्यावसायिक बन जाता है। इन कहानियों में कही मानसिक जुड़ाव दिखाई देता है, तो कही शारीरिक घनिष्टता। कही-कही अपनी महत्वाकांक्षा को पाने की चाह में टूटते प्रेम संबंधों का चित्रण भी दिखाई देता है

इस प्रकार मधु कांकरिया की कहानियों में स्त्री विमर्श पर आधारित विविध आयाम हम देख सकते हैं। उनकी कहानियाँ पाठकों को मानसिक धरातल पर छु लेती है तथा सोचने पर मजबूर कर विद्रोह का रास्ता दिखाती है। स्त्री विमर्श को मद्दे नजर रखते हुए उनकी कहानियों की विशेषता यह है कि पाठक कहानी में चित्रित स्त्री पात्र से सीधा जुड़ जाता है। मानो वह स्त्री पात्र उसके असल जिंदगी का कोई रिश्तेदार हो।

मधु कांकरिया के कथा साहित्य का भाषा और शैली की दृष्टि से अध्ययन करने के उपरांत यह बात सामने आती है, कि कहानियों की तुलना में लेखिका ने अपने उपन्यासों में भाषा-शैली का उपयोग जागरूकता से किया है। मधुजी के उपन्यास और कहानी संग्रह की भाषा शब्द भंडार से संपन्न, सुक्तियों से सजी और अलंकारिकता से पूर्ण हैं। अपने विचारों को पाठकों तक संप्रेषित करने की क्षमता उनकी भाषा में है।

अपने अलग अंदाज में लिखे उनके उपन्यास तथा कहानियों की भाषा दुरूह होने पर भी अर्थ को अधिक सक्षमता से स्पष्ट करती है। अंततः यह कहा जा सकता है, कि भाषा और शैली की विविधता उनके कहानियों में तथा उपन्यासों में देखने को मिलती हैं।

मधुजी के कथा साहित्य में भाषागत विशेषताओं में प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता, सांकेतिकता, अलंकारिकता, डॉट्स प्रयोग, बंगाली भाषा का प्रयोग, मुहावरे, लोकोक्तियों का प्रयोग दिखाई देता हैं, तथा शैलीगत विशेषताओं में वर्णनात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली, संवादात्मक शैली तथा पत्रात्मक शैली का प्रयोग दिखाई देता हैं।

एक आधुनिक लेखिका के रूप में मधु कांकरिया ने भाषा और शैली के प्रति जागरूकता दिखाकर अपने साहित्य को दोनों स्तरों पर उच्च स्थान प्रदान करने की कोशिश की है। अपने उपन्यास एवं कहानियों में कथ्य के अनुरूप ही भाषा-शैली का चयन करके लेखिका ने अपने अभिव्यक्ति सामर्थ्य को प्रकट किया है। मधु कांकरिया के उपन्यास और कहानियों के भाषिक विधान पर दृष्टिपात करते हुए उनके भाषिक सौन्दर्य को जाना जा सकता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है, कि मधु कांकरिया के उपन्यास तथा कहानियों के स्त्री पात्र अपना मार्ग स्वयं बनाते नजर आते हैं, उनके जीवन में सक्रियता हैं। अन्याय के

खिलाफ संघर्ष करने की क्षमता हैं। अपनी अस्मिता का जतन करने की शक्ति है। वह अपने जीवन की हर समस्याओं से जूझकर हल निकाल सकती है, चाहे वह धर्म की कुरीतियों की वजह से निर्माण हो या सामाजिक तथा राजनीतिक मूल्यों के अध:पतन से। इसी कारण मधुजी के कथा साहित्य के स्त्री पात्र जिंदगी की प्रतिकुलताओं को पीछे धकेलकर पुरे आवेग से आगे बढ़ने में सक्षम हैं।

कुल मिलाकर मधु कांकरिया के साहित्य के बारे में कहा जा सकता है की उनकी रचना सृष्टि अपूर्व है। और इसी अपूर्व रचना सृष्टि द्वारा जो स्त्री विमर्श परक चिंतन उभरा है वह अद्वितीय है। उनकी हर कला कृति नै संभावनाओं का मार्ग दिखाती है। भविष्य में भी मधु कांकरिया से अनन्त अपेक्षाएँ की जा सकती है

परिशिष्ट

मधु कांकरिया के साथ एक साक्षात्कार

मधु कांकरिया के साथ एक साक्षात्कार

प्रश्न आपको लेखन की प्रेरणा कहाँ से मिली ?

उत्तर मुझे लेखन की प्रेरणा कही से नहीं मिली। मैं पढ़ती बहुत थी। जब मैं पढ़ती थी तब मेरे दिमाग में होता था कि मैं भी लिख सकती हूँ , मैं भी ऐसा लिख सकती हूँ। लिखने की आदत मुझी पहले से ही थी, बड़े- बड़े पत्र लिखती थी मैं।

प्रश्न आपने अपने कॉलेज जीवन से ही लिखना शुरू किया था ?

उत्तर कॉलेज के जमाने में मेरी एक कहानी छपी थी, कॉलेज के मैगज़ीन में तो मुझे बहुत अच्छा लगा था। फिर मुझे पता लगा कि शायद मैं लिख सकती हूँ। उस समय मुझे कुछ दिशा-

निर्देश नहीं था, कि किन पत्रिकाओं में भेजना चाहिए, तो शुरुवात में मैं बड़ी-बड़ी पत्रिकाओं में भेजती थी। जैसे की 'हंस' तो सब लौटके आती थी। मुझे बड़ी निराशा होती थी। फिर मैं लिखना छोड़ देती थी। कभी मैं अच्छा पढ़ती थी तो मुझे लगता था कि मैं भी ऐसे लिख सकती हूँ। तो मैं ऐसे ही लिखती, फिर छुट जाता, फिर लिखती फिर छुट जाता। ऐसे ही सिलसिला चलता रहा। कभी-कभी बहुत निराश हो जाती ..... एक बार मैंने बहुत निराशा में कलम तोड़ दी। मैंने कहा लिखना मेरे बस की बात नहीं है, फिर पता नहीं कहाँ से मुझे प्रेरणा मिल गयी, कुछ अच्छा छपा मैगज़ीन में। वहाँ से किसी पाठक की प्रतिक्रया आ गयी। फिर लगा कि नहीं मुझे लिखना चाहिए। फिर ऐसे करते-करते तीन-चार साल के बाद एक कहानी मेरी छपी। उसके बाद फिर मैंने लौट के नहीं देखा ।मुझे लगा कि मेरी कहानी अच्छी पत्रिका में छप गयी तो मैं लिख सकती हूँ।

प्रश्न आपका क्षेत्र तो इकोनॉमिक्स और कंप्यूटर साइंस था फिर साहित्य के क्षेत्र में आप कैसे आ गई ?

उत्तर मैं हिंदी भाषा में बहुत पढ़ती थी। हिंदी साहित्य के प्रति मेरा झुकाव था। लेकिन साहित्य में पढ़ाई नहीं की, यह सोचकर कि मुझे नौकरी करनी है, और दिमाग में यह था कि हिंदी लेने वाले कम बुद्धिमान होते हैं। जो अच्छे इंटेलीजेंट लोग होते है वह इकोनॉमिक्स लेते है, मैथमैटिक लेते है। ये सब मिस कन्सेप्शन था। बाद में मुझे लगा, कि जो मैं सोच रही थी वह गलत था। कहानियाँ तो मैं शुरू से पढ़ती थी। हिंदी के प्रति मेरा झुकाव था। उपन्यास भी बहुत पढ़ती थी। लेकिन गलत चुनाव कर दिया था मैंने इकोनॉमिक्स का। बाद में लगा कि नहीं ये मेरी लाइन नहीं है, लेकिन मुझे निकलने में बीस साल लग गए। नौकरी थी, जिंदगी की अपनी माँग थी, बच्चा था, उसको आगे बढ़ाना था, नौकरी करनी थी। इन सब चीजों की बजह से देर से लिखना शुरू किया।

प्रश्न क्या आपके परिवार में कोई साहित्यकार था ?

उत्तर हमारा परिवार तो वैसे बनिया परिवार था। परिवार में कोई साहित्य में नहीं था। लेकिन मेरे पिताजी पढ़ते बहुत थे। मेरी माँ भी पढ़ती थी घर में। घर में मुझे किताबे काफी मिली पढने के लिए। प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों के नाम मैंने पिताजी से ही सुने थे। पिताजी के कारण साहित्यिक रूचि मुझे विरासत में मिली।

प्रश्न आपके विचार में लेखन का क्या उद्देश्य होना चाहिए ? और क्या आप मानती है, कि आपका उद्देश्य सफल हो गया है ?

उत्तर नहीं -नहीं उद्देश्य कहा सफल हो गया ? मुझे लगता है, कि लेखक का काम एक तो यह है, कि जो हाशिये पर पड़े लोग है, उनकी यातना को शब्द देना, जो अपनी बात अपने आप नहीं कह सकते। मुझे तो हमेशा प्रेमचंद की दो बैलों की कहानी याद आती है। उन्होंने अपनी कहानी में बैलों की बात कही थी, क्योंकि बैल अपनी बात नहीं कर सकते। इसलिए मुझे लगता है, कि आज समाज के जो बड़े- बड़े सवाल है, लेखक को उनसे टकराना चाहिए। लेखक का काम प्रतिपक्ष का काम है। नहीं तो भ्रष्ट सरकार को कटघरे में कौन खडा करेगा। लेखक यह काम कर सकता है। मुझे लगता है, इस प्रकार जागरूकता फैलाना या सच्चाई को सामने लाना लेखक का काम होना चाहिए। शायद लेखक धीरे-धीरे काम करते है, इसलिए मुझे नहीं लगता लेखक यह बहुत जादा नहीं कर सकते, अगर एक लेखक एक्टिविस्ट हो तो अलग बात है, लेकिन फिर भी हमने कलम उठाई है, तो हमारी प्रतिबद्धता है मानवता के प्रति।

प्रश्न आपने 'खुले गगन के लाल सितारे' उपन्यास लिखने से पहले कुछ लिखा था ?

उत्तर पत्र पत्रिकाओं में लेख भी लिखती थी, कहानी भी लिखती थी।

प्रश्न आपके दिमाग में नए नए विषय कैसे आते है ? हर एक विषय को आपकी कहानियाँ तथा

उपन्यास छुते है ?

उत्तर लेखक होता है वह जादा संवेदनशील होता है। साधारण घटना भी उसे प्रभावित करती है।

प्रश्न मतलब आप मानती है, कि जो लेखक होते है उनमें पहले से ही प्रतिभा होती है ?

उत्तर हाँ ! लेखक बनाया नहीं जा सकता। मुझे तो ये लगता है, कि कुछ होता ही है एक लेखक के अन्दर। उसकी बात अलग होती है। छोटी- छोटी घटना भी उसे जादा प्रभावित करती है। वह संवेदनशील होता है। अब मान लीजिए, कि पड़ोस में किसी पे अन्याय हो रहा है। सब घटनाएँ आपने अच्छी सी देखी है। तो बीज उसी दिन पड जाता है, लेखक के मन के अन्दर। बाद में धीरे- धीरे आप सोचते हो -सोचते हो, फिर आप उसमें अपने विचार अपने अंतर्दृष्टि, अपनी संवेदना इन सबका एक घोल तैयार करके उस बीज को पल्लवित करते है। धीरे-धीरे जब वह बीज पूरी तरह से पल्लवित हो जाता है, तो फिर लगता है, कि आगे कहानी कलम की नोक पर आ सकती है। बहुत सोचते है हम। मतलब घटनाएँ आपको बेचैन करती रहती है, प्रभावित करती रहती है।आप दिमाग में सोचते रहते हो उसी समय आप नहीं लिख पाते। लिखने में समय लगता है।

प्रश्न आपके वैवाहिक जीवन का क्या असर पडा आपके साहित्यिक जीवन पर ?

उत्तर मैं लिखती तो पहले भी थी। शादी के तुरंत बाद मेरी एक कहानी छपी थी 'ऐ मानव '। तो कहानी मैंने शादी के बहुत पहले लिखी थी, जो मेरी एक सहेली के पति पर लिखी थी। हमारे पति ने सोचा कि ये कहानी मैंने उनपर लिखी है, क्योंकि वह कहानी मैंने लिखी तो शादी के बहुत पहले परन्तु वह शादी के तुरंत बाद छप गयी थी, एक सप्ताह में। तो उसे लेकर उनमें और मुझमे थोड़ी अनबन सी हो गयी थी। मैंने कहाँ, मैं आप पर कैसे लिख सकती हूँ ? लेकिन वे समझने को तैयार ही नहीं थे। तो इसके बाद लिखने में मैं थोड़ी पीछे हट गयी, मैं कम लिखने लगी। मैंने सोचा घर में झमेला होगा, लेकिन मैं पढ़ती थी ज्यादा।

'ऐ मानव' कहानी को लेकर घर में थोड़ी अशांति हो गयी थी, उस कहानी में क्या था कि एक स्त्री अपने पति के बारे में कह रही है। बचपन की कच्ची-पट्ठी कहानी थी, कोई ऐसी ख़ास कहानी नहीं थी। आज मेरे संग्रह में वह कहानी नहीं है। वो छपी थी किसी लोकल अखबार में, तो पति को लगा मैंने उनपर लिखी है।

मेरी शादी भी एक मिसमैच थी, एक गलत शादी थी, मतलब मैं उस परिवार में खप ही नहीं सकती थी, बहुत कठिनाई से ढाई- तीन साल तक चलाया मैंने। उस समय मुझे कुछ भी आर्थिक सुरक्षा नहीं थी, भावनात्मक सुरक्षा नहीं थी, सामाजिक सुरक्षा नहीं थी, मैं कही भी जाती तो वह मेरे साथ नहीं आते थे। आर्थिक असुरक्षा के कारण मुझे लगा, कि मुझे खुद ही सब कुछ करना होगा। मुझे अपनी तैयारी फिर से करनी चाहिए। फिर मैंने कंप्यूटर कोर्स किया, क्योंकि मुझे इकोनॉमिक्स में एक्सपीरियंस नहीं था, तो मुझे लगा कि मुझे अच्छी नौकरी नहीं मिलेगी। मुझे मेरे सामने अपना बच्चा दिख रहा था, उसे भी आगे बढ़ाना था। मेरे पति नहीं चाहते थे कि मैं आगे बढ़ू। वो थे तो डॉक्टर, लेकिन नौकरी नहीं करते थे, हमारा कोई परमनेंट इनकम नहीं था। मुझे लगा, कि मैं आज भी अपने पेरेंट्स के ऊपर डिपेंडेंट हूँ। इसलिए मैंने कंप्यूटर कोर्स किया। और आत्मनिर्भर बनने की तरफ कदम उठाया। पति का व्यवहार मेरे प्रति सामान्य नहीं था, मैंने बहुत कोशिश की परिवार बचाने की लेकिन जब सब कुछ सहनशीलता के बाहर हो गया तो मैंने घर छोड़ा।

प्रश्न आपने खुले गगन के लाल सितारे उपन्यास लिखा है, वह नक्सलवाद पर आधारित है। वह लिखने के लिए आपने खुद नक्सलवादियों के जीवन को करीबी से देखा है ?

उत्तर हां एकदम! कई लोगों से मैं मिली हूँ जो नक्सलवादी रह चुके हैं, बल्कि यह कह सकती हूँ कि सारे पात्र जीवित है। मतलब उपन्यास में जो सारे पात्र है, उनका अपना एक रोल था। इसमें कोई भी झूठा नहीं था। इस उपन्यास के सारे पात्र जीवित है, उनकी कोई ना कोई

भूमिका थी नक्सलवादी आन्दोलन में।

प्रश्न और सलाम आखिरी उपन्यास - वेश्याओं का जीवन जानने के लिए लालबत्ती इलाके में जाना तो मुश्किल है, तो कैसे किया आपने यह सब**?**

उत्तर हां! उपन्यास में जितने भी वेश्या पात्र है उनके नाम बदले है। मैं खुद गयी हु लाल बत्ती इलाके में, घूमी हूँ, वहाँ पर, वेश्याओं से मिली हूँ। एक बार नहीं, कई बार मिली हूँ। एक बार मिलने से सच्चाई नहीं समझती इसलिए बार-बार मिली हूँ।

प्रश्न उपन्यास में उनके दुःख का चित्रण वास्तविक है ?

उत्तर एकदम-एकदम, बिलकुल सही है, मैं पूरा लिख नहीं पाई उनके दुःख के बारे में। मुझे लगा, लोग विश्वास नहीं करेंगे। कोठे की मालकिन उनसे मिलने भी नहीं देती थी। उनसे मिली भी हूँ तो बड़ी चालाकी से, जब कोठे की मालकिन सोई हुई रहती थी तब, मैं उनसे मिलती थी। मिलने पर भी वे बात करने से डरती थी। सच्चाई बतलाने से डरती थी, जो उपन्यास में सच्चाई पाठकों के सामने आयी है, उससे कई जादा असल सच्चाई भयानक है।

प्रश्न उपन्यास में वेश्याओं का जो चित्रण आपने किया है, उसमे ऐसी कई घटनाएँ है जिनसे ज्यादातर पाठक वाकिफ नहीं होंगे ?

उत्तर हो सकता है! वेश्याए दो तरह की होती है, एक तो वो होती है, छुटकी टाइप, जिन्हें छोटी उम्र में ही अमानवीय ढंग से औरत बना दिया जाता है। तो कुछ होती है १९-२० साल की जो एक तो अपने मर्जी से आती है, नहीं तो उन्हें फँसाकर लाया जाता है। देखिये आते है सब कम उम्र में ही, लेकिन यहाँ पर आने के बाद वहाँ के सब रंग ढंग समझ जाती है। दिन भर अपने देह का व्यापार करके उन्हें क्या मिलता है, कुछ भी नहीं। अगर कोई वेश्या मालकिन के तहत् काम करती है, तो उसे मालकिन को ५० प्रतिशन देना पड़ता है अपनी कमाई का। पुलिसवालों को देना पड़ता है। दलालों को देना पड़ता है। आखिरकार उनके हाथ में कुछ

नहीं बचता, शोषण ही शोषण है वहाँ पर।

प्रश्न सलाम आखिरी उपन्यास का अंत, अधूरा लगता है। क्या आप उस उपन्यास का आगे का भाग भी लिख रही है?

उत्तर नहीं- नहीं मैं अब दुबारा उस वातावरण में नहीं जा पाऊँगी। उस समय मैं चली गयी तब एक जोश था। आज की तारीख में दुबारा वही पर नहीं जा पाऊँगी उन गलियों में। भयानक वातावरण होता है वहा का। सब देखेके आप टूट जाते हो। वह उपन्यास लिखते समय मेरा टाइम अलग तरह से बितता था। सब देखेके आपको बहुत धक्का लगता है, दुनियाँ से विश्वास उड़ जाता है। उस समय मैं चली गयी, मुझे आज भी ताज्जुब होता है, फिर डर भी लगता है। कभी भी रेड पड जाती थी वहा पे तो सब को ले जाते थे। मैं बहुत डरती थी लेकिन पता नहीं उस समय मुझ मे कैसे हिम्मत आ गयी, आज शायद मैं वहा जा भी नहीं पाऊँगी।

प्रश्न 'सेज पर संस्कृत ' की निर्मिती कैसे हुई ?

उत्तर मैं जैन परिवार से हूँ। मेरे सारे उपन्यास यथार्थ से निकले है। कल्पना बहुत कम है उसमें, मतलब कहा जा सकता है उनमें सत्य जादा है, सुन्दरता कम है। तो मैं खुद जैन परिवार से हूँ, मैंने खुदने देखी ये सारी चीजे। सारी चीजे मेरी आँखों देखि है। उपन्यास में मैंने जो दीक्षा का वर्णन किया है, छोटे- छोटे बच्चों को जो दीक्षित कर दिया जाता है, सब सच है। अभी भी तो मैंने एक फोटो डाली थी फेसबुक पे। एक जैन परिवार था, हसबंड वाइफ थे उनके दो छोटे- छोटे बच्चे थे, चारो जनों ने एक संग दीक्षा ली थी। अब आप सोचो आप में बैराग की भावना आ गयी है, तो बच्चों को भी उसमें क्यों डाल रहे हो। बहुत होता है .... बहुत होता है .. जैनियों में देखिये सामूहिक दीक्षा बहुत होती है। सारा परिवार एक संग चला जाता है।

प्रश्न कम उम्र में दीक्षा लेने के बाद, जब उम्र बढती है, तो उनमें कामेच्छा तो जागृत होती होगी,

तब क्या होता है ?

उत्तर सही बात है, इसी प्रकार की अपनी दमित इच्छाओं, कुंठाओं के साथ जीती है। कई बार ऐसा भी होता है, कि पतस्लखन हो जाता है, साध्वी, प्रेग्नेंट हो गयी। तो निकाला जाता है उसे संघ से, पुरुष है तो माफ़ कर दिया जाता है। सब कुछ एक अलग दुनिया है।

प्रश्न 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में अभयमुनी का पात्र सत्य है, ख़ास कर वह बलात्कार की घटना?

उत्तर मैंने उपन्यास में अलग ढंग से दिखलाया है, लेकिन ऐसे हो रहा है। अरे सोचिये ये सब मानवीय भावनाएँ है। आप अपने आप को रोबोट नहीं बना सकती। आपने दीक्षा ली बहुत छोटी उम्र में तब आप नहीं जानते, कि यौवन आयेगा आपके जीवन में यौवन की पुकार आएगी। जब यौवन आता है तब आपको लगता है कि अरे आप एक जिंदगी में सिमित है। और सीमित अनुभवों के आधार पर हम निर्णय लेते है, तो वो किस प्रकार आपका साथ देगा।

प्रश्न आप स्त्री विमर्श को किस प्रकार से देखती है ?

उत्तर देखिये, मेरे लिए स्त्री विमर्श का पहला और सीधा मतलब है, कि अपने भीतर आत्मविश्वास पैदा करना, अपने भीतर के अंधविश्वास से मुक्ति पाना, अपने भीतर के कु संस्कारों से मुक्ति पाना। स्त्री विमर्श का मतलब पुरुषों की नक़ल नहीं। न ही पुरुषों की स्वछंदता को अपनाना। मेरा दृढ विश्वास है, कि पुरुष अस्मिता, पुरुषों को कुचलकर स्त्री विमर्श आगे नहीं बढ़ सकता। मैं ये मानती ही नहीं हूँ। जिस प्रकार जैसे कई लोग कहते हैं, कि हमें पुरुष की जरुररत ही क्या है ? मैं ये नहीं मानती। मैं ये मानती हूँ, कि पुरुष को कुचलकर आप स्त्री अस्मिता बचा नहीं सकती । इसलिए मैं कहती हूँ, कि पुरुषों को उनकी सामंतवादी मानसिकता से मुक्ति पानी होगी। मदवादी मानसिकता से मुक्ति पानी होगी।

प्रश्न कल संगोष्ठी में सवाल उठाया गया था, कि पुरुष जरुरी है स्त्री के जीवन में ! क्या आप मानती है पुरुषों के बिना स्त्री नहीं चल सकती ?

उत्तर समाज आगे कैसे बढेगा ! आप सोचिये समाज आगे कैसे बढेगा, इसलिये मैं कहना चाहती हूँ, कि एक साहचर्य का भाव हो। मुझे लगता है, कि सारी स्त्री विमर्श की जड़ पुरुष की सामंतवादी मानसिकता में है। पुरुष सामंतवादी मानसिकता से मुक्त हो जाए तो स्त्री की आधी समस्या हल हो जाएगी और फिर हम सामाजिक, आर्थिक, राजनितिक, गैर राजनितिक मुक्ति की लड़ाई लडे। मुझे स्त्री विमर्श को देह विमर्श से रेड्युस करना एक साझिश लगती है। जैसे मान लीजिये कि मैं हूँ, मैं पढ़ी- लिखी हूँ। मेरा दिमाग मुक्त है, तो मेरे देह पे तो मेरा अपने आप नियंत्रण रहेगा। मेरी देह का कोई दूसरा मालिक बन नहीं सकता। और आप देह विमर्श की बात करते हो तो, एक वेश्या उसकी देह से तो मुक्त है ना , लेकिन क्या उसको हम कह सकते है कि वह व्यक्तित्व संपन्न स्त्री है। इसलिए मैं कहती हूँ कि स्त्री को ये मानना होगा कि सिर्फ मैं सौन्दर्य नहीं हूँ, मैं बुद्धि भी हूँ, मैं प्रतिभा भी हूँ, मैं दिमाग भी हूँ। देह से परे हटके देखना है।

प्रश्न मैंने कही पढ़ा था, आपके साहित्य में स्त्री विमर्श कम दिखाई देता है। क्या ये सच है ?

उत्तर हो सकता है।

प्रश्न आपके उपन्यासों में स्त्री प्रतिकार करती नजर नहीं आती ?

उत्तर नहीं ऐसा नहीं है, वह सब जगह प्रतिकार करती नजर आती है। 'सलाम आखिरी' में भी उसने प्रतिकार किया है, 'सेज पर संस्कृत' में तो उसने पूरा बदला लिया है। कहानियों में भी कई जगह पर स्त्री पात्र प्रतिकार करते नजर आते हैं। बात यह है कि मैं फोर्मुला टाइप कहानी में विश्वास नहीं करती। जीवन जैसा है मैं उसको वैसा ही उतारती हूँ। जीवन में जो स्त्री हार रही है, तो मैं लिखें में उसे वीरबाला या झाँसी की रानी बनाके नहीं दिखलाती।

प्रश्न आपकी कहानी 'युद्ध और बुद्ध' कश्मीर के आतंकवाद पर आधारित है। यह विषय आपको कैसे सुझा ?

उत्तर युद्ध और बुद्ध कहानी कश्मीर के आतंकवाद पर आधारित है। कश्मीर में जो आतंकवाद पनप रहा है, उसमें माँए कैसे पिस रही है इसका चित्रण किया है। ये सब चीजे मैंने देखी है। मैं ड्राइंग रूम में बैठकर लिखनेवालों में से नहीं हूँ। मैं उन गलियों में जरुर भट्कुंगी जहाँ मेरे पात्र हैं ।

प्रश्न आपका यात्रावृत्तांत 'बादलों में बारूद ' मैंने पढ़ा। यात्रा वृत्तान्त लिखने की प्रेरणा कहाँ से प्राप्त हुई ?

उत्तर देखिये मैंने जीवन और मनुष्य के खोज में यात्राएं की हैं। यदि मैं इतना नहीं घूमती शायद मैं नहीं लिख पाती। मैं जहाँ भी जाती हूँ मुझे लगता है, कि वहाँ के लोगों के जीवन को देखू, उनके जीवन में झाकू, क्या विडम्बनाए है, क्या विसंगतिया है, क्या समस्याएँ है।

प्रश्न 'सूखते चिनार' उपन्यास फौजी जीवन पर आधारित है । उसमे कश्मीर में पनप रहे आतंकवाद का चित्रण किया है। इतने बारीकी से फौजी जीवन के बारे में कैसे लिख पायी आप ?

उत्तर कश्मीर में आतंकवाद एक संगठन बन चुका है। एक व्यवसाय बन चुका है। उसमे तो बहुत पैसा है। पाकिस्तान से पैसा आ रहा है, अरब देशों से पैसा आ रहा हैं। हिन्दू पंडितों को तो वहासे भगा ही दिया है कश्मीर से। अब बहुत कम हिन्दू पंडित बचे है कश्मीर में। अब तो मुझे लगता है, वहाँ के आतंकवादी है, वो भी बाहर के हैं। स्थायिक आतंकवादी भी जादा नहीं है। जो पुराने कश्मीरी है वो अब शान्ति से रहना चाहते हैं। वो अब पाकिस्तान लौटना नहीं चाहते । मैं वहाँ पे कई लोगों से मिली थी, वहाँ की युवा पीढ़ी भी आतंकवाद से छुटकारा पाना चाहती हैं, क्योंकि, अब तक डेढ लाख युवा पीढ़ी मर चुकी हैं। अब उनके

समझ में आ गया है कि ये सब राजनितिक रोटियाँ पक रही थी। इसलिए वो लोग भी शान्ति चाहते हैं, विकास चाहते हैं, नौकरी चाहते हैं। गाँव में अभीतक कुछ लोग है उनमें आतंकवाद के जीवाणु फल फुल रहे हैं। वो अभी भी दाढ़ी, टोपी और इस्लाम में ही रहते हैं। लेकिन जो शहर के युवा है वो विकास चाहते हैं, रोजगार चाहते हैं, उन्नति चाहते हैं, आगे बढना चाहते हैं। उनके मन में कुछ भी धार्मिक कट्टरता नहीं है कि मैं पाकिस्तान जाके रहूँ। इंडिया में इस्लाम खतरे में हैं, ऐसा कुछ नहीं।

फौजी जीवन के बारे में कहूँ तो मेरा भतीजा था मेजर फ़ौज में। और मैंने जो मिलिटेंट के खिलाफ के ऑपरेशन का जिक्र किया है उपन्यास में, उसीके अंडर था, लेकिन उनकी अपनी कोड ऑफ़ कंडक्ट होती है, वे विस्तार से बतलाते नहीं सिविल लोगों को।

प्रश्न गोवा के लोगों के बारे में क्या ख़याल है ?

उत्तर अच्छे लगे मुझे गोवा के लोग। लेकिंग मुझे थोड़ी चिंता भी हो रही है, इतने टूरिस्ट आ रहे है गोवा में की गोवा के लोग खुदका कल्चर न भूल जाए। जब पैसे मिल जाते हैं, तब एक लालच आता है। मुझे लगता है कि यहाँ का संतुलन न बिगड़ जाएँ। गोवा के लोग अच्छे लगे। कोंकणी भाषा जानती तो और अच्छा लगता।

प्रश्न आप आत्मकथा लिखने की सोच रही है ?

उत्तर नहीं नहीं इतना साहस नहीं है मुझ में, इतना दम नहीं मुझ में। आत्मकथा लिखने के लिए बहुत नैतिक बल चाहिए।

प्रश्न आपके साहित्यिक भंडार से आपकी प्रिय रचना कौनसी है ?

उत्तर कोई भी नहीं ! मुझे सभी अप्रिय हैं। मुझी किसीसे भी संतोष नहीं है, लगता है और अच्छा लिखना चाहिए था। मुझे कभी संतोष हो ही नहीं पाता। लिखने के बाद ऐसा लगता है, कि कुछ बात छुट गयी है। दूसरी कोई अच्छी रचना पढ़ती हूँ तो बौनेपन की फिलिंग आती है,

कि मैंने ऐसा क्यों नहीं लिखा। तो कोई भी रचना से मैं संतृष्ट नहीं हूँ। समय मिला तो मन करता है, सबकुछ दोबारा लिख दूँ।

प्रश्न महिला लेखन और भी समृद्ध बनाने के लिए क्या करना चाहिए ?

उत्तर व्यापक सरोकार से जुड़ना चाहिए। हांलाकि अपने अनुभवों से लिखना चाहिए। मानवी धरातल पर जुड़ना चाहिए। मैं यह कहना चाहती हूँ कि, महिलाएं किसीसे कमतर नहीं हैं। आप महिला हो इसलिए किसी से कमतर नहीं हो, इसलिए कभी भी डिस्काउंट की आशा मत रखना। हम महिला है तो हमें डिस्काउंट मिलना चाहिए यह आशा नहीं रखनी चाहिए , या अपनी पीड़ा है उसका पेशा नहीं बनाना चाहिए। अपनी पीडाओं का दिखावा करते रहो, अपनी भावनाओं का दिखावा करते रहो यह मुझे अनुचित लगता है। आप निजिता का अतिक्रमण करना सीखो।

प्रश्न समकालीन महिला लेखिकाओं के बारे में क्या विचार हैं।

उत्तर बहुत अच्छा है। कुछेक महिला लेखिकाएँ अच्छा लिख रही है और कुछ देह और दुपट्टे की लड़ाई में ही अटकी हुई हैं।

प्रश्न आपको घूमने का शौक है ?

उत्तर हा ! एकदम- एकदम मेरे भीतर एक सैलानी की आत्मा है। मैं एक जगह बैठ नहीं सकती। बहुत घूमी हूँ, देश, विदेश। मौक़ा मिलते ही निकल जाती हूँ मैं। अभी तो सात यूरोपियन देश में गयी थी। वहाँ के लोगों के जीवन के बारे में भी अपने नए उपन्यास में लिखने की सोच रही हूँ।

प्रश्न इसका मतलब यह है, कि आप जहाँ पर जाती है, उस परिवेश को अपने साहित्य में समाविष्ट करती हैं ?

उत्तर नहीं ऐसा कुछ नहीं, समझ में आता है तो, नहीं तो एक बार आप देखके क्या लिख सकती

हूँ। फिर ऐसा है कि मैं अगर समझू वहाँ के परिवेश को, वहाँ के संस्कृति को और समझ के पूरी तरह से ध्यान में आया तो ही लिखती हूँ, नहीं तो नहीं।

प्रश्न आपको कहानियाँ और उपन्यास ही लिखना अच्छा लगता है ?

उत्तर नहीं ऐसा कुछ नहीं है, आजकल मैं, उपन्यास, और कहानियाँ कम लिख रही हूँ। बस आलेख ही लिख रही हूँ, आलेख लिखना मुझे अच्छा लगता है, जैसे सामाजिक विमर्श पे लिखा है मैंने 'अपनी धरती अपने लोग' उसी प्रकार छोटे छोटे आलेख ज्यादा लिखती हूँ आज कल।

प्रश्न आपके बेटे के बारे में कुछ बताइये, मतलब आपके साहित्यिक प्रवास में उसकी क्या भूमिका रही है ?

उत्तर बेटा तो मुझे हर समय आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहता है। ये करो, वो करो, ये लिखो , वो लिखो। नए नए विषय पर लिखने के लिए प्रेरित करता है। उसने मुझे टेक्नोलोजीकली बहुत आगे बढ़ाया है। उसने बचपन से मेरा संघर्ष देखा है। मतलब भगवान् एक दरवाजा बंद कर देता है तो दूसरा खोल देता है। यही कहना चाहती हूँ।

प्रश्न आज-कल आप क्या लिख रही है ?

उत्तर एक उपन्यास तीन चार साल से पडा है। थोडा सा लिखती हूँ बंद कर देती हूँ, पता नहीं पूरा होगा की नहीं होगा। दुविधाएं आ रही है उपन्यास लिखते समय। विषय ही ऐसा बिकट है कि सोच नहीं पा रही हूँ। किसी जीवित पात्र के ऊपर है। पूरा लिखा तो मुझे लगता है , उसके सन्मान को ख़तरा पहुँच सकता हैं। नहीं लिखूंगी तो उपन्यास को न्याय नहीं दे पाउंगी।

नया उपन्यास जल्द से जल्द पूर्ण हो ऐसी शुभकामनाएं देकर मैंने उनसे विदा ली।

सहायक ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ

	रचनाकार	शीर्षक	प्रकाशक	वर्ष
	उपन्यास			
१.	कांकरिया मधु	खुले गगन के लाल सितारे	राजकमल प्रकाशन , दिल्ली	२०००
		पत्ताखोर	राजकमल प्रकाशन , दिल्ली	२००५
		सलाम आखिरी	राजकमल प्रकाशन , दिल्ली	२००२
		सूखते चिनार	भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली	२०१२
		सेज पर संस्कृत	राजकमल प्रकाशन , दिल्ली	२००८
	कहानी संग्रह			
		और अंत में इशु	किताबघर प्रकाशन , दिल्ली	२००८
		चिड़िया ऐसे मरती है	वाणी प्रकाशन दिल्ली ,	२०११
		दस प्रतिनिधि कहानियाँ	किताबघर प्रकाशन , दिल्ली	२०१३
		बीतते हुए	राजकमल प्रकाशन , दिल्ली	२००४
		भरी दोपहरी के अँधेरे	रे माधव प्रकाशन , नोयडा	२००७
		युद्ध और बुद्ध	भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली	२०१४
		स्त्री मन की कहानियाँ	साहित्य भण्डार	२०१५

सन्दर्भ ग्रंथ

	रचनाकार	शीर्षक	प्रकाशक	प्रथम संस्करण
१.	कावले डॉ. सुनीता	कथाकार मधु कांकरिया	रोली प्रकाशन	२०१२
२.	कुमार राधा	स्त्री संघर्ष का इतिहास	वाणी प्रकाशन	१९९८
३.	खेतान प्रभा	आवो पेपे घर चले	सरस्वती विहार	१९९०
		उपनिवेश में स्त्री-	राजकमल प्रकाशन	२००९
		छिन्नमस्ता	राजकमल प्रकाशन	१९९३
४.	गीते डॉ. नीहार	स्वातंत्र्योत्तर महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में यथार्थ के विविध रूप	पंचशील प्रकाशन, जयपुर.१९९६ .सं.प्र .	१९९६.
५.	गुप्ता रमणिका	स्त्री विमर्श : कलम और कुदाल के बहाने	शिल्पयान बुक्स, दिल्ली	२००८
६.	चतुर्वेदी जगदीश्वर	स्त्रीवादी साहित्य विमर्श		
७.	चव्हाण डॉ. अर्जुन	विमर्श के विविध आयाम	वाणी प्रकाशन दिल्ली	२००८
८.	चौबे देवेन्द्र	समकालीन कहानी का समाज शास्त्र	प्रकाशन संस्थान, दिल्ली	२००१
९.	नगेन्द्र	हिंदी साहित्य का इतिहास	न्यू पेपरवैक्स	१९७३
१०.	कुमार डॉ. नरेश	दलित चिंतन के सरोकार	अमन प्रकाशन, कानपुर	२०१३
११.	पाठक विनयकुमार	स्त्री विमर्श	भावना प्रकाशन दिल्ली	२००५
१२.	पांडे मृणाल	परिधि पर स्त्री	राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड. दिल्ली	१९९६
१३.	भंडारी मन्नू	त्रिशंकु	राधाकृष्ण प्रकाशन	२००२
१४.	मैत्रयी पुष्पा	इदन्नमम	किताबघर, दिल्ली	१९८४
		कस्तुरी कुंडल बसै	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	२००२
		झुलानट	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	१९९९

		लल्लनमियाँ	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	१९९६
१५.	यादव राजेंद्र	आदमी कि निगाहों में औरत	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	२००१
१६.	राणावत डॉ. उषा कीर्ति	मधु कांकरिया का रचना संसार	शैलजा प्रकाशन, कानपुर	२०१२
१७.	वरद डॉ. विजया	साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	२०१०
१८.	वर्मा महादेवी	श्रृंखला की कड़ियाँ	भारती शंकर, इलाहबाद	१९५०
१९.	शर्मा ओम प्रकाश	समकालीन महिला लेखन	पूजा प्रकाशन, दिल्ली	२०००
२०.	शर्मा क्षमा	स्त्रीत्ववादी विमर्श	राज कमल प्रकाशन, दिल्ली	२००२
२१.	संधू मधु	साठोत्तरी महिला कहानीकार	सन्मार्ग प्रकाशन	१९८४

पत्रिकाएँ

	रचनाकार	**शीर्षक /पत्रिका**	**प्रकाशक**	**प्रथम संस्करण**
१.	अहमद डॉ एम्. फिरोज	वांग्मय	त्रैमासिक हिंदी पत्रिका	२०१२
२.	निश्चल ओम	छोटी सी निज जिंदगी में	वागर्थ	२००४
३.	यादव राजेंद्र	हंस	अक्षय प्रकाशन , दिल्ली	२००८